श्रीमत विजयाराजे सिंधिया, महारानी ग्वालियर,
की अर्द्ध शती के पुनीत अवसर पर प्रस्तुत
उनके जीवन की कतिपय झाकियां.

राजमाता

(१६१६-१६६६)

ओमप्रकाश भार्गव

लेखक
श्रोमप्रकाश भार्गव
ग्वालियर

मूल्य २५.०० रुपये

प्रकाशक
कैक्स्टन प्रेस प्रा० लि०
२-ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-५५

प्रस्तावना

दिसम्बर सन् १९६६ की बात है। में देहली म जिमखाना क्लब म॰ ठहरा हुआ था और वही मेरी श्री ओमप्रकाश भागव से भेट हुई। ग्वालियर राज्य के सूचना एव प्रकाशन विभाग मे वे कुछ समय मेरे सम्पक मे रहे थे तथा मैं उनकी लेखनी से प्रभावित था। पठन, पाठन लेखन आदि के सम्बन्ध मे चचा हुई तो मने राजमाता के प्रखर व्यक्तित्व की ओर उनका ध्यान आर्कषित किया। मेरा यह दृढ विश्वास था और अब भी है कि कैलाशवासी महाराज माधवराव सिंधिया एक अद्भुत दूर-दृष्टा, कुशल प्रशासक एव कई दैविक गुणो से परिभूत महान व्यक्ति थे और हमारी राजमाता श्रीमत विजयाराजे सिंधिया मे भी उन्ही गुणो की प्रतिछाया विद्यमान है। जिसके कारण वे लोकतत्र के नवीन युग मे, नवीन परिवेश मे देश के मच पर आज जगमगा रही है। इस रमणी रत्न मे एक ओर जहा ज्ञान प्राप्ति की प्रबल पिपासा है वहा भगवान मे अगाध विश्वास और देश के प्रति असीम भक्ति है। विजयशीला, चरित्रवान, सौम्या—इस भावुक मनीषी मे धम और राजनीति के समन्वय की अद्भुत क्षमता है। आज के राजनैतिक जीवन के गदलेपन को दूर करने के लिए जिस सत्ता और स्वाथ के परित्याग की भावना और उसे क्रियान्वित करने के लिए जिस दढ चरित्र की आवश्यकता है वह इस विनयशीला जनकल्याणी नारी मे है और इसी तथ्य का सकेत मैंने भार्गव जी को किया।

सन १९६७ आया तो सघषरत राजमाता के व्यक्तित्व पर एक अद्भुत निखार आ गया और सन् १९६८ के सविद शासन के कायकाल मे जहा एक ओर परिश्रम मे रत नारी की चरम साधना को जनता ने परखा तथा उनके विनयशील स्वभाव को सराहा वहा इनके

परिजन और हितैषियो ने देशवासियो की दृष्टि का विश्लेषण कर इनम सहनशीलता, ममता, त्याग और दया के नवीन रूप देखे मानो राजमाता का परिवार सहसा फलकर बडा हो गया था। मने समय समय पर भागव जी को इस दृष्टिकोण के भी सकेत दिये।

आज राजमाता के अर्द्धशति के पावन पव पर भागवजी की दो वष की कठिन साधना इस रूप मे प्रस्तुत पुस्तक के रूप मे आपके सम्मुख आ रही है। इसके लिय मै उन्हे बधाई देता हू। मुझे विश्वास है कि हिन्दी समाज उनकी इस कृति का समुचित आदर करेगा और जिस भावना से यह अनुपम पुस्तक लिखी गई है उसको सराहेगा। वास्तव मे राजमाता को केन्द्र बिन्दु मान कर अपने समय का यह एक सक्षिप्त इतिहास मात्र है।

माधवानुयायी
चन्द्रोजी स० आग्रे

दो शब्द

सिंधिया राजघराने से लेखक के परिवार का सम्बन्ध अब तीन पीढियो का है। कैलाशवासी महाराज जीवाजीराव सिंधिया के सामीप्य का अनुभव कर लेखक ने अपने विद्यार्थी जीवन काल को और तत्पश्चात युवा काल को समृद्ध बनाया और उन्ही की स्फूर्तिदायक प्रेरणा से साहित्य सृजन मे तल्लीन होकर 'तपस्विनी', 'समाज द्रोही', 'हिमालय के अंचल मे', 'राजकुमारी जबुन्निसा के आसू' आदि पुस्तको की रचना की। सन् १६४१ ई० के पश्चात हम सबने यह अनुभव किया कि महाराज के साहित्यानुराग मे वृद्धि होने के मूल मे श्रीमत महारानी विजयाराजे सिंधिया का हाथ और उनकी स्थायी प्रेरणा है। १६४८ ई० मे महारानी के अनुपम त्याग, उदार स्वभाव और दशहित चिन्तन की कतिपय झलके देखकर मन प्रसन्नता और आशा से भर उठा और हम सबके साथ महाराज ने भी इस मनीषी के विशिष्ट गुणो की चर्चा मे योग दिया। सन् १६५१ मे जब लेखक वन विभाग म उच्च पद पाकर अण्डमान चला गया तो महाराज से पत्रो द्वारा सम्पर्क रहा और छुट्टियो मे आने पर वे महारानी के कृत्यो, उनकी परिवार के प्रति निष्ठा की छोटी छोटी सी घटनाओ का भी विशद वर्णन किया करते थे। सन् १६६१ ई० मे अकाल काल ने जब महाराज को हमारे बीच से छीन लिया तो विपत्ति के विशाल बोझ से दबी राजमाता की हिम्मत, धैर्य और कुशलता देखकर हम सब अचंभित रह गये। १६५७ के चुनावो मे लोक सम्पर्क की उनकी अदभुत क्षमता हम सबको प्रभावित कर ही चुकी थी। अत १६६२ का उनका चुनाव जब कि वे एक बार भी जनता के सन्मुख नही गई और प्रदत्त मतो की सख्या ने फिर भी एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कर दिया, यह हम सब की आशा के अनुकूल

था। ग्वालियर के विद्यार्थी आन्दोलन और उसके बाद के सघर्ष ने राजमाता की सुषुप्त शक्तियो को किस प्रकार जाग्रत किया और किस सरलता से वे सहसा लोकनेत्री बन गई और उनके निखरे हुये व्यक्तित्व का जो स्वरूप देश के सामने आया उससे सब ही अचभित रह गये। सन १९६७ ई० के सघष और पर्दे के पीछे होने वाली नाटकीय घटनाओ तथा देश मे प्रजातत्र के असली स्वरूप ने लेखक को बाध्य कर दिया कि वह इस युग का इतिहास एक व्यक्तित्व को केन्द्र मान कर हिन्दी के पाठको के सम्मुख रख दे—यह पुस्तक उसी प्रयास का मूतरूप है।

पुस्तक की रचना मे सबसे बडा योगदान सरदार चन्द्रोजीराव आग्रे एव मेरे मित्र श्री लोकेन्द्र सिह तथा श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र उपासक का है। पथ प्रदशन के लिये मै महाराज माधवराव सिंधिया एव सरदार कुमार सभाजीराव आग्रे एव उनके स्टाफ के अधिकारी श्री महेन्द्र प्रताप सिह, श्री महिपत सिह, श्री प्रवल प्रताप सिह, भूपेन्द्र सिह आदि का ऋणी हू। म इन सबके प्रति अपना आभार प्रदशन करता हू। पुस्तक का मूल्याकन प्रवर पाठको के हाथ मे है। आलोचको की न कभी मुझे चिन्ता रही है और न है।

ओमप्रकाश भागव

२८ १०-६९
गीता कालोनी,
ग्वालियर



समर्पण

श्रीमंत राजमाता विजया राजे सिंधिया की

अर्द्धशती के शुभ अवसर पर

उनके कर कमलो में दो वर्षो की यह साधना सादर समर्पित है

गीता कालोनी **ओम प्रकाश भार्गव** कार्तिक कृष्णा तृतीया

प्रथम अध्याय

लेखा

प्रथम सोपान

"सच्चे सुख की आधार शिला त्याग है।"

ग्वालियर की विंध्य पवत श्रेणिया कालीसिंध नदी के समीप जब सदानीरा वेत्रवती का, जो आजकल वेतवा कहलाती है नमन करती है तब ही प्रारम्भ हो जाती है वह पावन बुदेला भूमि जो कि बुदेलखण्ड के वीरो के शौय और ओज की कहानी से देश के इतिहास को गौरवान्वित कर चुकी है। मधुकर शाह बुन्देला का देश के प्रति आत्म समपण इस अचल की गौरव गाथा है जो कि आज भी यहा के लोकगीतो की भाव प्रधान कडियो मे झकृत होती है तथा जिसे माताये घर घर म लोरियो म गा गा कर शिशुओ को सुलाती हैं। ओरछा, पन्ना, टीकमगढ, विजावर, छत्रपुर, अजयगढ आदि पूव देशी राज्यो का सान्निध्य लिये इस बुन्देलखण्ड अचल का केन्द्र बिन्दु है 'सागर' नगर जहा विजयादशमी पर्व पर बुन्देलो के कीर्तिगान गूजकर राजपूतो के अद्भुत शौय एव त्याग का स्मरण दिलाते ह। ऊचा घाघरा, रगविरगी ओढनिया कसी हुई तिरगी कचुकिया और गुथी हुई वेणी लिये यहा की सौन्दय मयी ग्राम वधुओ की सुपुष्ट शरीर वेष्टियो मे श्रृगार और वीर रस का अद्भुत सम्मिश्रण है। बुन्देलो के शौय और बल की वीरगाथाय ही इस वीर अचल वालको की रस भरी लोरिया है।

मागर सज्ञक इसी नगर के एक छोर पर, सैनिक शिविर के पास है एक भव्य भवन जिसे 'कौशल कुज' कहते है। यह एक सम्भ्रान्त नैपाली परिवार का निवास स्थान हे। परिवार के अधिपति है नैपाल के राज परिवार से मम्बन्धित प्रिस खडगशमशेरसिंह । बात सन् १६१६ की है उन दिना राणा साहब के सुपुत्र कुअर शमशेरजग बहादुर अधिकतर कायवश देहली रहते थे और शेष परिजन सागर के इस गणा कुअर महल मे स्थित कौशल कुज मे। राणा साहब की सौन्दयशीला पुत्री ने जिसका परिणय आगरा जिले के एक सम्भ्रात यादव वशीय क्षत्रिय परिवार के युवक ठा० महेन्द्रसिंह जी से हुआ था कार्तिक कृष्णा चतुर्थी (करवा चौथ पव) तदानुसार १२ अक्टूबर सन् १६१६ के दिन एक नन्ही सी कन्या को जन्म दिया इसी कौशल कुज के एक कक्ष मे। नवजात बालिका के नाना प्रिस खडग शमशेरसिंह ने इस सुदर सी नन्ही कली—गौरवर्ण नवासी को हर्ष मे भरकर अपने अक मे समेट लिया और उसकी नानी बालिका के शुभ्र मस्तक को चूमकर हर्ष म विभोर हो गई। दुर्भाग्य से उन दिनो सन्निपात ज्वर के उपचार के लिए आधुनिक चिकित्सा के उन्नत साधन न थे और ६ दिन की इस नन्ही सी कली को अपने माता पिता के हाथो मे छोड वह देवी स्वग सिधार गई। मा के पुनीत प्यार से व चिता, यह-सुकोमल बालिका नाना, नानी के पावन अक मे सिमट, क्रूर काल के इस अभिशाप को समझ ही न पाई। उसने नानी को ही अपनी मा समझा और वह नाना नानी के प्रभूत स्नेह मे नहाकर ही मानो धन्य हो उठी। बारसा (नामकरण सस्कार) के दिन इस बालिका का जन्मपत्री के अनुसार राशि का नाम रखा गया 'लेखा दिव्येश्वरी' किन्तु नाना प्रिस खडग शमशेर सिंह ने अपनी फूल सी आँखो की पुतली नवासी को स्नेह मे पुकारा 'नानी'। जिसका अथ नैपाली भाषा मे है "आखो की पुतली"। कालान्तर मे सचमुच ही वह मातृहीना बालिका नाना, नानी के प्यार मे पलकर उनकी आखो की पुतली बन गई और वह सदा ही उनकी गोद मे

लेटी खेलती रहती थी। स्नेह के अक्षय कोष-नाना की क्रोड मे उसे वह ममता पूर्ण शैशव मिला जिसकी सुखद स्मृति उसे कभी भी न भूली।

सागर का वह कौशल कुज कालान्तर मे राजा का महल अथवा नैपाल हाउस कहलाया और आज भी सागर निवासी उसे इसी नाम से पुकारते है। इस नैपाल प्रासाद के कौशल कुज का आगन लेखा की किलकारियो से मुखरित हो उठा और फिर नन्ह नन्हे पैरो की जो दौड भाग शुरू हुई तो निकटस्थ गिरि उपत्यकाओ के वन वीरुध मे आख मिचौनी का खेल होने लगा। आज जिन पहाडियो पर सागर विश्व-विद्यालय के भव्य भवन एव छात्रावास है वहा उन दिनो वन की सघन झाडिया थीं। इस नैपाली परिवार के बालक बालिकाओ के साथ तितलिया को पकडने की होड म लेखा का वन कुसुमो से परिचय हुआ और करौदो के पुष्पो की मद सुगध और मकोई के नन्हे नन्हे फला की छवि उस बाल नन्ह से मन मे बसती गई। मामी के बच्चो तथा अन्य भाई बहिनो के साथ, आए दिन लेखा नाना की आख बचाकर कौशल कुज के निकटस्थ वाटिका मे निकल जाती थी और फिर मालियो को बहका कर बाल सुलभ चपलता से कुज मे से सीताफल अमरूद और बेर के फलो को ले भागना उसका एक प्रिय खेल था। सहतूत के वृक्षो पर चढकर रसभरे फलो का स्वाद और बाग के रखवालो की डाट डपट कभी-कभी इस बालमडली को महगी भी पडती थी जब कि घर पर अभिभावको की ताडना प्रसाद के रूप मे प्राप्त होती थी। नैपाल के राणा वश के गौरव नाना प्रिन्स खडगशमशेर के साथ अब लेखा यदा कदा बाहर घूमने भी जाने लगी और सैर के इन क्षणो मे नाना ने पाया कि उनकी इस लाडली 'नानी' की जिज्ञासा का अत न था। उसके प्रश्नो की बौछार के सामने उन्हें उत्तर देना कठिन हो उठता था। सन् १९२५ के लगभग जब लेखा ६ वष की हुई तो उसकी पढाई प्रारम्भ हो गई और स्नेहमयी मामी रानी कुजर शमशेर का प्यार उस पर बरसने लगा। प्रखर प्रतिभा से सम्पन्न अनुपम सौन्दर्य की स्वामिनी लेखा की शिक्षा

दीक्षा अब मनोयोग मे चल निकली और हिन्दी नैपाली भाषा के अनिरिक्त अग्रेजी का ज्ञान भी इसे सहज मे ही हो गया। इतिहास मे इस बालिका की रुचि शने शने बढने लगी जब कि गणित के प्रश्नो की उलझनें इसे अच्छी नही लगती थी।

सन १९२९-३० की बात है। लेखा के मामा राणा शमशेर जग बहादुर जो उन दिनो विमान-विज्ञान का अभ्यास कर रहे थे इस बार देहली से सागर आए। देहली मे होने वाले हवाई जहाजो के प्रदशनो की चर्चा हुई—यह प्रदशन उन दिनो का एक अनूठा प्रदशन था जिसमे इगलन्ड के पटु विमान चालक भाग लेने के लिए अपने-अपने विमानो के साथ देहली आ रहे थे। देश के विभिन्न भागो से विमानो के इस प्रदशन को देखने के लिए जनता उमडी चली आ रही थी और आकाश मे होने वाली विमानो की कलावाजियो की खबरें लोगो मे कौतूहल भरी उत्सुकता उत्पन्न कर रही थी। परिजनो के बीच जब राणा साहब ने इस प्रदशन की बातचीत की और यह बतलाया कि वे स्वय भी इसमे भाग लेंगे तो उनकी मानाजी की भी उत्कठा जाग्रत हो आई। बच्चे तो देहली जाने के लिए जिद कर ही रहे थे उधर लेखा की मामी रानी कुजर शमशेर जग का भी मन इस विमान प्रदशन को देखने के लिये मचल पडा। बस निश्चय हो गया कि सारा परिवार देहली चलेगा। लेखा की आयु इन दिनो १० वष की थी। सज धज कर नानी मामी और भाई-बहिनो के साथ वह भी देहली की सैर करने और विमान प्रदशन को देखने को उत्सुक थी।

एक दिन प्रात काल ही मोटर द्वारा यह पार्टी सागर से देहली के लिये रवाना हो गई। ललितपुर, झासी होती हुई मोटर दतिया के समीप रुक गई। उन दिनो कालीसिंध नदी पर पुल न था और यह नदी ब्रिटिश सूबे (यू०पी०) सयुक्त प्रदेश की सीमा को ग्वालियर राज्य की सीमा से विभाजित करती थी। मोटर नाव पर रखी गई और आमोद प्रमोद भरी इस मडली ने कालीसिंध को पार किया। मोटर

नाव पर से उतारी गई और पुन सडक पर दौड प्रारम्भ हो गई। डबरा होती हुई राणा साहब की मोटर ग्वालियर आ पहुची। जलपान और विश्राम के लिये पार्टी नगर के मध्य स्थित किंग जार्ज पब्लिक पार्क जो आजकल गाधी पार्क कहलाता है) मे आई। इस विशाल उपवन का उदघाटन जार्ज पचम ने अपनी भारत यात्रा के समय ग्वालियर नरेश महाराजा माधवराव सिधिया के विशेष आग्रह पर ग्वालियर आकर किया था।

ग्वालियर का यह नागरिक उपवन मध्य भारत म उन दिनो अपना सानी नही रखता था। जय विलास प्रासाद के निकट स्थित उवर भूमि मे महाराज ने इस पार्क का बनाने मे अपना काफी समय और धन व्यय किया था और देश विदेश के कई टाउन प्लानस (Town planners) और (Architects) भवन निमाण विशेषज्ञो के परामश के पश्चात् इस योजना को बनाया गया था। इस उपवन मे जहा एक ओर अजायबघर और वन्य पशुशाला थी वही दूसरी ओर देश विदेश के पक्षियो एव जलजीवो के हेतु प्रदशन शालाये, मत्सयशालाये थी। मनोरजन की दृष्टि से तो इसमे समुचित साधन थे ही साथ ही जनता की धार्मिक भावनाओ का आदर करने एव देश मे सब धम समान है के सिद्धान्त पर इस उपवन मे गोपाल मन्दिर, मसजिद, गुरुद्वारा और थियोसोफिकल लाज भी बनाये गये थे जहा प्रति पव पर राज्य की ओर से समान रूप से उत्सव मनाये जाते थे। सम्भ्रान्त नागरिका के हेतु पुरुष और स्त्रियो के क्लब भवन थे जहा नागरिक मडली प्रति सप्ताह मनोरजन के हेतु एकत्रित होती थी और महाराज स्वय इन स्नेह सम्मेलनो मे शौक से भाग लेते थे। नगर के बालक बालिकाओ की तो यह क्रीडास्थली ही था क्यो कि शेर चीतो की गभीर गजन सुनकर बालमडली इसकी ओर सदा आकर्षित होती रहती थी। महाराज माधवराव की मृत्यु के पश्चात् उपवन की सैर करने राजकुमार जीवाजीराव सिंधिया एव उनकी ज्येष्ठ सहोदरा राजकुमारी कमला राजे

अश्वो पर सवार प्राय प्रति सध्या को इस उपवन मे आया करते थे तथा विभिन्न मनोरजनो मे भाग लिया करते थे। स्वर्गीय महाराज माधवराव सिंधिया की शासन कुशलता, दूरदर्शिता और प्रजा रजकता का साक्षी यह पाक जनता के हर वग मे सव प्रिय था।

उस मनोहारिणी सध्या को जब कि १०-११ बर्षीय रूपसी बाला लेखा अपनी नानी मामी और मामा राणा साहब शमशेरजग बहादुर के साथ इस उपवन की सैर कर रही थी एव शेर चीतो की दहाड मे उसका भोला मन उलझा हुआ था कि उसने देखा कि उपवन के रक्षको मे एक हल चल सी मच गई है। सब लोग सतक होकर पक्तिबद्ध खडे हो रहे हे और दूर सडक के उस छोर पर तीन आश्वारोही जा रहे है। जिज्ञासा मे भरी लेखा भाग कर अपनी नानी के समीप जा पहुची। लेखा के मामा, मामी, नानी और बाल मडली उत्सुकता से आगत आश्वारोहियो की ओर देखने लगे। उन्होने देखा एक श्वेत अश्व पर सवार है १३-१४ बष के बालक राजकुमार जीवाजीराव सिंधिया और काले अश्व पर आसीन है उनसे आयु मे कुछ वडी राजकुमारी उनकी दीदी कमला राजे। भाई बहिन आपस मे बातचीत करते हुये आगे बढ रहे थे और उनके पीछे था उनको अश्व विद्या सिखाने वाला शिक्षक। गौरवर्णा लेखा कौतूहल मे भरी राजकुमार और राजकुमारी को निहारने लगी लौर उसने देखा कि उसकी नानी तो इस किशोर राजकुमार की मनोहारिणी छवि देखकर प्रसन्नता मे मग्न हो उठी है। लेखा ने सुना उसकी नानी अपने पुत्र अथात लेखा के मामा राणा शमशेर जगबहादुर से नैपाली भाषा मे कह रही थी —

"भाई बहिनो का यह जोडी कितनी सुन्दर है। इस किशोर बालक की छवि तो एकदम अनुपम ह। मुझे तो अपनी लेखा के लिये भगवान करे ऐसा ही कान्तिवान छविवान युवक मिल जावे—क्या पताक ही ??" और मामा ने नैपाली भाषा मे हस कर कहा —

"आकाश को फल, आखो तरी मर।" वे सोच रह थे कि

आकाश कुसुम को देखकर उसके लिये ललचाने से क्या लाभ ˉ कहा प्रतापी माधवराव सिंधिया का यह राजकुमार ग्वालियर का भावी नरेश जीवाजीराव सिंधिया और कहा बटी लेखा ! लेखा न देखा भाई बहिनो की वह जोडी धीमी गति से जाते अश्वा पर सवार शीघ्र ही जयविलास प्रासाद के भीतर चली गई। लेखा और उसके परिजन राजकुमार की छवि को उस क्षण तक देखते रहे जब तक कि वह लुप्त न हो गई। सामने खडे भव्य जयविलास प्रासाद की शुभ्रता लेखा के बाल्य मन के पट पर अ कित सी हो गई। सध्या को यह मडली देहली के लिये रवाना हो गई जहा आश्चय और उत्सुकता मे भरी लेखा ने देखा यह अदभुत विमान प्रदशन एव भारत की राजधानी देहली का वैभव।

कालातर मे लेखा अध्ययन के हेतु पुन परिजनो के साथ सागर लौट आई और अपनी पढाई म लग गई। समय बीतता गया और शीघ्र ही वह अध्ययन के सोपान पार करने लगी।

सन् १९३२ ३३ का उलझनो से भरा वह समय भी आया जब कि देश मे गाधीजी के आजादी के सघप के आह्वान से लेखा का भोला मन अछूता न रह सका। नैपाली परिवार के हमजोली बालक और बालिकाये जब लेखा को एक गुलाम देश की कन्या कह कर चिढाते थे तो लेखा क्रोध और खिझान से लाल हो उठती थी। समाचार पत्रो मे प्रकाशित असहयोग आन्दोलन के समाचारो को दिखा दिखा कर कहती 'देख लेना मेरा देश अब गुलाम न रह पायेगा। गाधी जी की आँधी मे अग्रेजो पैर उखड जावेगे।"

इन दिनो किशोरी बाला लेखा की मन स्थिति कुछ विचित्र सी थी इस सरल सौम्य बाला की कल्पना मे जाग्रत थी भारत माता की एक तस्वीर—वदिनी श्रृ खलाओ से जकडी हुई कैदी के रूप मे और अकेल मे चुपचाप बैठी वह उस चित्र के सम्मुख अपना अध्य अपरण करती हुई घटो रोती रहती थी—वह कल्पना करती थी कि देश के हजारो युवक युवतियो

के बलिदान की जिससे भारत मा की शृंखलाये टूटेगी और वह आजाद होगी। उनके प्रिय नेता थे सुभाषचन्द्र बोस और वह अपनी हमजोलियों से कहती थी नेताजी के पीछे हजारो लाखो युवक युवतिया है—सब हो अपने जीवन की आहुति देश की बलि वेदी पर चढाने के लिए तैयार है—भला यह बलिदान व्यर्थ कैसे जा सकते है? भारत अवश्य ही आजाद होगा और वह दिन अब ज्यादा दूर नही है। नेताजी की ओजस्विनी लेखनी और उनका प्रखर व्यक्तित्व लेखा के भोले मन पर छाया हुआ था। ये वे क्रान्ति के १९३४-३५ के दिन थे जबकि भारत के जनमानस की आजादी की भावना उसके "इनकलाब जिंदाबाद" के नारो मे प्रस्फुटित हो रही थी और देश का बच्चा बच्चा "टोडी बच्चा हाय! हाय!" चिल्ला कर अग्रेज सैनिको की ओर उगुली उठाता था। हजारो लाखो युवक गाधी जीके असहयोग आन्दोलन के आह्वान पर स्कूल कालिज छोडकर काग्रेस की स्वयसेवक टोली मे आ मिले थे और वे विदेशी वस्त्रो की हर दुकान पर, शराब खाने की हर खिडकी पर पिकेटिग करने के लिए आतुर थे। तिरगे झडे की रक्षा मे, उसकी फहराती उडान मे युवको की टोलिया दीवानी थी। लेखा जब समाचार पत्रो मे फायरिग के समाचार पढती थी और सुनती कि किस प्रकार आजादी के दीवाने नवयुवक नवयुवतियो ने भारत के तिरगे झडे को फहराते हुए गोलियो की बाढ को अपनी छातियो पर झेला है तो वह अदम्य उत्साह मे भर जाती थी। वह अपने इष्ट देव कृष्ण भगवान की पूजा मे बैठी व दिनी भारत मा का चित्र देखकर यह वरदानमागती थी कि उसका देश शीघ्र आजाद हो जाये, भारतमाता के बन्धन टूट जावे और आजादी के दीवानो के यह बलिदान सफल हो।

सन १९३५-३६ मे लेखा की शिक्षा के हेतु नैपाल हाउस मे आये मास्टर रामेश्वर प्रसादजी श्रीवास्तव हिन्दी साहित्य के अनन्य प्रेमी। इन मास्टर साहब ने अपनी शिष्या की शिक्षा दीक्षा को खूब ही सवारा। लेखा का साहित्य और इतिहास के प्रति प्रेम इन्ही मास्टर

माहन की दन थी। श्री मैथलीशरगा गुप्त की "भा न भारती' क छन्दो म वसी हुई दश प्रेम की भावना लेवा को बहन भनी लगी ग्रो हरिग्रौध का "प्रियप्रवास" तो उसके इष्ट देव कृष्ण-राधा की छवि ही को ग्रकित करती थी। तुलमी की कवितावली के छन्द ग्रौर रामायरग की चौपाइया मे भरा राम भक्ति रम लेवा क भान मन का सरावोर कर देना था।

शालेय व्यवस्था के क्रमोच्च सापानो का पार करती हुई, ग्रनति-काल मे ही यह रुपसी वाला एक प्राइवट छात्रा के रुप मे मास्टर साहव द्वारा ज्ञान ग्रजन कर मैटिक की परीक्षा मे प्रविष्ट हुई ग्रौर फिर ग्रा गई वह गुत्थी जिसे सुलझाना लेखा के लिये कठिन हा उठा। ग्रपनी लाडली नवासी को वाहर कालेज की शिक्षा के हेतु भेजना स्नेहपूर्णा नानी को स्वीकार न था ग्रौर उधर लेखा का मन ज्ञानाजन करन ग्रागे पटने, तथा होस्टल के वातावरण मे हमजोलियो के साथ रहने ग्रौर हॉस्टल जीवन का स्वाद चखन को ग्राकु न था।

ग्रीष्मावकाश हुये तो लेखा ग्रपन पिता क गृह उरइ चली गइ। परीक्षाफल निकला तब लेखा न जाना कि वह सफल हा गइ है। उसके हर्ष का पारावार न रहा। पिता न प्रसन्नता मे भर कर पुत्री को वधाई दी। लेखा न ग्रागे पटने की ग्रपनी जव ग्राकाक्षा व्यक्त की तो उन्होने कहा —

"मैं भी यही चाहता हू वटी कि तुम ग्रागे पढो ग्रौर वी० ए० तक शिक्षा प्राप्त करो किन्तु ।'

"ग्राप नानी की तरफ से चितित है ? मुझे पता है कि उनकी इच्छा नही है कि मैं ग्रव सागर से वाहर जाकर ग्रध्ययन करु किन्तु मैं तो ।"

"मुझे पता ह लेखा ! कि ग्रागे पढने की तुम्हारी वहुत इच्छा है किन्तु तुम्हारी नानी इससे वहुत नाराज हो जायेगी सोच लो ?"

"मै तो बनारस जाकर इ टर की पढाई पढना चाहती हू आप नानी को मनाले ।"

'यह कहा सम्भव हे लेखा उनका उग्र स्वभाव तुम जानती ही हो ?" और फिर इन सब बाधाओ के बीच भी पिता ने यही निश्चय किया कि लेखा बनारस जाकर थियोसिफिकल गर्ल्स कालेज मे अध्ययन करेगी। अत ग्रीष्मावकाश के पश्चात् उरई से सीधे लेखा बनारस जा पहुँची और व सन्त कालेज मे प्रवेश ले लिया। रहने को मिला वसत आश्रम का एक कमरा।

सागर मे लेखा की नानी को जब यह पता चला कि उनकी नवासी ने बनारस मे कालेज मे प्रवेश ले लिया है और वह छात्रावास मे रह रही है ता वे व्यथित और चिंतित हो उठी। लेखा ने क्षमा याचना के पत्र लिखे। बनारस मे प्राप्त सुविधाओ का वर्णन किया, मामा मामी ने समझाया किन्तु नानी के मन को सतोष नही हुआ। लेखा के वियोग से उन्ह बडी व्यथा पहुँची तथा उन्ह मन मे वही आशका रही कि उनकी लाडली नवासी छात्रावास मे भला कैसे सुख से रह पायेगी ? जाने उसे कैसा भोजन मिलता होगा ? सहेलियो का किस प्रकार का व्यवहार होगा आदि आदि ?

उधर लेखा का वसन्त-आश्रम छात्रावास मे एक नवीन जीवन प्रारम्भ हुआ। जुलाई का अन्तिम सप्ताह था। कालेज जाने का पहिला दिन था। अभी तक सागर मे लेखा अपनी नानी की एक सजी धजी सु दर गुडिया की भाति रही थी। सदैव बनी ठनी रेशमी चमकीले परिधानो से वेष्टित। इन्ही बहुमुल्य साडियो, रेशमी जम्परो ब्लाउज और ब्राकेट की जाकिटो को लेकर वह बनारस आई थी। लेखा इन्ही सजीले वस्त्रा को धारण कर सज सवरकर जब छात्रावास की अपनी नवीन साथिनो के साथ वसत कालेज की कक्षा मे पहुँची तो उसने पाया कि चारा ओर से कक्षा की छात्राओ की आखें उसे घूर सी

रही हैं मानो वह कोई "माडेल" हो। जीवन मे छात्रावस्था ही एक एसा समय होता है जबकि व्यक्ति, वैभव, सत्ता आदि के प्रमुत्व को स्वीकार करने के लिये तत्पर नही होता। फलत समान भाव क स्नेह के स्वाभाविक आदान प्रदान मे लेखा ने अनुभव किया कि उमके य "सिनेमा स्टार" कट वहुमूल्य वस्त्र वाधक हे। जिस ओर बहिनाप की भावना लेकर वह जाती उसी ओर लडकिया फुसुर फुसुर करती हुइ दूसरी ओर खिसक जाती —लेखा को सशकित दृष्टि से देखती हुई। विवेक शीला लेखा को अपनी साथिनो की सादी सूती साडिया, काच की चूडिया, सादा चप्पले तथा अपने रेशमी वहुमुल्य वस्त्रो आर चमकती सैडिलो को देखकर स्थिति समझने मे विलम्ब न लगा। उसे यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि वनारस की सादी वेशभूषा के साथ उसके वहुमुल्य कपडो का कोई ताल मेल नही बैठ रहा है और जब तक वह स्वय भी इसी सादी वेशभूषा को नही ग्रहण करेगी तब तक उसे अपनी इन सहेलियो का बहिनापा न मिल सकेगा क्योकि य वस्त्र परिचायक है एक "अह" की भावना के, एक वैभव की ठसक ह। शायद यह परिधान उमके सहज मरल भाव के प्रदशन मे वाधक ह। कुछ क्षणा को वह लज्जा मे मिमट सी गई-एक अपराधिनी की भावना को लेकर। ले देकर वह दिन कटा और दूसरे दिन ही लेखा पहुँची बाजार मे-सादी साडियो, सूनी ब्लाउजा के लिये वस्त्र और माधारण चप्पलें क्रय करने।

रात्रि हुई तो अपनी रूम मेट की कनखियो की परवाह न कर लेखा व्यवस्त हो गई स्वय सूती कपडे का ब्लाउज सीने म। अद्ध-रात्रि को भी जब सिलाई ममाप्त होने को न आई और लेखा की आखें सिलाई करते करते लाल हो उठी तो उसकी रूम मेट न रहा

"बहिन अब तो सो जाओ। थक गई होगी—सिलाई कल समाप्त कर लेना।"

"बस उठती हू। ब्लाउज की मिलाई समाप्त ही हो रही है।

ना॒ट जन रही है इम कारण तुम्हे असुविधा हो रही होगी। क्षमा कर दना बहिन।" कहती कहती नेवा सिलाई समाप्त करके उठ पडी। ब्लाउज की तह करके उसे मेज पर रख दिया और सोने की तयारी करने लगी। उस रात्रि को शैया पर लेटी लेटी वह सोचने लगी कि बस बहुत हो चुका। कल से अन्य छात्राओ की भाति वह भी सादे सूती वस्त्र पहिना करेगी और इन रेशमी वस्त्रा को उठाकर बक्स मे बन्द करके रख दगी। उसे सहसा स्मरण हो आता था वदिनी भारत मा का वह चित्र जिसे मन मे आक कर वह मागर मे भी बैठी बैठी रोया करती थी और मा भारती को आजाद करने की वह साध जो नेताजी के भाषणा का पढकर उसके सरल मन मे जग उठी थी। भारत मा अपने तरुणियो से त्याग की अपक्षा करती है—इस तडक भडक का त्याग करना ही चाहिय और वैसे भी सच्चे सुख की आधार शिला तो त्याग ही है। कुछ इस प्रकार की भावनाओ को मन मे सजोये वह किशोरी बाला भारत मा की स्वत त्रता के स्वप्नो मे मग्न निद्रा के अक मे विश्राम करने लगी।

दूसरे दिन हसती खिलखिलाती वह जब कालिज मे पहुची तो कक्षा की छात्राओ ने उस पास से निहारा और फिर उनमे से एक आगे बढकर बोली 'क्याजी ? वह आपकी चमकती दमकतीसाडिया क्या हुई ? क्या

"मुझे शर्मिन्दा न करो बहिन रेशमी सजीली साडियो पहिनकर मुझे कल कालिज मे आना ही न चाहिये था—वह तो मेरी गलती थी। अब मैने निश्चय कर लिया है कि म उन कीमती साडिया को बनारस के जीवन म तो न पहिनूगी तथा उन्हे बक्स मे बन्द करके रख दूगी भारत मा जब तक स्वतत्र नही हो जाती तब तक ।" नेवा ने कहा

"सचमुच।" वह छात्रा बोली

"और नही तो क्या ? तुम सबके स्नेह और प्यार के आगे उनका क्या मूल्य है और फिर बहिन ! जैसा देश वैसा भेष।" लेखा कह उठी और उसने देखा कि उसके चारो ओर क्लास की छात्राओ की भीड सी लग गई है। तभी एक दक्षिण भारतीय छात्रा तारा सबूर ने लेखा के पास आकर उसका हाथ थाम लिया। यह तारा सबूर दक्षिण भारत से अभी आई ही थी और हिन्दी भाषा के एक अक्षर से भी परिचित न थी। उसने अंग्रेजी मे लेखा की सादी वेश भूषा की प्रशसा कर उसे उसके त्याग के लिये सराहा और बस फिर ये दोना किशोरी मित्रता के प्रगाढ बधन मे बध गई। लेखा भी अंग्रेजी भाषा से भलीभांति परिचित थी और वह तारा सबूर को इस हिन्दी भाषा भाषी प्रदेश मे हिन्दी का ज्ञान कराने के प्रयास मे उसकी सखी और गाइड बन गई। दोनो की यह मित्रता एक स्थायी बहिनाप मे परिवर्तित हो गई। लेखा और तारा की इस जोडी मे शनै शनै आ मिली कमला शर्मा लवग सुधा और स्नेह। कक्षा मे लेखा की सहेली स्नेहलता ही एक ऐसी छात्रा थी जो विवाहित थी और दाम्पत्य जीवन की रस भरी कहानियो को जानने की उत्सुक किशोरिया इस रहस्य मयी मधुमती नारी के चारो ओर मडराती रहती थी। यदा कदा जब स्नेह का भारीसा लिफाफा उसके पति के पास से डाक द्वारा आता था तो छात्रावास की किशोरी मडली मे धूम सी मच जाती थी।

कक्षा की छात्राओ से उस दिन पहिली बार स्नेह का प्रसाद पाकर लेखा अपने सूती वस्त्रा और सादे परिवेश से गहन सन्तोष प्राप्त कर सकी। उसका मन हलका फुलका होकर सुरभित कुसुम सा महक उठा। रात्रि को जब वह वसन आश्रम के अपने कमरे मे घुसी तो उसे सुधि हो आई अपने रेशमी वस्त्रो की। सामने रखे काले बक्स मे उसने तह करके अपनी रेशमी बहुमूल्य साडियो को बद कर दिया और फिर डालदिया उस पर एक बडा सा ताला। उसने देखा इस बक्स मे अब बद था उसका वह व्यवधान वहपरदा, वहपट वह बधन जिसमे उसका

निमग्न स्नेह अपनी सहेलिया के प्रति उसका स्वाभाविक प्रेम आवद्ध था। पूर्ण सतोष से वह उस वक्स पर बठ गई जैसे उसका अब कभी भी खुलना उसे अभिष्ट न था। बहुमूल्य वस्त्रो को त्याग कर आज ग्रहण किया हुआ सादा सरल परिवेश लेखा के निश्चल मन को भा गया था। और उसका मन इस त्याग से हलका फुलका हो उठा था।

अधमोई सी लेखा उस रात्रि सीख गई एक मत्र जिसे उसका मन निरन्तर जपे जा रहा था। और जिसे व्यवहार मे लाकर उसका हृदय आज भर उठा था एक असीम उत्साह से और जिसकी उपलब्धि से उसका मन पारिजात सा हलका और सुगंधित हो उठा था और वह मत्र था —

"सच्चे सुख की आधार शिला त्याग है" प्रगाढ निद्रा मे लीन यह तिजोरीवाला अपने अवचेतन मन मे उस रात्रि रट रही थी इसी मत्र को जो कालान्तर मे उसके जीवन का मुख्य सम्बल बना।

त्याग जनित सुख की इस अनिवचनीय अनुभूति के धनी तपोनिष्ठ भर्तृहरि अपने जीवन के अतिम क्षणो मे जब और अधिक त्याग करने मे असमथ हो गये तब उनका हृदय-सन्ताप निम्न मार्मिक पक्तियो मे ही तो फूट निकला था —

> "अर्था न सन्ति न च मु चति मान्दुराशा,
> त्यागेरति वहति दुललित मनो मे।
> याश्चात लाघवकारी स्व वधेत्त पापम्,
> प्राणा स्वय व्रजत कि परिवेदेनेन्॥॥

त्याग की इस वेला मे आज, शात गहरी नीद मे सोती हुई इस सरल बाला "लेखा" के मन मे कितना सुख और सन्तोष समाया हुआ था।

— ० —

सौपान २

अन्याय का प्रतिकार

हर्षोल्लास से भरी वसत आश्रम की वे सध्याये जब कि मीठी मीठी मद मद वायु अपनी मादक गति से बहकर यौवन के अल्हडपन को सखियो की विनोदभरी चुटकीयो और हास परिहास से ओतप्रोत कर देती थी लेखा के किशोर जीवन मे एक अनूठे रस का सचार कर रही थी। काशी के अरुणोदय और साध्य दिनकर की प्रकृत सुषमा जब उसके सहज सरल मानस मे प्रतिभाषित होती थी तब तक उसकी सवेदनशील कल्पना उन्मुक्त उडान भरने लगती थी। अध्यापिकाओ का निश्चल और उदार स्नेह पाकर यह मातविहीना किशोरी नियति के उस क्रूर व्यग को मानो भूल सी गई थी और उसका मन अपने इन गुरुजनो के आदर, सत्कार, मान एव सम्मान करने मे जुटा रहता था। हृदय की भावुक, न्याय और सदाचार के पथ पर दृढ, विनीता लेखा, वसत कालेज की अध्यापिकाओ के विशेष स्नेह की पात्री थी। इन्ही अध्यापिकाओ मे थी एक विशालाक्षी जौहरी जो कि छात्राओ की विशेष श्रद्धा और सम्मान की पात्र थी। उनके स्वभाव की सरलता, कर्त्तव्यपरायणता एव जीवन की शुचिता ने उन्हे छात्राओ की गहन श्रद्धा का पात्र बना दिया था और कक्षा ही क्यो कालेज की समस्त छात्राओ मे भी वे प्रिय थी। लेखा भी उनसे अधिक प्रभावित थी और उनकी अनुशासन प्रियता एव छात्रो के हित की भावना से ओत-प्रेत उनके स्वभाव की प्रशसक थी। वह विशालाक्षी जौहरी मे पाती थी एक आदर्श स्नेहमयी कर्त्तव्यपरायणा अध्यापिका।

सहेलियों के बीच बीते कालेज के ये दिन लेखा के लिये सोने से भरे दिन थे और आश्रम में बीती सुन्दर रातें चांदी से भरी रातें थीं। कितने मूल्यवान थे ये दिन जिनमें एक ऐसी मस्त आजादी थी, एक ऐसा उन्मुक्त जीवन था, एक प्रेम। भावुक उल्लास था जो लेखा के समेटे न सिमटता था। वसन्त आश्रम की प्राय समस्त छात्राओं की वह प्रिय पात्री थी—अपनी प्रतिभा अथवा अध्ययन शीलता और सहानुभूति पूर्ण व्यवहार के कारण। सुषमामयी लेखा अपने चारों ओर शील सौजन्य एवं विनय को लपेटे अपनी हमजोलियों की प्रिय-दर्शिनी थी। नेतृत्व की गरिमामयी योग्यता इसके हॉस्टल एवं कालेज जीवन मे स्पष्ट थी। जहां भी बैठती कुछ सहेलियां सदा साथ होती और मिष्ट भाषिणी लेखा का सदभाव और अल्हड़ विनोदमयी हंसी उनके साथ होती। उसका मिलनसार स्वभाव परायों को भी अपना लेता था। इस कस्तूरी की सुगंध से उन दिनों वसंत कालेज तथा वसन्त आश्रम दोनों ही सुरभित थे।

एक दिन कालेज से लौटती छात्राओं ने देखा कि नगर मे चारों ओर बड़े बड़े पोस्टर लगे है—न्यूथियेटर्स की सिनेमा फिल्म "मुक्ति" के आने के। नगर के प्रसिद्ध छविगृह में यह फिल्म चलने वाली थी। एडवांस बुकिंग चल रहा था। उन दिनों वैसे ही न्यूथियेटर्स की फिल्मों की धूम थी। चण्डीदास, देवदास आदि फिल्मों को देखकर लोग ऊबते ही न थे। सहगल की विषादमयी स्वर लहरी मे गाया गया "दुख के दिन अब बीतत नाही" वाला गीत हजारों लाखों ओठों पर थिरक रहा था और उधर 'बालम आय बसो मेरे मन मे" वाले गीत की कड़ियां, गली गली मे गूंज रही थी। उमाशशि के गीत "प्रेम नगर मे बसाऊंगी घर मे" गाते युवक युवतियों के कंठ थकते ही न थे। किसी भी शहर में न्यूथियेटर्स की फिल्म आई नहीं कि देखने वालों की अथाह भीड़ टूट पड़ती। इन फिल्मों को एक बार देखकर तो किसी का मन भरता ही न था। कलकत्ते के बंगाली कलाकारों ने जिनमे उमाशशि, पहाड़ी



पत्रकारो के समक्ष स्थितीका विशद विवेचन करती संविद नेत्री राजमाता ।



मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री की वार्ता को सुनती हुई राजमाता ।

राजमाता



श्रीमंत विजयाराजे सिंधीया ।

मायान, काननवाला, 'के०सी०डे०' प्रमथेश बरुग्रा ग्रादि प्रमुख थ हिन्दी फिल्मा का वातावरण ही बदल दिया था। कल जहा युवक युवतिया क ग्रभिभावक हिन्दी फिल्मा को उनकी ग्रस्वाभाविकता, ग्रौर निम्न कोटि क परिहास के कारण घृणा ग्रौर उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे वना न्यूथियटस की फिल्मा ने उनका ग्रब दृष्टिकोण ही बदल दिया था। वे ग्रपने परिवार की बटिग्रा व बच्चा के साथ स्वय भी जाकर इन फिल्मा का रसास्वादन करने म न चूकते थे। परिष्कृत रुचि एव सुसस्कृति की परिचायक इन फिल्मो ने मनोरजन के क्षेत्र मे एक नया सदश प्रसारित किया था। इन फिल्मा को परिवार की सकोच शील महिलाग्रा के लिये वर्जित कहने मे पुराने विचारा के पालकागण भी ग्रब हिचकिचाते थे। इसी वातावरण मे ग्राई प्रसिद्ध कलाकार प्रमथेश बरुग्रा की यह कलापूर्ण फिल्म 'मुक्ति"। देखने वाला मे एक होड सी लग गई। प्रमथेश बरुग्रा का ग्रभिनय इसमे ग्रत्यन्त परिष्कृत एव प्रभाव शाली था। वह ग्रपने ग्रभिनय मे भावुकता की बाढ सी लाकर स्वय निरीह, निर्विकार सयासी सा चमकता था। उसका व्यक्तित्व उसकी सुरुचि का तो परिचायक था ही किन्तु दुबल, हाडमास के इस पुतल की दृढता उसके ग्रभिनय को चार चाद लगा देती थी। कलाकार क रूप मे यह दर्शको के मन मे समा जाता था। जिस जिसने इस फिल्म का देखा उसने मुक्त कठ से इसकी सराहना की ग्रौर यही कारण था कि इसकी इतनी प्रशसा सुनकर वसत कालेज की नगर म रहने वाली बहुसख्यक छात्राये इसे प्रथम सप्ताह मे ही देख ग्राई थी। उन्हाने जब ग्रपनी सहपाठिनो से जो छात्रावास म रहती थीं इस फिल्म का देखने को कहा, तो मानो मन ही मन वसत ग्राश्रम की समस्त छात्राग्रा ने इसे ग्रागामी शनिवार को देखन का निश्चय कर लिया। शनिवार का दोपहर को कालेज मे तारा सब्रूर ने लेखा से कहा "क्या शाम को "मुक्ति" देखन चलना है ना?" "क्यो नही? हम सब ही चलेग। क्यो स्नेह तुम भी चलोगी ना ग्रथवा कमरा बन्द कर ग्रपने 'उनको"

लम्बा सा पत्र लिखोगी ?" लेखा ने परिहास के स्वर मे स्नेहलता से पूछा "तुम न ले चलो तो बात और है मे तो चलने को तैयार हू" स्नेह बोली —

"हा हा ठीक है। शनिवार के बाद इतवार भी तो आता है। स्नेह तो इतवार को भी कमरा बदकर अपने फाउन्टेनपेन की पूरी स्याही समाप्त कर सकती है। शनिवार की रात "मुक्ति" ही सही।" कमला शर्मा ने कहा

"और हम से तो कोई चलने को कह ही नही रहा है—
क्या मुझे नही ले चलोगी लेखा ?" लवग ने प्रश्न किया।

"सब साथ ही चलेगी किन्तु ताई से आज्ञा कौन लेगा ?" लेखा ने कहा।

"वह तो मिल ही जायेगी लेखा! मुक्ति फिल्म के लिये भला उन्हे क्या आपत्ति हो सकती है। यह कोई 'हटरवाली' अथवा रणजीत फिल्म कम्पनी की कोई एक्शन फिल्म थोडे ही है जिसे देखने को तागे वालो की भीड लगती हो।" सुलाजिनी कह रही थी। उस सध्या को कालेज से लौटते ही पिक्चर का प्रोग्राम बनाने के लिये सब सहेलिया छात्रावास के बरामदे मे एकत्रित हो गई। लेखा, तारा, सुलाजिनी, कमला, स्नेह, लवग, शुभा, चन्द्रकला आदि टोली बनाकर वसत आश्रम की वाडन ताई के पास सिनेमा देखने जाने की आज्ञा लेने चल पडी।

वसत आश्रम की अधेड उम्र की यह ताई कुछ विचित्र थी। अनुशासन और कठोर नियत्रण का अकुश हाथ मे लिये ४०-४५ वर्ष की आयु को पार करती हुई किन्तु अविवाहिता यह ताई अपने मोटे लेन्स के चश्मे मे से जब किसी छात्रा को कठोर दृष्टि से देखती थी तो ऐसा प्रतीत होता था कि मानो उनके मिजाज की गर्मी से वह छात्रा तो क्या पृथ्वी ही पिघल जावेगी। शुष्क कठ-स्वर, कठोर अनुशासन और छात्राओ पर कभी-कभी अकारण ही रोष करने के कारण वे वसत

कालेज और आश्रम मे अपने शुष्क व्यवहार के लिये प्रसिद्ध थी। इन ताई को 'सफाई' बहुत प्रिय थी और शुभ्रता के प्रति इन्हे एक विशेष लगाव था। वसत आश्रम मे कही अशुचिता का वातावरण एक क्षण को भी न आ जावे इसका उन्हे सदा विशेष ध्यान रहता था। छात्राओ की वेश-भूषा उनके कमरो की स्वच्छता और शुभ्रता के प्रति वे सदैव सतर्क रहती थी और नियत्रण के प्रति इतनी कठोर और सावधान कि किसी भी छात्रा को उनकी आज्ञा उल्लघन करने का स्वप्न मे भी विचार न होता था। अपने दृढ एव सूखे स्वभाव के लिये पूरे कालेज की छात्राओ मे यह ताई प्रसिद्ध थी।

आज सध्या को कालेज से लौटकर ताई अपने बगले के बरामदे मे ही खडी थी कि उन्होने किशोरियो की इस अल्हड मडली को अपनी ओर आते देखा। उनके माथे मे सहसा बल पड गए। लेखा को मडली की अगुवाई करते देख वे कुछ आगे बढ गई और यथा सम्भव अपने कठ को सरस करते हुए बोली—

"क्या लेखा। क्या बात है?"

अन्य छात्राओ की ओर न देखकर और उन्हे रुककर केवल स्वय को सम्बोधित करते हुए देख लेखा कुछ सहम सी गई। अपने सदैव के शात विनीत स्वर मे वह बोली—

"हम लोग अभी कालेज से लौटकर आई थी। सब कह रही थी कि यदि आपकी आज्ञा मिल जाए तो ।" लेखा ने कहा।

"किस बात की आज्ञा?" ताई ने सबको घूरते हुए कहा "ताई! न्यू थियेटर्स की "मुक्ति" पिक्चर आई हुई है। हम उसे देखने जाना चाहती है। कालेज के सब टीचर्स और लडकिया इसकी तारीफ एक सप्ताह से कर रही हैं।" लेखा ने कुछ आगे बढकर विनीत स्वर मे कहा—

"मुक्ति पिक्चर ? बिल्कुल नही । वह एकदम बेकार पिक्चर है— वाहियात । अश्लील ।" ताई ने दप भरे स्वर मे कहा ।

"ताई ! यह तो न्यू थियेटस की पिक्चर हे —अश्लील हो ही नही सकती। सेंसर बोड ने तो इसे बच्चो के लिए भी पास कर दिया है –।" कमला शर्मा बोली—

"रहने दो सेंसर बोड की बात ! मुझे पता हे यह पिक्चर खराब है तुम लोगा के देखने योग्य नही है, गदी है— मेंने सुना है कि इसमे वरुआ को एक निवसना नारी की मूर्ति अकित करते हुए दिखाया है ।"

ताई की इस क्रोधभरी बौखलाहट से किशोरियो की यह टोली एकदम सहम सी गई । सब मिलकर देखने लगी लेखा की ओर मानो आखो ही आखा मे उससे पूछ रही हा "अब" ?

लेखा ने निर्भीक किन्तु सयत स्वर मे कहा —"ताई पिक्चर की तारीफ तो सबने ही की है और किसी ने भी उसे अश्लील या गदी नही कहा है । सब ही कहते हैं कि वरुआ की यह सर्वोत्कष्ट कलापूर्ण कति है और परिष्कृत रुचि की है । और फिर आपने तो ताई ! स्वय यह फिल्म देखी भी नही है ।"

"नही देखी है तो क्या हुआ सुना तो है ! मै ऐसी वाहियात और गदी पिक्चर मे तुम्ह किसी को नही जाने दूगी । तुम्हारे चालचलन की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है ।" ताई यह कहकर अपने क्रोध भरे नेत्रो से देखनें लगी लेखा की ओर मानो उनकी मुख्य अपराधिनी वही हो । लेखा ने एकदम निभय ओर निशक स्वर मे कहा "ताई । पिक्चर का गदा और अश्लील होना तो एकदम झूठी बात है । आप व्यर्थ मे ही हमे रोक रही हैं—क्या एक पिक्चर देखकर हमारा चालचलन ।"

"चुप रहो लेखा ! छोटे मुह बडी बात । मुझे धोखा देने या झूठा बनाने की कोशिश न करो ।"

"मन कौनसा धोखा दिया है आपको ? और कब कब भूठा बनाया है ? जब आपने स्वय यह पिक्चर देखी नही है तो ।" लेखा अब गुस्से म काप रही थी । सदा की नम्र और शात लेखा का मुह क्रोध स एकदम लाल हो उठा था । वह शायद कुछ और कहन ही जा रही थी तभी उसकी साथिन कमला शर्मा उसे पकड के ले गई कमरे की ओर, और पीछे चल पडा उसकी साथिनो का झुड । कमला लेखा के मुह पर हाथ रखे थी । किन्तु वह लेखा थी जो कहे ही जा रही थी—"यह ताई का एकदम अन्याय है—सरासर ज्यादती है । म तो इसका प्रतिकार भूख हडताल करके करूगी । उन्होन जब स्वय यह पिक्चर देखी नही तब अश्लील कैसे ।"

'चुप भी रहो अब लेखा बहिन ।' कमला कह जा रही थी और खीच रही थी अपनी उफनती सखी लेखा को उसके कमरे की ओर ।

नही कमला नही ! ताई को हमे सारी बात समझाना चाहिये इस प्रकार अन्याय को सहन करना भी पाप है । हम सबको भूख हडताल कर देनी चाहिय वह स्वय पिक्चर को देखकर अपनी राय बनाती तो बात और थी' कह कर लेखा हाथ छुडाने का प्रयास करके ताई की ओर पुन जाने का उपक्रम करन लगी । इस बार तारा सब्र ने उसका हाथ पकड कर बरबस उसे कमरे के अन्दर कर लिया और फिर बाहर खडी लडकियो की व्यथित टोली रुआई सी होकर अपने अपने कमरो की ओर खिसकने लगी ।

उस सन्ध्या को वसन्त आश्रम की सभी छात्राओ ने देखा कि अन्याय का प्रतिकार करने की अद्भुत क्षमता इस लेखा मे है। क्षत्राणी का यह जन्म जात स्वभाव छिपा हुआ था उसकी विनय मे, स्वभाव की मृदुलता मे किन्तु आज पता लगा कि वह तो एक शात ज्वालामुखी है जो अन्याय की ठेस पाकर उबल उठता है और फिर कालान्तर मे आजाता है अपने—शात नैसर्गिक रूप में।

यह सत्य है कि अनायास अकारण अन्याय को देखकर क्रुद्ध

सिहनी की भाति इस क्षत्राणी में गजन तजन भी है और अन्याय के ऊपर न्याय की विजय के हेतु सघर्ष करने की अद्भुत क्षमता भी। कमरे मे बैठी सुलाजिनी, तारा सबूर, स्नेह और कमला शर्मा अपनी इस सदा की शात नवनीत सी स्निग्ध और कोमल सखी लेखा के इस नवीन रूप को देख कर अकचका गई। सहसा तारा ने कहा—

"बापरे ! तेरा गुस्सा भी कोई गुस्सा है। ऐसा गुस्सा भी किस काम का। मैं तो जान गई लेखा। तू तो बस एक दम क्षत्राणी है क्षत्राणी !"

और लेखा ठडी हो कर कह रही थी "तारा तू तो समझती नही है। यह गुस्से की बात नही है बात तो यह है कि यदि हम सत्य के मार्ग पर हैं तो हमे किसी से भी नही डरना चाहिये—किसी से भी नही। अन्याय का प्रतिकार तो करना ही चाहिये चाहे फिर कुछ भी हो कुछ भी अन्याय के प्रति मौन होकर बैठना पाप है ।"

"बस देख लिया तुम्हारा अन्याय का प्रतिकार ! तुम तो लेखा ! एकदम बस उबल पडती हो।"

और उस अध रात्रि को पलग पर लेटी लेखा उस नि शब्द सुनसान वेला मे जब कि उसकी सब सखिया निद्रा मे लीन हो चुकी थी कहा सो पाई ? उसे तो बार बार उसका विवेक पाठ पढा रहा था

"अन्याय का प्रतिकार करने का"। यह किशोरी अपनी आत्मा की सरल आवाज के साथ गुनगुना रही थी "अन्याय का प्रतिकार" उसने हृदयगम कर लिया था यह एक और मत्र जिसे शायद वह जीवन पय त न भूल पाए।

ऐसी थी यह बनारस के बसत कालेज की छात्रा कुमारी लेखा दिव्येश्वरी। भगवान आशुतोष की नगरी मे आसीन गौरी महादेव के चरणो को पखार कर यह दिव्या आत्मसात कर रही थी उन गुणो को जो जीवन मे लक्ष्य पर पहुचने के लिये उसे देंगे अदम्य साहस ,स्वाभाविक दृढता और त्याग की सतोषमयी बलवती भावना तथा अन्याय का प्रतिकार करने की

क्षमता और शक्ति । जाह्नवी की निमल धारा से वह ग्रहण कर रही थी उज्जवल मन की दुग्ध सी स्वच्छता को स्थिर रखने की शक्ति ऐसी स्वच्छता जिसमे कैसी ही गदगी, कैसा ही विष और कैसा भी मालिन्य क्यो न गिरे किन्तु वह भी उसकी पावनता और स्वच्छता तथा शुभ्रता का ससग पाकर स्वय भी निमल हो जावे तथा निमल धारा का निर्माल्य भी अछूता रहे।

सोपान ३

अभिनव-मिलन

बनारस के वसन कालेज एव वसत आश्रम मे सुरुचि पूण सहपाठिनो का मखियो एव सहेलियो के रूप मे अपनाकर एव उनसे स्नेह, प्यार औ ममत्व पाकर यह किशोरी लेखा सचमुच निहाल हो उठी। कुशाग्र बुद्धिमनी एव कालेज के मच की प्रमुख नेत्री के रूप मे लेखा को पाकर कालेज का अध्यापिका वग भी प्रसन्न था। सबसे अधिक गुण जिसन लेखा को अपनी सहेलियो तथा अध्यापिकाओ मे ममान रूप से प्रिय बना दिया था उसकी स्पष्टवादिता विनय एव सत्य प्रियता थी। वसत आश्रम मे और कालज मे वसत पचमी का पव "सरस्वती पूजा" के रूप म बडे उत्साह के साथ मनाया जाता था और इस पव पर छात्राये पीले रग के परिधान धारण कर वनदेवी सी लगती थी। लेखा भी इस पव पर अपनी सहलियो के साथ नाटय, सगीत आदि के आयाजना म प्रमुख भाग लेती तथा इस रूपसी की मनोरम छवि आमोद और प्रमाद के वातावरण मे और भी निखर उठती थी। कालेज के वादविवाद और सम्मेलनो मे, सिम्पोजियम के अधिवेशनो मे, एकाकी नाटका और सगीत की बैठको मे लेखा का सहयोग सदैव उल्लेखनीय रहता था। कालेज की इन किशोरियो की मडलिया आये दिन पिकनिक के लिये सारनाथ की ट्रिप लगाती अथवा जाह्नवी की निमल धारा को सैर की जाती तो लेखा इनका एक अभिन्न भाग होती थी। सामाजिक एव सास्कृतिक कार्यो के लिये जहा इस बाला मे असीम

उत्साह था वहां स्वाभाविक रूप म मडलिया का नेतत्व करने की उसमे अद्भुत क्षमता भी थी। कोई भी सोशल गर्दरिग हो अथवा सभा सोसायटी का आयोजन हो, अवश्य लेखा के चारो ओर छात्राओ की टोली एकत्रित हो जाती और वस्तुस्थिति तो यह थी कि लेखा भी अपनी सहेलियो का इतना गहन विश्वास और निश्छल प्यार पाकर निहाल हो उठती थी।

कालेज का प्रथम वष समाप्त हुआ और फिर द्वितीय वष भी आया। इ टरमीडियेट की पढाई जोरो से प्रारम्भ हुई और कुछ मास पश्चात परीक्षा का भय भी छात्राओ के मन मे समाया। लेखा की रूम मेट तारा सब्र भी पढाई मे जुट गई। प्रतिभा की धनी अथक परिश्रमी इस दक्षिण भारतीय वाला का यह प्रयास था कि उसकी सखी लेखा भी अब कालेज की सोसायटी आदि के काम छोडकर बस पूरी तरह पढाई म जुट जाये कि तु लेखा को किताबी कीडा बनना कभी न भाया। उन्मुक्त हास की लहर फैलाती हुई लेखा कमरे म घुसने ही उसे अस्त-व्यस्त कर देती थी। एक ओर पुस्तके पटकती तो दूसरी ओर वस्त्र। चीजो को सजाकर सभालकर रखना तो मानो उसने सीखा ही न था। इधर तारा थी जो अपनी और लेखा की हर चीज को सजाकर रखने का शायद व्रत ले चुकी थी। एक मद मुस्कराहट एक मनोहारिणी स्मित हास्य के साथ तारा अपनी अभिन्न प्रिय सखी लेखा का यह उत्पात सहती और उसकी साडियो की तह करके, वस्त्रा को उचित स्थान पर रखकर कमरे को सजाकर ही दम लेती थी। इन दोनो सखियो का प्रेम, पारस्परिक स्नेह का आदान प्रदान अन्य छात्राओ को बहुत भाता था। शात स्वभाव की तारा इस सवप्रिय सखी लेखा की वसत आश्रम की प्रिय साथिन थी।

शनै शनै दिन और महिने बीतते गये और फिर परीक्षा के दिन भी आ गये। कमला शर्मा, लवग, सुलाजिनी, लेखा, तारा सब्र, स्नेह आदि सभी सखियो पर परीक्षा का भूत सवार हो गया। अध्ययन शीला

छात्राओ के रात की जगार के कारण आखो मे लाल डोरे दिखाई देने लगे —वसत वयार के झोको मे इ टरमीडियेट की परीक्षा आखिर समाप्त हो ही गई। छुट्टिया प्रारम्भ हुई तो सखिया एक दूसरे के गले से लिपट लिपटकर अश्रुपूर्ण नेत्रो को लिये वसत आश्रम से बिदा हुई । लेखा भी परीक्षा से निबट कर अपनी प्रिय सखी तारा सबूर एव स्नेहलता, लवग, कमला आदि से भारी हृदय लेकर विदा हुई और बनारस के इस मस्ताने, सुखद अल्हड जीवन को त्यागते समय उसके भावुक मन मे एक टीस सी उठी। सागर के कौशलकुज के बाद का काशी का यह दो वष का उन्मुक्त जीवन और हमजोलियो के साथ बिताई आमोद प्रमोद से भरी घडिया लेखा के जीवन का वह अध्याय थी जिसकी सुधि रह रह कर उसे आती रही और वह इस सुखद समय को कभी भी न भूल पाई। बनारस से विदा लेकर ग्रीष्मावकास मे लेखा सागर भी गई और अपने पितगृह उत्तर प्रदेश मे उरई मथुरा और आगरा भी। जून मे परीक्षा-फल निकला तो लेखा का नाम सफल छात्राओ की सूची मे था। लेखा की दक्षिण भारतीय सखी तारा सबूर और अन्य सहेलिया जिनमे सुलाजिनी, स्नेहलता, लवग और कमला शर्मा आदि भी थी सफल हो गई थी। सखियो के पास से बधाईयो के पत्रो का ताता सा लग गया और उधर सागर के परिजन भी लेखा की इस सफलता पर फूले न समाये। इस बार पिता, मामा एव मामी की स्वीकृति प्राप्त कर लेखा ने बी०ए० के अध्ययन के हेतु ईसाबेला थोमसन महिला विद्यालय लखनऊ मे प्रवेश लिया। लखनऊ का यह आई० टी० गर्ल्स कालेज उन दिनो उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि मे अपना सानी नही रखता था और दूर दूर से देश के विभिन्न प्रातो से छात्रायें यहा अध्ययन के हेतु आती थी। लेखा ने यहा आकर छात्रावास मे रहने का प्रबध किया तथा अपने मजुल सरल स्वभाव के कारण वह शीघ्र ही अपनी सहयोगिनिओ की प्रियदर्शिनी बन बैठी। लेखा की प्रसन्नता का अन्त न रहा जब उसने पाया कि उसकी बनारस की सहपाठिन और

प्रिय सखी सुलाजनी ने भी इसी कालेज मे प्रवेश लिया है तथा छात्रावास मे उसको और लेखा को एक ही कमरा मिला है। लेखा और सुलाजनी की मित्रता यहा प्रगाढ हो गई और बहिनापा का वह पूव स्नेह बधन और भी दृढ हो गया ऐसा मधुमय जिसने इन दोनो सखियो के छात्रावास जीवन को सरस कर दिया। सुलाजनी शात स्वभाव की प्रतिभाशालिनी छात्रा थी और लेखा के प्रति उसका स्नेह बनारस से ही था। लखनऊ मे छात्रावास के एक ही कमरे मे आकर उसने कमरे को स्वच्छ रखने सजाने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। लेखा की हर प्रकार से सहायता करने को वह सदा उद्धत रहती थी और दोनो सखिया मिल कर बाजार जाती फल एव अन्य आवश्यक सामान क्रय करती तथा उनके सिनेमा आदि के प्रोग्राम भी साथ ही बनत। सुलाजिनी और लेखा की यह जोडी उनके स्वभावो की पूरक थी। सुलाजिनी को पुस्तको के प्रति तथा अध्ययन के प्रति लगन थी तथा वह लेखा के कामो मे कभी आडे न आती थी वरन् उसे अपनी इस सखी से पढाई मे सहायता ही प्राप्त होती थी और उधर सुलाजिनी अपने स्वभाव के अनुसार लेखा की बिखरी चीजो को सुव्यवस्थित रखने मे सदैव सहायक थी।

आई० टी० कालेज मे आकर लेखा की रुचि और भी परिष्कृत हो उठी तथा सभा सोसायटी का शौक भी बढ गया तथा कालेज की विभिन्न सोसायटी मे वह उत्साहपूवक भाग लेने लगी। यहा अध्यापिकाओ का व्यवहार अपेक्षाकृत उदार था एव छात्राओ को अपने गुणो के विकास का यथेष्ठ अवसर प्रदान किया जाता था। क्षत्रिय बाला लेखा दपमयी तो थी ही साथ ही लोकप्रियता एव नेत्रत्व के गुण उसमे स्वभावगत थे। आज्ञाकारिणी विनय से परिपूण सरल निश्छल स्वभाव वाली रेखा बहिनापा निभाने मे यहा भी पूणतया सफल रही तथा कालेज और हॉस्टल मे सखियो का एक दल उसे सदैव घेरे रहता था।

इधर सवगुणसम्पन्न अपनी भाजी लेखा के लिये उचित वर की

खोज मे उसके मामा मामी लगे हुय थे। वे चाहते थे लेखा के लिए ऐसा घर जहा उसके गुणो का सहज विकास हो सके और आकाक्षा कर रहे थे ऐसे वर की जो उसे सिर आखो पर रख कर उसके जीवन म अमृत घोल सके। अपनी लाडली भाजी को हर प्रकार से सुखी देखने की उनकी आतरिक अभिलाषा उन्हे इस खोज के लिए प्रेरणा दे रही थी। इन्ही दिनो सहसा ग्वालियर से ठा० चदनसिह जी का जो कि लेखा के मौसाजी थे सागर आना हुआ। ठाकुर साहब की राणा साहब से बातचीत हुई तो लेखा के लिए वर खोजने का भी प्रश्न उठा। ठाकुर साहब ने परामर्श दिया कि यदि राणा साहब उपयुक्त समझे तो वे लेखा की बातचीत ग्वालियर के युवक नरेश जीवाजीराव सिधिया से कर सकते है। राणा साहब को सहसा ११-१२ वर्ष पूर्व की उस घटना का स्मरण हो आया जब कि ग्वालियर के किंग जार्ज पार्क मे उन्होने श्वेत अश्व पर सवार एक सुदर कातिवान राजकुमार को देखा था और उनकी माताजी के मन मे यह आकाक्षा उठी थी कि कही लेखा का सम्बन्ध इनसे । उन्होने कहा भी तो था "आकाश को फल, अरसो नरी मर'

ठाकुर चदनसिह ग्वालियर के राज्य सचिवालय म राजनैनिक विभाग मे एक उच्च अधिकारी थ और युवक नरेश एव उनके परिजनो से उनके अच्छे सम्बन्ध थे। उन्होने मन ही मन अपनी भाजी अनिन्द्य सुन्दरी लेखा की ग्वालियर महारानी के रूप म सुखद कल्पना की और शीघ्र ही इस विषय मे महाराज के मौसा सरदार कृष्णराव गोविन्दराव महाडिक से परामर्श करने का निश्चय कर लिया। एक दिन जब कि सरदार महाडिक सभावित रिश्तेदारियो के सम्बन्ध मे बातचीत कर रहे थे तब ठाकुर चदनसिह ने अपना सुझाव भी उपस्थित कर दिया। सरदार साहब को युवक महाराज के विचारो की पूरी जानकारी थी और उनका प्रयत्न था कि उन विचारो के अनुरूप ही वे ग्वालियर की भावी महारानी का चयन करने मे महाराज की सहायता करे। उपयुक्त

समय पर महाराज से उनकी बातचीत हुई तो ठाकुर साहब ने ग्वालियर के फोटोग्राफर श्री डाइस द्वारा खीचा हुआ कुमारी लेखा दिव्येश्वरी का चित्र महाराज के सन्मुख उपस्थित कर दिया। महाराज ने चित्र देखा तो वे उसे कई क्षणो तक केवल निहारते ही रहे। रूप की यह सौम्य निरभ्र छटा उनके मनमे जा वसी।

उधर लेखा लखनऊ मे अपनी रूम मेट सुलाजिनी के साथ एक सध्या को बाजार से कुछ सामान क्रय करके लौटी ही थी कि उसे मामा मामी का बुलावा आ गया। लेखा सागर पहुँची और मामा मामी के साथ बम्बई। ताजमहल होटल मे सब लोग ठहरे हुए थे। लेखा ने पाया कि उसके मौसा चदनसिह जी भी ग्वालियर से आये हुए है। वे ताजमहल होटल मे आये तो उन्होने समाचार दिया कि सध्या को सब लोग चाय के लिए यही आवेगे।

सध्या को ताजमहल होटल के लौज मे जब लेखा मामा मामी के साथ थी, उसने देखा कि उसके मामाजी के साथ एक कातिवान तेजस्वी युवक आ रहा है तथा ग्वालियर के सरदार महाडिक भी उसके साथ है। राणा साहब और लेखा की मामी रानी गुजन शमशेर ने आगत अतिथियो का स्वागत किया तथा उन्हे चाय के हेतु निमत्रित किया। सब लोग चाय के लिए बैठ गये तो राणा साहब की ग्वालियर के तेजस्वी युवक नरेश महाराज जीवाजीराव सिधिया से बहुत देर तक बातचीत होती रही। ग्वालियर के पिकनिक स्पाट, वहा के और नगर के मनोरम विशाल उद्यान, किग जाज पार्क, राज्य के पुरातन इतिहास आदि को लेकर घर और परिवार की भी चर्चा हुई तो राणा साहब ने जाना कि युवक महाराज को अपनी सहोदरा कमला राजे की असामयिक मृत्यु से गहरा सदमा पहुचा है। भाई बहन मे प्रगाढ प्रेम था। उनका शैशव साथ ही बीता था और दोनो ने साथ ही घुडसवारी की एव सैनिक अभ्यासो की शिक्षा ली थी। इस वार्तालाप के मध्य राणा साहब ने पाया कि युवक महाराज मे प्रतिभा है, शालीनता है और विनय है। ग्वालियर की

प्रजा की सेवा की भावना उनमे कूट कूट कर भरी हे तथा वे शासन मे लोकतत्र प्रणाली के अनुरूप सुधार प्रारम्भ करने के लिए प्रयत्नशील है रानी कु जर महाराज की सौम्यता एव शिष्टता से अत्य त प्रभावित हुई क्योकि उ होने पाया कि लेखा की ओर टकटक लजा कर देखना तो दूर इस अवधि मे महाराज की आखे भी ऊपर को न उठ सकी थी। उधर लाज के मार से दवी लेखा आखो कोरो से केवल देख पाई उस तेजस्वी आकृति की एक झलक। इस क्षणो मे न जाने कितनी शरम आ समाई थी उसके भोले मन मे। उसने पाया कि सामने बैठे युवक मे अदभुत सौम्यता शाँति और तेज है। उसकी शालीनता एव नम्रता ने लेखा को बहुत प्रभावित किया। उसकी मौन तटस्थता उसके सौम्य शिष्टाचार की द्योतक थी। लेखा का भोला मन चुपचाप इस युवक की सराहना मे मग्न हो गया। कुछ समय के पश्चात् जब अतिथि गण वर्ली महल चले गए तो लेखा की मामी रानी कु जर ने मुस्कराते हुए अपने पति राणा साहब कु जर शमशेरजग बहादुर से कहा "हमे तो ग्वालियर के महाराज बहुत भले लगे। आपका क्या विचार है।"

"हमारा विचार ? आप तो लेखा बेटी का विचार पूछिये।" क्यो लेखा बेटी ?"

"मैं क्या जानू मामी ??" कहकर लेखा मन मे एक विचित्र प्रसन्नता का अनुभव करती हुई शरम मे डूबी वहा से चटपट खिसक गई।

रात्रि को समुद्र महल वर्ली से टेलीफोन पर जब महाराजा सिंधिया के मौसा सरदार महाडिक ने सूचित किया कि सम्बन्ध तो अब निश्चित ही समझिये तो लेखा का मन अदभुत आल्हाद से भर उठा। उस रात्रि वह किशोरी बाला ठीक से सो भी न पाई क्योकि उसने सुना और जाना था कि ग्वालियर के सिंधिया शासक गण अपनी प्रजा वत्सलता के लिए सदा ही प्रसिद्ध रहे हं। अब तो सचमुच उसे भी इसी वश परम्परा मे जाना होगा तो क्या वह उस पावन परम्परा का निर्वाह कर पायेगी ?

क्या वह अपनी निस्वाथ सेवा, परिश्रम पूग अघ्य, ग्वालियर की प्रजा की ममता पूरा भोली भावनाओ पर चढा सकेगी ? उसने सुना था कि वर्तमान युवक नरेश जो अब उसके जीवन साथी होने जा रहे है प्रजा की सेवा हेतु सदैव सन्नद्ध रहते है। उनका सारा समय, उनकी समस्त शक्तिया प्रजा सेवा की परम्पराओ को निभाने मे ही लगी रहती है। अब उसे भी जाकर इस पथ का अनुसरण करना होगा। क्या वह इसके लिए स्वय को पूरी तरह तैयार कर पायेगी ?

उसन मन मे सोचा इस सब के योग्य उसे बनना ही होगा।

बम्बई से फुरसत पाकर सामान बाधने तथा अपने कालेज जीवन से विदा लेने जब लेखा लखनऊ पहुची तो सुलाजिनी अपनी प्रिय सखी के वाग्दान का समाचार जानकर प्रसन्नना से झूमउठी। लेखा के भावी यशस्वी जीवन की आकाक्षा करते हुए उसने अपने मन के अत तम से सखी को अपनी शुभाकाक्षाये अर्पित की और लखनऊ से उसे विदा दी। नियति के इस विधान पर लेखा और सुलाजिनी उन क्षणो मे सचमुच न्यौछावर थी।

सोपान ४

वह युवक

प्रभात की इस बेला मे जबकि नारो की ज्योति क्षीण हो कर उषा के आगमन का सदेश दे रही थी और सुरभित पवन मद गनि से चलकर उपवन की सोई हुई कलियो को जगा कर वायुमडल को सौरभ से पूण कर रहा था ग्वालियर नगर के बाहर सैनिक शिविर के पास तीन अश्वारोही तीव्र गति से जा रहे थे। ब्राह्म मुहुत मे जय विलास प्रासाद से निकल कर मुरार छावनी की परि-क्रमा करते हुए वे कम्पू के सैनिक शिविर मे आ पहुँचे थे जहा सेना की टुकडिया परेड मे व्यवस्त थी। सैनिक अधिकारियो के एक दल ने इन अश्वारोहियो को पहिचान कर सेल्यूट किया तो अश्वो की गति धीमी हो गई। अश्वारूढ युवक ने अपने अश्व की लगाम कसते हुए कहा—

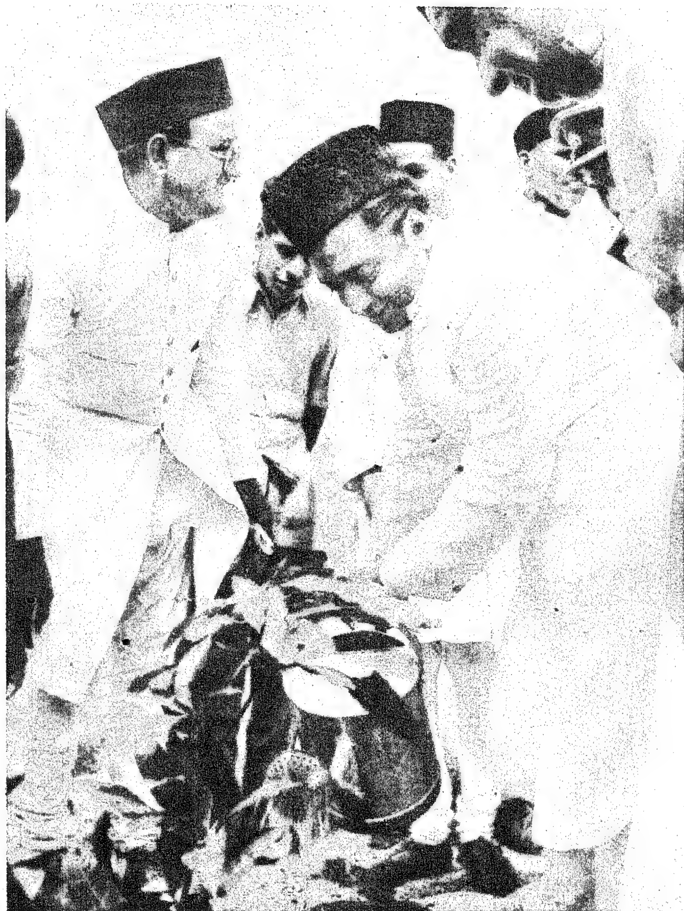
"क्या धीरजसिंह ! सालुके और लगढ किस ओर है ?"

"महाराज ! आम खोह मे टारगेट प्रेक्टिस के लिए अपनी पार्टी के साथ गए है।"

"और कमलसिंह तथा देशमुख ?" युवक महाराज ने पुन पूछा

"महाराज ! वे सिथौली की ओर घोडा पर गए हे। हुकुम हो तो बुलाऊ उन्हे।"

"नही हम उसी ओर जा कर उनसे मिल लेगे।" कहकर



जनहित के कार्यो मे रत स्व. महाराज जीवाजीराव सिंधीया हरसी नहर के किनारोपर पौधे लगाकर जल-सिंचन करते हुये लेखक महाराज के समक्ष खडा है ।

श्रीमंत महाराज जीवाजीराव सिंधीया



कै. महाराज जीवाजीराव वाढ़ग्रस्त मंदसौर में, जनता

अश्वारूढ युवक महाराज ने अश्व का मुह झामी रोड की ओर मोड दिया।

स्वस्थ सुन्दर कान्तिवान, शासक की गरिमा से युक्त यह युवक था, ग्वालियर का तेजस्वी नरेश महाराज जीवाजीराव सिंधिया।

प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त म शैया त्याग नित्य क्रिया मे निवृत्त हो जय विलास प्रासाद मे अपने कतिपय अधिकारियो के साथ सैनिक शिविर की ओर निकल जाना इसका नित्य का नियम था जिसमे शायद ही कभी व्याघात होता हो। ग्वालियर मे स्थित विशाल सेना के कम्प मे अधिकारीगण तो दूर, सेना का एक-एक सिपाही अपने इस युवक महाराज से परिचित था और विलक्षण बात तो यह थी कि हजारो की भीड मे बडे सैनिको को उनका यह महाराज एक-एक सैनिक का नाम लेकर बुलाता था। इस अद्भुत स्मरण शक्ति पर रियासत के अधिकारी अचम्भे म आ जाते थे। महाराज को अपने सैनिको पर, अपनी सेना पर नाज था और सैनिको को अपने रोबीले किन्तु सरल स्वभाव वाले महाराज पर। सेना की परेड मे, उनके खेलो मे, उनके अभ्यासो म उत्साहपूर्वक यह युवक भाग लेता था और यही कारण था कि ग्वालियर सेना की टीम सैनिक सम्मेलनो, प्रतियोगिताओ आदि मे उच्च स्थान प्राप्त करती थी।

इस युवक नरेश को अश्वो से बहुत प्रेम था और अश्व सेना की टुकडिया बहुधा अपनी प्रतियोगिताओ मे महाराज को अपने बीच पाती थी। जय विलास प्रासाद की अश्वशाला उन दिनो प्रसिद्ध थी और बम्बई मे सिंधिया की अश्वशाला के घोडे तो सारे देश की घुड-दौडो मे विख्यात थे।

२२ नवम्बर, १९३८ को इस मेधावी युवक ने २१ वर्ष की आयु मे ग्वालियर राज्य की शासन व्यवस्था सभाली थी। केवल नौ वर्ष की छोटी अवस्था मे अपने पूज्य पिता माधवराव सिंधिया को खो कर उसने और उसकी सहोदरा कमला राजे ने शाति पाई थी

अपनी स्नेहमयी मा महारानी गजराराजा की गोद मे। पिता एक कुशल प्रजाप्रिय शासक थे—ऐसे शासक जिन्हे ग्वालियर की प्रजा प्रेमवश "माधो महाराज" के नाम से पुकारती थी और माधो महाराज अपनी प्रजा को अपना "अन्नदाता" कहा करते थे। यह माधवराव सिंधिया उन दिनो देशी नरेशा मे अपनी सानी नही रखते थे और इनकी प्रजा-वत्सलता की कहानिया दश के विभिन्न भागो मे विख्यात थी। कुशल शासक हाने के साथ साथ वे एक आदश पिता भी थे और अपने पुत्र ग्वालियर के भावी नरेश के दूरदर्शी अभिभावक भी। जब राजकुमार जीवाजीराव केवल चार वष की ही आयु के थे तब माधो महाराज ने उन्हे और उनकी बहिन कमला राजे को ग्वालियर की सेना मे प्राइवेट सैनिक के रूप मे एक रुपया मासिक वेतन पर प्रविष्ट करा दिया था। दोनो बालक भोर होने ही घोडो पर बैठकर परेड करने के लिए सैनिक शिविर मे जाया करते थे। ६ वष के राजकुमार ने सन् १९२२ म ग्वालियर के शासक को, युवराज के पद के अनुरूप सेना की परेड मे नेतृत्व करते हुये सलामी दी थी। स्पाटनो के जीवन के समान युवराज के जीवन को ढाला जा रहा था। २१ वष की अवस्था मे सैनिक जीवन का पूरा अभ्यस्त यह युवक शासक सेना के हर वग का प्रिय भाजन था। इसकी प्रारम्भिक शिक्षा जहा अग्रेज शिक्षको और अभिभावको की देखरेख मे हुई थी वहा 'सन् १९३४ मे जिद करके इसने ग्वालियर नगर के उन दिनो के विक्टोरिया कालेज और आजकल के रानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय मे प्रवेश लेकर साधारण छात्रो के साथ शिक्षा ग्रहण की थी। सव साधारण के साथ सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन के बीच एक युवराज का अपनी ही रियासत के एक कालेज मे अध्ययन करना ब्रिटिश शासको को किंचित भी न सुहाया था किन्तु मा-बेटे की जिद के कारण अ ग्रेज रेजीडेन्ट को इसके लिए सहमत होना पडा था किन्तु फिर भी सर टेरेन्स कीज आदि अनुभवी बृटिश अभिभावक युवराज के साथ रहकर उनकी देख रेख करते थे।

कालेज की दो वप की ि ा क पश्चात् १६ वप की आयु म युवराज को प्रशासनिक शिक्षण के हेतु भारत के विभि न प्रान्ता म अनुभवी शासका के पास भेजा गया जब कि सर मिजा इस्माइल, सर सिकन्दर हयात खा आदि के सानिध्य और शासकीय अनुभव का लाभ उसे मिला शैशवकाल से ही युवराज मे कुछ गुण ऐसे थे जिनसे भावुकता और दयावान प्रकृति का स्वाभाविक औदार्य टपकता था। सरल स्वभाव, विनय और गुणग्राहकता ने इसे ग्वालियर राज्य के निवासिया के हृदया का स्वामी बना दिया था। याय और दया का दड समान रूप से उनके पास सदैव रहता था। युवराज के रूप म ही इस उदार युवक का सम्पर्क राज्य की जनता के विभिन्न वगा से भली भाति हो चुका था और उनका सम्मान एव विश्वास प्राप्त करने मे उनका शिष्ट स्वभाव एव सम्मति बहुत सहायक सिद्ध हुई थी। विभिन्न नागरिक उत्सवा पर प्रजा के मध्य जाकर एव उनके सुख-दुख मे भाग लेकर युवराज न उस प्रजावत्सलता की परम्परा का परिपोषण ही किया था जिसक विकास सिन्धिया वश मे माधोराव महाराज द्वारा हुआ था।

नवम्बर १९३८ मे शासन की बागडोर सभालते ही महाराज जीवाजीराव सिधिया ने अपन घोषणा पत्र मे प्रजा की समस्त कठिनाईया को दूर करने की प्रतिज्ञा करते हुए कहा

> 'प्रजा की सबसे गरीब लोगो के जीवन की परिस्थितियो मे सुधार करना और यह देखना कि उन्हे स्वतत्र रूप से अविलम्ब न्याय मिल अच्छी शिक्षा तथा चिकित्सा सम्बन्धी समस्त लाभ सबके लिए सहज सुलभ हो और अपने राज्य के व्यापार व उद्योग का हर प्रकार से विकास करना मेरा परम कर्त्तव्य होगा।"

इस युवक महाराज ने उस दिन २ नवम्बर सन् १९३८ को जो प्रजा-सेवा का व्रत लिया उसे निबाहने के लिए वह सचमुच ही आतुर हो उठा। राज्य के प्रत्येक जिले मे अपने मत्रियो के साथ जाकर गावा मे जनता के बीच खडे होकर इसने उनकी कठिनाईयो को सुना और

समझा। बिना झिझक के जनता का अपने राजा के पास आने और तकलीफो को कहने की सुविधा प्रदान की। प्रात काल मत्रियो और विभाग अधिकारियो के साथ महाराज का दल अश्वो पर सवार हो गावो के लिय निकलता तो सध्या को ही १०-१२ मील दूर के पडाव पर पहुच पाता और दिन मे कम से कम १५-२० गावो के अन्दर जाकर चौपालो पर बैठकर ग्रामवासियो की बातें सुनी जाती और उन्हे तुरन्त न्याय प्रदान करने का आयोजन होता।

एक दिन की बात है ग्वालियर से ३० मील दूर मुरैना के एक गाव मे अधिकारियो एव ग्राम्य जनता की भीड के साथ यह युवक घोडे पर सवार चला जा रहा था कि एक खलिहान के समीप खडी भीड ने उसे रोक लिया। प्रजा के सुख-दुख की बातो मे युवक का ध्यान अपने घोडे से हटकर अब ग्रामवासियो पर था। सहसा उगलियो पर लगाम का भार पडा और घोडे ने गदन बढाकर समीप के खलिहान मे पडे भूसे म मुह मार दिया। शायद कुछ अन्न के दाने भी उसके मुह मे जा पडे हो। किसी का भी ध्यान उस ओर न गया किन्तु वहा से चलते समय अधिकारी को आदेश हुआ कि अन्न की ढेरी का मूल्य जिसम घोडे ने मुह मार दिया था पूरा पूरा किसान को चुकाकर रिपोर्ट की जावे। किमान मना करता ही रहा पर उसकी कौन सुनता। महाराज कह रहे थे कि यदि बागढ ही खेत को खाने लगे तो फिर ।खेत का विस्नार कहा?" ग्रामीण जनता रह-रह करके अपने युवक शासक के न्यायपूण दष्ट की सराहना कर रहे थे।

मुरैना के बाद हुआ मन्दसौर का दौरा। महाराज अधिकारियो के माथ निरीक्षण कर रहे थे एक स्कूल का। कक्षाओ मे जाकर कुशाग्र बुद्धि बालको का उत्साहवद्धन किया जा रहा था और इस निरीक्षण के समय महाराज की आँखें वह सब देख रही थी जो दूसरो की समझ के बाहर था। निरीक्षण समाप्त हुआ और शासक के साथ दौरा पार्टी कम्प मे वापस आ गई। तत्काल अपने खेमे मे जाकर निजी धन मे से

२५ रुपये लाकर इस युवक महाराज ने मदमौर के डाक्टर के हाथ म रखते हुए कहा "डाक्टर साहब ! आपका याद है उस छठी क्लास के ग्रामीण लडके की सूरत जो आखो के बिल्कुल पास किताब रखकर आपको पाठ सुना रहा था। उसकी आखे शायद खराब है। आप उसे चश्मा दिला दीजियेगा।" डाक्टर का मुह झुक गया था और दया माया से भरे इस युवक शासक का वह मन ही मन अभिनन्दन कर रहा था। एक नही अनेको घटनाये गाव-गाव मे जन श्रुतियो की तरह समा गई थी इन युवक शासक के औदार्य की कहानी बनकर, जिन्ह लोग अब भी चोपाल मे बैठाकर अलाव से तापते हुए कहते नही थकते ह।

अब वह वर्ष आ गया वह कठिन काल, जबकि भारत के विदेशी शासक बुरी तरह उलझ गए विश्व युद्ध मे। बात सन १६३६-४० ई० की है जब कि द्वितीय महायुद्ध मे भारत से हर वस्तु अग्रेजी सेनाओ के लिए बाहर जा रही थी और देशवासी अभाव से त्रस्त दाने दाने को तरसने लगे थे। बगाल के दुर्भिक्ष ने देश भर मे हाहाकार मचा दिया था। अन्नव का अभाव देश के हर अ चल मे व्याप गया था और शहरो म तो लोग अन्न की कमी के कारण आकुल हो उठे थे। ग्वालियर भी अन्न के लिए तरस उठा। बाजार मे फैला हुआ अन्न अचानक दुकानो से गायब हो गया। जनता त्रस्त होकर दौड पडी जयविलास प्रसाद की ओर—अपने राजा से वह अन्न की माग कर रही थी। शनै शनै स्थिति जटिल होती गइ और उसी सध्या को भीड ने प्रासाद के समक्ष भूख हडताल प्रारम्भ कर दी। विशाल जन समूह राजा के दर्शनो और उनसे अन्न के प्रबन्ध की याचना करने के लिए आकुल हो उठा। पुलिस के दस्ते बढती हुई भीड की बाढ को रोकने मे कठिनता का अनुभव कर रहे थे। महाराजा ने स्थिति को समझा। उन दिनो राज्य के ईन्सपेक्टर जनरल पुलिस एक अ ग्रेज थे। वे तुरन्त महाराजा के पास पहुँचे और कहा कि पुलिस के जवान अधिक समय तक इस विशाल भीड को रोकनें समर्थ न होंगे। इसका तितर-बितर करना परम आवश्यक है नही तो

धन जन की हानि की सभावना है। उन्होने फायरिंग की आज्ञा मागी। महाराज ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। आधे घंटे के पश्चात वही अंग्रेज अधिकारी पुन महाराज के कक्ष मे आया और मस्तक पर से पसीना पोंछते हुए घबराहट के स्वर मे बोला

"Your Hıghness ! There ıs no other alternatıve than to fire Kındly gıve your consent I shall see that the mınımum lıves are lost"

महाराज ने द्रढ स्वर मे केवल कहा "नहीं" और वे उठकर बाहर बरामदे मे आ गए। कोई उपाय न देख अधिकारी ने लाठी चार्ज का सुझाव दिया किन्तु फिर भी वह महाराज को राजी न कर सका। भीड महल के समीप क्षण क्षण बढती जा रही थी। सहसा उसे एक बात सूझी और उसने महाराज से कहा

"Your Hıghness ! ıt ıs chılly cold Permıt me to dısperse the crowd wıth cold water hoses"

महाराज अब मौन न रह सके बोले

"General ! They may not be your countrymen but they are mıne My people are my responsıbılıty They want bread and not cold water"

अंग्रेज जनरल खीझता हुआ महल से विदा हो गया। महाराज उठे और स्वय भीड के समक्ष आकर खडे हो गए। बोले "भाइयो आप घर जाइए। जहा से भी होगा अन्न मगाकर मै आपको दूगा। कल ११ बजे तक अन्न की व्यवस्था हो जाएगी। म स्वय आज भोजन जब करूगा जब आपके लिए अन्न उपलब्धि की व्यवस्था सम्पन्न कर लूगा।"

महाराज का सदेश बिजली की तरह चारो ओर उस विशाल जन समूह मे प्रतिध्वनित हो उठा और फिर सहसा भीड ने अपने युवक महाराज की जय-जयकार करते हुए महल म विदा ली। उसी सध्या को जिवाजी क्लब म अधिकारिया और जनता के सम्मानित सदस्या की मीटिग बठी। विदिशा, गुना और शिवपुरी के लिए गल्ला रान ट्रक रवाना हो गए वरिष्ठ अधिकारिया का फोन किए गए। ग्वालियर के दाल बाजार मे गोदामो के ताले खुलवाए गए और हजारा बोरी गेहू ग्वालियर नगर के राज मदिर गोरखी के विशाल प्रागण म एकत्रित हो गया। दूसरे दिन ११ बजे भारत की पहली राशनिग योजना कार्यान्वित कर दी गई और जनता जय-जयकार की गज करती हुई सरकारी दुकाना मे अन्न प्राप्त करने लगी। तभी तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इस युवक महाराज के शासन सूत्र ग्रहण करने के समय आशीष देते हुए कहा था

"महाराजा ना बहुत ह।
महा प्रजारजक बनो ॥"

राष्ट्र-कवि का शुभाशीष ग्रहण कर सचमुच यह युवक प्रजा रजना मे व्यवस्त हो उठा था। कुछ मास पश्चात महाराज के काना मे भनक पडी कि ग्वालियर मे अदालता म, हाईकोट मे कुछ ढील ढाल है। मुकदमे काफी बाकी पडे ह तथा न्यायाधीश वग ने समय की पाबन्दी मे ढील डाल दी ह। एक दिन अचानक अपने सचिव सरदार चन्द्रोजी-राव आग्रे को साथ म लेकर महाराज ठीक ११ बजे जा पहुचे हाई कोट भवन मे। उन दिनो नगर के मध्य मे स्थित बाडे पर न्यायालय का भवन था जहा इन दिना कृष्णराम बलदेव बैंक का मुख्य कार्यालय है। मुख्य द्वार के समीप जीने पर दोना व्यक्ति एक रजिस्टर लिये खडे थे, जिस पर प्रत्येक न्यायाधीश अपनी उपस्थिति के प्रतिदिन हस्ताक्षर करता था एव समय अकित करता था। एक मेज उठाकर

उस पर वह रजिस्टर और कलम दवात रख दी गई। एक एक कर जज और मजिस्ट्रेट आते गये और सामने महाराज को एक भीड के साथ खडा देखकर लज्जा से सिर झुकाते अभिवादन कर तथा रजिस्टर मे हस्ताक्षर कर अपनी अपनी कचहरियो मे जाते रहे। अजीब दृश्य था न तो महाराज ने और न उनके सचिव न किसी भी अधिकारी से कोई प्रश्न किया और न हाई कोट के न्यायमूतियो से कोई बात हुई। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सबने मौन व्रत ले लिया हो मत्र मुग्ध सी भीड यहै तमाशा देख रही थी और दोपहर के १२-३० बजने पर जब सब हस्ताक्षर हो चुके तब महाराज ने स्वय उस पर हस्ताक्षर करके रजिस्टर कोट रजिस्ट्रार को वापिस कर दिया और अपने सचिव सरदार आग्रे के साथ अपने कार्यालय मे वापिस चले गये। उस दिन के बाद शायद ही कोई अवसर आया हो जबकि न्यायाधीशो के विलम्ब से आने की शिकायत सुनी गई हो। ऐसा था वह युवक महाराज और ऐसी थी उसकी शासन सुधार प्रणाली।

ग्वालियर के जीवाजी क्लब मे एक सध्या को महाराज सदस्या के बीच बैठे हुये थे, क्लब की कायकारिणी की बैठक चल रही थी। अगस्त का महीना था और घनघोर वर्षा हो रही थी तभी सहसा राज्य के राजस्व मत्री सरदार माधव राव फालके के नाम टलीफोन आया। बैठक छोडकर सरदार फालके टलीफौन रूम मे पहूचे और दस मिनट पश्चात जब वापिस आये तो उनके मुख पर चिन्ता के चिन्ह स्पष्ट थे। महाराज ने उनकी ओर देखकर पूछा "क्यो बडे बुआ साहब क्या बात है आप उदास क्यो हो गये ? किसका फौन था ?" उत्तर मे सरदार माधवराव फालके ने कहा "महाराज मन्दसौर से कलैक्टर का फौन था। वहाँ बाढ आ गई है। कई गाव जलमग्न हो गये हैं। मन्दसौर नगर के आस पास भी पानी आ गया है शायद नगर की जनता को खतरा है।" "तीन दिन से वर्षा खूब हो रहीहै। आप बुआ साहब फिर एक बार सूबा साहब को फौन लगाइये। मैं स्वय बात करू गा।" क्लब की मीटिंग

समाप्त कर महाराज जय विलास प्रसाद पहुचे और उसी रात म दसौर की बाढ के सार समाचार एकत्रित कर राजस्व मत्री एव कतिपय अधिकारियो का साथ लेकर सूय निकलने के पूव ही स्वय मन्दसौर के लिये रवाना हो गये। प्रत्येक विभाग के अधिकारियो मे महाराज की मन्दसौर यात्रा की खबर बिजली की तरह पहुँच गई और फिर बाढ पीडितो की सहायता का काय जोरो से प्रारम्भ हो गया। महाराज स्वय एक सप्ताह तक बाढ पीडित क्षेत्र के गाव गाव मे गये। सुबह से शाम तक उनका सारा समय सहायता कार्या मे आयोजन करने म जाता था प्रतिदिन ३० ४० मील का दौरा गावो के घोडे पर जाकर करने के उपरान्त भी उन्ह सन्तोष न होता था। बाढ पीडित गावो मे नये घर बनाये गय, मवेशी क्रय कर ग्राम्य वासियो को दिये गये। लगान माफ किया गया और भोजन पान की नि शुल्क सावजनिक व्यवस्था एक मास तक निरन्तर चलती रही। वस्त्र और कम्बल ग्राम्य जनता को राज्य की ओर से दिय गये तथा प्रजा के दु ख को बाट लेने के लिये महाराज आतुर हो उठे। उस दिना की महाराज के अनवरत परिश्रम और उदारतापूण ममता की कहानिया आज भी मदसौर निवासियो के ओठा पर थिरक रही है।

राज्य का शासन सूत्र ग्रहण करन के उपरान्त महाराज ने जनता की शिकायते सुनने के लिये नगर मे कई स्थाना पर पेटिया लगा दी थी जिनमे से प्राथना पत्र एकत्रित किये जाकर महाराज के निजी अधिकारिया के पास आते थे और उनमे लिखित आरोपा की, जनता के कष्टो की विशिष्ठ जाच अधिकारियो द्वारा की जाती थी। उच्च अधिकारिया को उनके कार्यालय मे ठीक ११ बजे फोन करके उनसे बात कर यह पता लगा लेना कि वे समय पर नियम से कार्यालय मे पहुचते है अथवा नही यह तो शायद महाराज का स्वभाव ही बन गया था। राज्य मे न्यायिक एव प्रबन्ध अधिकारियो (Judiciary and Executive) का प्रथक्करण हो ही चुका था। प्रजा को वास्तविक न्याय और वह

भी शीघ्र ही प्राप्त हो इसकी व्यवस्था करने मे यह युवक शासक निमग्न था।

शासन के काय मे सदा व्यवस्थत रहकर एव प्रजा का सुख साधन अपना लक्ष्य बनाकर वह युवक भूल गया था अपने जीवन की अस्त व्यवस्थता तथा निजी सुख एव सगी के अभाव को। ब्रिटिश शासको एव उसके अन्नाय मित्रो की ओर से कई बार जब विदेश यात्रा का प्रस्ताव उसके सम्मुख आया और इगलैड के सम्राट का निमत्रण भी लन्दन यात्रा के हेतु उसे प्राप्त हुआ तो उसने इस सुझाव को यह कह कर टाल दिये कि राज्य की सुचारू व्यवस्था के उपरान्त ही किसी प्रकार का सैर सपाटा उसके लिये सभव होगा।

ग्वालियर के लोग, सिंधिया घराने के हितेच्छु, उसकी स्नेहमयी मा एव निकट रहने वाले वयोवद्ध अधिकारी जब उससे ग्वालियर की महारानी की माग करते तो वह केवल मुस्करा भर देता था और कहता था "मा! में अभी बूढा तो हो नही गया हू। जल्दी भी क्या है।"

उमकी एक-मात्र बहिन, राजकुमारी कमला राजे, की उनके विवाह के एक सप्ताह पश्चात् ही हुई दुखद मृत्यु ने इस युवक के जीवन मे एक अवसाद का पुट भर दिया था और उसे समाज के प्रति, उसकी रूढियो एव युगो पुरानी दुखदायी शृखलाओ के प्रति विद्रोही बना दिया था। साझ सवेरे के एकात क्षणो मे जब दिवाकर की रश्मियां क्षितिज के साथ आख मिचौनी खेलती थी और नभ वसुन्धरा की मिलन वेला रग बिरगी होकर अबीर गुलाल उडाती थी तो वह सोचता था कि काश कोई ज्योतिमयी आकर उसके एकाकी जीवन मे भी अनुराग का प्रकाश पुज भर दे और उसका दिन सोने का और रात्रि चादी की हो उठे। उसकी कल्पना के झूले मे मे झूल रही थी एक ऐसी साथिन जो जन्मजात विद्रोहिणी हो समाज के रूढि बधनो के प्रति, अन्याय और अत्याचार के प्रति और जिसकी अमित कार्य शक्ति पाकर वह प्रजारजन मे लवलीन हो सके और जिसका अनुराग ज्योति पुज उसके धुधले मन को आल्हाद

और प्रसन्नता के प्रकाश से जगमगा है। कहा मिलगी ऐसी साथिन कहा है वह जिसकी निरन्तर प्रतीक्षा म उसका मन पछी विश्रम है उसके तरुण मन मे झाक रही थी एक अनुपम सौन्दर्य की देवी की मनोहारिणी छवि, एक मीठी चाह, एक मधुर कामना, एक गनी दिव्या जिसका सान्निध्य पाकर उसका मन कमल भ्रमर गुजरित हो उठ। सरल और सादगी से ओत प्रोत प्रममयी एक पत्नी की वह आकाक्षा कर रहा था जो उसकी सच्ची मित्र और जीवन साथिन हो।

इस बीच उसका सम्पक आया अपने राज्य के एक अधिकारी चन्दनसिंह से। ठाकुर साहब ने अपने महाराज का सकेत पाकर खोज प्रारम्भ की ग्वालियर की भावी महारानी की और इस छानबीन म सहयोग दिया युवक महाराज के छोटे मौसा सरदार कृष्णराव महाडिक ने। विभिन्न दिशाओं से रूपसी गुणवती बालाओं के चित्र आये। राज-कुमारियो के भी सुझाव आय और त्रिपुरा नरेश की ओर से प्रस्ताव आकर ठहर भी गया किन्तु भावी का विधान तो कुछ और ही था। एक दिन सरदार महाडिक ने अपने भाजे से एकान्त म कहा कि राज-कुमारियो के दायरे से निकल कर यदि हम ग्वालियर की भावी महा-रानी को खोजना है तो ठाकुर चन्दनसिंह जी की भाँजी नैपाल के राणा वश के दीपक राणा कुजर शमशेरजग सागर निवासी की सहोदरा की पुत्री सर्वोत्तम प्रतीत होती है। सुना है वह बाला स्वभाव से तो सवगुण सम्पन्न ही साथ मे अनिन्द्य सुन्दरी भी है। ठाकुर साहब भी उसकी बहुत प्रशसा करते है। महाराज की फिर स्वय ठाकुर चन्दनसिंह जी से विस्तत बातचीत हुई तो शीघ्र ही उस रूपसी बाला का चित्र भी महाराज के नेत्रो के सम्मुख आ गया और उन्ह कुमारी लेखा दिव्येश्वरी के अनु-पम गुणो का परिचय भी प्राप्त हुआ। इस दैविक बाला के शुचि मृदुल स्वभाव एव सुसस्कृत रुचियो की बाते उनके कानो मे पहुँची और उनका मन सुख सतोष से भर उठा। उन्हे लगा कि उसकी खोज समाप्त हो गई है और फिर बम्बई मे ताजमहल की वह सध्या भी आई जबकि

महाराज के नयनो मे वह अनुपम मनोहारिणी छवि भूल उठी। ऐसा प्रतीत होता था कि

"देखि रूप लोचन ललचाने।
हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥
भये विलोचन चारु अचचल।
मनहु सकुचि जिमि तजे दिगचल॥

आखो की छिपी कोरो से इस छवि का दशन कर महाराज का मन प्रदीप इस दीपशिखा के सम्मुख हतप्रभ हो उठा। उन्होने अनुभव किया कि मानो

जनु विरचि सब निज निपुनाई।
विरचि विश्व कह प्रगटि दिखाई॥
सुन्दरता कहुँ सुदर करई।
छविगृह दीपशिखा जनु वरई॥

"तुलसीदास"

सच तो यह है कि शील सौजन्य से भरा यह युवक ताजमहल के उस कक्ष मे उन क्षणो मे इस अनुपम रूप राशि को आख उठाकर ठीक से देख भी न सका और न कुछ कह ही सका। सकोच ने मानो उसकी दृष्टि और वाणी पर ताला डाल दिया था। किन्तु कभी कभी शब्द विहीन मौन भाषा तो शब्दो की भाषा से कही अधिक प्रभावशाली होती है और बस फिर महाराज की, उनके परिजनो की खोज समाप्त हो गई। युवक के स्वप्नो की रानी, अब साकार हो उठी थी कोमल भावनाओ ने मानो पूर्ण अभिव्यक्ति पाई थी। वर्षो की साध अब मूर्तिमान हो उठी थी। ग्वालियर के युवक महाराज जीवाजीराव सिंधिया का सम्बन्ध कुमारी लेखा दिव्येश्वरी से अब निश्चित हो चुका था।

—o—

सोपान ५

शुभ परिणय

राणा कुजर शमशेरजग बहादुर ने अपने बहिनोई ग्वालियर के ठा० चन्दनसिह जी से आज के भव्य अतिथि ग्वालियर नरेश महाराज जीवाजीराव सिंधिया के विषय मे शनै शनै सब कुछ जान ही लिया था। उन्हें विदित हो गया था कि जहा एक ओर इस सुसस्कृत सम्भ्रान्त क्षत्री युवक नरेश के पास प्रतिभा, ऐश्वय और चरित्र है वहीं उस के पास है दया माया से भरा कोमल भावुकता पूर्ण उदार हृदय। ख्याति प्राप्त लक्ष्मी सम्पन्न पिता के इकलौते पुत्र होने पर भी उसकी शिक्षा दीक्षा के विषय मे जो गहन रुचि उसके अभिभावकों के द्वारा ली गई थी और चरित्र निर्माण की जो सीख उसने ग्रहण की थी, उसे जानकर उन्हें परम प्रसन्नता हुई। अपनी सवगुण सम्पन्ना, लाडली भाजी लेखा के भविष्य के लिये उनका मन प्राय सशकित रहता था। क्यो कि ऐसा वर और परिवार उन्ह दिखाई नहीं पड रहा था। जहा उसके गुणो का सर्वांगीण विकास हो सके। लेखा की भावुकता उसका नम्र शिष्ट स्नेह से ओतप्रोत स्वभाव उसकी विनयपूर्ण सहृदयता कहीं प्रतिकूल वातावरण मे पहुच कर ठेस न पाये तथा उसके कोमल मन को दुखी न कर द यही शका उसकी नानी, मामी के मन मे रहा करती थी। सहसा अपने परिजन ठाकुर चन्दनसिह जी से इस युवक महाराज की यशोगाथा सुनकर और अब उनके आदर्श मनोहारी व्यक्तित्व को देखकर राणा साहब बहुत प्रसन्न हुये। उन्होने सुना था कि ग्वालियर राज्य मे राजा और

प्रजा के सम्बन्ध बहुत मधुर है और "माधो महाराज" पर तो ग्वालियर वासियो को बहुत गर्व था—अब उस उदार, प्रतिभा सम्पन्न युवक से वार्तालाप कर उन्होने जाना कि प्रजा का सुख दुख ही उसका अपना सच दुःख है। उसकी कर्तव्यपरायणता नम्रता और विनय से वे बहुत ही प्रभावित हुये और उन्हे विश्वास हो गया कि उनकी भाजी लेखा का भविष्य इस युवक के हाथो मे पूर्णतया सुरक्षित है। प्रत्येक दृष्टि से उन्हे यह सम्बन्ध अनुकूल जान पडा और फिर रानी कुजर ने सिंधिया वंश के इस तेजस्वी युवक महाराज के साथ सम्बन्ध निश्चित करने मे फिर देरी न की बात पक्की हो गई और शीघ्र ही शहनाई की धुनो मे दो हृदयो का मिलन अगवानी के मधुर गीत बजाने आरम्भ कर दिये। दूसरे दिन बम्बई के वर्ली स्थित समुद्र महल मे राणा साहब निमंत्रित होकर गये तो महाराज और उनके मौसा सरदार महाडिक एव ठाकुर चन्दनसिंह जी के साथ विचार विमर्श हुआ। दोनो ओर की समस्याओ को सुलझाया गया और यह निश्चित हुआ कि आगामी मास यानी फरवरी मे ही इस शुभ परिणय का प्रबन्ध किया जावे। सरदार महाडिक और चन्दनसिंह जी मुख्य प्रबन्ध कर्ता थे अत उनकी बात मानकर राणा साहब ने यह स्वीकार कर लिया कि वे अपने समस्त परिजनो के साथ विवाह के एक सप्ताह पूर्व ग्वालियर आ जावेगे तथा शुभ परिणय स्थली ग्वालियर ही होगी।

लेखा को लेकर अब राणा साहब लखनऊ पहुचे जहा लेखा ने आई० टी० कालेज के जीवन और अपनी सखी सुलाजिनी से विदा ली और शीघ्र ही वह अपने परिजनो के मध्य 'सागर' नगर मे आ गई।

फरवरी सन् १९४१ के प्रारम्भ मे एक दिन सहसा ग्वालियर राज्य वासियो ने अपने नरेश के शुभ परिणय का समाचार सौभाग्याकांक्षिणी लेखा दिव्येश्वरी के साथ सुना। राज्य के लाल गजट मे और राजकीय साप्ताहिक पत्र "जयाजी प्रताप" मे घोषणा प्रकाशित हुई थी कि निकट भविष्य मे २१ फरवरी को महाराज का परिणय ग्वालियर मे ही सम्पन्न

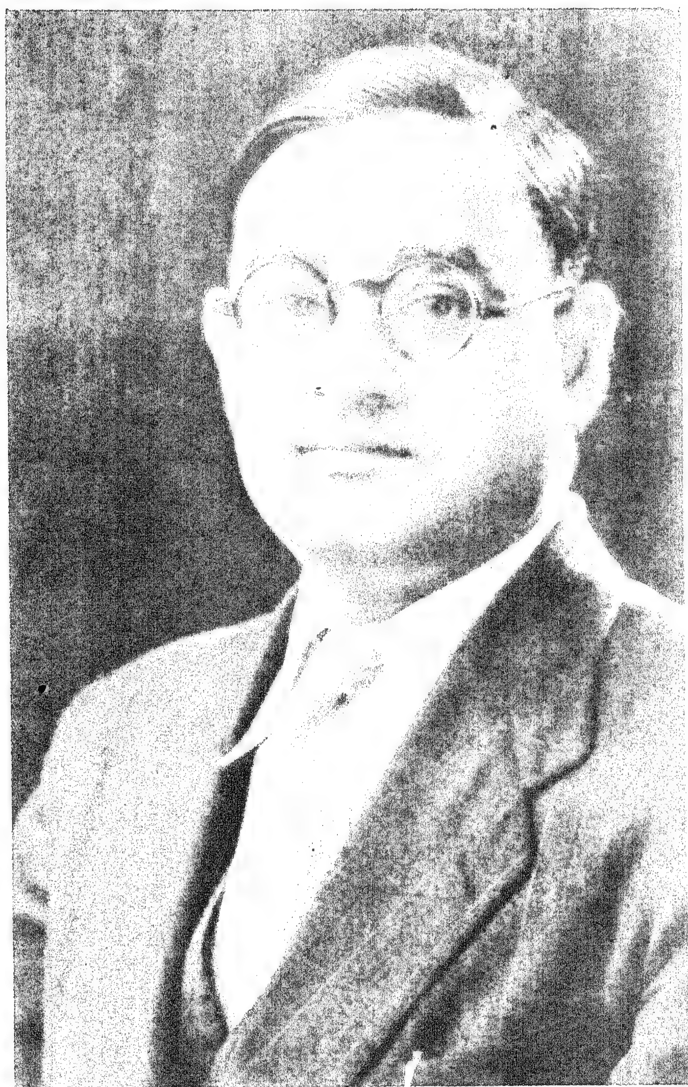
हागा । प्रजा हप विभोर हो उठी, अपनी मगलमयी, कल्याणी महारानी लखा दिव्येश्वरी का स्वागत करन का । नौबत और शहनाइ की मजुल ध्वनिया ने राज्य के गाव गाव को उल्लास स भर दिया। बाल, वद्ध युवक युवती प्रसन्नता से भर उठ । उनका आह्लाद अब अपरिमित था जिसकी अभिव्यक्ति सारे राज्य मे प्रमोद पक्ष के सयोजन के रूप मे हा रही थी। घर-घर तोरण कलश सज रहे थे। सारे नगर के घरो म सफाई पुताई की एक होड सी लग गई थी । जनता के इस हष का एक विशेष कारण यह भी था कि उनकी भावी महारानी पर्दे मे रहने वाली, राज मर्यादा के बधनो मे बधी, सब साधारण के हष विषाद सुख-दुख से अपरिचित एक राजकुमारी न होकर, एक प्रगतिवादी सम्भ्रा त कुल की सुशिक्षित एव साधारण परिस्थितियो मे पली कन्या थी, जिसे उनके साथ साम्य भाव स्थापित करने मे कठिनाई न होगी। शीघ्र ही वह दिन भी आ गया जब कि ग्वालियर के कम्पू मे स्थित सरस्वती भवन म राणा शमशेरजग एव अन्य परिजनो द्वारा शुभ परिणय का आयोजन हुआ ।

ग्वालियर नगरवासी अपने नगर को तोरणा, पताकाओ एव मगल कलशो से सजाने मे लगे थे और उधर अपने प्यारे महाराज का विवाहोत्सव देखने के लिये सैकडो मीलो से चलकर ग्रामवासियो के झुड के झुड टोलियो मे मगलगान गाते उमडे चले आ रहे थे । उनका उत्साह अनुपम था और हष असाधारण । नगर आज मानो इन्द्रपुरी हो उठा हो । सव त्र फूलो की वर्षा हो रही थी। राजप्रासाद जयविलास एव सरस्वती भवन असख्य दीपको की ज्योति से जगमगा उठे। २१ फरवरी को रात्रि के १० बजकर ३१ मिनट पर वेद की ऋचाओ एव मत्रो के समवेत पाठ के बीच यह शुभ परिणय सम्पन्न हुआ। मामा राणा कुजर शमशेरजग बहादुर एव मामी रानी गुजन शमशेर जग द्वारा विधिवत कन्यादान दिये जाते ही शखो की मगल ध्वनि से विवाहस्थली गूज उठी।

स्वर्णाभूषण एव रेशमी वस्त्रो स सुसज्जित हाथी पर महाराज के साथ बैठी सुषमामयी और लाजभरी नववधू की नगर परिक्रमा के समय नागरा आखो ने मोदमग्न होकर देखा और शख की मगल ध्वनि के साथ जनता ने अपना हर्षा फुल्ल जयघोष मिलाकर अपने आतरिक आल्हाद की अभिव्यक्ति की। हजारो हाथ अभिवादन के लिये उठे और नव-दम्पति ने विनम्र भाव से उनका आभार प्रदर्शित किया। यह शोभा यात्रा जयविलास की ओर निरतर अग्रसर होती गई जहा पहुचकर वर-वधू का हार्दिक स्वागत देश के विभिन्न राज्यो से एकत्रित राजे, महाराजे एव गण मान्य व्यक्तियो के साथ अम्मा महाराज श्रीमत गजरा राजा ने किया। राजमाता द्वारा अपनी पुत्रवधू का यह अभिनव ममतापूर्ण स्वागत एव जयविलास की आज की मनोहारणी छवि देखने ही योग्य थी।

निरतर एक पक्ष तक बाहर से आये सहस्त्रो कृषको को नगर के लक्ष्मीपुत्रो की ओर से भोजन वितरित होता रहा तथा राज्य की ओर से असमर्थ असहाय व्यक्तियो को सदाव्रत बटती रही नगर मे दीपावलियो एव अतिशबाजियो की छटा देखने को मिलती थी और राजाओ की शोभा यात्रा जनता की उत्सुकता का केन्द्र बनी रहती थी। नव वधू द्वारा लक्ष्मी पूजन की रात्रि को आगत राजे महाराजाओ के समक्ष युवक महाराज के आदेश पर उनके बडे मौसा सरदार चन्द्रोजीराव सभाजीराव आग्रे ने ग्वालियर की महारानी के नवीन नाम की घोषणा करते हुये शुभाकाँक्षा व्यक्त की कि हमारी लक्ष्मी स्वरूपा महारानी श्रीमत विजयाराजे सिंधिया का वरदकर वर्षो पर्यन्त ग्वालियर वासियो पर अन्नपूर्णा बन कर छाया रहे। हजारो कन्ठो की हर्ष ध्वनि ने इस नवीन नाम का स्वागत किया और अपनी मगलमयी महारानी के प्रति शुभाकाक्षाये व्यक्त की। श्रीमत विजयाराजे की जयघोष से नगर गूज गठा। सारे राज्य मे हर्ष और प्रमोद की धारायें प्रवाहित होने लगी।

लोगो ने पाया कि वर्षो पूर्व की सागर मे जन्मी बेटी लेखा तथा



—श्री ओमप्रकाश भार्गव, बी. एस सी. विशारद, डिप्. फॉर. (ऑक्सफोर्ड

का की बनारस के बसन्त कालेज और लखनऊ के आई० टी० कालेज की सर्वप्रिय छात्रा और नैपाली क्षत्रिय वंश के लाड-दुलार के सागर मे पली लेखा दिव्येश्वरी आज महारानी विजया राजे सिंधिया के रूप में ग्वालियर के भाग्याकाश में अवतरित हुई थी। दिव्य सौंदर्य की स्वामिनी, सुषमामयी शीलयुक्त, गुणवन्ती, गुण गरिमामयी महारानी को पाकर ग्वालियर वासियों ने अपने भाग्य को सराहा और लोकप्रिय युवक महाराज ने एक आदर्श प्रेममयी पत्नी पाकर सुख और सन्तोष की सांस ली। दो संस्कृतियों के इस मधुर मिलन की गरिमामयी गाथा को ग्वालियर के मराठा परिवारों ने भी समझा और जाना तथा ग्वालियर के वासियों ने अपनी नवीन महारानी में देखा हृदय एक ऐसी सादगी और सरलता से युक्त अन्नपूर्णा के जिसे पाकर वे स्वयं प्रफुल्लित हो उठे।

[illegible] आर सामाजिक संस्थाओं ने अभिनन्दन पत्रों द्वारा अपनी कृतज्ञता एवं प्रसन्नता की अभिव्यक्ति की और पत्रों ने अपने [illegible] निकालकर अपनी राजमहिषी का स्वागत किया। अपने प्रिय राजदम्पति का स्वागत करने के लिये राज्य के हर भाग में आतुरता की और आग्रह भरे निमन्त्रण चारों ओर से जयविलास प्रासाद में आ रहे थे। जनता का अभिनन्दन स्वीकार करके महाराज घूंघट से सुवेष्टित राजमहिषी के साथ राज्य के जिलों में गये और प्रजा के हार्दिक स्नेह का परिचय पाकर अपने को कृतार्थ समझा। पर्दे में रहने वाली नव वधू, नई महारानी को यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि ग्वालियर का राज परिवार इतना लोकप्रिय और सर्वप्रिय है। ऐसे वातावरण में आकर उन्हें परम प्रसन्नता हुई। देशी रियासतों के राजाओं की निरकुशता की कहानियां ही ब्रिटिश शासन ने विज्ञापित की थी किन्तु उसके अनूठे अपवाद भी हैं यह अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देखकर महारानी को असीम हर्ष हुआ।

बनारस के बसन्त कालेज और आश्रम की एक दिन की सर्वप्रिय

लेखा और ईसावेला थोबन कालेज लखनऊ की गरिमामयी छात्रा कुमारी लता दिव्येश्वरी आज ग्वालियर की महारानी विजया राजे सिंधिया के रूप मे अपनी स्नेहत्व प्रजा का अमिट निश्छल प्यार पाकर गौरवान्वित थी। बनारस की हमजोलिया और अध्यापिकाए भी इस परिणय उत्सव मे सम्मिलित हुई थी और विशाल ऐश्वर्य की छाया मे भी लेखा के मुख से सीधा सहज-सा "बहिनजी" का प्यार भरा सम्बोधन सुनकर वे हर्ष से गद्गद हो उठी थी आशीर्वादो और शुभकामनाओ के ताने-बाने मे इस नवीन राजमहिषी के उज्ज्वल भविष्य की कामनाये सम्मिलित थी।

महारानी के शील एव स्नेह से परिपूर्ण व्यवहार और उदारता ने ग्वालियर के महिला समुदाय को शीघ्र ही सहसा अपना लिया। चारो ओर उनके सादगी और सौजन्यपूर्ण व्यवहार का यश परिमल व्याप्त हो गया। महिला मडल मे उनके ओज भरे स्वरो ने ग्वालियर के नारी समाज के जन-मानस को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया और अनायास ही राज्य की नारी मडली ने अपना नतृत्व अपनी महिमामयी महारानी के कुशल हाथो मे सौप दिया। महाराज अपने हृदय की स्वामिनी के इस नवीन रूप और लोकप्रियता को देख मुग्ध थे। उनका मन युगो की इस चरम साध की पूर्णता को देखकर मुखरित हो उठा। ग्वालियर नगर की कुलवधुओ ने जब अपनी नवीन महारानी के दर्शन किये तो दीपशिखा-सी इस असीम रूपसी ज्योति-वर्तिका को देखकर उनका मन मुग्ध हो उठा। उनके मुख से सरल स्नेह "बहिनजी" के सम्बोधन सुनकर एवशिष्ट सौम्य व्यवहार पाकर वे अपने को कृतकृत्य समझने लगी। राज्य परिवार के चिकित्सक और हितैषी डा० भगवत सहाय की विदुषी पत्नी श्रीमती चद्रकला सहाय ने जो वसत आश्रम और वसत कालेज मे रह चुकी थी नवीन महारानी को नारी समाज सेवा के पथ पर अग्रसर होने मे सहायता की।

ग्वालियर राज्य वासियो ने पाई एक कल्याणी महारानी और

युवक महाराज को मिली एक ऐसी प्रेममयी नीरा माथिन जिसकी उपलब्धि से उनका मन मयूर नाच उठा। राजरानी को अब मिल गई थी एक आज्ञाकारिणी, विनयशील बहू जिसने अपनी रुचि और नम्र व्यवहार से जयनिवास के आंगन को मुखरित कर दिया था।

सोपान ६

नवीन उत्तरदायित्व (१९४२-४६)

किशोरीबाला लेखा दिव्येश्वरी ने सागर, बनारस और लखनऊ के अपने उन्मुक्त जीवन मे किन्ही कल्पनामय क्षणो मे अपने भावी जीवन के जो स्वप्न सजाये थे उनके मूर्त होने का समय आ गया और सौभाग्यवती श्रीमन्त विजयाराजे सिंधिया को ग्वालियर की राजमहिषी के गौरवपूर्ण पद पर पाकर राज्य के निवासियो ने अपने भाग्य को सराहा। उन्होने पाया कि उनकी नवीन महारानी कवि हरिऔध की इस "आदर्श वनिता" के अनुरूप है जिसे जनहित सर्वप्रिय है —

"वह वर वनिता जो रहे,
जन्मभूमि हित मे निरत।
हो जिसका जनहित जाति हित,
जगहित परम पुनीत हित।।"

'हरिऔध'

उधर युवक महाराज के एकाकी जीवन का आतप और उसकी शुष्कता इस दिव्या के मिलन से उस मधुमास मे परिवर्तित हो गई जिसमे सुमनो की मुस्कान और कोकिला की तान थी। कामिनी का यह नवीन रूप देखकर उनका मन मयूर आनन्द विभोर हो सहसा प्रश्न कर बैठा —

"सुमन से मुस्कान सीखी
प्रेम की पहिचान सीखी
हंस ने सीखी तुम्हीं से
मंद गति गज गामिनी।
कौन हो तुम कामिनी ?॥"

'प्रसाद'

और इस प्रश्न का उत्तर दिया उस सुरभित बयार ने जिसने इन दो प्राणों के मिलन के गीत गाकर ग्वालियर की नवीन महारानी पर आशीषों की वर्षा की थी और यहां के निवासियों के स्वरों की पुनरावृत्ति करते हुये गुनगुनाया था :—

"मंगलमय हो पंथ सुहागिन।
यह मेरा वरदान
हर सिंगार की टहनी से,
फूलें तेरे अरमान।"

और फिर सचमुच ही इस दिव्या के अरमान फूल उठे। मातृत्व का पुनीत पद पाकर नारी जीवन सार्थक हुआ।

तोपों की गड़गड़ाहट और शहनाई की मंगल ध्वनियों ने २३ फरवरी १९४२ को राजकुमारी के जन्म का समाचार प्रसारित किया। राजमाता अम्मा महाराज ने चाव से इस कमल-सी कोमल नातिन का नाम रखा "पद्मा राजे" और युगल दम्पत्ति ने स्नेह की इस प्रतिमा को "अक्का राजे" कहकर पुकारा। राज दम्पत्ति के इस प्रथम शिशु के जन्म के उपलक्ष में स्थापना हुई नारी शिक्षा के एक बृहद केन्द्र की जिसका नाम रखा गया "पद्मा विद्यालय" और वह सरस्वती मन्दिर जिसके समीप के भवन में राजदम्पत्ति का शुभ परिणय हुआ था इस विद्यालय को प्रदान किया गया। महाराज ने नारी शिक्षा में महारानी

की अत्यन्त रुचि देखकर राज्य मे स्त्री शिक्षा प्रचार का काय उनके कुशल हाथो मे सौप दिया और "पद्मा विद्यालय" के सचालन और पुनगठन का भार महारानी ने स्वय सहर्ष स्वीकार किया। विद्यालय की प्राचार्या की खोज प्रारम्भ हुई तो महारानी को स्मरण हो आई अपनी वे कुशल अध्यापिकायें जिन्होने बनारस के वसन्त आश्रम और वसन्त कालेज के जीवन को सुसस्कृत बनाया था। अनुशासन, नियन्त्रण, कतव्यपरायणता एव शिक्षा के विकास मे रुचि रखने वाली बनारस की श्रीमती विशालाक्षी जोहरी से सम्पक साधा गया। महारानी के अनुरोध पर उन्होने ग्वालियर आकर पद्मा कन्या विद्यालय का काय भार सभाल लिया। शीघ्र ही यह विद्यालय श्रीमती जोहरी के कुशल हाथो मे आकर चमक उठा।

पद्मा विद्यालय के समीप ही स्थापना हुई एक नारी महाविद्यालय की जिसमे स्नातक कक्षाओ का प्रबन्ध हुआ तथा कतिपय विषयो मे स्नातकोत्तर कक्षाये भी प्रारम्भ कर दी गई। केवल छात्राओ के लिये इस प्रकार का कालेज देश के मध्य भाग मे यह एक ही था। फलस्वरूप अन्य प्रान्तो से भी यहा उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिय छात्राये काफी सख्या मे एकत्रित होने लगी और छात्रावास का भी आयोजन आवश्यक हो उठा। स्त्री शिक्षा की यह दोनो सस्थायें महारानी का पथ-प्रदशन और सहयोग पाकर शीघ्र ही चमक उठी। शिक्षा की, होस्टल की, खेलो की व्यवस्था मे महारानी की स्वय भी परिमार्जित रुचि थी। आये दिन वे स्वय विद्यालयो मे आकर छात्राओ तथा अध्यापिकाओ का उत्साहवद्धन किया करती थी। इसी सस्था मे सस्कृत की आचार्या के रूप मे आई बनारस के वसन्त आश्रम की सखी कमला शर्मा की सहोदरा श्रीमती ललिता हकसर।

महारानी का सुखद परिवारिक जीवन उन्हे राजकाज मे पति की सहायता करने मे पूर्णतया सहायक था। शासन की उलझी गुत्थियो को महाराज अपनी इस जीवन-साथिन से परामश कर सुलझा लेते थे।

यह सन १६४२ के वे दिन थे जबकि विश्व-व्यापी युद्ध अपनी चरम सीमा पर था और इग्लैंड अपनी समस्याओ मे बुरी तरह सलझा हुआ था। भारत से भाति भाति की युद्ध सामग्री विदेश भेजी जा रही थी। उधर युद्ध की विभीषिकाओ का सामना करने मे असमथ और देश व्यापी महगाई से त्रस्त भारतीय जनता महात्मा गाधी के नेतृत्व मे असहयोग का आन्दोलन छेड़े हुये थी। "करो या मरो" का नारा लगा कर जब गाधीजी के साथ देश के प्राय सभी गणमान्य नेता जेल मे पहुँच चुके थे तब उग्र क्रातिकारी युवको का दल रेल की पटरी उखाड़ने ओर टलीफोन की व्यवस्था भग करने और भूमिगत होकर आजादी का आन्दोलन चलाने मे व्यस्त था। तभी आया बगाल का वह भीषण दुर्भिक्ष जब कि गावो और शहरो के फुटपाथो पर भारतीय जनता कीड़े-मकोड़े की भाति दाने दाने के लिये तरस कर क्षुधा त्रस्त हो मर रही थी। उसके कष्टो का अन्त न था। गेहू और चावल बाजारो से गायब हो गया था और लोगो ने देश मे पहिली बार "काले बाजार" का नाम सुना था। अन्न के राशन की बडी बडी योजनायें भी सवसाधारण को उदर पूर्ति के लिये नाज सुलभ कराने मे असफल रही थी। भारत के बड़े बड़े नगर यथा कलकत्ता, बम्बई, देहली अग्रेज और अमरीकन सिपाहियो एव अधिकारियो से भर गये थे और नगरो के बाजारो मे भारतीय नारियो के प्रति किये गये उनके अश्लील व्यवहारो से जनता मे रोष व्याप्त हो गया था और उसकी सहनशीलता का भी अन्त हो गया था। अन्न के अभाव मे क्षुधा से त्रस्त परिवारो ने यौवन का विक्रय किया और वात्सल्य का मोल भाव हुआ था। घर की लाज दो कौडी की होकर कलकत्ता और बगाल के गावो मे लुट पडी थी। इस विषम स्थिति का प्रभाव ग्वालियर पर भी पडा। कुछ दिनो के लिये ग्रामवासियो को शासन की ओर से ज्वार साधारण से मूल्य पर वितरित की गई और एक दिन जब तत्परता से घूमते महाराज के कानो मे यह बात आई कि उनकी प्रजा को जो ज्वार बाटी जा रही है

वह भी खराब है तो उन्होने ग्रस्त होकर घोषणा की कि जब तक व अच्छी ज्वार और गेहू जनता के लिये उपलब्ध नही कर देंगे तब तक वे स्वय भी ज्वार ही खायेंगे। सव साधारण मे फैला हुआ तीव्र असन्तोष इस घोषणा को सुनते ही कपूर की भाति गायब हो गया और अन्न योजना को सफल बनाने के लिये राज्य के अधिकारी और जनता की सस्थाओ मे होड सी लग गई। सिविल सप्लाइज विभाग का गठन स्वय महाराज की देख रेख मे हुआ जिसके मुख्य अधिकारी नियुक्त हुए सरदार रावराजा आर० जी० राजवाडे और उच्च अधिकारियो को उन जिलो मे भेज दिया गया जिनमे गेहू का वृहत भडार था। भेलसा (आज का विदिशा) टकनेरी (आज का अशोकनगर) गुना शिवपुरी उज्जैन मे स्टेशनो पर तम्बू लगाकर शासकीय अधिकारी रहे और प्रतिदिन नाज से भरे वैगन ग्वालियर और अभाव ग्रस्त क्षेत्रो मे भेजे जाने लगे। ग्वालियर नगर के भव्य गोरखी मैदान और कम्पू मैदान मे नाज वितरण का काय स्वय महाराज और उनके मन्त्रियो की देख रेख मे हुआ और उस कठिन काल मे, उन कष्ट भरे दिनो मे महाराज को दिन दिन भर अन्न वितरण की व्यवस्था करते देख ग्वालियर का जनता ने उन्हे "अन्न दाता" कह कर पुकारा।

सहसा ६ अप्रैल सन् १६४२ को कलकत्ता नगर पर जापान क वायुयानो द्वारा प्रथम बम वर्षा की घटना हुई। देश के पूर्वी अचल मे एक अजीब हलचल मच गई। लोगो ने सुना कि अडमान निकोबार द्वीप समूह पर जापान का अधिकार हो चुका हे तथा अब कलकत्ते के विनाश की तैयारी है। इसी प्रकार की सकटपूर्ण अवस्था मे आया सन् १६४३ जब कि विश्व युद्ध की गति और भी तीव्र हो उठी। राजदम्पति का इन दिनो यह लक्ष्य था कि विश्व की इस विषम परिस्थिति मे भी उनके राज्य निवासियो को अधिक से अधिक सुविधाये सुलभ होती रहे तथा प्रजा के दुख सुख मे हिस्सा बटाने के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे। ३१ अक्टूबर सन् १६४३ को ग्वालियर की

द्वितीय राजकुमारी का जन्म हुआ तो महारानी विजयाराजे के मातत्व का उत्तरदायित्व कुछ और अधिक बढ गया। नवप्रसूता राजकुमारी का नाम रखा गया "ऊषा राजे"

राजकुमारिया कुछ बडी हुई तो राजदम्पति की रुचि शिशु शिक्षण की ओर बढी और राजप्रासाद के समीप ही एक सुन्दर उपवन मे जहाँ महिला क्लब था स्थापना हुई मोंटिसरी पद्धति के अनुरूप एक "शिशु मन्दिर" की। इस शिशुशाला मे नगर के सम्भ्रान्त परिवारो के बालक बालिकाओ की शिक्षा का राजकुमारियो की शिक्षा के साथ ही आयोजन हुआ। कुमारी द्रविड इस विद्यालय की प्राचार्या नियुक्त हुई और विशेष योग्यता प्राप्त अध्यापिकाओ की नियुक्ति शिशुओ के अध्यापन के हेतु की गई। कालान्तर मे अपने ढग की यह एक ही शाला बन गई जहा आधुनिक प्रणाली एव साधनो का उपयोग बालको की प्राथमिक शिक्षा के लिए किया गया। इस आदर्श सस्था को एक नमूना मानकर राज्य के अन्य स्थानो एव निकटवर्ती प्रातो मे भी शिशु मन्दिर बाल मन्दिर, बालकन दी बाडी आदि की स्थापना हुई।

नगर के जन जीवन मे महारानी का सहयोग पाकर "महिला मडल" सस्था कायशील हो उठी और महिलाओ के सुधार तथा उनकी जाग्रति के हेतु कई नवीन सस्थाओ का जन्म हुआ। जयविलास प्रासाद के दूसरी ओर ग्वालियर-झाँसी मार्ग पर स्थित एक सघन कुज के बीच अवस्थित महिला क्लब अब चहक उठा। ग्वालियर के शिक्षित परिवारो की महिलाओ के मनोरजन और सामाजिक गतिविधि का यह एक केन्द्र बि-दु बन गया। ग्वालियर के लोकप्रिय डाक्टर भगवत सहाय की पत्नी एव सामाजिक कायकर्ती श्रीमती चन्द्रकला सहाय ने इस क्लब मे सयोजिका का पद सभाला। बनारस के वसत कालेज के सामाजिक जीवन की पुनरावृति प्रारम्भ हो गई। आये दिन सगीत, सम्मेलन, ड्रामा, प्रहसनो के आयोजन होने लगे और फिर क्लब में खुली बागवानी की कक्षाये और पाकविद्या के क्लासेज। नवीन नवीन मिठाईयो और

पकवान बनाने के प्रयोग होने लगे। जरदोजी, बुनाई, शिवरण कला आदि सिखाने का प्रबन्ध हुआ और नारी जीवन की जाग्रति के हेतु नित नूतन योजनाये कार्यान्वित की जाने लगी।

अपने स्वप्नो की साकार प्रतिमा के रूप मे महारानी विजयाराजे को अपनी जीवन साथिन पाकर महाराज कृतकृ य थे। वे प्रसन्नता और गर्व से यह लक्ष्य कर रहे थे कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे लोकहित के कार्य करने के लिए वे अब एक नही दो है। महारानी उत्साह और कुशलता के साथ कधे से कधा मिलाकर जनसेवा की योजनाओ मे उनका हाथ बटाने को सदा तत्पर है। अपनी हृदय की इस स्वामिनी के प्रति वे कृतज्ञ थे और मानो इसी कृतज्ञता ज्ञापन के हेतु उन्होने सहसा सिधिया व श की युगो पुरानी परम्परा को भी तोड डाला। अक्टूबर मास मे करवा चौथ पर्व के दिन जबकि महारानी की वर्षग्रथि का पावन पर्व आया तो जनता ने हर्ष के साथ सुना कि इस अवसर पर महारानी को २१ तोपो की सलामी दी जावेगी तथा उनकी वर्षग्रन्थि का दरबार भी होगा। मराठा व श की मान्यताओ के अनुसार अब तक महारानियो को न तो तोपो की सलामी का अधिकार था और न उनके सम्मान के हेतु अलग से दरबार का ही आयोजन होता था। महाराज ने ये दोनो नवीन सम्मान अपनी अर्धांगिनी और ग्वालियर की सर्वप्रिय महारानी को प्रदान किए जिनका कि राज्य की प्रजा ने हर्ष के साथ स्वागत किया। उन्होने मन ही मन निश्चय किया कि ग्वालियर की जनता के लिए जिस नेता ने उसे यह अपूर्व सम्मान दिया है वह उस आदर के प्रति स्वय को सदैव समर्पित समझेगी। वह ग्वालियर की जनता की सच्ची सेविका और लगनमयी नेत्री बनकर रहेगी। जनता का सुख दुख उसका सुख दुख होगा और उसके भविष्य को उज्ज्वल करने की कामना ही उसकी वास्तविक साधना होगी। यही उसके जीवन का लक्ष्य होगा।

लोकप्रिय महाराज के परिणय के पश्चात शासन कार्य मे भी एक

नवीन गति आ गई थी तथा साहित्य सृजन को भी विभिन्न योजनाओ द्वारा प्रोत्साहन दिया जाने लगा। कालीदास जयन्ती एव विक्रम स्मृति ग्र थ का काय प्रारम्भ कर दिया गया था तथा लेखको को उनकी उच्च-कोटि की रचनाओ पर राजकीय पुरस्कार देने की योजना भी थी। ग्वालियर की युगो पूव की राज्यभाषा हिन्दी मे कानूनो का धडाधड अनुवाद प्रारम्भ कर दिया गया था। उज्जयिनी मे विक्रम विश्व विद्यालय की स्थापना मे प्रयत्नशील राजदम्पति ने विक्रम द्विसहस्त्र शताब्दी मनाने का वृहत आयोजन किया। विक्रम स्मृति ग्र थ तीन भाषाओ मे प्रकाशित हुआ जो कि हिन्दी साहित्य की आज भी एक मूल्यवान धरोहर है। विक्रमयुगीय साहित्य, कला, शासन व्यवस्था, सगीत स्थापत्य कला आदि विषयो पर देश के उच्चकोटि के विद्वानो की रचनाओ को इस ग्र थ मे स्थान दिया गया।

ग्राम सुधार खादी भडारो, कम्बल केन्द्रो एव ग्राम उद्योगो के सगठनो मे शासन की पूरी मशीनरी रत थी तथा स्थान-स्थान पर लोक रजन के कार्यो मे राजदम्पति लगे हुए थे। कृषको की उनति तथा हित के लिए सहकारी सस्थाये खोली जा रही थी तथा पचवर्षीय प्रगति योजनाओ का सूत्रपात करने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय से देश के प्रसिद्ध अथशास्त्री डा० राधाकमल मुकर्जी को ग्वालियर बुलाया गया था। यह १९४२-४५ का वह काल था जबकि दश के अन्य भागो मे पचवर्षीय याजनाओ का नाम भी नही सुना गया था। महाराज और महारानी ने राज्य के जिले जिले मे जाकर स्वय जनता से सम्पर्क स्थापित कर उनकी कठिनाईयो को समझा और सुलझाया। इस समय देश एक अत्यन्त ही भीषण कठिन परिस्थिति से गुजर रहा था और सत्याग्रह की आग कोने कोने मे व्याप्त थी। फिर भी राजदम्पति जन कल्याण के कार्यो मे रत थी और शासन प्रगतिशील था। नवीन सडको का निमाण हो रहा था। नहरो के किनारे हरित वृक्ष लगाये जा रहे थे और जीण वना का उद्धार हो रहा था।

विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् १९४५-४६ मे जनता को शासन सौपने के हेतु महाराज ने प्रजा की आकाक्षाओ का सम्मान करते हुए राज्य मे, लोकतन्त्र परम्परा को बलवती किया और "साव जनिक सभा" जो ग्वालियर की जनता की प्रतिनिधि सस्था थी, को यह अधिकार दिया कि वह अपने प्रत्याशियो को चुनावो के लिए खडा करे। समस्त राज्य मे पूरा शाति के साथ चुनाव हुए और निर्वाचित प्रतिनिधियो को विधान सभा मे स्थान दकर तथा उन्ह मत्रीपद पर आसीन करके राज-दम्पति ने जनता के प्रति अपने कत्तव्य पूर्ति की लडी मे एक और कडी पिरो दी।

जनता के प्रतिनिधि नेता श्री तख्तमल जैन ने मत्री का पद ग्रहण किया। महाराज ने ग्वालियर के मोतीमहल मे ग्वालियर एसैम्बली के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन किया। अपने शासन के अनुभव का लाभ जनता के प्रतिनिधियो को सम्पूरा हृदय से देकर राजदम्पति ने उस समय एक ऐसी लोकतात्रिक परिपाटी का बीजारोपण किया जो कालान्तर मे राजा और प्रजा के सम्बन्धो को मधुरतम बनाने मे सहायक सिद्ध हुई और गभीर राजनैतिक उथलपुथल के बीच भी ग्वालियर की जनता को अपने राजपरिवार के मैत्रीपूरा सम्बन्धो पर गव रहा महाराज और राजमहिषी के प्रति उनकी श्रद्धा और सम्मान अक्षुण बने रहे।

ग्वालियर राज्य के भाग्याकाश मे एक सोभाग्यशाली वह दिन भी आया जब सन् १९४५ की दस माच को नगर, तोपो की गजना से गूज उठा। ग्वालियर वासियो ने जब युवराज के जन्म का समाचार सुना तो उनके हष की सीमा न रही। हजारो लाखो व्यक्तियो की भीड जयविलास प्रासाद की ओर उमड पडी। वस्त्रो, कम्बलो, अनाज और मिठाईयो का वितरण होने लगा। ग्वालियर के जीवाजीगज मे रहने वाली एक निधन वृद्धा ने तो अपनी जीविका का एक मात्र साधन जीराशीरा चरखा बेचकर मुहल्ले मे दीप माला जलाई। महाराज ने जब यह समाचार सुना तो उनका मन आद्र हो उठा। अपने विश्वस्त

अधिकारियो के हाथ उन्होने यथेष्ट धन-आभूषण वृद्धा के पास भेजकर उसके प्रति आभार प्रदर्शित किया। एक मास तक नगर मे सामुहिक जलसो एव सभाओ द्वारा जिस आनन्द और प्रसन्नता की अभिव्यक्ति जनता द्वारा हुई, वह ग्वालियर के इतिहास मे चिरस्मरणीय है।

देश के वरिष्ठ नेता राजदम्पति को बधाई देने स्वय ग्वालियर पधारे और नगर के केन्द्र मे स्थित महाराज वाडे पर अपने भाषण मे काग्रेस के वरिष्ठ नेता चक्रवर्ती राजगोपालाचाय ने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'आज ग्वालियर की जनता के हृष और उल्लास को देखकर मैं कल्पना कर रहा हू उस दृश्य की जो कि सतयुग मे राम जन्म के समय अयोध्या मे रहा होगा। महाराज दशरथ को प्राप्त जनता की बधाईया और वदनाओ का स्वरूप कुछ कुछ ऐसा ही रहा होगा जैसा कि आज ग्वालियर मे देखा जा रहा हे। साकेत वासियो के उस उल्लास उत्सव के स्वरूप का आभास आज मै भी आपके नगर मे देख रहा हू जहा के राजा सदा से जनता के सेवक रहे है और यही कारण आपकी इस प्रचुर मनोरम हृप अभिव्यक्ति का हे। इसी निस्वाथ जन सेवा की परिपाटी और परम्परा का पोषण जनता का सच्चा सेवक बनकर यह नवीन शिशु करे यही मेरी हार्दिक कामना और आर्शीवाद है। इस शिशु का देश का अग्रणी नेता देखने की आज हम सब कामना करते हे।" भगवान जानता है कि समय की गनि के साथ इस वयोवद्ध नेता का यह पुनीत आशीष कितना सत्य और सही प्रमाणित होता जा रहा हे जबकि उस दिन का वह नवजात शिशु एक उत्साही युवक के रूप मे देश के सन्मुख एक सच्चे ईमानदार जनसेवक की भाँति आने के हेतु ज्ञानाजन और अनुभव प्राप्त करने मे लवलीन है।

सन् १९४६ के आरम्भ के साथ ही जनता ने देखा कि ब्रिटिश कूटिनीतिज्ञ लाड माउन्टबैटन को वाइसराय के रूप मे पाकर भारत के राजनैतिक भविष्य मे एक नवीन हलचल प्रारम्भ हो गई। सिख और मुसलमान अपने अपने अविकारो को लेकर वाइसराय के पास दौडने लगे

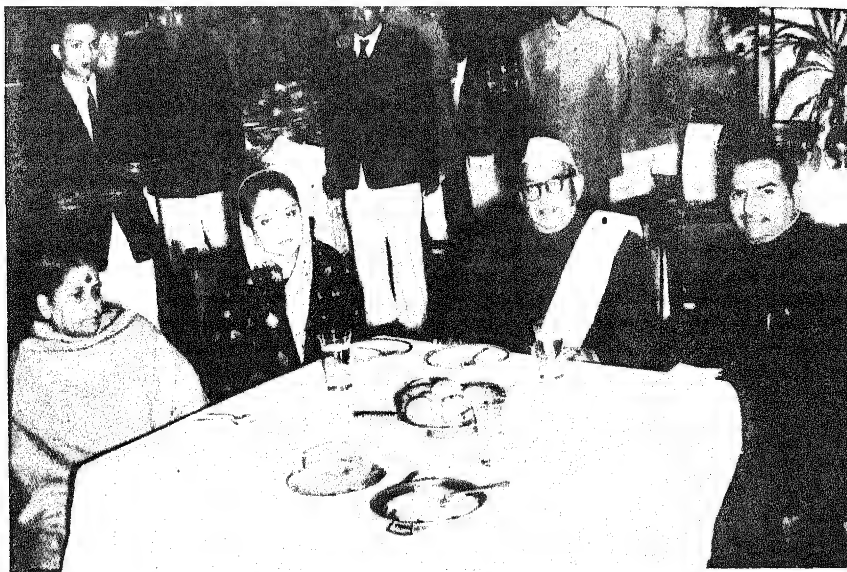
एव मुसलिम लीग के नेता बैरिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना ने तो नवाबजादा लियाकतअली खा के साथ पाकिस्तान की माग का दावा भी पेश कर दिया । उनका कहना था कि मुसलमानो को उनके धार्मिक सिद्धान्तो के अनुकूल जो कि हिन्दुओ से बिलकुल भी मेल नही खाते है एक अलग देश की आवश्यकता है जिसे वे अपनी धार्मिक मान्यताओ के अनुसार इसलामी कानून की सहायता से शासित कर सके । भारत के दो टुकडे कराके ही मुसलमान सतुष्ट होगे इससे कम पर वे राजी नही होगे महात्मा गाधी इस माग का विरोध करने के लिये सिर चोटी का पसीना एक कर रहे थे और वे जिन्ना की अन्य शर्तो को तोल भी रहे थे किन्तु देश का विभाजन उन्हे किसी भी मूल्य पर स्वीकार न था । वैसे तो लार्ड माउन्टबैटन मुसलिम लीग, काग्रेस एव सिखो आदि से अलग अलग वार्तालाप करके उनका मत जानने का दिखावा कर रहे थ तथा उनकी मागो मे तालमेल बिठाने का भी नाटक किया जा रहा था किन्तु वास्तविकता यह थी उन्होने अपने निकटतम और विश्वस्त अग्रेज सहयोगियो से सलाह लेकर देश के विभाजन की व्यौरे वार योजना तैयार करली थी जिसके अनुसार पजाब और बगाल प्रातो के दो भाग होने थे । इन्ही व्यवधानो मे लिप्त सन् १९४७ का आगमन हुआ तथा गाँधीजी को कुछ कुछ आभास ब्रिटिश शासको की इस नीति का भी हो गया कि देश को आजाद करने के पूव अग्रेज हुकूमत हिन्दू मुसलमानो मे स्थायी वैमनस्य का बीज बोने को कटिबद्ध है । यद्यपि देश के विभाजन की बात को ब्रिटिश सत्ता गुप्त रख रही थी किन्तु १० मई सन् १९४७ को ब्रिटिश मजदूर दल के प्रधानमत्री लाड एटली ने देश विभाजन की योजना को गुप्त रूप से स्वीकार कर भारत के वाइसराय लाड माउन्टबैटन को इसे कार्यान्वित करने के समस्त अधिकार प्रदान कर दिये थे । इस योजना पर व्यौरेवार विचार करने के लिये वाइसराय ने २ जून सन् १९४७ को एक सम्मेलन वाइसराय भवन मे बुलाया जिसमे काग्रेस की ओर से

जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल एव आचाय कृपलानी तथा सिखो की ओर से सरदार बलदेवसिंह एव मुसलिम लीग की ओर से मुहम्मदअलीजिन्ना, लियाकतअली खा तथा सरदार अब्दुरनवनस्तर सम्मिलित हुये । इस बैठक मे लाड इसमे तथा मिस्टर एरिक मीविल वाइसाराय के निजी सलाहकार के रूप मे उपस्थित थे ।

श्री मेनन (जो उन दिनो सविधान समिति के सलाहकार थे) ने जब इस योजना को देखा तो उन्हे बहुत निराशा हुई और उन्होन लाड माउन्टबैटन को स्पष्ट शब्दो मे सावधान कर दिया कि आज जब देश मे एकता का पहिले ही अभाव है तब यह योजना देश मे खून की नदिया बहा देगी और इसके बहुत ही भीषण परिणाम उत्पन्न होगे। एशिया का यह भाग वर्षा के लिये रक्त मय हो उठेगा और देश के दो प्रस्तावित टुकडे सदा के लिये एक दूसरे के दुश्मन बन जावेंगे । सभवतया काग्रेसी नेता भी इस योजना को नही मानेंगे और महात्मा गाधी तो कदापि नही । हुआ भी यही कि जब यह योजना नहरू और पटेल के सामने रखी गई तो दोनो ने इसको मानने से स्पष्ट इकार कर दिया । लाड माउन्टबैटन ने बहुत आग्रह और विनय से जब दुबारा इस मसौदे पर विवार करने को कहा तो दोनो नेताओ न फिर से योजना का अध्ययन किया और अपने कुछ नवीन सुझाव भी उपस्थित किये जिनमे स कुछ को सशोधन के रूप मे वाइसराय ने अपनी इस योजना मे सम्मिलित कर लिया ।

महात्मा गाधी को जब देश विभाजन की इस योजना का पता चला तो धम के नाम पर देश के दो टुकडे होने का विचार मात्र भी उन्हे असह्य जान पडा तथा उनका मन इस योजना पर विचार विमश करने को भी तत्पर नही हुआ । नेहरू, पटेल एव स्वय लार्ड माउन्टबैटन भी उन्हे विभाजन के आधार भूत सिद्धात की स्वीकृति के लिये राजी न कर पाये । ब्रिटिश सत्ता के प्रतीक वाइसराय लार्ड माउन्टबैटन तो बहुत ही कुशल राजनीतिज्ञ थे उन्होने अब दूसरा

मार्ग अपनाया। कांग्रेस और सिखो के प्रतिनिधियो को अलग-अलग बुलाकर देश की स्थिति और उससे उत्पन्न भविष्य के परिणामो की गभीरता को बार बार समझाया और फिर अपनी साम, दाम, दड, भेद वाली नीति को अपना कर उन्होने दोनो को अपनी इस देश विभाजन की योजना के समथन के हेतु तैयार कर लिया। अब आई बारी मुस्लिम लीग की। जानकार सूत्रो का कथन है कि जिन्ना साहब विभाजन के पक्ष मे बिलकुल नही थे और वे कांग्रेसी नेताओ एव सिखो से कई बातो पर स्पष्टीकरण चाहते थे किन्तु उनके अन्य दो सहयोगियो ने जिनसे वाइसराय पहिले ही विचार विमश कर चुके थे जिन्ना को यह समझाया कि बिना किसी उलझन के मुस्लिम जनता को तो मुहमागी मुराद मिल रही है इससे अधिक की वे कभी आशा भी नही कर सकते है और फिर जिन्ना साहब को भी राजी करना सरल हो गया किन्तु वाइसराय से उन्होने कहा कि वे अपनी लिखित स्वीकृति नही देगे। हा यदि कांग्रेस और सिख देश के विभाजन को तैयार हो जायेंगे तो वे इसे स्वीकार कर लेगे। अपनी कूट नीतिज्ञता की इस अदभुत सफलता पर वाइसराय को स्वय आश्चय हुआ और उनकी प्रसन्नता का पारा-वार न रहा। अब लाड माउन्टबैटन ने अपने हाथो को दृढ पाकर महात्मा गांधी को विचार विमश के लिए निमत्रित किया और कहा कि प्राय सब ही दलो ने और विशेषकर नेहरू, पटेल ने भी विभाजन की इस योजना को स्वीकार कर लिया है तथा अब महात्माजी को भी अपनी स्वीकृति प्रदान कर देनी चाहिए। महात्मा गाधी वाइसराय के बार बार समझाने पर भी विभाजन को स्वीकार न कर पाए किन्तु जब उन्होने पाया कि उनके विश्वस्त साथियो ने ही उनके साथ विश्वासघात कर देश का बटवारा स्वीकार कर लिया है तो उनका मन क्षुब्ध हो उठा। २० वर्ष की तपस्या, साधना का यह अत देखकर उस वृद्ध तपस्वी के जीवित रहने की मानसिक शक्ति भी क्षीण हो उठी और फिर वह राजधानी से अपना डेरा उठाकर, देशवासियो के कष्टो के



महापौर श्री. शेजवलकर एवं लोकसभाध्यक्ष श्री अनंतस्वामी अयंगार के साथ महारानी सिंधीया ।



। अब्दुल कलाम आजाद
संधीया राज-दम्पति ।





राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्रप्रसाद का स्वागत करते हुये राजदम्पति ।

भार को अपनें कन्धो पर लादकर वहा से प्रयाण कर गया।

२ जून १९४७ का ही वह अभागा काला दिन था जब कि भारत के भाग्याकाश मे धूमकेतु की भाति देश विभाजन की योजना का उदय हुआ था और इस होनी को काग्रेस के नेताओ अपनी स्वीकृति प्रदान कर ब्रिटिश चालबाजियो के प्रति अपना आत्मसमपरण किया था। इसी कलुषमय दिन का यह परिणाम हुआ कि वर्षो साथ साथ रहने वाले भाईयो का रक्त एक दूसरे के प्रति घृणा से खौल उठा और लाखो नर नारी, वृद्ध, जवान, शिशु लौहमषक अत्याचारो के शिकार बनकर तबाह हो गए। नारियो की लाज और अस्मत राक्षसी ढग से लूटी गई और देश मे वह काड घटित हुए जिनका देश के पूव इतिहास मे नमूना खोजे नही मिल पाएगा। भविष्य मे होने वाले उत्पातो की एक भविष्य दृष्टा की भाति सम्भवतया धुधली झलक नेहरू और सरदार पटेल ने भी देख ली हो किन्तु उसकी वास्तविकता और भीषणता का अनुमान वे न लगा पाये। सच भी है कि सितम्बर १९४७ मे लाहौर से पदयात्रा कर भारत की सीमा मे प्रवेश करनें वाले शरणार्थियो की दुदर्शाग्रस्त लम्बी पक्ति को जब एक दिन भारत के प्रधान मत्री नेहरू नें खडे होकर देखा और एक वृद्धा के मुख से यह सुना कि ' निपूते नेहरू ने हमारा घर बार छुडाया और हमे दाने दाने को मोहताज किया है।" तो उनके नेत्रा मे जल भर आया। शायद "निपूते" शब्द की गाली का अभिशाप सही माने मे वे उस दिन समझ पाये थे। अस्तु।

पाकिस्तान का अस्तित्व २ जून १९४७ के पश्चात् साकार हो उठा और भारत के नेतागण १४ अगस्त की रात्रि को देश की आजादी का पव धूम धाम से मनाने के लिए आतुर हो उठे। क्षुब्ध और दुखी थे तो महात्मा गाँधी और उनके कुछ साथी जो सचमुच २ जून १९४७ के उस अभागे दिन को कोस रहे थे और शेष जीवन की अवधि मे भी कोसते ही रहे।

सोपान ७

कर्तव्य की कसौटी

चौदह अगस्त सन् १६४७ की वह अर्द्ध-रात्रि भारत के इतिहास मे चिरस्मरणीय है जब कि ब्रिटेन के अतिम वाइसराय लार्ड माउन्टबैटन ने ब्रिटिश सत्ता के प्रतीक यूनियन जैक ध्वज को देहली के लाल किले और वाइसराय भवन से उतारकर स्वतत्र भारत का तिरगा झन्डा फहराया था। लाखो कठो की मिश्रित आवाज ने हर्ष और आह्लाद मे भरकर शखो की मधुर मगलकारी ध्वनि मे अपना योग देकर राष्ट्र ध्वज की वदना कर अपने को धन्य माना था और नेहरू की बलवती आवाज के साथ 'जय हिन्द' के घोष ने आकाश को कम्पायमान कर दिया था। 'आकाशवाणी' से प्रसारित बन्देमातरम् के गान ने सारे देश को मानो एक सूत्र मे बाध दिया था और 'जन गण मन' का राष्ट्र-वदना गीत घर-घर मे गूज उठा था। सन् १६३० की जनवरी को लाहौर मे उद्घोषित जवाहरलाल नेहरू की स्वतत्रता प्राप्ति की वाणी आज सार्थक हुई थी, सत्य प्रमाणित हुई थी और देशवासियो ने १७ वर्ष तक निरतर ब्रिटिश सत्ता के साथ सघर्ष कर, प्रबल शक्ति के विरुद्ध जूझकर अपनी प्रतिज्ञा को निबाहा था। इस वेला का विश्व के सबल राष्ट्रो ने हार्दिक स्वागत किया था क्योकि एक नवीन राष्ट्र आज उनकी मडली मे आ मिला था। हिंसा के ऊपर अहिंसा की इस अभूत-पूर्व विजय ने ससार मे एक नवीन इतिहास की सृष्टि की थी। प्रधान मत्री नेहरू का आजाद भारत को दिया हुआ इस अवसर का सदेश

भारत की सदियो की दासता को दूर करके देशवासियो के मन मे बस सा गया था हर देशवासी का मस्तक गौरव के ऊचा उठ गया था क्योकि वह अब आजाद देश का एक गौरवपूर्ण नागरिक था। विश्व की हलचलो मे उसकी आवाज की भी अब कोई कीमत थी। मुक्ति की सास लेकर सदियो के बन्दी ने आज नया तराना सुना था। शताब्दियो के आक्रान्त, कष्टप्रद दासता के जीवन का अन्त जानकर देश के नर-नारी बाल वृद्ध हर्ष से मानो पागल हो उठे थे।

ग्वालियर के राजप्रासाद मे राजमहिषी ने अपने पति, पुत्र एव दोनो कन्याओ के साथ देश की आजादी का यह अभूतपूर्व पर्व मनाया। जय विलास प्रासाद अनगिनत दीपको की ज्योति से जगमगा उठा और इस दीपावली का आनन्द उठाने के लिये ग्वालियर की जनता राजप्रासाद की ओर उमड पडी। आतिशबाजी और मगलवाद्यो के बीच राजपरिवार ने मिष्ठान वितरित कर प्रजा के साथ देश की मुक्ति का यह आह्लाद-कारी उत्सव मनाया। नागरिको ने उन्मुक्त हृदय से अपने लोकप्रिय महाराज और महारानी के साथ एक सप्ताह तक हर्ष विह्वल हो जश्न मनाया। सारा ग्वालियर राज्य, मानो खुशी से पागल हो उठा। नाच-गानो, खेल-तमाशो का अन्त न था। शालाओ मे छात्र एव छात्रायें राष्ट्र वन्दना का अभ्यास प्रति सध्या को राष्ट्र- ध्वज को सलामी देकर कर रहे थे, उधर नगर सेठो एव महाराज महारानी की ओर से निर्धन अपाहिजो के लिए सदाव्रत का आयोजन गोरखी मन्दिर के विशाल प्रॉंगण मे था। अन्न और वस्त्रो का खुले हाथो दान हो रहा था। कवियो, कलाकारो, सगीतज्ञो के सम्मेलन पर सम्मेलन आयोजित हो रहे थे और राष्ट्रीय कविताओ के मानो निर्झर प्रवाहित होकर युवको मे उत्साह की, देश भक्ति की, अनुपम ज्योति जाग्रत कर रहे थे। देश के कोटिश कठ सबल समवेत स्वरो मे नगर-नगर मे गा रहे थे —

"झडा ऊचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरगा प्यारा।।"

राष्ट्र के इतिहास मे १५ अगस्त, १९४७ का यह पर्वीय समारोह अदभुत और अनुपम था और ग्वालियर के राजपरिवार का उत्साह अपनी प्रजा के साथ इस उत्सव को मनाने मे असीम था।

ग्वालियर राज्य के निवासी इस पव को मनाकर अपने मन की साध पूरी तरह निकाल भी न पाए थे कि लाहौर, पेशावर, सिध, बगाल से भीषण मारकाट के समाचार आने प्रारम्भ हो गये। लाहौर, पेशावर तथा पूर्वीबगाल से आए समाचारो से प्रतीत होता था कि नादिरशाह के काल के कत्ले आम की पुनरावृत्ति हो रही है। कोई अनुमान भी न कर सकता था कि सदियो से पास-पास रहने वाले और भाईचारा बरतने वाले परिवारो मे धम के विष के नाम पर ऐसी क्रूरता आ जावेगी कि वे एक दूसरे के खून के प्यासे बनकर मानवता के नाम पर कलक हो उठेगे। लाहौर से चली हुई विस्थातियो से भरी बैलगाडिया जब खून से लाल लाशो को लिए हुए अमृतसर पहुची तो भारत के इन भागा मे भी वहशीपना समा गया। खून की नदिया बही। दानवता का वह वीभत्स नृत्य हुआ कि जिसमे आजादी की प्रसन्नता पूर्णतया तिरोहित हो गई।

ग्वालियर राज्य भी देशव्यापी इस भीषण भूकम्प से अछूता न रह पाया अतर इतना था कि बबरता और क्रूरता का नग्ननृत्य न हुआ क्योकि यहा की मुसलमान प्रजा को अपने राजा और रानी पर अगाव विश्वास था। उन्हे स्मरण था कि ग्वालियर ही एक ऐसा राज्य था जहा का हिन्दू राजा मुहरम पर स्वय फकीरी लेकर और ईद के दिन मस्जिद की मजलिस मे शामिल होकर अपनी मुसलमान प्रजा का एक अग बनकर उसके पर्वों पर बधाई देता था और मुस्लिम प्रजा भी दशहरा, होली, दीपावली और गणेश चतुर्थी पर राजपरिवार और हिन्दू भाई-बहिनो के साथ कीतन मे सम्मिलित होकर उनके हर्ष मे योग देती थी। "माधो महाराज" द्वारा चलाई हुई इस परिपाटी ने इस राज्य मे हिन्दू मुस्लिम दगे न होने दिए थे और धार्मिक प्रश्नो को लेकर वैमनस्य न

उठ पाए थे। इन सकट की घडियो मे भी ग्वालियर के मुसलमान परिवारो को विश्वास था कि धार्मिक अन्धता का विष यहा न फैलने पायेगा और राज्य द्वारा उन्हे पूरा सरक्षरा प्रदान किया जावेगा। हुआ भी ऐसा ही। जब पाकिस्तान से आए हजारो परिवारो ने ग्वालियर की ओर मुख मोडा और टिड्डी दल की तरह शरणार्थियो की भीड पजाब और सिध से उमड पडी तो उनके साथ वे भावनाये भी आई जो कि मुसलमानो के अत्याचारो से इन परिवारो मे उत्पन्न हुई थी। महाराज ने अपने पुलिस और सेना के अधिकारियो को सतर्क कर दिया। उन्होने राज्य के नगर नगर मे सेना की टुकडियो द्वारा गश्त कराया और स्वय घोडे पर बैठकर अधिकारियो के साथ नगर का दौरा किया। जहा एक ओर कम्पू और मुरार के विशाल मैदानो मे शरणार्थी परिवारो के लिए राज्य और जनता की ओर से लगर खोले गये वहा मुस्लिम परिवारो को उनकी रक्षा के हेतु प्रश्रय प्रदान किया गया। राजदम्पति की इस सतकता का यह फल हुआ कि स्थिति बिगडने न पाई और कानूनी व्यवस्था न टूटी।

विस्थापितो के प्रश्न को लेकर अभी पाकिस्तान से बातचीत चली ही थी कि काश्मीर की समस्या उठ खडी हुई। महाराजा काश्मीर की माग पर भारत के प्रधान मत्री को देश की सेनाये हवाई जहाज द्वारा काश्मीर मे भेजनी पडी जहा कि कवालियो के नाम पर पाकिस्तानी सशस्त्र सैनिक हजारो की सख्या मे विनाश के पथ पर अग्रसर थे। कल के हिन्दुस्तान की एक ही सेना के दो टुकडे आज आमने सामने सगीने खोलकर एक दूसरे से जूझ रहे थे। बारामूला रक्तमय हो उठा था। आक्रान्ता पाकिस्तानी सेनाओ और कवालियो के दल के अत्याचारो से काश्मीर की मुस्लिम जनता त्राहि त्राहि कर उठी। सरदार पटेल और नेहरू के आदेश पर ग्वालियर की सेनाओ की टुकडिया भी देश की सीमाओ की रक्षा के हेतु योगदान करने गई। देश की जनता ने देखा कि अग्रेज भारत छोडकर चले अवश्य गए किन्तु जाते जाते वे अपने

वर्षो से पोषित उन दो विषधरो को मुक्त कर गए जिन्हे वर्षो से देश मे उन्होने दूध पिला कर पाला था। एक विषधर तो था साम्प्रदायिकता का सप जिसका काटा हुआ देश छटपटा रहा था और जिसके नाम पर देश दो टुकडो मे अलग हो चुका था और फिर भी खून की नदियो से धरा लाल हो रही थी और दूसरा विषधर था ५५० से अधिक देशी रियासतो का प्रश्न जो कि बचे हुए देश को टुकडो टुकडो मे विभाजित करने की धमकी दे रहा था और जिसकी एक लपट ने काश्मीर मे आग बरसा दी थी।

देश के नेताओ के सामने यह ऐसी विषम परिस्थितिया थी जिनसे प्रतीत होता था कि कही आजादी का यह नवजात शिशु सिसक सिसक कर अतिम सास न लेने लगे ? देहली के बिरला भवन मे महात्मा गाँधी की प्राथना सभाओ मे जाकर शरणार्थी अपने ऊपर घटित अत्याचारो की ददनाक कहानिया सुनाते थे और उधर थे राष्ट्रपिता गाधी जो कि अपने अनशनो द्वारा हिन्दू मुसलमानो की मारकाट को बद करने का प्रयास कर रहे थे। पाकिस्तान की सैनिक तैयारिया और अत्याचार उसी कोष के बल पर थी जो उसे भारत द्वारा प्राप्त हुआ था और अब गाधीजी की यह जिद थी कि भारत को वह ५५ करोड की धनराशि तुरन्त ही पाकिस्तान को दे देनी चाहिए जिसके लिए वचन दिया जा चुका था। उनकी दृष्टि मे "प्राण जाहि पर वचन न जाई" की उक्ति का पालन आवश्यक था। गाधीजी के सामने उन दिनो काग्रेस के वायदो, वचनो मुहाइदो का अथ था सत्य का दृढता से पालन। राष्ट्रपिता ने जिस काग्रेस को शक्ति दी थी और सत्य अहिंसा के सिद्धान्तो पर उसे स्थायित्व प्रदान किया था उस काग्रेस को और उसकी राष्ट्रीय सरकार को वे वचनो से मुकरता देख नही सकते थे। नैतिक आधारो से स्खलित होने के बजाय सस्था का अन्त उन्हे श्रेयस्कर था।

अत मे काग्रेस सरकार को सकटो से ग्रस्त होते हुए भी गाधीजी की बात माननी पडी और निश्चित धन युद्ध के इन दिनो मे भी काश्मीर

के आक्राता पाकिस्तान को वापिस किया गया। जैसा कि अपेक्षित था पाकिस्तान ने यह धन हथिया कर भारत के प्रति विनाश और विध्वस की लीला और भी तेज कर दी जिससे देशवासियो का वर्ग गाधीजी के प्रति सहसा क्षुब्ध हो उठा। क्रोध और चिडचिडाहट की इस लहर मे डूबे हुए नाथूराम गौडसे नामक व्यक्ति ने सहसा ३० जनवरी सन् १९४८ की सध्या को विश्व की इस जागती ज्वलत ज्योति को बुझा दिया। इस हत्यारे की गोली ने देश के इस प्रकाश पुज को हर लिया और तपस्वी राष्ट्रपिता के पावन प्राण "हे राम" के शब्दो के साथ महा प्रयाण कर गए। गाधीजी की इस क्रूर हत्या के समाचार से सारा देश कॉप उठा। लज्जा से उसका सिर विश्व के सन्मुख झुक गया। अहिंसा के व्रती और पुजारी का यह हिंसामय अन्त और वह भी उसके एक देशवासी, सहधर्मी द्वारा। नेहरू और पटेल के सिर देश वासियो के सामने शम के मारे झुक गए। हजारो लाखो कन्ठो का रूदनमय कम्पन देश के कोनें कोने मे छा गया।

ग्वालियर मे महारानी और महाराज ने इस विषाद पूण आकस्मिक समाचार को जब रेडियो पर सुना तो उनके दुख का भी अन्त न रहा। शोकग्रस्त प्रजा की टोलिया जब जयविलास प्रासाद की ओर उमडी तो उन्होने महाराज को अश्रुपूरित नयन भरे देखा। चारो ओर मानो करुण रुदन छाया हुआ था महा ताडव कर्त्ता की यह कैसी सहार लीला थी।

राष्ट्रपिता गाधीजी की मृत्यु ने नेहरू पटेल आदि देश के कणधारो पर गहन उत्तरदायित्व डाल दिया। इस मारकाट और सकट के समय शाति के महान दूत का अवसान एक ऐसी घटना थी जिसनें देशवासियो की आखे खोल दी और उनमे एक नवीन सगठन की ओर बलिदान की भावना भर दी। नेहरू और सरदार पटेल की विचार भेद की खाई को कुछ समय के लिए मानो इस ऐतिहासिक कम्पन ने पाट सा दिया। दोनो नेताओ की सम्मिलित शक्तियाँ अब देशी राज्यो की

समस्या सुलझाने मे लग गई। काश्मीर की समस्या को देखकर देश के विघटन का भय सबके मन मे समा गया था। स्थिति यह थी कि ५४२ देशी रियासतो के शासको को उन सधियो से जो उनके पूर्वजो ने अग्रेज सरकार से की थी अब पूरा छूट मिल चुकी थी और यह उनकी इच्छा पर था वे चाहे स्वतत्र रूप से रहे एव तत्सम्बन्धी सधिया केन्द्रीय शासन से करे अथवा वे चाहें तो पाकिस्तान से अथवा भारत से मिल जावे। नेहरू माउटबैटन के दिमाग जब इस विषम समस्या मे उलझे हुए थे तभी ट्रावनकोर कोचीन के महाराज ने स्वतत्र रूप से विदेशी सत्ताओ से सधिया करने के अपने विचार की घोषणा कर दी। सरदार पटेल ने इस स्थिति का साहस पूर्वक सामना किया और यह समस्या अपने कुशल हाथो मे ले ली। उन्होने देशी नरेशो से बातचीत प्रारम्भ करते हुए कहा कि वे एक निश्चित अवधि के अन्दर यह तय करले कि अपने राज्यो को वे भारत के अभिन्न अग बनाने को तैयार है या नही? उन्होने आव्हान किया और कहा कि देशभक्ति का यह तकाजा है कि भारत की भौगोलिक सीमा के अन्दर स्थित समस्त राज्यो को अपना विलीनीकरण भारत मे कर देना चाहिए और देश की नवीन आजादी को सार्थक करने मे अपना सहयोग देना चाहिए।

माउन्टबैटन और नेहरू को यह भय था कि यदि देशी नरेशो ने इस देश भक्ति की पुकार को और सरदार के आव्हान को नही सुना तो सारा देश एक भीषण ग्रह युद्ध मे फस जावेगा और हिंसापूर्ण रक्तपात के कारण इस नई आजादी का स्वाद ही कडुवा हो जावेगा। स्वतत्र अस्तित्व और सुख वैभव के लिए युगो से भारत मे राजे-महाराजे आपस मे लडते रहे है और विदेशी आक्राता सदा इसका लाभ उठाते रहे है। इस समय भी यह सभव है कि काश्मीर की भाति अन्य सीमावर्ती देशी राज्य यथा जोधपुर, बीकानेर, मनीपुर, त्रिपुरा, कच्छ, त्रावनकोर आदि विघटन प्रारम्भ करदे तथा इसका लाभ पाकिस्तान एव अन्य स्वतत्र सत्तायें उठाये। इस अवस्था मे भारत की यह आजादी एकदम हास्यास्पद हो

उठेगी तथा उसका यह नवीन शिशु व्यथा और वेदना से कराह उठेगा। पाकिस्तान की लालची आखे तो सीमावर्ती राज्यो की ओर लगी ही हुई हैं और इस समय किन्ही भी शर्तो पर वह इन रजवाडो की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार कर भारत के लिए हमेशा को काटे देगा तथा कालोत्तर मे शनै शनै इन राज्यो को भी हडप लेगा। केवल देशभक्ति की प्रेरणामयी भावना ही इस स्थिति को सुधार सकती है। यह सरदार पटेल का निश्चित मत था और इसी के लिए उन्होने दृढ चित से अभियान प्रारम्भ किया।

देशी नरेशो की समस्या सुलझाने के हेतु सरदार पटेल ने अपने सचिव श्री वी० पी० मैनन एव श्री देसाई को राजाओ से पृथक पृथक वार्तालाप करने के लिए अपने सदेश-वाहक के रूप मे भेजा। देशी-नरेश परिषद अभी जीवित थी। वहा यह आवाज बलवती होने लगी कि वे राज्य जिनमे स्वावलम्बी राज्यो के रूप मे रहने की क्षमता है यथा बडौदा, मैसूर, ग्वालियर आदि तथा जहा की अथ व्यवस्था एव शासन-प्रणाली लोकतत्र के अनुरूप रही है और अब भी है क्यो न स्वतत्र अस्तित्व रखकर कुछ विषय यथा सेना नीति आदि केन्द्र को सौप दे। इन राज्यो का विलीनीकरण राजाओ को मान्य न था और यदि इस प्रश्न को लेकर उनके राज्यो में मतदान कराया जाता तो भी यह सभावना थी कि जनता भी राजाओ के इस प्रस्ताव के पक्ष मे ही मत देती, कई नरेश अत्यन्त लोकप्रिय थे और उनकी जनता उनके साथ भी। ऐसा ही एक राज्य ग्वालियर भी था और इस बात पर महाराज और महारानी को पूरा विश्वास था कि जनमत ग्वालियर को आजाद भारत की एक इकाई के रखने के ही पक्ष मे रहेगा। वतमान, स्थिति भी यह थी कि जनता द्वारा चुने हुए, सावदेशिक सभा के प्रतिनिधि राज्य कार्य मे हिस्सा बटा रहे थे तथा मत्रीमडल के सदस्य थे।

इन्ही दिनो ग्वालियर के जयविलास प्रासाद के भव्य कक्ष मे जहा एक दोपहर को राजदम्पति अपने मत्रियो एव मित्रो के साथ परामश

कर रहे थे सरदार पटल के सदेश-वाहक सचिव श्री वी० पी० मैनन का आगमन हुआ। औपचारिक शिष्टाचार के उपरान्त श्री मैनन ने सरदार द्वारा प्रेषित भावी भारत के प्रदेशो का एक मानचित्र प्रस्तुत किया जिसके अनुसार आजाद भारत को मुख्यत ८-९ भागो मे विभक्त किया गया था और भारत मे स्थित था एक प्रस्तावित प्रदेश 'मध्य भारत'। इस भाग की सीमा के अन्तगत वे सब देशी राज्य थे जो कि देश के केन्द्र मे स्थित थे। इन्दौर, ग्वालियर के अतिरिक्त धार, राजगढ, नरसिंहगढ, बडवानी, सैलाना, रतलाम आदि रियासते भी इसी प्रदेश के अन्दर सम्मिलित की गई थी। ग्वालियर इस प्रदेश की सबसे बडी इकाई थी और उससे छोटी थी इन्दौर, रियासत और फिर थी कई छोटी छोटी रियासते जिनमे कट्ठीवाडा, मथवाड तक शामिल थी। महाराज, उनके मत्रियो और मित्रो मे सरदार द्वारा जो व्यक्तिगत सदेश राजदम्पति के लिए भेजा गया था उस पर भी विचार विमश हुआ। राजपरिवार के चिकित्सक एव मुख्य सलाहकार डा० भगवत सहाय ने भी अपने विचार प्रदर्शित किए तथा उस दिन की बैठक बिना कुछ निर्णय लिए ही विसर्जित हुई।

रात्रि को मित्रमडली की बैठक हुई। स्थिति यह थी कि ग्वालियर राज्य की पराम्परागत शासन-प्रणाली इतनी ठोस एव प्रगतिशील थी तथा उसमे प्रजा का इतना सक्रिय हाथ था कि जनतत्र की इस आधी के सामने केवल थोडा सा रूप परिवर्तित करके वह स्थिर रह सकती थी तथा जनता की भावनाओ के प्रति सच्ची उतर सकती थी। इस समय राज्य मे जनता द्वारा निर्वाचित प्रजा परिषद के नामाकित प्रतिनिधि मत्रिमडल मे थे। जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियो द्वारा प्रबन्धित नगर निगम थे। दुर्भिक्ष काल का सामना करने के लिए विशेष रूप से नियोजित "अकाल कोष" था राज्य की वित्तीय स्थिति सब प्रकार से सुदृढ थी। जन सेवा की नीति को ग्रहण करे हुए सुव्यवस्थित कृषि, सिचाई वन, राजस्व लोककम निर्माण आदि के विभाग थे राज्य की

अपनी कोष मुद्रा थी। कानून हिन्दी मे था, पत्रो को पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त थी। साहित्य, सगीत और कला को राजकीय सरक्षण प्राप्त था एव शिक्षा के विकास के हेतु सचित एक वृहद गगाजली कोष था। उज्जैन एव ग्वालियर मे विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजना बन रही थी और सिंधिया पब्लिक स्कूल गजरा राजा मेडिकल कालिज, आदि सस्थाये प्रशसनीय काय कर रही थी। ग्वालियर मे नारी एव शिशु चिकित्सा का एक वृहद केन्द्र कमला राजा चिकित्सालय था। साराश यह कि राजदम्पति के कुशल सचालन एव व्यक्तिगत सम्पक के कारण शासन की प्रत्येक दिशा मे प्रगति की एक लहर समाई हुई थी। राजदम्पति को प्रजा का पूरा पूरा सहयोग हर क्षेत्र मे प्राप्त था तथा वे प्रजा के पूर्ण विश्वास के पात्र थे। विचार विमश हुआ तो महारानी का मुख्य प्रश्न यह था कि जिस विश्वास और उत्तरदायित्व के साथ प्रजा ने हमे यह शासन का काय भार सौपा है उसे बिना उनके पूछे हुए परिवतन कर देने का हमे क्या अधिकार है। इसकी क्या गारटी है ग्वालियर राज्य का प्रस्तावित सघ मे विलीनीकरण जनता के हित मे ही होगा। गाय, बैल अथवा व्यापार की जड वस्तुओ की तरह राज्य का ग्रामीण वग कोई मौन निबुद्ध वग तो है नही जिसके भाग्य का निर्णय, जिसके भविष्य के विषय मे कोई फैसला चुपचाप कर लिया जावे। देश की जनता को जिस प्रकार अपनी शासन प्रणाली, एव अपना विधान निश्चित करने का हक हे वही अधिकार ग्वालियर राज्य के वासियो को भी है और इसके पूर्व कि महाराज राज्य के विलय को स्वीकार करें जनता की सम्मति ली जानी आवश्यक है। ग्वालियर राज्य का क्षेत्रफल उसकी जनसख्या और वित्तीय स्थिति इस प्रकार की है कि वह इस समय देश की एक इकाई के रूप मे रह सकता है जैसा कि मैसूर राज्य की स्थिति है अत सघ मे छोटे राज्य विलय हो जावे एव सघ बन जावे ग्वालियर का विलय तो जनमत सग्रह के पश्चात ही हो। महारानी के तक इतने प्रबल थे कि उनका यथोचित उत्तर देकर

ग्वालियर के विलीनीकरण के हेतु सब कोई सहमत न हो पा रहे थे। श्री वी० पी० मेनन और उनके साथियो ने इन तर्कों से जब सरदार पटेल को अवगत कराया तो सरदार ने टेलीफोन द्वारा महाराज से बातचीत की। महाराज का केवल एक ही उत्तर था कि ग्वालियर के जनहित मे जो भी उचित हो वे करने को तैयार है और वैसे भी देश के प्रधानमन्त्री नेहरू गृहमन्त्री सरदार पटेल के कहने के वे बाहर नही है किन्तु राज्य के विलय के हेतु महारानी की सहमति वे आवश्यक समझते हैं। उधर देहली मे स्थिति यह थी कि ग्वालियर हाउस मे देश के विभिन्न भागो से आए हुए राजे महाराजे ठहरे हुए थे। तथा वहा तिल धरने को स्थान न था। सरदार पटेल और नेहरू को यह आशका थी कि यदि ग्वालियर राज्य प्रस्तावित सघ मे विलीनीकरण को तैयार न हुआ तो अन्य देशी नरेशो पर दबाव डालना सभव न होगा तथा राज्यो के एकीकरण की समस्या सुलझ न सकेगी तथा देश का विघटन प्रारम्भ हो जावेगा। यदि केन्द्र बलवती न हुआ और देश छोटे छोटे भागो मे बटा रहा तो देश की इस आजादी का कोई अर्थ ही नही रहेगा। यह सच है कि प्राय सभी देशी नरेश केन्द्र को सेना अथवा देश की सुरक्षा, आवागमन सचारसाधन एव विदेशो से सम्बन्ध आदि विषय सौपने को तैयार है किन्तु विलीनीकरण के बिना देश को सुदढ प्रातो मे गठित करना सभव नही और इसके लिये किसी न किसी बडे नरेश को अगुआई करनी ही होगी। इस समय परिस्थिति ऐसी आ पडी है कि यदि ग्वालियर की महारानी ग्वालियर राज्य के प्रस्तावित मध्य भारत सघ मे विलीनीकरण को स्वीकार कर लेती है तो अन्य नरेशो के लिए यह माग ग्रहण करना सरल हो जावेगा और शीघ्र ही ५४२ देशी राज्यो की समस्या हल हो जावेगी। सरदार पटेल महारानी विजयाराजे सिंधिया के स्वभाव से भलीभाति परिचित थे और उन्हे इनके प्रगतिशील जनतत्रात्मक विचारो का भी पता था अत उन्होने फोन पर महाराज से पुन बातचीत की। वे बोले, महाराज मुझे यह जानकर हर्ष है कि आप सबने ग्वालियर राज्य

के मध्य भारत प्रदेश मे विलीनीकरण का निर्णय महारानी पर छोड दिया है। ठीक है अत आप मेरी उनसे बातचीत करा दीजिए मुझे विश्वास है कि मैं उनके सदेहो का निराकरण कर सकूगा।"

और उत्तर मे महाराज ने फोन का चोगा पास मे बैठी महारानी के हाथो मे दे दिया। "मैं विजयाराजे बोल रही हू।" महारानी ने कहा। उत्तर मे सरदार ने कहा "तो आप आज ही देहली आ जाइए महारानी! मुझे आपके विचारो और तर्कों का तो पता है ही किन्तु मुझे आपके और आपके व श की देशभक्ति पर भी पूरा विश्वास है। सिंधिया व श ने तो सदा ही केन्द्र को मजबूत करने के लिए अपना पूर्ण सहयोग दिया है। पेशवा को, मुगलशासन को दृढ बनाने के लिए महादजी सिंधिया ने काय किया और अब देश के जनतत्र के हाथ, केन्द्रीय शासन के हाथ आपके त्याग द्वारा ही मजबूत होगे। तो आप देहली मुझ से मिलने कब आ रही हे?" "आप जब आज्ञा दे?' महारानी ने सरदार को उत्तर देते हुए पूछा।

"तो आज ही प्लेन स आ जाइये। रात को आपसे बातचीत हो जावेगी।" सरदार का यह सक्षिप्त उत्तर था।

और फिर उसी दिन वायुयान से महारानी डा० भगवतसहाय की विदुषी पत्नी श्रीमती चन्द्रकला सहाय के साथ देहली जा पहुँची। चूकि ग्वालियर हाउस देश के राजे महाराजे की अतिथि मडली ले भरा था अत दोनो देहली के मेडन होटल मे जाकर ठहरी। रात्रि को सरदार से महारानी की बातचीत हुई तो सरदार ने पाया कि वास्तव मे महारानी के तर्क अत्यन्त प्रबल थे और उनका यह कहना कि देश के भावी निर्माण मे हमारा भी उतना ही भाग है जितना कॉग्रेस के नेताओ का सही था। उन्होने कहा कि ग्वालियर राज्य के प्रत्येक निवासी का भी तो देश है वह भी देश का ही नागरिक है अत उसकी भी आवाज का कोई मूल्य है। उसका मत आप जान लीजिए और उससे राज्य के विलीनीकरण के प्रश्न पर मत ले लीजिए तथा उसका निर्णय ग्वालियर

के राज्य दम्पति को और देश के नेताओ को स्वीकार होना चाहिए। सरदार जानते थे कि यदि जग मत लिया गया तो वह विलीनीकरण के विरुद्ध ही होगा क्योकि राज्य के निवासियो मे राजदम्पति की लोकप्रियता एव ग्वालियर रियासत को देश का एक अलग प्रदेश रखने की भावना से वे परिचित थे। उन्होने महारानी से कहा कि देश की आजादी के नवीन शिशु की यदि रक्षा करना है और इसके प्राण बचाना है और देश को ५०० टुकडो मे बटने से यदि रोकना हे तो इसका एक मात्र उपाय है देशी राज्यो का विलीनीकरण करके नवीन सुगठित प्रातो का निर्माण करना और उनमे लोकतत्रीय शासन प्रणाली का प्रारम्भ करना और इसके लिए ग्वालियर की महारानी को त्याग करना ही होगा। यह ध्रुव सत्य है कि यदि ग्वालियर राज्य प्रस्तावित मध्य भारत सघ मे शामिल नही हुआ तो अन्य ३६ रियासतें भी विलीनीकरण को सहमत न होगी और देश के एकीकरण का स्वप्न केवल स्वप्न ही रह जावेगा। महारानी को गभीरता पूवक यह विचार करना चाहिए कि विलीनीकरण के स्थान पर उनके पास और विकल्प भी क्या है। क्या वे चाहती है कि काश्मीर की भाति देश के कोने कोने मे गृह युद्ध छिड जाने और हजारो लाखो नर नारी बाल वृद्ध इस होम मे भस्म हो जावें। निजाम हैदराबाद की सी सैकडो समस्याओ का सामना रक्तपात से, युद्ध से किया जावे। समस्या इस समय केवल ग्वालियर राज्य की ही नही देश के विघटन की है। समस्त विश्व की आखे आज भारत पर लगी है। लोकतत्रीय प्रणाली वाले देश उत्सुकता से भारत की समस्याओ का सुलझना देख रहे हैं। आज की एक भूल कितने गभीर परिणाम ला सकती है। यह भी तो महारानी को सोचना चाहिए। सरदार ने उस रात्रि अपनी गभीर वाणी मे कहा कि नारी सदा से त्याग की मूर्ति रही है। अवसर पडने पर उसने अपना सब कुछ देश को अपण कर दिया है। राजस्थान की अगणित त्यागमयी नारियो ने क्या हसते हसते देश की आजादी की रक्षा के हेतु अपने पतियो को युद्ध मे

भेज कर स्वय जौहर नही किया है ? हाडा रानी ने क्या यह पथ नही अपनाया था ? आज ग्वालिवर की महारानी अपने देश की आजादी की रक्षा के हेतु क्या कुछ भी बलिदान करने को तैयार न होगी। क्या देश की सुरक्षा से अधिक उसे अपना और अपने पति का राजमुकुट प्यारा है।

और महारानी उस रात्रि सरदार पटेल की महानता को मन मे अकित किए मेडन होटल लौट आई। उनके मन मे गू जने लगी सरदार की गभीर प्रेरणादायक ध्वनि। देश की आजादी के इस पावन पुजारी इस सजग प्रहरी के प्रति उनका मन साधुवाद से भर उठा। वे वायुयान से ग्वालियर लौटी तो महाराज ने देखा कि उनकी हटीली हृदय की स्वामिनी की छवि एक विचित्र आभा से प्रदीप्त है। मुस्करा कर उन्होने पूछा—"तो जनमत सग्रह की बात सरदार से निश्चित कर आई ना ?"

"कहा तय कर पाई ? मैं तो एकदम विभ्रम हू। कुछ समझ मे नही आता अब तो आप ही इस प्रश्न का निर्णय कीजिए।" महाराज ने कहा, "क्या कह रही हो ? मैं निर्णय लू ? मैं तो सबके सामने कह चुका हू कि जो कुछ भी आप तय करेंगी वही मुझे मान्य होगा। अब आप सरदार पटेल से भी बातचीत कर आई है पूरी स्थिति की आपको जानकारी है ।" महाराज बोल उठे और महारासी । वह फिर कुछ भी उत्तर पति को न दे पाई। शात, मौन, वह पुनीत नारी इस विषम समस्या के भार से क्लात उस रात एक पल भी न सो पाई। रह रह कर उसे सरदार पटेल के प्रेरणा प्रद शब्दो की स्मृति हो आती थी। देश की नवीन स्वतत्रता उससे त्याग चाहती है और उसे स्मरण हो आता था वह मूल मत्र "त्याग सच्चे सुख की आधार शिला है" जिसे एक दिन उसका मन पछी रट चुका था। केन्द्र के हाथ मजबूत करने के लिए देश को विघटन से बचाने के लिए उससे अपेक्षा की जा रही है त्याग की। वह जानती थी कि ग्वालियर की प्रजा उसे, उसके

पति को, उसके परिवार को कितना प्यार करती है। उसे विदित था कि उसके एक इशारे पर, उसके एक छोटे से सकेत पर राज्य का बच्चा बच्चा अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार है। उसे मन मे पूरा विश्वास था कि जिस राज्य की वह महारानी है वह एक प्रगतिशील राज्य है और उसकी प्रजा, उसकी जनता सुखी है। वह वतमान स्थिति से असतुष्ट नही है और उसे अपने नेता मे, अपने राज्य मे अगाध विश्वास है। प्रजा के इस अडिग विश्वास के प्रति भी तो उसे खरा उतरना होगा। भावावेश मे सहसा कोई निणय लेना उचित नही।

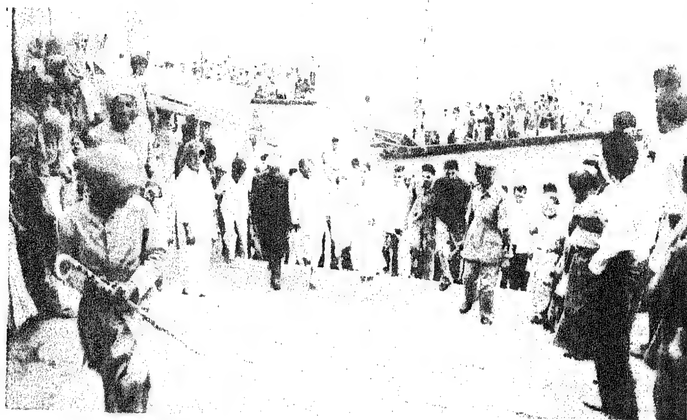
सहसा उसका मन उससे पूछ बैठा कि विलीनीकरण के पश्चात् यदि जनता की आकाक्षाओ की पूर्ति न हुई तो ? यदि ग्वालियर की जनता को गाधीजी की काग्रेस द्वारा रामराज्य न मिला तो ? यदि स्वाथ परता, पदलोलुपता ने काग्रेस के उन नेताओ को जो कि भविष्य मे ग्वालियर की जनता के भाग्य निर्माता होगे भ्रष्ट कर दिया तो ? यदि ब्रिटिश सत्ता की भाति काँग्रेस के नेताओ ने भी जनता के प्रति दमन नीति अपनाकर न्याय की इच्छुक जनता पर लाठी गोली की वर्षा की तो ? इन प्रश्नो ने महारानी को विचलित कर दिया। वह विचार-मग्न हो गई। सहसा मन के किसी जाग्रत कोने से एक ध्वनि आई और नेत्रो के सामने बिजली सी कौध गई। प्रश्नो का उत्तर स्पष्ट हो उठा। यदि जनता की आकाक्षाये पूरी न हुई, यदि जनता पर अत्याचार किया तो वह स्वय सत्याग्रह करेगी। वह अपनी जनता की प्रिय नेत्री बनकर उनकी आकाक्षाये पूरी करने का प्रयत्न करेगी किन्तु आज आज तो उसे देश के लिए अपना सुख, वैभव, वश गत ऐश्वय सब कुछ ही त्यागना होगा सरदार पटेल के देश भक्ति के आह्वान पर वह मौन कैसे रह सकेगी ? महारानी की आखो मे उस रात एक क्षण को नीद न आई।

शैया त्याग कर वह उठी और बिजली जलाई। सहसा उसकी आखें नीद मे सोते पति के सुन्दर मुख की ओर गई। अपनी हृदय की

भगवान की आराधना में रत राजमाता ।



नारी शिक्षा और जागरण के हेतु प्रयत्नशील राजमाता सिंधीअ कन्या विद्याल



नर्मदा के तीर पर स्थित पावन तीर्थ ओंकारेश्वर भगवान के दर्शनों को जाती हुई राजमाता ।

ओंकारेश्वर भगवान के उपयम में रत राजमाता ।

रानी को सब कुछ सौंपकर, सारे जीवन मरण, सुख दुख वैभव गरीबी के प्रश्नो को उसके अचल मे डालकर वह कैसे आश्वस्त सो रहे थे ? अगाध विश्वास से परिपूर्ण यह कैसी नीद थी ? इस अगाध विश्वास के प्रति वह क्या खरी उतरेगी ? उसका निणय क्या पति की इस सत्ता सुख, वैभव और शाति को भग न कर देगा ? हा भगवान यह कैसा दुखद भार आज उसके ऊपर आ पडा है ? उन निस्तब्ध क्षणो मे उसने प्रार्थना द्वारा उस अन्तरयामी से जो सबके नियन्ता है आत्मबल मागा जिससे कि वह उचित निणय ले सके ।

वह सोचने लगी कि विधि का यह कैसा व्यवधान है। सुख एव ऐश्वय की प्रहरी, लक्ष्मी की प्रतिमा नारी, परिवार की श्री एव अन्नपूर्णा मयी गृहलक्ष्मी सदा से धन अलकारो की प्रेमी रही है। पति के सुख का, परिवार के ऐश्वय का उत्तरदायित्व तो सदा से ग्रहणी पर रहा है। उसी नारी से, उसी गृहलक्ष्मी से, उसी अन्नपूर्णा से, आज अपेक्षा की जा रही है कि वह पति, पुत्र को, श्री, सुख एव भविष्य की गरिमा से वचित कर दें । शताब्दियो का वश वैभव और राज्य त्याग कर पति पुत्र को इससे वचित कर वह शाति की सास ले। उसका मन पुन दुविधा मे फस गया। भोले राजकुमार का अपनी कोख से जन्मे प्यारे बेटे का उसे स्मरण हो आया। व शगत गौरव और राज्य जिसका वह जन्म से अधिकारी है आज अपनी मा के कटु निणय से वह उससे व चित हो जावेगा। क्या यह सब कुछ करके वह मा के सच्चे उत्तरदायित्व को निभा रही है ? पति को श्री विहिन करके क्या वह पत्नी के कर्त्तव्य की कसौटी पर सच्ची उतर रही है ? उसका मन उन दुबल क्षणो मे सहसा पुकार उठा।

"यह कैसी विडम्बना है नाथ! मुझे सत्य का पथ दिखाइये भगवान!"

प्राथना मे रत उसने अपनी आखे मू द ली। सहसा उसके नेत्रो के सन्मुख आ गई एक तपस्वनी की आकृति जिसकी मौन तपस्या उसके

समस्त क्लेशो को हर रही थी। राजमहर्षी के मन मे सहसा कौध उठी रानी दुर्गावती, जीजाबाई और अहिल्याबाई की छाया। देश की आजादी की रक्षा के लिए यह क्षत्राणी रानी भी आज पीछे नही हटेगी बशगत वैभव और सत्ता का त्याग वह देश की आजादी की रक्षा के लिए करेगी। उसका त्याग केन्द्र को बलवती बनायेगा। आजादी का मुरझाता पौदा त्याग की इस वर्षा से मुस्करा उठेगा। मन का निश्चय स्पष्ट हो उठा और निस्तब्वता के उन क्षणो मे ग्वालियर की महारानी ने निर्णय कर लिया कि देश के केन्द्र को बलवती करने एव उसे विघटन स बचाने के लिए वह अपना सब कुछ वार देगी, न्यौछावर कर देगी। शताब्दियो की राजवश की परिपाटी, युगो का वश वैभव और सत्ता तथा परिवार का ऐश्वर्य इस महिमामयी ने न्यौछावर कर दिया सरदार के आह्वान पर उसने निश्चय कर लिया कि वह ग्वालियर राज्य के विलीनीकरण के लिए राजवश की सहमति दे देगी। उसी समय महाराज की नीद खुली। ब्राह्म मुहूत मे अपनी प्रिया के मुख पर एक दिव्य आभा देखकर उ होने कहा

"आज नीद नही आई क्या ? राजपाट छोडकर बहुत सुखी हो ?"

"क्या कहू नाथ—मेरा तो मन विभ्रम है।" महारानी ने कहा।

"अब विभ्रम क्यो ? तुम्हारे मुख की आभा से तो निर्णय स्पष्ट है। ठीक है। मैं भी अब समझ गया हू कि ग्वालियर के सिंधिया राजवश का गौरव तो अब जनता के साथ साथ चलने मे ही है। तुमने जो निर्णय लिया है वही ठीक है। बडा आश्चय है सुबह के इन क्षणो मे मैंने एक अजीब स्वप्न देखा

"वह क्या" महारानी ने उत्सुकता से पूछा

महाराज कुछ क्षण मौन रहे फिर धीरे धीरे बोले "मैंने देखा कि तुम आगे आगे जा रही हो और पीछे है अपार जनता की भीड। खुशी से पागल, हर्ष मे मग्न। मुझे यह सब देखकर बडी खुशी हो रही है

और फिर मैने देखा कि राजकुमार तुम्हारे साथ साथ जनता के सामने धारा प्रवाह भाषण दे रहे हैं और जनता तुम दोनो की जय जयकार कर रही है। तभी मेरी आँखे खुल गई और मैंने देखा कि तुम्हारे मुख पर एक अजीब सी रोशनी है ।" कहते कहते महाराज एक टक आखो से महारानी के आभायुक्त मुख को निहारने लगे। लाज मे भरी महारानी अपने गोरे गोरे हाथो से अपने दीप्त मुख को छिपा कर उठ बैठी।

प्रात काल पूजा के उपरान्त राजदम्पति ने दरबार कक्ष मे पदापण कर अपने निश्चय की सूचना समस्त मत्रियो के सन्मुख श्री मेनन को दे दी। महारानी को उन क्षणो मे स्मरण हो आया वह महामत्र जिसका जाप उन्होने एक रात्रि को बनारस के बसत आश्रम के कक्ष मे अकेले पलग पर पडे पडे किया था कि—

"त्याग सुख की कुजी है और सच्चे सुख की आधारशिला त्याग है।" मध्य भारत के निर्माण की सूचना जब श्री मेनन ने सरदार पटेल को उस दिन टेलीफोन द्वारा दी तो सरदार ने राजदम्पति की भूरि भूरि सराहना करते हुए, उनके देश-प्रेम के तथा त्याग के लिए हार्दिक बधाई दी। सरदार का काय महारानी के इस निणय के बाद सरल हो उठा। ग्वालियर राज्य का विलीनीकरण अब देश की अन्य ५०० देशी रियासतो के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया था।

राजमहिषी के अथाह प्रेम एव बलवती प्रेरणा ने, तथा सरदार के आह्वान ने ग्वालियर के महाराज को कर्तव्य की कसौटी पर खरा उतारा था। देश की आजादी का बुझता हुआ दीपक महारानी के इस त्याग के घृत से पुन प्रज्ज्वलित हो उठा। भीषण तूफान मे उसकी जाग्रत लौ जलती ही रही और अधकार के ऊपर आलोक की इस विजय की कहानी ग्वालियर की जनता मे फैल गई। दीपक के इस प्रकाश पुज पर आज ग्वालियर वासियो को ही क्यो समस्त भारत वासियो को गव था। वे जान गये कि इस दिए की लौ की रक्षा कर

रहे है दो सुन्दर कोमल किन्तु सबल हाथ। यह तो अब जलता ही रहेगा त्याग का घृत पाकर, बलिदान की वर्तिका पाकर।

और एक दिन वह सुहावनी सध्या भी आई जबकि ग्वालियर के नागरिक—बालवृद्ध युवक युवती स्त्री पुरुष दौड पडे गौरखी मन्दिर के विशाल प्रागण की ओर। वे उमड पडे थे अपने महाराज और महारानी के त्याग और देश भक्ति की सराहना करने और नवीन भारत के भाग्य विधाता सरदार वल्लभभाई पटेल का अपने नगर मे स्वागत करने।

उस अरूणिमामयी सध्या मे गौरखी मन्दिर के समीप निर्मित ऊचा विशाल मच विद्युत प्रकाश से जगमगा रहा था और विस्तृत प्रागण मे जनता की अपार भीड थी। मच पर आसीन थे आजाद भारत के गृहमत्री लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, उनकी पुत्री मीराबेन, कतिपय साथी और ग्वालियर नरेश महाराज जीवाजी राव सिंधिया। मच की दक्षिण दिशा मे चमकते आवरण के पीछे बैठी थी ग्वालियर की महारानी विजयाराजे सिंधिया—राजपरिवार की अन्य कुलवधुओ के साथ। मत्र मुग्ध ग्वालियर के नर नारियो ने उस सध्या को सुना सरदार पटेल का भाषण। अपनी ओजस्विनी गभीर वाणी मे वे कह रहे थे —

"हमारा देश अब आजाद है—हम प्रयत्न कर रहे है कि देश के समस्त नागरिक मिलकर इस आज़ादी का स्वाद मीठा बनावे और सदियो से विदेशी शासन के आधीन रहे अवनत देश को अब सुख समृद्धि पूर्ण करे, उसकी उन्नति करे। आप सब का सहयोग भी इस पावन काय मे आवश्यक है और यह आज आपके सच्चे नेता महाराज और महारानी के अनुपम अनुकरणीय त्याग से सभव हो सका है। आपकी इस अन्नपूर्णा मा ने आप सबके सुख और समृद्धि के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया है। आज तक वह मा परदे के पीछे बैठी, लगन से भरी आपका हित चिन्तन करती रही है—आपने

शायद इस मा के इस देवी के दर्शन नही किए है—माँ बेटो मे पर्दा कैसा ? मैं चाहता हू इस पावन बेला मे आप अपनी इस त्यागमयी, माँ के दशन का आनन्दलाभ उठायें। आप सब की ओर से मैं मा से प्राथना करूगा कि वे पर्दा त्याग कर मच पर उपस्थित होकर अपने पुत्रो को, बेटे बेटियो को दशन दे ।"

इसके पूव कि सरदार कुछ और कहते नर-नारियो मे खलबली सी मच गई और जनता ने देखा कि महाराज के सकेत पर एक ए० डी० सी० दौडकर अन्दर गया और पलक झपकते पर्दा उठ गया। बाहर मच पर अब आ खडी हुई थी—एक अद्वितीय रूपराशि, अनिंद्य सुन्दरी ग्वालियर की महारानी। सिंधिया व श की कोई महारानी आज तक अपनी प्रजा को दशन देने परदे के बाहर आवरण विहीन मुख से नही आई थी—युगो की उस परम्परा को तोडकर सरदार पटेल के आह्वान पर देश की नवीन आजादी के दीपक की वर्तिका को ऊची करने ग्वालियर की जनता के सामने खडी थी उसकी महारानी, उसकी अन्न-पूर्णा मा आजाद भारत की प्रबल शक्तिशाली सबल नारी जिस पर देश को गव था। सहस्रो आखे मच पर टकरा कर इस महिमामयी दिव्या का नमन करने लगी और उन्होने देखा उनका वयोवृद्ध नेता, भारत का गृहमत्री भी इस नवीन युग की महामाया शक्ति का अभिनन्दन कर रहा था। और वह नारी—वह सीता पावती रूपिणी मानो राम अथवा शिव के समीप खडी दोनो करो को वद्ध कर जनता जनार्दन को नमन कर रही थी। उस सध्या की वेला मे हजारो कठ अनजाने से स्वर मे सहसा पुकार उठे "महारानी की जय हो" और तभी उस नवीन युग की प्रेरणा दायिनी नारी ने, ग्वालियर की महारानी ने अपने सबल कठ से केवल कहा—"भारत की आजादी की जय हो—जयहिन्द" हष विह्वल पागल सी जनता अपनी त्यागमयी महारानी के कठ स्वर मे स्वर मिला कर चिल्ला उठी "जयहिन्द। भारत की आजादी शाश्वत हो।"

उस रात्रि को सरदार पटेल ने ग्वालियर की महारानी को अपनी

बेटी कह कर पुकारा और महाराज ग्वालियर को नवीन भारत का "सहशिल्पी।" मध्य भारत का उद्भव हुआ और ग्वालियर राज्य इसमे विलीन होने वाली सबसे बडी इकाई बना।

मध्य भारत के निर्माण का समारम्भ करने श्री जवाहर लाल नेहरू स्वय ग्वालियर पधारे जहा महारानी ने अपने पति के साथ उनका हार्दिक स्वागत किया। जयविलास प्रासाद के दरबार कक्ष मे आजाद भारत के प्रधानमत्री ने मध्य भारत निर्माण की घोषणा करते हुये ग्वालियर के राजदम्पति के त्याग की सराहना की तथा महाराज को इस राज्य का राज प्रमुख एव इन्दौर के महाराज को उप राज्य प्रमुख नियुक्त किया।

परसो की लेखा दिव्येश्वरी, कल की ग्वालियर राज्य की महारानी आज मध्य भारत प्रदेश की पूज्या थी। राजपरिवार के अनुपम त्याग की गाथा उनके पावन पुण्यो की कहानी थी। ग्वालियर और मध्य भारत को ही क्यो सारे राज्य को उनके उज्ज्वल त्याग पर गर्व था। भारत के गृहमत्री लौहपुरुष सरदार पटल ने देश के एकीकरण के अमर काय की कहानी मे ग्वालयर की महारानी का दिव्य योगदान मुक्त कठ से सराहा था।

ग्वालियर की महारानी की अभिनव त्यागपूर्ण प्ररणा न निर्माग किया एक नये इतिहास का, एक नई गाथा का, एक ऐसी कहानी का, जो युगो तक देश की सतति को आत्मिक बल प्रदान करती रहेगी।

—o—

सोपान ८

सेवा पथ को अनुगता

राजवश की शताब्दियो की सत्ता और ऐश्वय को देश के हित मे त्याग कर ग्वालियर के राजदम्पति ने अपने आतरिक सुख मे अभिवृद्धि की। महारानी का एक दिन का यह कथन कि सिंधिया वश के शासको ने सदैव ही केन्द्र को बलवती करने के लिए त्याग का पथ ग्रहण किया हे महाराज को बहुत भाया था और अपने पूवजो द्वारा स्थापित इस परम्परा को ग्रहण करने के लिए तैयार हो उठे थे। सिधिया वश द्वारा पेशवा की सत्ता को दृढ करने के लिये भरसक प्रयत्न किये गये थे—शाह आलम के शासन का पुनरुद्धार करने सिंधिया देहली जा पहुँचे थे और जब देश के आजादी के शिशु को अपनी जीवन रक्षा हेतु प्राण वायु की आवश्यकता पडी और इसके लिये देशी राज्यो के नरेशो से त्याग की अपेक्षा की गई तो उसमे भी सिंधिया राजदम्पति अग्रणी थे। त्याग जनित इस सुख का अनुभव कुछ ऐसा विचित्र था कि इस मानसिक अनुभूति की शब्दो मे व्याख्या कठिन है।

मध्य भारत के राजप्रमुख के उत्तरदायी पद को स्वीकार कर महाराज जीवाजीराव सिधिया ने अपने शासकीय विशाल अनुभव को जनता के चुने हुए प्रतिनिधियो को देना अपना कतव्य माना और वे इसके लिए प्रयत्नशील हो उठे। प्रदेश के काग्रेसी मन्त्रियो को सदैव ही उनका यह सद परामश प्राप्त था कि जनता के सेवको के लिए जन सेवा

का लक्ष्य ही मुख्य होना चाहिये न कि स्वार्थ सिद्धाथ सत्ता का चिन्तन। किन्तु एक वष की अवधि मे ही उन्होने पाया कि सत्ता और धन के लोभ से अछूते रहना इन नवीन शासको के लिये कठिन हो रहा था और शान शौकत एव व्यक्तिगत स्वार्थ की भावनाओ से त्याग की भावनायें कपू र की भाति उडने लगी थी। ग्वालियर की जनता यह जानती थी कि देशी राज्यो के विलीनीकरण के समय जब कि अन्य राजाओ ने राजकीय कोष से धन निकालकर उसे मन चाहे रूप मे खुशामदी चहेतो और परिजनो को लुटाया था वहा ग्वालियर के राज-दम्पति ने पूर्ण सचाई और ईमानदारी के साथ राजकीय कोष का एक एक पैसा नवनिर्मित प्रदेश के शासन को सौप दिया था और किसी भी जागीरदार अथवा जमीदार को इनामे नही बाटी गई थी। मध्य भारत राज्य मे विलीन २५ रियासतो मे सबसे बडी रियासत ग्वालियर थी और इसकी ४७ करोड रुपये की निधि नवीन सघ को हस्तान्तरित की गई थी जब कि शेष २४ राज्यो की मिश्रित निधि इसका केवल ५ वा भाग थी। राजदम्पति की ईमानदारी और त्यागवृति का यह एक अकाट्य प्रमाण था। इस सम्बन्ध मे श्री वी० वी० मैनन ने देश के गृह मत्री सरदार पटेल के समक्ष ग्वालियर के राजदम्पति के गौरवपूर्ण व्यवहार की भूरि भूरि प्रशसा की थी और यही कारण था कि मध्य भारत के निर्माण के समय तथा अन्य देशी राज्यो के विलीनीकरण के समय जो समझौते सरदार पटेल ने नरेशो के साथ किये उनके पुष्टी-करण के समय सरदार के मुख से ग्वालियर राजदम्पति का उदाहरण सदैव निकला तथा उनके देशभक्ति से प्रेरित त्याग की चर्चा वे सदैव करते रहे।

सरदार पटेल व नेहरू ने देशी नरेशो के त्याग का वास्तविक मूल्य आका था और एक भविष्य द्रष्टा की भाति उन्होने केन्द्रीय शासन की ओर से दिये हुए वचनो को अनुबन्धो तक सीमित न रख कर उनको भारतीय सविधान की धाराओ द्वारा पवित्रता भी प्रदान की थी। इन

नरेशो के हेतु स्वीकृत प्रीवी पर्स एव विशेषाधिकार भविष्य मे कही केवल थोथे वायदे न रह जावे इसके लिये भारतीय सविधान मे धारा २६१, ३६२, ३६३ एव ३६६ डाली गई थी। सरदार पटेल ने तो नरेशो को आजाद भारत का "सह शिल्पी" कह कर सम्बोधन किया था और अनुबन्धो को राष्ट्र की "सौगध" कहा था।

भारतीय सविधान मे जब ६२ एव ३६३ की धाराओ का समावेश किया गया तब कान्स्टीटुएन्ट एसेम्बली मे बोलते हुये सरदार पटेल ने कहा था कि

"I have already stated that the Privy Purse Settlements made by us will reduce the burden of expenditure on the Rulers to atleast one fourth of the previous figure Besides the States have benefitted considerably from the process of integration in the form of cash balances inherited by them from the Rulers " " In order to view the payments guaranteed by us in their correct perspective, we have to remember that they are linked with the most momentous developments affecting the most vital interests of this country These guarantees form part of historic settlements which enshrine in them the consummation of the great ideal of geographical, political and economic unification of India, an ideal which for centuries remained a distant dream and which appeared as remote and as difficult of attainment as ever after the advent of Indian Independence "

"It was against this unpropitious background that the Govt of India invited the Rulers of the States to accede on the three subjects of Defence, External Affairs and Communications At the time the proposal was put forward to the Rulers an assurance was given to them that they would retain the status quo except for accession on these subjects It had been made clear to them that there was no intention either to encroach on the internal autonomy or the Sovereignty of the States or fetter their discretion in respect of their acceptance of the new Constitution of India "

"These commitments had to be borne in mind when the States Ministry approached the Rulers for the integration of States There was nothing to compel or induce the Rulers to merge the identity of their States Any use of force would have not only been against our professed principles but would have also caused serious repercussions If the Rulers had elected to stay out, they would have continued to draw the heavy Civil List that they were drawing before "

"The Privy Purse Settlements are therefore in the nature of consideration for the surrender by the Rulers of all their ruling powers and also

for the dissolution of their states as separate units We would do well to remember that the Birtish Govt spent enormous amounts in respect of the Mahratte Settlement alone We were ourselves honouring the commitments of the British Govt in respect of the pensions of those Rulers who helped them in consolidating their Empire Need we call them small, I purposely use the word small price, we have paid for bloodless revolution which has affected the destinies of millions of our people"

"Let us do justice to them Let us place ourselves in their position and then assess the value of their sacrifices The Rulers have now discharged their part of the obligations by transfering all ruling powers and by agreeing to the integration of their States The main part of our obligations under these agreements, is to ensure that the guarantees given by us in respect of privy purses are fully implemented Our failure to do so would be a breach of faith "

इसी स दभ मे आगे बोलते हुये उन्होने कहा कि

"In commending the various provisions concerning the States to the House, I would ask the Hon'ble Members to view them as a co-ordinated overall settlement of a gigantic problem A particular provision isolated from its

context may give a wholly erroneous impression and the form in which the Rulers find recognition in the new Constitution of India in no way impairs the democratic set up of the States The Rulers have made an honourable exit They may well claim to be CO-ARCHITECTS in building a free and democratic India "

"Human memory is proverbially short Meeting in October 1949 we are apt to forget the magnitude of the problem which confronted us in August 1947 The situation was indeed fraught with immeasurable potentialities of disruption The minimum which we could offer to them as guide Pro Quo for parting with their ruling powers was to guarantee them Privy Purses and certain privileges on a reasonable and defined basis "

इसी वष एक अन्य अवसर पर अपने विचारो को व्यक्त करते हुए सरदार पटेल ने कहा कि —

"These Princes by their act of abregation have purchased in rerpetuity their right to claim the devotion of their people "

सरदार के उक्त शब्दो की हार्दिक सराहना करते हुए श्री मुरारजी भाई ने सन् १९६७ मे कहा कि —

"These words ring as true today as they did when they were spoken, and it would be wrong

to question the binding nature of the committment today as it would have been or as it was recognised to be then The aptness of what the Sardar Said can be better appreciated if it is borne in mind that the accession of one State alone, iu respect of which we have got entangled with a foreign power and whose security we have had to safeguard over the last sixteen years must have cost us much more than the capitalised value of the total amount we spend on the Privy Purse committments of 280 States, covering many times the area and population of that State"

भारत के उपप्रधान मत्री श्री मोरार जी देसाई ने १९६३ मे अपने पटेल मेमोरियल भाषण मे कहा कि —

"The magnitude of concern and anxiety that the State of Pakistan has been causing us ever sitce partition should be sufficient warning and lesson to us as to what the shape of things should have been if even 1% of the 562 States had chosen to follow the same path of seperate existence and seperate sovernignty "

देशी राजाओ के अनुपम त्याग को लक्ष्य मे रखकर सन् १९४९ मे काग्रेस के अध्यक्ष श्री पट्टाभीसीतारमैया ने अपने एक पत्र मे महाराज धारगधर को राष्ट्र के स्वतन्त्रता दिवस पर दी हुई बधाई को स्वीकार करते हुए लिखा कि —

"It would have been equally or more appro-

priate that I should have telegraphed in like terms to you The sacrifices that you, the Princes have made are much greater than those made by the people of India "

महारानी ग्वालियर द्वारा जिस त्याग का सूत्रपात देश के मध्यभाग मे किया गया था और जिसका पथानुसरण समस्त राजाओ ने किया वह देश के इतिहास मे एक अपूव उज्ज्वल घटना है।

मध्य भारत के राजप्रमुख के रूप मे पति को पाकर महारानी का यह लक्ष्य होगया कि वे जनसेवा के पावन पथ पर महाराज की अनुगता बने तथा प्रदेश की जनता की सेवा मे अपनी शक्तिया लगा दे। सन् १९४९ आया तो वे अखिल भारतीय महिला मडल के कार्यो मे सक्रिय भाग लेने लगी एव इसे वष वे इस सस्था की अध्यक्षा निर्वाचित हुई तथा इस उत्तरदायित्व को उन्होने पूण निष्ठा के साथ सभाला। २६ जनवरी सन् १९५० को भारत का सविधान देश मे प्रतिष्ठित हुआ तथा इसके अनुसार नवीन लोकतन्त्र प्रणाली का देश मे आविभाव हुआ इसके अन्तगत देश के प्रथम आम चुनावो की तैयारिया सन् १९५१ मे प्रारम्भ हो गई तथा इन चुनावो को देखने के लिए विदेशो से यात्रियो की टोलिया आने लगी। यह वह समय था जब कि देशवासियो के पूण विश्वास की पात्र एक ही सस्था भारतीय काग्रेस थी तथा गाँधी जी के बलिदान के पश्चात् जनता के मन मे उसका पूण जादू भर गया था। समस्त प्रातो मे काग्रेस के प्रत्याशी अधिकतर विजयी हुए तथा काग्रेस मत्रिमडल बने। पडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व मे केन्द्रीय मन्त्रिमडल बना व राजेन्द्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति निर्वाचित हुये। जनता आशा और उत्सुकता के साथ प्रगति की नवीन योजनाओ का सूत्रपात देखने लगी। भाखडानागल, हीराकुड, गाधीसागर बाध आदि विद्युत एव सिचाई के नवीन काय स्थापित होने लगे।

एक दिन सहसा राष्ट्र के सिर पर गाज गिरी और देश वासियो ने

सरदार पटेल के देहावसान का समाचार सुना। राजदम्पति इस शोक समाचार को सुनकर दुःख सागर मे डूब गये। उन्हे लगा कि मानो उनका ही निकटतम परिजन उनसे बिछुड गया हो। महारानी शोक व्यथा से विलख उठी। कैसी विडम्बना थी। उसी पुरुष की मत्यु पर जिसने राजा-रानियो को राजपाट विहीन किया था, जिसने उनसे सत्ता और ऐश्वय छीना था, जिसने राज परिवारो पर आश्रित हजारो लाखो व्यक्तियो को बेकारी मे ग्रस्त किया था—उसके ही अवसान पर राजाओ और रानियो ने सौ सौ आसू बहाये थे देश के शोक को अपना निजी शोक माना था और दुख से कातर हो रो उठे थे। ऐसा था यह देश का लाडला महान तपस्वी लौह पुरुष सरदार पटेल।

समय सरिता का प्रवाह बहता गया और मध्यभारत के प्रवास मे आकर देश के मूधन्य नेताओ ने ग्वालियर के जयविलास प्रासाद मे आतिथ्य स्वीकार किया। राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, प्रधान मत्री नेहरू, उनकी पुत्री इदिरा गाधी, लोक सभा के स्पीकर मावलकर राज्य सभा के अध्यक्ष डा० राधाकृष्णन आदि महान व्यक्तियो ने राजदम्पति द्वारा सचालित विभिन्न शिक्षा सस्थाओ एव सामाजिक सस्थाओ का निरीक्षण किया एव गृहमत्री प० गोविन्द वल्लभ पत आदि ने राज-दम्पति की जन सेवा की लगन को सराहा। सिधिया व श द्वारा स्थापित गगाजली कोष से शिक्षा सस्थाओ का विकास करने के हेतु २५ लाख रुपयो की धनराशि माधव इजीनियरिंग कालेज ग्वालियर को ५० लाख रुपयो की निधि सिंधिया स्कूल को, २५ लाख रुपयो की धन-राशि अशोक इजीनियरिंग कालेज विदिशा को, २७ लाख रुपयो का कोष सिंधिया कन्या विद्यालय ग्वालियर को प्राप्त हुए तथा २५ लाख रुपये की राशि विक्रम एव जीवाजी विश्वविद्यालयो के हेतु रख दी गई। इस प्रकार कई नवीन जन-उपयोगी शिक्षा सस्थाओ का जन्म हुआ। महाराज जीवाजीराव सिंधिया बनारस एव तत्पश्चात् विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति निर्वाचित हुये।

देश की विभिन्न शिक्षा सस्थाओ को राजदम्पति ने अपने परिश्रम निस्वाथ सेवा एव उदारता से उन्नति के पथ पर अग्रसर किया। राजर्षि डा० राधाकृष्णन् का ग्वालियर के राजदम्पति से बहुत पुराना परिचय था। उप राष्ट्रपति रहते हुए उन्होने भी ग्वालियर आने का निमत्रण स्वीकार किया तथा वे यहा आकर महारानी के अतिथि बने एव ग्वालियर सिंधिया पब्लिक स्कूल का निरीक्षण किया तथा छात्रो को उदबोधन कर उन्होने इस सस्था को गौरवान्वित किया। इस अवसर पर बोलते हुये उन्होने राजदम्पति के शिक्षा प्रेम एव मध्य क्षेत्र मे सम्पादित अनुपम कार्यों की भूरि भूरि सराहना की तथा यह आशा व्यक्त की कि सिंधिया कन्या विद्यालय महाराज एव महारानी के पथ प्रदशन मे देश की अग्रिम सस्था बनेगी। भारत के मूधन्य नेताओ से निकट सम्पक बनाये हुये एव उनके विचारो तथा पथ प्रदशन का लाभ उठाते हुए राजदम्पति ने अपनी समस्त शक्तिया शिक्षा प्रसार के कार्यो मे लगा दी तथा सिंधिया शिक्षा सस्थान द्वारा कई शिक्षा केन्द्रो को जनता की इस क्षेत्र मे सेवा करने का अवसर मिला। महारानी इन दिनो नेहरू परिवार, डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधाकृष्णन्, श्री पत आदि के सान्निध्य का लाभ उठा रही थी तथा उनकी लगन, त्याग एव सेवावृति की देश के नेताओ द्वारा सराहना की जा रही थी। जनता से महारानी का सम्पक दिनप्रति दिन बढता जा रहा था किन्तु उनका कार्य क्षेत्र इन दिनो विशेष कर नारी जगत एव शिक्षा सस्थाये ही थी।

सितम्बर १९५६ की बात है। भाषा पर आधारित राज्यो के निर्माण का आन्दोलन जोरो पर था। उत्तर प्रदेश की भाति देश के मध्य मे स्थित हिन्दी भाषी क्षेत्र के समीकरण का प्रयास किया जा रहा था। बम्बई एक द्विभाषी राज्य के रूप मे अवतरित हो रहा था जिसमे मराठी और गुजराती भाषाओ का क्षेत्र समाहित था। मध्य प्रदेश मे कुछ मराठी भाषी जिले थे जिन्हे बम्बई राज्य मे सकलित करने के

राष्ट्रपति
और
महारानी,



राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के साथ महारानी विजयाराजे सिंधीया



सिंधीया परिवार के साथ भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री एवं श्रीमती ललिता शास्त्री ।

भगवान के पुजन मे लीन राजदम्पति

अर्चना में लीन महाराज और महारानी सिंधीया ।

हेतु प्रस्तावित किया गया था तथा मध्य भारत मे, मध्य प्रदेश के उन जिलो का विलय होना था जो हिन्दी भाषी थे। इस प्रकार एक वृहत मध्य प्रदेश का निर्माण स्वीकार कर लिया गया था जिसमे ४३ जिले प्रस्तावित थे जो कि सब ही हिन्दी भाषी थे। देश के हृदय भाग मे स्थित यह राज्य देश के प्राय ७ ८ मुख्य राज्यो से सीमास्पर्श कर रहा था। उत्तर प्रदेश राजस्थान की सीमाओ से इसकी उत्तरी सीमा मिलती थी उधर आन्ध्र एव महाराष्ट्र से इसकी दक्षिणी सीमा लगी हुई थी उडीसा बिहार राज्य भी इस मध्य प्रदेश की सीमा का स्पर्श करते थे।

नवम्बर १९५६ मे इस नवीन मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ और श्री रविशकर शुक्ल इसके प्रथम मुख्य मत्री बने। स्वतन्त्र भारत की चार इकाइयो (मध्य भारत, विध्य प्रदेश, भोपाल तथा पूव मध्य प्रदेश महाकौहल भाग के समन्वय से इस नवीन मध्य प्रदेश का जन्म हुआ और इसकी राजधानी के लिये चुना गया भोपाल नगर। यह प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बडा राज्य था किन्तु विकास एव समृद्धि की दृष्टि से सबसे पिछडा हुआ अ चल था क्योकि यहा की अधिकाश जनता आदिवासी थी—उन ग्रामो की निवासिनी जहा मानव सभ्यता के विकास की अभी प्रारम्भिक कहानी ही कही जा रही थी। इसमे थी छत्तीसगढ की पुरानी रियासते सरगुजा, कोरिया, चाद दुरवार, रायगढ, जशपुर आदि जहा के साल के सघन वन और प्रकृति का विशाल खनिज भडार—कोयले की खदाने अभी भी अविकसित अवस्था मे थे और जहा के निवासी नवीन सभ्यता और उसके उपकरणो से सवथा अपरिचित थे। इसी प्रदेश मे था दण्डकारण्य से लगा बस्तर राज्य का सागोन, साल के सघन वनो से आच्छादित वह अविकसित अ चल जिनमे आदिवासी पुरुष लगोटी लगाये तीरकमान हाथ मे लिये निशक वनो मे घूमते फिरते थे और महिलायें उघाडी छाती लिये दारिद्रय की साकार प्रतिभा बनी सघन वनो से कन्द मूल

फल एकत्रित कर परिवार का पालन-पोपण करती थी। यहा था नवीन मध्य प्रदेश का वह पूर्वांचल बस्तर, जहा राजनैतिक नेता के रूप मे अथवा द्वेवेश्वरी देवी के परम पुजारी के रूप मे महाराज प्रवीण चन्द भजदेव अपनी प्रजा के अगुआ थे और उनके पीछे थी आदिवासियो की हुकारती पक्तियाँ तीर कमानो से पूरी तरह लैस, जिन्होने नवीन सहारक गैस तथा एटम बम का शायद नाम भी न सुना था। निधनता, दरिद्रता मे पले ये आदिवासी परिवार अपने देश की १० वष पूव की आजादी की कहानी से भी सवथा अपरिचित थे। वे तो जानते थे केवल अपने राजा-महाराजा प्रवीणचन्द भजदव को। इसी मध्य प्रदेश मे था आदिवासियो का वह वि-ध्याचल जिसकी सीमा पूर्व कोरिया और सरगुजा रियासतो की सीमा से मिलती थी और जहा की सभ्यता मे इन दिनो भी प्राचीनता की झाकी दिखाई देती थी। वेडन और सीधी के वन भाग अपने अ चल मे साल के वृक्षो के बीच भारत के प्रसिद्ध "सफेद शेरो" को छिपाये हुये थे। इन श्वेत शेरो की दहाड और ललकार यदाकदा १०० फीट ऊचे साल के गहन वनो मे गूज उठती थी। यहा के वनो मे रहने वाले कौरकू, गोड, उराव, कौरव, पाडव, वेगे वे आदिवासी थे जिनमे जन्तर-मन्तर की प्रथा से ही रोगो का निदान होता था और एटम बम के इस वैज्ञानिक युग मे जिनके शौर्य की कहानी तीर कमान तक ही सीमित थी। मैकल की पहाडियो के मध्य मे स्थित भगवान शिव की रम्य थली अमरकटक भी इसी विन्ध्याचल मे थी जहा से नर्मदा निकलकर एक नवीन सभ्यता की सृष्टि करती हुई मध्य प्रदेश और सौराष्ट्र मे प्रवाहित होती थी। ग्वालियर क्षेत्र की चम्बल और विन्ध्य क्षेत्री नर्मदा नदियो के बीच का अ चल हिन्दी भाषी होने के नाते अब एक सूत्र मे बध चुका था और नवीन मध्य प्रदेश का रूप ग्रहण कर नवीन राजनीति को जन्म दे चुका था। इस पिछडे हुये अविकसित किन्तु विशाल क्षेत्र की जनता उत्सुकता से आह्वान कर रही थी उन निस्वार्थ, कमशील, त्यागी

नेताओ की जो अपनी लगन, ईमानदारी और सत्यता से यहा के जन मानस को बल दे और उनकी दरिद्रता एव अभावो का विनाश करें। यह प्रदेश अपने जन्म के क्षणो से अपेक्षा कर रहा था ऐसे नेतृत्व की ऐसे जाग्रत कमठ व्यक्तित्व की जो अपने त्याग, विनय एव निस्वाथ सेवा से उसके विकास का अवरुद्ध माग खोल दे और एक नवीन चेतना का प्रसार करे। ग्वालियर की महारानी भी युग की इस पुकार को सुन रही थी और ग्वालियर की जनता के साथ उन स्वप्नो को स्मरण कर रही थी जोकि मध्य भारत के निर्माण के समय उन्होने सजोये थे। ग्वालियर का विलय मध्य भारत मे देखकर और आज मध्य भारत का विलय मध्य प्रदेश मे देखकर महारानी को हर्ष ही था क्योकि मन मे एक आशा की ज्योति जाग्रत थी एक प्रकाश पुज स्पष्ट था जिसमे वे देख रही थी राष्ट्र का हित सबल सशक्त राष्ट्र का उदय एक ऐसे राष्ट्र का समुन्नत उत्थान जिसमे युगो का दारिद्रय और आत्मक्लीवता का पराभाव होगा। उनकी दृष्टि राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की ओर लगी थी। नवीन मध्य प्रदेश की जनता की सेवा की प्रबल आकाक्षा मन मे सजोये यह दिव्या प्रतीक्षा मे थी उन क्षणो की जबकि वह अपने जीवन मे, इस प्रदेश की भावनाओ की अभिव्यक्ति को समाहित कर सकेगी, जबकि उसके जीवन का एक-एक क्षण इस प्रदेश की जनता की सेवा मे व्यतीत होगा।

— o —

सोपान ६

राजनीति मे आविभाव

सन् १९५६ के नवम्बर मास मे मध्य भारत राज्य का विलय नवीन हिन्दी भाषी मध्य प्रदेश मे हो गया। पूव मध्य प्रदेश के रायपुर, विलासपुर, बस्तर, दुग, सरगुजा, कोरिया और जसपुर आदि भाग जो महाकौशल भाग से नामाकित थे इस नये मध्य प्रदेश मे मिल गये तथा भोपाल अब तक केन्द्रीय शासित राज्य थे एव विंध्य प्रदेश जिसमे रीवा, पन्ना, टीकमगढ, छतरपुर, अजयगढ आदि पूत्र देशी रियासतो के भाग थे इस नवीन प्रदेश मे सम्मिलित हो गये। अब देश के मध्य भाग मे स्थित यह प्रदेश क्षेत्रफल की दष्टि से सबसे बडा प्रदेश था। विलय के पूव काग्रेस के मत्रिमडल इन चारो भागो मे थे जिनका अब एकीकरण हुआ। प्रत्येक भाग की जनसख्या के अनुपात से नव प्रदेश के मत्रिमडल मे मत्रिगणो की सख्या का निर्धारण हुआ और पूव भोपाल के मुख्य मत्री डा० शकरदयाल शर्मा, तथा पूव विंध्य प्रदेश के मुख्य मत्री श्री शम्भूनाथ शुक्ल एव पूव मध्य भारत के मुख्यमत्री श्री तख्तमल जैन अपने अपने सहयोगियो के साथ मध्य प्रदेश के नवीन मत्रिमडल मे स्थान पा गये।

इस वृहत मत्रिमडल के निर्माण के साथ साथ शासकीय सेवाओ का एकीकरण प्रारम्भ हुआ तो प्रत्येक अचल की छुपी प्रादेशिक भावनायें और पक्षपात की प्रवृत्ति बढती दिखाई दी और मुख्य मत्री

के लिए इन दलगत और प्रादेशिक भावनाओ का निष्कासन एक समस्या बन गई। कहने को तो मत्रिमडल एक था और पूर्णतया काग्रेस का ही था किन्तु महाकौशल, विंध्य प्रदेश और मध्य भारत के नाम और उनकी मडली, स्पष्टतया अलग अलग होती चली जा रही थी। शासन के उच्च अधिकारियो मे भी यही क्षेत्रगत भावना व्याप्त थी तथा इसकी पृष्ठ भूमि मे शासकीय सेवाओ के एकीकरण के नाम पर अन्याय के पहाड ढहाये जा रहे थे।

ग्वालियर के राज दम्पति अब सक्रिय राजनीति से सन्यास ले चुके थे और वे तटस्थ होकर बम्बई के समुद्र महल मे अधिकतर निवास कर रहे थे।

सन् १९५६ के अतिम चरण की बात है। देहली के तीन मूर्ति भवन मे रात्रि के १० बजे प्रधानमत्री नेहरू की प्रतीक्षा मे नवीन मध्य प्रदेश के मुख्य मत्री प० रविशकर शुक्ल एव उनके सहयोगी कतिपय वरिष्ठ मत्रीगण आसीन थे। नवीन प्रदेश का निर्माण हो चुका था किन्तु विभिन्न इकाइयो का तालमेल तथा एकीकरण शेष था। समस्याये राजनैतिक भी थी और वैयक्तिक भी। नेतागण आपस मे विचार विमर्श कर रहे थे कि नेहरू जी का आगमन हुआ। वे आते ही बोले

"माफ करियेगा। मुझे कुछ देरी हो गई है। हा तो देखिए आप सबको इस नए प्रदेश के एकीकरण के लिए बहुत काम करना है। सबको साथ लेकर चलना होगा। मैं नही चाहता कि इस बार फिर आप लोग मध्य भारत की तरह इन्दौर, ग्वालियर आदि का अलग अलग नाम लेकर लडें और हमारे काग्रेसी साथी अब भी महाकौशल, विंध्य प्रदेश, भोपाल और मध्य भारत की अलग बातें सोचें। आप सबको अब सिर्फ नवीन मध्य प्रदेश के हित की बात ही सोचनी होगी।"

"यह तो ठीक है पडितजी! किन्तु इन सब इकाइयो का तालमेल

बिठाना बहुत कठिन हो रहा हे। क्षेत्रीय भावना/b अब भी जोर पकडे हुए है और उधर मध्य भारत अचल मे हिदू महासभा का काफी जोर है। आम चुनाव अब सिर पर है " श्री रवि शकर शुक्ल बोले।

"देखिये शुक्ल जी! मैं न तो हिदू महासभा से डरता हू और न इस आर० एस० एस० से। मुझे तो डर है आप लोगो से। अपने काग्रेसी साथियो से जो कि एक एक पद के लिए हर ओहदे के लिए सर फुटोवल करते है। अपने शमनाक व्यवहार से बाजार मे खडे होकर सरेआम काग्रेस की बदनामी कराते हें—अपनी खुदगरजी के लिए। आप सबको चाहिए कि आप कुछ ईमानदार और प्रभावशील लोगो को काग्रेस की तरफ से खडा करे ताकि जनता पर उनका कुछ असर पडे।"

"मैं तो पूणतया आप से सहमत हू पडितजी! इस आम चुनाव मे हम लोगो का प्रयत्न तो यह हे कि जिन व्यक्तियो मे योग्यता हे, ईमानदारी है, कतव्यपरायणता है और साथ ही जनता का विश्वास भी जि हे प्राप्त हो उन्हे काग्रेस टिकट पर खडा करने के पूरे प्रयत्न किय जावे चाहे वे काग्रेस के अब तक सक्रिय सदस्य न भी बने हो।"

"ऐसे व्यक्ति मिलेंगे कहा?" एक वरिष्ठ मत्री बोले "मिलेगे क्यो नही? मै यह मानने को तैयार नही कि जनता का प्रत्येक सेवक बस सिफ सत्ता का भूखा है और अपना स्वाथ पूरा करने के लिए नेता का जामा पहिने हुये है। आप लोग पूर्व नरेशो के परिवारो को परखिये। इन सब की सहानुभूति काग्रेस के साथ है उसका इस्तेमाल करिये। इनमे से योग्य चरित्रवान व्यक्तियो को काग्रेस टिकट लेने के लिए राजी करिए—मैं तो इसमे कोई बुराई नही समझता। आखिर वे भी तो भारत के नागरिक हैं। ग्वालियर के सिंधिया व श को ही लीजिये मैं तो महाराज अथवा महारानी को काग्रेस टिकट पर खडा करने मे

कोई अडचन नही पाता। यह आप लोगो का काम है कि आप इसके लिए उन्हे तैयार करें ।" नेहरू जी ने कहा।

"पडितजी ! हम सब तो मध्य प्रदेश के कांग्रेस के प्रत्याशिओ की सूची पर आप से चर्चा करने आये थे ताकि आप की स्वीकृति प्राप्त कर प्रदेश कांग्रेस द्वारा उसे देहली भिजवाया जा सके।" मुख्य मत्री शुक्ल जी बोले।

"ठीक है मेरे विचार तो आप ने जान ही लिए है इनके मुताबिक आप विधान सभा और ससद के प्रत्याशिओ की सूची बना कर इदिराजी से चर्चा कर लीजिये आज तो इस मामले पर ज्यादा समय देना मेरे लिए मुमकिन न होगा।" कह कर पडितजी अन्य मुलाकातियो से मिलने दूसरे कमरे मे जाने का उपक्रम करने लगेगे।

और फिर मध्य प्रदेश के वरिष्ठ मत्रीगणो की यह टोली तीन मूर्ति भवन से अपनी बैठक समाप्न कर वापिस अपने अपने डेरो पर जा पहुँची।

कतिपय दिवस भी अभी बीते न होगे कि सहसा भोपाल और रायपुर मे यह दुखद समाचार फोन द्वारा पहुचा कि नवीन मध्य प्रदेश के मुख्य मत्री प० रविशकर शुक्ल का देहली मे अचानक देहावसान हो गया है। समस्त प्रदेश दुख सागर मे डूब गया। शुक्लजी के लम्बे राजनैतिक जीवन के साथी वेदना से कराह उठे। प्रदेश की जनता ने पाया कि उसका एक सव सम्मानीय नेता उठ गया है जिसके कुशल नेतृत्व की प्रतीक्षा यहा की जनता उत्सुकता से कर रही थी।

वयोवृद्ध शुक्लजी की इस अचानक मृत्यु से प्रदेश के राजनैतिक वायुमडल मे गहन निराशा छा गई। राजनीति के शतरंज के पुराने खिलाडी नई चाले चलने लगे। उथल पुथल प्रारम्भ हो गई। देश के आम चुनावो के हेतु कांग्रेस प्रत्याशियो के चयन मे नई बाधाये उपस्थित होने लगी। राजनैतिक हथकडो की दौड तीव्र हो गई। ग्वालियर सभाग भी उससे अछूता न रहा। उन दिनो महाराज अपने

साथियो सहित बम्बई मे थे और महारानी ग्वालियर मे । पूव ग्वालियर राज्य के वरिष्ठ अनुभवी नेताओ ने स्थिति को भापा और कतिपय व्यक्तियो का एक शिष्ट मडल जिनमे भिन्ड के सर्व सम्मानीय नेता श्री हरिदास भूता प्रमुख थे महारानी से भेट करने जा पहुँचे । इस शिष्ट मडल के प्रत्येक सदस्य को यह पूण विश्वास था कि जनता की सहानुभूतिया हिन्दू महासभा के साथ है तथा गुना, शिवपुरी, ग्वालियर क्षेत्रो मे से किसी भी काग्रेसी प्रत्याशी का ससद अथवा विधान सभा की सीटो पर विजय प्राप्त करना कठिन है । काग्रेस की साख बढाने का केवल एक ही उपाय है और वह हे उसके हेतु राज-परिवार का समथन प्राप्त करना और महाराज महारानी को काग्रेस सीट पर चुनाव के हेतु खडा करना । भूताजी भी महाराज के विचारो से परिचित थे और उन्हे सन्देह था कि वे उन्हे राजनीति से विरक्त पुन राजनीति मे आने के हेतु तैयार कर पायेंगे । सभावना यह अवश्य थी कि शायद महारानी, इदिराजी अथवा नेहरूजी का दबाव मानकर काग्रेस टिकट ले लें । शिष्ट मडल ने बहुत ही चतुराई से प्रारम्भिक वार्ता की तथा महारानी को इस बात पर सहमत कर लिया कि वे इदिरा जी से तुरन्त मिलकर शिष्ट मडल का यह अनुरोध कि गुना ससदीय सीट पर काग्रेस का कोई प्रभावशील लोकप्रिय नेता नामाकित किया जावे, जोकि हिन्दू महासभा के महामत्री श्री देशपाडे के मुकाबले मे चुनाव लडकर विजयी हो सके, उन तक पहुचा देगी । काग्रेस के प्रति महारानी की सदभावनाओ का परिचय भूताजी को भली भाति था और यही कारण था कि वे अपने सबल तर्कों द्वारा महारानी को इस काय के लिये तैयार कर पाये थे । उन दिनो ग्वालियर के निवासी साधु स्वभाव के मेजर जनरल यदुनाथसिह जी राष्ट्रपति के मिलिटरी सेक्रेटरी थे । उन्हे देहली फोन करने पर पता चला कि इदिरा जी एक दिन पश्चात ही एक पक्ष के लिये देहली से बाहर जा रही हैं और यदि महारानी आज ही सध्या तक देहली पहुँच सके तो वार्तालाप का

समय निश्चित किया जा सकता है। तत्काल ही महारानी का वायुयान द्वारा देहली प्रयाण निश्चित हो गया और जाने के पूव महारानी ने पूण प्रयास किया वे बम्बई से फोन द्वारा वार्तालाप कर महाराज से इस विषय मे आज्ञा प्राप्त करलें किन्तु फोन सम्पक उपलब्ध न हो सका और महारानी का वायुयान देहली रवाना हो गया।

उसी रात्रि को जब त्रिमूर्ति भवन मे महारानी श्रीमती इ दिरा गाधी के निमत्रण पर पहुची और उन्हे गुना की स्थिति से अवगत कराया तो इदिराजी ने तत्काल यह सलाह दी कि महारानी को स्वय काग्रेस की प्रत्याशिता स्वीकार कर गुना ससदीय क्षेत्र से चुनाव लडना चाहिए और उसी अवस्था मे हिन्दू महासभा के प्रत्याशी श्री देशपाडे से काग्रेस वह सीट छीन सकती है। महारानी इस प्रस्ताव को सुनकर सहसा अकचका गई और बोली—इ दिराजी ! मेरे लिये स्वय काग्रेस का टिकट स्वीकार करना सभव नही है ?"

"क्यो इसमे क्या बाधा है ? आपका समस्त परिवार लोकप्रिय है—ग्वालियर राजवश को जनता का पूर्ण प्रेम और विश्वास प्राप्त है और फिर आप तो शिक्षा और समाज के क्षेत्र मे बहुत काय कर चुकी है।'

"नही इदिराजी ! इसमे और भी कई कठिनाइया है" "मैं भी तो सुनू उन कठिनाइयो को ? मेरी राय से तो आपको काग्रेस टिकट स्वीकार कर ही लेना चाहिये। कोई विशेष आपत्तिया हो तो मुझे बतलाइये शायद मैं उनका हल सुझा सकू "।

"बात यह है कि एक तो मेरे लिये श्वेत साडी धारण करना सभव नही—यह हमारी परम्परा के अनुकूल न होगा—सधवा स्त्रियो के लिये श्वेत परिधान पहिनना हमारे समाज मे वर्जित सा ही है।"

"वाह ! यह भी आपने क्या आपत्ति उठाई है—कहता कौन है कि आप श्वेत साडी पहिनिये। आप रगीन रेशमी साडी पहिन कर ससद मे आइये—हा और क्या आपत्ति है जरा सुनू तो सही ?"

"दूसरे मैंने इस विषय मे अभी तक महाराज से चर्चा नही की हैं और न उनकी स्वीकृति ही ली हे। उनकी आज्ञा प्राप्त किये बिना मै काग्रेस टिकट हेतु कैसे कुछ कह सकती हूँ।" "महाराज मना तो करेंगे नही और उनसे तो पडितजी भी बात कर लेगे आप इसकी चिन्ता क्यो करती है।" श्रीमती गाधी ने कहा।

और फिर उसी रात्रि को महारानी की भेंट भारत के प्रधान मन्त्री नेहरूजी से हुई जिसमे कि नेहरूजी ने महारानी के ना ना कहते रहने पर भी यह निश्चित कर दिया कि गुना क्षेत्र की ससदीय सीट पर काग्रेस की प्रत्याशी महारानी ही रहेगी।

अर्द्ध रात्रि के लगभग जब देहली से महारानी ने टेलीफोन द्वारा सम्पर्क बम्बई मे महाराज से साधा तो प्रारम्भ मे महाराज यही समझते रहे कि महारानी ग्वालियर से बातचीत कर रही है किन्तु जब महारानी ने देहली मे हुई नेहरूजी की भेंट और उसमे लिये हुये निर्णय के विषय मे कहा तो महाराज चौक पडे बोले—"यह आपने क्या किया। मेरी कोई इच्छा नही है कि हम दोनो मे से कोई भी अब राजनीति के दलदल मे फसे और फिर आपका काग्रेस प्रत्याशी के रूप मे चुनाव लडना तो बिलकुल भी सगत न होगा। ग्वालियर गुना की प्रतिदिन की राजनैतिक पार्टियो की बैठक मे भाग लेना आपके लिये सभव नहो है।" महारानी मौन थी और महाराज अपने विचारो की परिपुष्टि किये चले जा रहे थे।

दूसरे दिन वायुयान से महारानी बम्बई पहुची तो वर्ली के समुद्र महल मे मानो एक तूफ़ान सा आ गया। महाराज अपने विचारो पर दृढ थे। वे मध्य भारत के राजप्रमुख के रूप मे काग्रेसी मन्त्रिमण्डल की शिथिलता, नेताओ की पारस्परिक दुर्भावनाओ का खुला नाच और मन्त्रियो की स्वार्थ वृत्ति को भली भाति परख चुके थे। वे महारानी को इन अभिसधियो से युक्त वातावरण से तटस्थ ही रखना चाहते थे और उधर महारानी का एक ही तर्क था कि काग्रेस के सिद्धातो से,

उसके नेताओ के स्वातत्र्य सग्राम मे किये हुए त्यागो से गाधीजी की नैतिकता से भला किसे विरोध हो सकता है। और फिर व्यक्तियो के ऊपर सिद्धातो की विजय क्यो नही होगी जबकि देश को अब भी नेहरूजी, बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री ढेबर भाई आदि गाधीजी के सहयोगियो का नेतृत्व प्राप्त है। जो कुछ भी बुराइया और दोष इस समय काग्रेस मे हैं वे पतनोन्मुख व्यक्तियो के कुकृत्यो के कारण है न कि उसके द्वारा पोषित सिद्धातो के कारण और अभी देश की ऐसी दुरावस्था नही है कि ईमानदारी, सच्चाई और चरित्र की पवित्रता ऊपर ही न उठ सके। महाराज की समझ मे न आया कि महारानी के इन तर्कों का क्या उत्तर दे किन्तु यह स्पष्ट था कि वे इस स्थिति से प्रसन्न नही थे। देहली मे काग्रेस की प्रत्याशिता स्वीकारने की अचानक दी हुई महारानी की सहमति से वे कुछ क्षुब्ध से हो उठे थे।

तीन चार दिवस के उपरान्त राजदम्पति बम्बई से ग्वालियर आये तो उन्हे प्रधानमत्री श्री नेहरूजी, श्री एस० के० पाटिल, श्री चौहान एव ढेबर भाई आदि के सदेश प्राप्त हुए जिनमे अनुरोध था कि महारानी को काग्रेस टिकट स्वीकार कर गुना क्षेत्र से हिदू महासभा के प्रत्याशी श्री देशपाडे के विरुद्ध चुनाव लडना चाहिए। भिण्ड के काग्रेसी नेता और महाराज के मित्र श्री हरिदास भूता भी ग्वालियर आये और महाराज से मिले। उन्होने कहा कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के वरिष्ठ अधिकारियो ने एव मध्य प्रदेश काग्रेस ने प्रधानमत्री श्री नेहरू के इस सुझाव को स्वीकार कर लिया है कि महारानी को ससद सीट पर काग्रेस प्रत्याशी के रूप मे खडा किया जावे अन्यथा हिन्दू महासभा के प्रत्याशी की विजय प्राय निश्चित सी है और काग्रेस को यह हार बहुत महगी पडेगी। वैसे भी इदिराजी ने यह सदेश भेजा है कि महारानी तो टिकट स्वीकार करने के पक्ष मे है ही और सबको पूर्ण आशा है कि महाराज भी अपनी इस विषय मे अनुमति

दे देगे। भूताजी के व्यक्तिगत विशेष अनुरोध करने पर भी महाराज खुले हृदय से "हा" न कह सके और एक एक कर दिन निकलते चले गये। नामामन् पत्र प्रेषित करने के हेतु अब केवल चार दिवस शेष थे और उधर राजनैतिक नेताओ की ओर से दबाव बढता चला जा रहा था। महाराज अब भी दुविधा मे थे। इसी मे एक दिन और व्यतीत हो गया।

दूसरे दिन की बात है सन्ध्या को राजदम्पति कतिपय आगत मित्रो के साथ जय विलास प्रासाद मे बैठे थे कि देहली से श्री लाल बहादुर शास्त्री का फोन आया। उन्होने अपनी स्वभावगत नम्रता से महाराज से कहा—"महाराज! पडितजी को आपके निश्चित उत्तर की प्रतीक्षा है। काग्रेस प्रत्याशियो की मध्य प्रदेश की सूची निश्चित होकर प्रकाशित हो चुकी है। केवल गुना क्षेत्र का नाम और प्रकाशित होना है। आपके पूर्व ग्वालियर राज्य से तो हिन्दू सभा के ही ऐसे महारथी प्रत्याशी है जिनको पराजित करना खेल नही है। सुना है शिवपुरी मे डा० खरे प्रत्याशी हैं और राज्य विधान सभा के लिये श्री ब्रजेश है। गुना, चन्देरी, विदिशा के क्षेत्रो मे भी हिन्दू महासभा प्रत्याशियो का ही बोलबोला है। नेहरूजी को पूर्ण विश्वास है कि काग्रेस की प्रतिष्ठा के पुन स्थापन मे उन्हे आपसे पूर्ण सहयोग का अर्थ है महारानी साहिबा का काग्रेस टिकट स्वीकार कर गुना क्षेत्र से खडा होना।" "यह तो ठीक है शास्त्रीजी मेरी सेवाये सदैव नेहरूजी के आधीन हे किन्तु आपकी व्यक्तिगत क्या सलाह है "

"मेरी सलाह" शास्त्रीजी कुछ मुस्कराये और बोले—"महाराज, मेरा कहना मानिये तो महारानी साहिबा को काग्रेस टिकट स्वीकार कर लेने दीजिये।"

"किन्तु शास्त्रीजी!" महाराज ने कहा।

"मुझे आपकी आपत्तियो का आभास है महाराज! और कुछ सीमा तक मैं उनसे सहमत भी हू किन्तु इस विशेष स्थिति मे सबका

अनुरोध आपको स्वीकार करना ही होगा—तो मैं पडितजी से कह दू गा कि आप सहमत है ।" शास्त्री बोले ।

महाराज कुछ क्षण मौन रहे और फिर उन्होने धीमे स्वर मे कहा—"शास्त्रीजी ! कल स ध्या तक का समय और दीजिये । कल निश्चित रूप से उत्तर दे सकेंगे ।" और महाराज ने फोन रख दिया ।

रात्रि को मित्र मडली मे इस प्रश्न पर विस्तृत विचार हुआ और और इसके पूव कि महाराज किसी अतिम निणय पर पहुच सकते देहली से राष्ट्रपति के मिलीटरी सेक्रेटरी श्री यदुनाथ सिह जी का फोन आ गया । श्री यदुनाथ सिह जी ग्वालियर के ही थे तथा उनका परिवार राज्य की सेवा मे वर्षो तक रहा था । उनके साधु स्वभाव और दैविक गुणो से सम्पन्न सादगी का महाराज बहुत आदर करते थे और वे जानते थे कि उनकी ओर से सदैव स्पष्ट सद परामश ही प्राप्त होगा । यदुनाथ सिह ने भी उस रात्रि फोन पर महाराज को यही सम्मति दी थी कि महारानी को काग्रेस टिकट स्वीकार कर लेना चाहिये ।

चि ता के भार के कारण उस रात्रि महाराज ठीक से सो भी न पाये । अद्ध रात्रि के पश्चात् अचानक आख खुलने पर महारानी ने देखा कि महाराज अपनी शैया पर बैठे हुए विचार मग्न है । वे चिंतित हो उठी और पति के समीप पहुँच मृदु कठ से बोली—

"आप तनिक भी चिंता न करिए । मैं स्वय कल देहली जाकर पडित जी से माफी माग आऊगी और कह आऊगी कि मुझे चुनाव नही लडना है । आपका स्वास्थ्य और प्रसन्नता ।" कहते कहते महारानी के सुन्दर नेत्रो मे जल भरआया " "नही, नही" अपने गुरुजनो की, बडो की बात को मै अस्वीकार नही कर सकता । चुनाव तो आपको अब काग्रेस टिकट पर लडना ही है—मुझे चिंता तो इस बात की है कि इस राजनीति मे जो कटुता और बर्बरता है उसे आपका जैसा भावुक मन कैसे सह पायेगा? एक बार राजनीति मे जाकर फिर वापिस लौटना भी तो सरल नही होता और सत्ता और स्वाथ चिंतन मे मदाध

व्यक्तियो से अनजाने मे ही टक्कर हो जाती है जिसका फल मानसिक क्लेश और व्यथा ही होना हे। यह कहावत भी तो सच हे कि—

"काजल की कोठरी मे कैसो हू सयानो जाय
काजल की एक लीक लागिहै पै लागिहै "

सो आजकल की राजनीति तो एक काजल की कोठरी है इसमे से अछूता निकलना सभव नही ।" महाराज ने कहा। "आपका कहना ही सत्य है। मै आपकी आज्ञा के बिना ।" महारानी बोली।

"नही ! नही ! मैं तो अब आज्ञा दे चुका हू। बडो का अनुरोध और उनका आग्रह टालना मेरे लिए सम्भव नही है। यह सब बाते तो मे आपको सतक रखने के लिए कह रहा हूँ ठीक है। हरि इच्छा बलवती। कहकर महाराज पुन शयन करने का उपक्रम करने लगे और महारानी इस बार सहसा चिंता ग्रस्त हो उठी। प्रान काल दिवाकर की प्रथम रश्मि ने जब जयविलास प्रासाद मे जीवन उद्वेलित किया और मुख्य द्वार पर बज रही शहनाई की मधुर ध्वनि ने राजदम्पत्ति के स्वागतार्थ प्रभाती की लय बजाई तो महारानी ने मन ही मन करुणा के सागर अपने इष्टदेव का नमन कर प्रात कृत्य प्रारम्भ किए।

८ बजे के लगभग नियमानुसार पति पत्नी भोलानाथ भगवान महादेव की पूजा मे बैठे। राजपडित शैण्डे ने चन्द्रमौलिश्वर, गगाधर-वृषकेतु भगवान का अभिषेक कराया। महारानी ने उन क्षणो मे देखा कि महाराज शात भाव से उन्मीलित नेत्रो से इष्ट देव के ध्यान मे मग्न है। उनके सुन्दर मुख पर अन्तर्द्वन्द्व या किसी उलझन का नाम निशान भी शेष नही है—ऐसा प्रतीत होता था कि मानो उनकी समस्या का निदान उन्हें प्राप्त हो चुका है। पूजा समाप्त हुई तो महाराज अपने कार्य कक्ष की ओर अग्रसर हुये और उसी समय देहली से फोन आया श्री लाल बहादुर का। वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से बोल रहे थे—"महाराज गुना से कल रात्रि फोन

आया था कि आज नामाकन पत्र दाखिल करने की अतिम तारीख है—पडित जी कह रहे हैं कि महारानी के नाँमाकन पत्र पर हस्ताक्षर कराके आप तुरन्त ही विशेष जीप द्वारा गुना जिलाधीश के कार्यालय मे भेज दे।" "ठीक है शास्त्री जी आप पडितजी से कह दीजिये कि मुझे उनका आदेश स्वीकार है। बुजुर्गो की बात भला कैसे टालू। एक घन्टे मे नामाकन पत्र यहा से रवाना हो जावेगा। आप कांग्रेस के सम्बन्धित कार्यालय को गुना सूचना दे दें।" महाराज ने कहा और फोन रख दिया।

तुरन्त ही भूताजी को बुलाया गया। उनके समक्ष महाराज ने नामाकन पत्र भरवाकर उस पर महारानी के हस्ताक्षर कराये और उसे भूताजी के हाथ मे देते हुये कहा "भूताजी आखिर आपकी ही जिद कायम रही। गैरेज से जीप ले लीजिये और तब इस नामॉकन पत्र को लेकर आप तुर त ही गुना चले जाइये। यहा से गुना का माग ही ५ घन्टे का हे। आप स्वय प्रयत्न करेगे तो यह फाम समय पर वहा पहुच जायेगा।"

भूताजी फाम लेकर अपनी जीप मे ही गुना की और दौड पडे और जबकि निधारित समय समाप्त होने मे केवल १० मिनट शेष थे जीप गुना जिलाधीश के कार्यालय मे पहुची। गुना की कांग्रेस मडली जीप की उत्सुकता से बाट जोह रही थी। फोन से सूचना प्राप्त हो चुकी थी कि महारानी का नामाकन पत्र लेकर भूताजी जीप से आ रहे हैं। फाम समय पर दे दिया गया और वह स्वीकृत भी हो गया। यह समाचार प्रसारित होते ही ग्वालियर और गुना के वासियो मे हष की एक लहर दौड पडी। भूताजी ने रात्रि को गुना से टेलीफोन से महाराज से कहा—"महाराज। फाम स्वीकार हो गया है। हम सबकी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये। मगलमय भगवान से प्राथना है कि महारानी का राजनैतिक जीवन मे यह आविभाव जनता के लिये सवमगलकारी हो।"

"अच्छा भूताजी आखिर आपकी ही बात रही" महाराजने हसकर कहा और फान रख दिया। महागनी ने जाना कि अब उन्हे चुनाव लडना ही है। किन्तु अब कतव्यपरायण महारानी व्यस्त हो उठी। उचित अवसर के अभाव मे मानो कमण्यता की जो सुखद बेल परिवार प्रेम के वातायान मे ही कल तक सीमित थी, आज दिशा बदल कर देश सेवा के प्रभापुज की ओर आकर्षित होकर उठी। यह लता पल्लवित होकर अपने परागमय गुण पुष्पो की सुगन्धि से एक परिवार के स्थान पर देश के अगणित परिवारा को प्रेम से सुरभित करने का आयोजन करने लगी, अपार शक्ति की स्त्रोत, कमशीला नारी का यह भव्य स्वरूप विश्व के हित की ओर अग्रसर हो उठा।

महाराज के इस निणय के प्रति ग्वालियर अचल वामियो ने उनका नमन किया और आभार माना। अपनी प्रेममयी दुर्गास्वरूपा कल्याणी, महारानी विजयाराजे सिंधिया का कर वह अपने ऊपर पाकर और सक्रिय राजनीति मे आविभाव स्वीकार कर, वे उनका एक स्वर से अभिनन्दन करने लगे। महारानी की जय जय कार से सहसा गुना के गाव गाव गूज उठे और ग्वालियर मे भरी सभा मे जनता ने उनका गुणगान किया। श्री भूताजी, तथा अन्य काग्रेस के स्थानीय नेताओ ने जिन्हे महारानी की कायशीलता पर अखड विश्वास था उनके उज्जवल राजनैतिक भविष्य की कामना की और देहली की काग्रेस के हाई-कमाड ने सुख और सन्तोष की सास ली। श्री नेहरू, इदिराजी, श्री पटेल आदि की बधाईयो ने महारानी और महाराज को अभिभून कर लिया और जनता के अपार हृष मे उन्होने सिंधिया वश की जनता की सेवा की परम्परा को लोकतत्र के देश के महान यज्ञ मे मिलाकर जन जन के सुख मे, अपना कल्याण माना।

राजनैतिक मोर्चे पर राजमहिषि को पाकर हिन्दू महासभा के कैम्प मे भारी खलबली मच गई। उनके नेता महाराज और महारानी के पास नामाकन पत्र वापिस कराने के लिये दौड पडे। उहोने कहा कि उन्हे



धर्मभावनाप्रधान उपयम में रत राजमाता ।

वीसभुजादेवी वजांगढ के उपयम में लवलीन राजमाता ।

जगद्गुरु शंकराचार्य का स्वागत करते हुये राजमाता।



जनसेवा में लीन राजमाता

तो यह जानकारी थी कि महारानी अथवा महाराज किसी भी दशा मे चुनाव न लडेगे किंतु यदि अब स्थिति परिवर्तित है तो वे राजदम्पति को हिन्दू महासभा का टिकट देना चाहते है। उन्हे विश्वास है कि काग्रेस के मत्र से महारानी देश की समुचित सेवा न कर सकेंगी। महाराज ने उन्हे केवल यही उत्तर दिया कि अब तो वे और महारानी काग्रेम के प्रति वचन बद्ध हो चुके हे। तथा महारानी का गुना की सीट पर काग्रेस की ओर से ससद का चुनाव लडना एक ध्रुव सत्य है। चुनावो की सरगर्मी प्रारम्भ हुई। महारानी ने अपना चुनाव अभियान गुना जिले के ग्रामो मे जाकर ग्रामीण जनता से सम्पर्क स्थापित कर प्रारम्भ किया। १५ फरवरी को वे पठारी ग्राम मे गई जहा की जनता को उन्होने उद्बोधित किया। महारानी की जय जय कार से शीघ्र ही गुना जिले का क्षेत्र गुज उठा। जिस ग्राम मे वह जाती थी वही जनता उन्हे सिर आखो पर उठाने को तैयार प्रतीत होती थी। यह प्रयास निरतर चलते रहे। उसी अवधि मे निश्चित चुनाव तिथि के समीप एव मध्याह्न को महारानी गुना जिले के अन्तगत अशोकनगर मे गई जहा की जनता की एक बहुत बडी भीड उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। पुरोहित के वेदमत्रो के बीच महारानी ने अशोकनगर के छात्रावास का शिलान्यास किया तथा वहा की ग्रामीण जनता से परिचय लाभकर चुनाव मे उनका सहयोग चाहा। २२ फरवरी को कॉग्रेस के ग्राम्य सेवको एव काय-कर्ताओ की गुना जिले मे बैठक हुई। महारानी ने भूमि पर बैठक लगा कार्यकर्ताओ के साथ चुनाव अभियान मे से समय निकालकर भोजन किया। मगलमयी, कल्याणी इस पुनीत नारी के सम्पक मे आकर क्या वृद्ध, क्या युवक, क्या युवती और क्या बालिका सब अपने को सम्मोहित पाते थे और उनकी प्रेरणा तथा आदेश पर वे अपना सब कुछ न्यौ-छावर करने को तैयार हो जाते थे। महारानी महिला कायकर्ताओ से मिली तथा उन्हे काग्रेस के प्रति आस्था रखने को कहा एव पुरुषो की सभा को सम्बोधित करते हुये उन्होने नवीन भारत के उत्थान मे

उनका सहयोग चाहा। दाननखेडा की ग्राम सभा मे उन्होने ग्रामीण जनता के हितो के सरक्षण का वचन देते हुये कहा कि जब तक ग्राम्य समाज का उत्थान और ग्राम जीवन मे, समृद्धि नही आवेगी तब तक देश अपना मस्तक ऊचा न उठा सकेगा। गावो का उज्जवल भविष्य ही भारत मे युग परिवतन की झाकी प्रस्तुत कर सकेगा।

फरवरी का अतिम सप्ताह आते ही ग्वालियर मे देहली से वरिष्ठ काग्रेसी नेताओ का आगमन हुआ। इदिरागाधी ने आकर महारानी के साथ काग्रेस के चुनाव अभियान को बलवती किया। नवीन नारी युग की बलवती आवाज इन दोनो मधुर कठो से निकली और उनके सबल सशक्त स्वरो ने देश के निर्माण मे ग्रामीण महिलाओ का सहयोग चाहा। काग्रेस के वरिष्ठ नेता मुरारजी भाई भी चुनाव अभियान मे अपना सहयोग देने गुना आये और महारानी के साथ गाव गाव मे जाकर उन्होने जनता मे प्रचार काय किया और कहा कि महारानी की सेवाये अब तक ग्वालियर क्षेत्र को ही उपलब्ध थी किन्तु उनकी कमशीलता एव लगन ने देश के वरिष्ठ नेताओ को आश्वस्त कर दिया है कि वे सम्पूण देश की सेवा के लिये उनकी शक्तिया प्राप्त करे। उनका आग्रह हे कि भारतीय ससद मे देश की नवीन नारी की मजबूत आवाज को ग्वालियर की महारानी और भी बलवती बनावे। भारत के प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रेषित जनता के विनीत सेवक श्री लालबहादुर शास्त्री भी ग्वालियर पधारे तथा ग्वालियर और गुना मे आम सभा मे बृहत जन समुदाय के समक्ष महारानी के जनसेवा के कार्यों की सराहना की तथा कहा कि देश को आज उनके समान विनीत चरित्रवान निष्ठावान व्यक्तियो की निस्वाथ सेवा की आवश्यकता है तथा नेहरूजी का आग्रह है कि ग्वालियर की महारानी देश की ससद मे जन प्रतिनिधि होकर आवे। जनता ने हृष ध्वनि कर शास्त्री जी के इस कथन को सराहा। महारानी की जय जयकार से सभा-स्थल गू ज उठा। ऐसा प्रतीत होता था कि जनमानस की अधिष्ठात्री दैवी शक्ति

विजयाराजे सिंधिया हे जिन्हे जनता से सहयोग मागने की आवश्यकता ही नही है। जनता उनका पदानुसरण करने को स्वय ही आकुल सी प्रतीत होती थी।

चुनाव की सरगर्मी मे काग्रेस के वरिष्ठ नेताओ ने महारानी के साथ प्रवास कर पाया कि इस नारी मे अमित लगन और कार्यशीलता है। दिन रात एक निष्ठा और लगन से यह नारी काय मे रत है। उसमे असीम शक्ति है और साहस है। भारतीय निष्ठावान, चरित्रवान नारी की यह विनीत किन्तु अदम्य साहस से युक्त भव्य छवि देखकर शास्त्री जी, मुरारजी भाई आदि बहुत प्रभावित हुये और जिस सकट के समय ग्वालियर राज्य परिवार का सहयोग काग्रेस को मिला उसके लिये उन्होने राजदम्पति की भूरि भूरि प्रशसा की। स्थिति स्पष्टतया यह थी कि गुना, बीनागज, शिवपुरी, चदेरी, अशोकनगर आदि स्थान वर्षो से हिन्दू महासभा के गढ रहे थे तथा काग्रेस की स्थिति यहा कभी भी बलवती नही हुई थी। हिन्दू महासभा के इस क्षेत्र के नेता ईमानदार थे, निष्ठावान थे तथा जनता की कठिनाइयो को दूर करने के लिए कटिबद्ध थे, जनता को उनका विश्वास प्राप्त था तथा उन्हे जनता की सच्ची सेवा की लगन थी। इन परिस्थितियो मे हिन्दू महासभा के प्रत्याशियो की विजय इस क्षेत्र से प्राय निश्चित सी थी तथा इसी को लक्ष्य मे रखकर महासभा के महामत्री श्री देशपाडे को इस क्षेत्र की समद सीट पर खडा किया गया था ताकि वे ससद मे पहुचकर हिन्दू महासभा के गर्जन से देहली को गुजा सके एव सस्था का भविष्य अन्य क्षेत्रो मे भी उज्जवल हो जावे। उन्हे स्वप्न मे भी यह आभास न था कि सिंधिया राजवश का कोई सदस्य हिन्दू महासभा के विपरीत खडा होकर चुनाव लडेगा। सहसा ग्वालियर की महारानी को काग्रेसी प्रत्याशी के रूप मे इस सीट पर देखकर हिन्दू महासभा किंकतव्यमूढ हो गई। सभा के कार्यकर्त्ताओ की हिम्मत टूट गई क्योकि वे गाव गाव मे जाकर यह जान गये कि जनता किसी भी सस्था का

नाम सुनने को तैयार नही जहा महारानी का नाम है। वह तो केवल चाहती है कि उसकी महारानी विजयी हो और महारानी के समक्ष किसी भी सस्था के प्रत्याशी को जनमत प्राप्त कर विजयी होना बहुत कठिन है। यह काग्रेस की विजय नही हे, उसका प्रभाव नही हे जो जनता के मन पर छा गया है वह तो अपनी रानी के प्रति वफादार हे उस महारानी के प्रनि जिसने उनकी सेवा और भलाई के लिये अपना राजपाट, अपना वश गत वैभव और सत्ता त्याग दी हे। जनता के मन के ऊपर छाई हुई हे यह महारानी और उन पर स्थिर अगाध विश्वास की भावना से जनता को विचलित करना हिन्दू महासभा के लिये सभव न था। काग्रेस की विजय महारानी मे समाहित होगी न कि महारानी की विजय काग्रेस मे यह तथ्य विरोधी दलो को भली भाति स्पष्ट हो गया।

आखिर वह चुनाव का दिन भी आया। गाव गाव घर घर महारानी की जय जयकार से गू ज उठा। गाँव की अशिक्षित महिलाये भोली बालायें चुनाव स्थल पर मतदान करते समय केवल महारानी का चिन्ह पूछती थी और बैल-जोडी पर छाप लगाकर चली आती थी जनता की जय जयकार के मध्य महारानी चुनाव मे विजयी हुई और पहिली बार ग्वालियर की जनता ने और गुना की जनता ने अपनी महारानी के "विजया" नाम की जयघोप से आकाश को कपा दिया। वे कह रहे थे कि आज "विजया" ने उनके हेतु विजयश्री का वरग किया है। महारानी के अभिनन्दन के हेतु गाव गाव नगर नगर मे होड सी होने लगी और कतव्य मे रत इस दिव्या ने जनता के इस प्रेम भार को अपने सिर आखो पर लिया। उसने कहा कि चुनाव की यह विजय जनता की विजय है तथा भगवान से केवल यही आकाक्षा व्यक्त की कि जो सेवा का व्रत उसने लिया है उसे पूरा करने के लिये मगलमय प्रभु उसे शक्ति प्रदान करे।

मध्य भारत के क्षेत्र मे ग्वालियर की महारानी विजयाराजे सिंधिया

ही एक मात्र प्रत्याशी थी जो कि काग्रेस के टिकट पर गुना क्षेत्र से विजयी हुई जबकि गुना से लगी हुई शिवपुरी सीट पर काग्रेस के प्रत्याशी हिन्दू महासभा के प्रत्याशियो द्वार बुरी तरह पराजित हुये। हिन्दू महासभा के प्रत्याशी डा० खरे जो कि इस क्षेत्र की जनता के लिये एक दम अपरिचित थे काग्र स के प्रत्याशी को करारी हार देने मे समथ हुये और उधर सभा के प्रत्याशी श्री ब्रजेश भी विजयी हुए। महारानी की इस विजय ने इस सत्य को उद्घोपित कर दिया कि गुना क्षेत्र से उनकी विजय सिधिया वश की विजय है न कि कांग्रेस की। जनता का सब प्रकार का समथन महारानी के साथ है न कि काग्रेस पार्टी के साथ।

देश की ससद मे लोकतत्र के उस मच पर जिसका आधार १९५० की २६ जनवरी को उदघोषित भारतीय सविधान था, ग्वालियर की महारानी ने देश के सविधान के प्रति वफादारी की शपथ ली। भारत की स्वतत्रता के क्षितिज पर उषा की इस मधुर वेला मे जनता के समवेत स्वरो के घोष मे आविभाव हुआ था इस विजया का जो भारतीय ससद भवन मे लोक सेवा का व्रत ले रही थी। देश के राजनैतिक मच पर उनका यह पावन आविभाव देश के लिये और ग्वालियर वासियो के लिये जिनका प्रतिनिधित्व करने वे ससद मे गई थी मगलकारी हो यह कामना लाखो ग्वालियर वासियो के मन मे समाई हुई थी।

— ० —

सोपान १०

ममतामयी

सन् १९५७ मे ससद सदस्या बनकर देश की राजनीति मे अपना योगदान देने को उत्सुक महारानी विजयाराजे सिंधिया ने अपने देहली आवास के दिनो मे विभिन्न राजनैतिक दलो की गति विधियो से परिचय प्राप्त किया। यह वे दिन थे जबकि काश्मीर की समस्या रह रहकर उलझ जाती थी और विश्व सस्था के प्राय सभी प्रयास इस समस्या को सुलझाने मे असफल से प्रतीत हो रहे थे। सधि की सीमा पक्ति के उस ओर पाकिस्तान "आजाद काश्मीर" पर हावी था और वहा की जनता का शासन मे किंचितमात्र भी प्रतिनिधित्व न था और इधर भारत शासित काश्मीर मे, काश्मीर के भारतीय भाग मे, पाकिस्तानी जासूसो की तोडफोड की कायवाहियो का अन्त न था। भाषावार प्रान्तो के निर्माण के पश्चात् देश मे प्रान्तीय भावना की एक लहर सी उठ पडी थी और द्विभाषी बम्बई राज्य को मराठी एव गुजराती भागो मे पुन विभाजित करने की जोड तोड जोरो पर थी। सच तो यह था कि भाषावार प्रान्तो के निर्माण ने देश की एकता को एक जबर्दस्त धक्का पहुँचाया था। देश की राजधानी के राजनैतिक जीवन मे महारानी ने जहा एक ओर दलगत भावनाओ की विपमता को देखा वही उन्हे काग्रेस की नीतियो मे भी एक विचित्र वैषम्य प्रतीत हुआ। उन्हे ऐसा प्रतीत होने लगा कि इस काग्रेसी हाथी के दात खाने

के और है और दिखावे के और। १० वष पूर्व की गाधी युग की निष्कपट सरलता और सत्यप्रियता का मानो राजनैतिक 'जीवन से निष्कासन हो चुका था और उसका स्थान ले लिया था असत्यपूर्ण गर्हित अनैतिकला ने। यह बात अवश्य थी कि देश के प्रधानमत्री नेहरू और राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष अब भी काग्रेस के नेतागरण गाधी जी की अहिंसा और सत्य की शपथ खाकर उनके पदानुसरण का दावा करते थे किन्तु भाषा के आधार पर बने हुये राज्यो की पारस्परिक प्रतिद्वन्दिता मे किसी भी प्रकार की कमी नही आती थी। नेहरू जी के समक्ष उनके विरोधी कुछ न बोलते थे किन्तु सच्चे हृदय से उनके द्वारा निर्णीत समस्याओ को ग्रहण करना भी उनके लिये सभव न हो पा रहा था। महारानी का मन इस दलदल मे फसने को तैयार न हुआ और वे शनै शनै परिवार के स्नेहपूर्णवातावरण मे रहना श्रेयष्कर जान पति के साथ बम्बई मे ही निवास करने लगी। ससद के अधिवेशनो के दिनो मे वे यदा कदा पति के साथ आकर देहली के जीवन मे अपने को घुलामिला देती थी। ६ माच १९५३ को उत्पन्न राजकुमारी वसुन्धराराजे एव १९ जून १९५४ को जन्मी राजकुमारी यशोधराराजे को लेकर के राजदम्पति का यह परिवार बम्बई के समुद्र महल मे सुखी था। सिस्टर कैस्टोलिना दोनो राजकुमारिया के पालनपोषण मे महारानी की सहायता करनी थी तथा राजकुमारी पद्माराजे एव राजकुमारी उषा राजे शिक्षा एव अध्ययन मे रत थी।

राजदम्पति ने राजकुमार माधवराव सिंधिया की शिक्षा के लिये ग्वालियर के सिंधिया स्कूल को ही अपनाया था तथा इसी विद्यालय मे "जयाजी हाउस" छात्रावास मे उन्हे एक साधारण छात्र की भाति रखा गया था। देश के विभिन्न भागो से एव ग्वालियर एव मध्य प्रदेश के अचलो से आये हुये विद्यार्थी भी इस छात्रावास एव विद्यालय मे थे तथा प्रिंसिपल श्री कृष्णचन्द शुक्ला, छात्रावास के अध्यक्ष, श्री अग्निहोत्री आचाय आदि का सदैव यह प्रयास था कि शाला के समस्त नियमो

का कडाई से पालन कराने के लिये प्रत्येक छात्र को और साथ ही राजकुमार को प्रेरणा दी जाती रहे। अनुशासन का पालन इस स्कूल की विशेषता थी तथा छात्रों के सर्वांग विकास के हेतु प्रत्येक शिक्षक सदैव तत्पर रहता था। महारानी को यह देखकर परम हर्ष था कि राजकुमार को जिस प्रकार की सुरुचिपूर्ण शिक्षा दिलाने का उनका प्रयास था उसमे इस स्कूल के वातावरण ने बहुत सहायता की है।

इसी अवधि मे एक दिन की बात है कि बम्बई म स्थित सिंधिया महाराज का समुद्र-महल निमन्त्रित अतिथियो से खचाखच भर गया। ६ जुलाई सन् १९५९ का दिन था—महाराज जियाजीराव सिंधिया की वर्षगाँठ का पावन पर्व। उल्लास और प्रमोद की मानो नदी-सी बह उठी थी और उसकी धारा मे प्लावित महारानी विजयाराजे सिंधिया ने पति को उनकी वर्षगाठ की बधाई अर्पित की। पति-पत्नी ने प्रभात की मजुल वेला मे देव-अभिषेक पूजा एव अर्चना की और फिर महाराज एव राजकुमार को यज्ञ मडप मे बिठाकर महारानी ने वेद ऋचाओ के स्वरो के बीच उनकी आरती उतारी एव न्योछावर की। आगत अतिथि फिर एक एक कर महाराज के सन्मुख आकर न्यौछावर कर पुष्पहार पहिनाते गये और उन्हे अपनी हार्दिक बधाई अर्पित करते गये। ब्रह्म-भोज दान-दक्षिणा आदि के कार्यक्रम दिन भर चलते रहे। ग्वालियर से इस बार यथेष्ट सख्या मे परिजन बम्बई आये थे वर्ष-ग्रथि के पावन पर्व पर महाराज का, राजदम्पत्ति का अभिनन्दन करने के हेतु। सन्ध्या की सुहावनी बेला मे मेहमानो की एक नदी सी उमड पडी। राजदम्पत्ति ने मदु मुस्कान के साथ अभ्यागतो का हार्दिक स्वागत किया। हसी की फुहारो मे हर्ष और उल्लास बिखरा सा पडता था। महाराष्ट्र के राज्यपाल, मुख्य मत्री एव नगर के हर वर्ग के सम्भ्रान्त व्यक्ति महाराज के चारो ओर खडे उनके दीर्घ जीवन की कामना कर रहे थे और महारानी घिरी खडी थी महिला समुदाय द्वारा अर्पित साभार बधाइयो को ग्रहण करती हुई। चारो राजकुमारियो एव

राजकुमार किशोर मडली मे घुल मिलकर मोद मना रहे थे। रात्रि का भोजन देर तक चलता रहा और फिर मनोरजन के कायक्रम हुये आधी रात के लगभग अनिथि गण जब बिदा हुये तब भी रग-बिरगी रोशनियो से जगमगाता हुआ वर्ली का यह समुद्र महल इस दिन के हष आमोद को रसमयी कहानी कह रहा था। अक्टूबर मास आया तो महाराज ने राजकुमार और राजकुमारियो के साथ मिलकर उल्लास और प्रामोद की वर्षा करते हुये महारानी की वप ग्रथि मनायी एव फरवरी मे राजदम्पति ने अपने शुभ मिलन की सालगिरह मनाई।

१९५९-१९६० के यह दिन महारानी के जीवन के वे दिन थे जब कि परिवार की स्नेह वल्लरी से लिपटी एक आदश ग्रहणी के रूप मे वे अपनी ममता बिखरा रही थी। आये दिन पति के साथ "महालक्ष्मी" की सैर होती। राजकुमार, राजकुमारियो के साथ पिकनिक मनाई जाती और बम्बई के समीप के मनोरम स्थानो की सैर के प्रोग्राम बनते। ममतामयी मा के रूप मे महारानी को इन दिनो राजकुमारी पदमा राजे, राजकुमारी उषा राजे, वसुन्धा राजे एव यशोधरा राजे ने सम्पूण रूप से पाया था एव पति परायणा यह दिव्या महाराज की जीवन-चर्या के साथ गुथ बिंध सी गई थी। स्नेह से परिपूण यह परिवार सब प्रकार से एक आदश परिवार था। महाराज एव महारानी अपनी सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्व से भलीभाति सजग थे। राजकुमार की शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबन्ध ग्वालियर मे था। इसी प्रकार राजकुमारियो का जीवन भी भारतीय सस्कृति के अनुरूप नवीन युग के सानिध्य मे ढाला जा रहा था। वैसे मिस्टर कैस्टोलिना राज-कुमारियो के लालन-पालन की देखरेख के लिये नियुक्त थी एव वे भी उनसे स्नेहबद्ध थी। छुट्टियो मे भाई बहिन स्कूल से आकर माता पिता के स्नेह क्रोड का उनके अविरल प्यार का आनन्द लूटते थे और उनके बचपन के ये दिन सचमुच उनकी स्वर्णिम निधिया थी। ममतामयी

मा का प्यार अपनी पूर्ण मुक्तता से उन पर छलक रहा था और पिता की सघन स्नेह छाह का आनन्द सरल जीवन मे मस्ती भरता था। परिवार के हर सदस्य का एक दूसरे के प्रति प्रगाढ 'प्रेम था। आदश भारतीय हिन्दू परिवार की छवि यहा देखने को मिलती थी और महाराज के इष्ट मित्र उन्हे उनके सुन्दर परिवारिक जीवन के लिये बधाईया देते थे।

सन् १९६० आया तो राजदम्पति ने ज्येष्ठ राजकुमारी पदमाराजे का सम्बन्ध त्रिपुरा के युवक नरेश महाराज किरीट विक्रम बहादुर सिंह से निश्चित किया। शीघ्र ही पूर्ण धूमधाम के साथ विवाह का आयोजन हुआ और बम्बई मे यह समारोह ६ मार्च १९६० को मनाया गया। देश के राजे महाराजे सिंधिया घराने से सम्बन्धित एव ग्वालियर बम्बई आदि के सम्भ्रान्त नागरिक महारानी के हर्ष मे सहयोग देने एव महाराज की प्रसन्नता द्विगुणित करने के लिये पधारे। एक सप्ताह पर्यन्त ऐसी धूमधाम रही कि राजदम्पति को राजकुमार एव राजकुमारियो को एक क्षण की भी फुरसत न मिली। आगत मेहमानो के आतिथ्य मे एव विवाह की धूमधाम मे सबही व्यवस्त रहे। पूर्व ग्वालियर राज्य के स्नेही नागरिक इस महोत्सव मे अपना विनम्र सहयोग देने के लिये हजारो की सख्या मे बम्बई पहुचे। शुभ परिणय की वेला मे हजारो कण्ठो से निकले आशीर्वादो के बीच राजकुमारी पद्मा राजे और राजपरिवार की प्रिय "अक्का राजे" जब त्रिपुरा को रवाना हुई तो महाराज महारानी ने अनुभव किया कि अक्काराजे के जाने के पश्चात् एक विचित्र सा सूनापन वर्ली के राज प्रासाद मे छा गया है। महाराज को तो अब प्रतिदिन ही अपनी लाडली बेटी की सुधि आने लगी और उन्होने अनुभव किया कि परिवार की चहल पहल मे इस चहकती बुलबुल के जाने से कितनी कमी आ गई है। भाई को अपनी प्रिय बहिन की सुधि सताती थी और छोटी राजकुमारियो को अपनी स्नेहपूर्ण जीजी की याद।

विवाह की धूमधाम जब समाप्त हुई तो महारानी ने लक्ष्य किया कि थकान के कारण महाराज की पुरानी शिकायतें फिर धीरे धीरे उभडने लगी है। डाइबिटीज ने पुन जोर पकडा और महाराज थोडे से ही परिश्रम से गहरी थकान का अनुभव करने लगते थे। डाक्टर राने और बम्बई के कतिपय अन्य विशेषज्ञो ने महाराज के स्वास्थ्य की पूर्ण परीक्षा की एव उपचार प्रारम्भ हो गया।

देहली के ससद के अधिवेशनो मे भाग लेने के लिये यदाकदा महारानी देहली आती रहती थी और उनके साथ महाराज भी देहली प्रवास से लाभ उठाते थे। अलीपुर रोड पर स्थित "ग्वालियर हाउस" मे वरिष्ठ नेताओ की इन दिनो भीड सी लग जाती थी और इष्ट मित्रो की मडली पहिले की अपेक्षा और भी बढ गई थी। महाराज और महारानी का पठन पाठन, पूजा नियमित रूप से चल रहा था। एक दिन महारानी ससद अधिवेशन से लौटी तो सध्या को महाराज ने उनके हाथ मे दी एक पुस्तक जिसमे भारत कोकिला श्रीमती सरोजनी नायडू का १९१७ मे कलकत्ते मे दिया हुआ भाषण था। महाराज ने इस भाषण के कुछ अ शो पर लाल पैंसिल के निशान लगा रखे थे। महाराज ने कहा—"आश्चय है कि श्रीमती नायडू कविता के साथ साथ कभी कभी कितने गम्भीर सत्य पर प्रकाश डालती थी। ऐसा लगता है कि सचमुच एक दिन देश का भविष्य भारत की नारियो के हाथो ही सभलेगा। आप पढकर देखिये ४३ वर्ष पूव इस नारी ने कितनी सुन्दर बात कही थी।"

महारानी ने चिन्हाकित उद्धरण को जोर से पढा जो इस प्रकार था।

"मैं हू तो एक नारी, फिर भी आप लोगो से कहना चाहती हू कि जब भी सकट की वह घडी सामने आये और आप अपने आसपास के घनीभूत अ धकार मे पथ प्रदशक मशाल चिन्हो की पग पग पर कमी का अनुभव करने लगे, जबकि आत्मविश्वास के अभाव मे आपको

अपने पैर लडखडाते दिखाई दे और अपने बीच ध्वज पताका फहराने वालो का आपको एकदम अभाव प्रतीत हो तब विश्वास रखियेगा कि भारत का नारी समाज आपका राष्ट्र ध्वज ऊचा उठाये रखने की और आपकी शक्ति का मेरुदड दृढ बनाये रखने के लिए सदैव सन्नद्ध रहेगा"।

स्वतत्र भारत के नारी समाज की प्रतीक भारत कोकिला श्रीमती नायडू की उक्त पक्तिया महारानी को अत्यन्त ही प्रेरणादायक प्रतीत हुई। कई बार उक्त पक्तियो को पढकर महारानी उनमे खो सी गई। उनकी कल्पना मे जाग्रत हो आई महारानी अहिल्या बाई की वह तेजस्वनी दीप्तमान मूर्ति जब अन्याय का प्रतिकार करने के लिए वह दिव्या दर्पमयी बनकर सिंहवाहिनी सी रण क्षेत्र मे कूद पडी थी और वह भासी की रानी जो हाथ मे नगी तलवार लेकर जीवन का बलिदान करने को उद्धत हो उठी थी। भारत की वीरागनाओ की स्मृतियो मे सहसा महारानी डूब सी गई और राजधानी देहली की वह शाम अनजाने मे ही लालिमामयी हो उठी।

इन दिनो महारानी के सम्पर्क मे जो भी आया उसने उन्हे आदर्श भारतीय सफल गृहिणी के रूप मे देखकर जी भर सराहा। पति एव सन्तान की मगल कामना मे एव सेवा मे रत, भगवान की प्रार्थना मे खोई हुई इस पुनीता श्रद्धामयी नारी का यह उज्जवल रूप देखकर बरबस लोग कह उठते थे कि

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल मे,
पीयूष श्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुदर समतल मे,

"प्रसाद"

इस ममतामयी की ममता सचमुच पावन एव स्नेह सिंचित थी।

सन् १९६१ का नवीन वष प्रारम्भ हुआ तो राजदम्पत्ति को नवीन उपहार के रूप मे एक सुन्दर सी नवासी की प्राप्ति हुई। महाराज २९ जनवरी को अक्कराजे के पुत्री प्रसव का समाचार जानकर हष मे मग्न हो उठे। इस लाडली का नाम रखा गया 'कनिका राजे" महारानी और महाराज अपनी स्नेहपूण बेटी "अक्का राजे" को मातृत्व के पुनीत पद पर अभिषिक्त पाकर प्रसन्नता से भर उठे।

इन दिनो महाराज का स्वास्थ्य कुछ ठीक न था और अवसर पाते ही राजदम्पत्ति का यह प्रयास होता था कि वे "आनन्दमयी मा" की पावन गोदी मे जाकर मानसिक शाति का लाभ उठाये। इस सत महिला मे महाराज ने एक विचित्र आकषण पाया था। उसकी ओर से विशुद्ध मा का पावन स्नेह पाकर एव उनका सद्उपदेश ग्रहण कर महाराज को परम मानसिक शाति की उपलब्धि होती थी।

१९६१ के अप्रैल मास मे यद्यपि महाराज का स्वास्थ्य ठीक नही था किन्तु उनकी उत्कृष्ट इच्छा थी कि वे अपनी स्वर्गीय माता श्रीमत गजराजा सिंधिया की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा उनकी समाधि स्थल ग्वालियर के छत्री उपवन के प्रागण मे 'आनन्दमयी मा' के कर कमलो द्वारा कराये। महारानी ने महाराज की इस आकाक्षा की पूर्ति हेतु प्रयास प्रारम्भ कर दिये तथा आनन्दमयी मा को इस पुनीत काय के हेतु ग्वालियर मे निमत्रित किया गया। ग्वालियर की विशाल जनता के समक्ष यह महापर्व सम्पन्न हुआ। और राज्य के कोने कोने से सत और सम्भ्रान्त अतिथिगणो ने आकर अपना योगदान दिया। ग्वालियर की जनता ने साध्य दिनकर की इस क्षण आभा मे अपने प्रिय महाराज के जिनकी एक समय की बलवती काया आज रुग्णता के कारण क्षीण थी एक विषम वेदना से व्यथित होकर दशन किए। इन क्षणो मे लोगो ने देखा कि पावन आनन्दमयी मा के चरणो मे नत है एक रेखा के समान जीर्ण शीर्ण काया जो वर्षो तक निरतर

उनके हित मे कार्य रत रही हे कि-तु जिसमे अवस्थित हे वह शक्ति का पुज वह पूर्ण अमर ज्योति जिसके प्रकाश से ग्वालियर सदा आलोकित रहा है और जिसकी ज्योति मे उन्होने अपना जीवन-पथ सदा प्रशस्त पाया है। इस जाग्रत ज्योति के समीप ही उन्होने देखा अपनी उस ममता मयी रूपसी महारानी को जिनकी जन सेवा की लगन और दया माया भरे मन ने उन्हे सर्वप्रिय बना दिया है। अपने प्रिय जीवाजीराव महाराज को इस प्रकार क्षीणकाय एव अस्वस्थ देखकर उस सध्या को हजारो लाखो ग्वालियर वासियो ने मन मे एक टीस सी उठी थी और एक अज्ञात आशका से उनका मन काप उठा था।

— o —

सोपान ११

अवसान

राजनीति से विरक्त महाराज जीवाजीराव के बम्बई के जीवन मे सहसा एक व्यतिरेक उपस्थित हो गया जब कि डाइविटीज के कारण उनके स्वास्थ्य को एक गम्भीर आघात पहुँचा। अक्काराजे के पुत्री जन्म का समाचार पाकर महाराज का मन नवासी को क्रोड मे खिलाने के लिए आकुल हो उठा और गिरते हुए स्वास्थ्य की दशा मे भी उनके मुख पर प्रसन्नता की आभा छलक उठी जबकि उन्होने चार मास की आयु की नवासी कनिका राजे को अपनी गोदी मे लिया और मन के अन्तरतम से उसकी चिरायु की कामना कर त्रिपुरा की महारानी और अपनी प्रिय पुत्री अक्का राजे पर सुभाशीष की वर्षा की।

कैलाशवासी पूज्य मा की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा और अनावरण कराके जब से महाराज बम्बई लौटे थे उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता ही जा रहा था। सन् १९६१ मई मे जब ग्रीष्म ऋतु के अवकाश के कारण स्कूल कालिज आदि बन्द हो गये तो युवराज माधवराव एव राजकुमारी उषा राजे भी माता-पिता एव दोनो कनिष्ठ राजकुमारियो वसुन्धरा राजे एव यशोधरा राजे के समीप बम्बई आ गये। सहसा पिता को रोगग्रस्त एव दुबल देखकर युवराज का मन व्यथा से भर उठा। उन दिनो महाराज के परिजनो मे कुमार सभाजीराव आग्रे, कुवरानी आग्रे आदि बम्बई मे ही रहकर उनकी परिचर्या एव परिवार

के कार्यो मे रत थे। महाराज की अस्वस्थता के कारण सबका ही मन दुखित था तथा अवसाद के भार से आच्छादित था।

ऐसे ही विषाद से युक्त वातावरण मे आया २० जून सन १९६१। उस दिन बम्बई के वर्ली महल मे ग्वालियर नरेश महाराज जीवाजीराव सिंधिया रुग्ण शैया पर लेटे हुए थे। कुछ समय से उनका स्वास्थ्य ठीक नही था। यो तो वे प्रासाद मे घूमते फिरते थे किन्तु कभी-कभी अधिक थकान का आभास होने पर वे शैयाग्रस्त हो जाते थे। इग्लैंड के यशस्वी डाक्टर सर विलियम की सलाह से बम्बई के डाक्टर उनका उपचार कर रहे थे जिनमे प्रमुख थे डाक्टर राने। विदुषी महारानी के लिए ये दिन विषम चिन्ता से भरे हुए थे। पूज्य पति की बीमारी के कारण वे सदव चिन्तित रहती थी किन्तु महाराज को प्रसन्नचित्त रखने के लिए उन्हे अपनी चिन्ता को छिपाकर मुख पर स्मित हास्य धारण करना अनिवाय था। बच्चो को सात्वना देना उनका मनोरजन कर परिवार मे सुख-शान्ति का प्रयास करना एव रुग्ण पति की हसते मुख से परिचर्या करना इस मनीषी का इन दिनो का पावन कतव्य था। महाराज से भेंट के हेतु आने वालो का सदा ताता सा लगा रहता था। और डाक्टर राने के निषेध करने पर भी महाराज समस्त आगतो से मिलते एव उनका अतिथि सत्कार करते थे। आज महाराज कोच पर लेटे हुए थे शायद अधिक थकान का आभास हो रहा था तभी ए० डी० सी० ने आकर सूचना दी कि सिन्हा साहब और श्रीमती सिन्हा महाराज का स्वास्थ्य समाचार जानने के लिए उपस्थित हुए है। महारानी का प्रयास हुआ कि वे स्वय दूसरे कमरे मे जाकर अतिथियो से मिल ले और रुग्ण पति को अधिक थकान न होने दे किन्तु इसके पूर्व वे कुछ भी कह सकें महाराज मुस्कराते हुए बोले—"कौन? कामना आया है? बुला लो भाई, काफी दूर से आये होगे ।"

"किन्तु आपकी तबियत डाक्टर राने कह रहे थे कि ।" महारानी ने विनीत स्वर मे कहा।



कैलाशवासी महाराज जीवाजीराव सिंधीया की शव मजुषा को लेकर विमान बम्बई से ग्वालियर आया ।



कैलाशवासी महाराज जिवाजीराव सिंधीया की शव-यात्रा नगेसीर हजारो नर-नारी साथ है ।

'नही-नही ! आज तो मेरी तबीयत ठीक है। डाक्टर लोग तो कुछ तो भी ।" कहकर महाराज ने खडे भृत्य का आदेश दिया कि वह आगत दम्पति को बुला लाये। कुछ क्षण के उपरान्त श्री एव श्रीमती कामता नाथ सिन्हा ने प्रवेश कर महाराज तथा महारानी को अभिवादन किया। उत्तर प्रदेश के गवर्नर के किसी समय के सलाहकार डा० पन्नालाल सिन्हा आई० सी० एस० के सुपुत्र श्री कामतानाथ सिन्हा को महाराज का स्नेह वर्षो से प्राप्त था। जबकि मध्य भारत काल मे वे शिवपुरी एव विदिशा के जिलाध्यक्ष का कायभार सभालते थे। महाराज ने मुस्करा कर कहा—"आप दोनो को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। कहिय कैसे हाल है ? यहा कब आना हुआ ?"

"हम दोनो इसी सप्ताह कार्यवश बम्बई आये हुए थे। समाचार मिला कि महाराज का स्वास्थ्य ठीक नही है तो कुछ चिन्ता हुई और महाराज के दशनो को चले आये। महाराज अब कैसी तबीयत है ?"

"ऐसी ही है कामता ! तुम तो जानते हो कि मुझे खाने पीने का कितना शौक था और आम तो मुझे बेहद पसन्द था किन्तु इस डाइ-बिटीज के कारण ।"

"महाराज बीमारी का इलाज तो परहेज करने पर ही हो सकता है। डायबिटीज मे खुराक पर तो एक दम कठिन प्रतिबन्ध हो जाता है।" श्री सिन्हा ने कहा और फिर ग्वालियर को लेकर विभिन्न परिचितो को लेकर बहुत सी बातें हुई । सिन्हा दम्पति महाराज की बीमारी के कारण जल्दी जाना चाहते थे किन्तु महाराज ने उन्हे भोजन के पश्चात ही जाने दिया। श्री सिन्हा ने देखा कि महाराज का स्वास्थ्य काफी गिर गया है और महारानी के चिन्ताकुल मुख को देखकर तो श्रीमती सिन्हा की आखें भीगी हो आई ।

उन्हे आश्चय हुआ कि इस रुग्णावस्था मे भी महाराज को अपने स्नेहीजनो का कितना ख्याल है और अतिथि-सत्कार के हेतु उनका

मन कितना सजग है। एक पक्ष बीता किन्तु महाराज के स्वास्थ्य मे कुछ प्रगति न हुई। जुलाई का प्रथम सप्ताह था। राजकुमार माधवराव पिता के समीप बैठे थे। उनके चिन्तायुक्त मुख को देखकर महाराज सहसा बोले—"भैया! चिन्ता न करो। मेरी तबीयत अब पहले की अपेक्षा काफी ठीक है। दवा काय कर रही है। अब तो शीघ्र ही अच्छा हो जाऊगा। देखता हू तुम्हारी मा हमेशा फिक्र किया करती है—चिन्ता की क्या बात है?" "मैं कहा चिन्ता करती हू।" मुस्कराती हुई महारानी ने कहा—"उठिये कुछ पथ्य तो ले लीजिए।"

"मैं तुम्हारे इस बेस्वाद खाने से तो सचमुच परेशान हू। बिना नमक का शोरबा, उबली भाजी और सूखी बेस्वाद रोटी, मन एकदम ऊब गया हे" कहते कहते महाराजा उठकर बैठ गये और बेमन से चम्मच से पथ्य ग्रहण करने लगे। महारानी और राजकुमार की आखे इस भोजन के प्रति उनकी विरक्ति देख कर गीली हो उठी। बात सच भी थी कि रसहीन भोजन महाराज को रुचिकर भी कैसे होता। १० मील की प्रतिदिन की घुडसवारी करने वाले बलिष्ठ शरीरधारी महाराज सदा से अच्छे स्वादिष्ट भोजन के शौकीन रहे थे। आज उन्हे ही शरीर की इस दयनीय अवस्था मे मिष्ठान नमक विहीन, बिना मिच मसाले के इस बेस्वाद भोजन को ग्रहण करते देख कर किसे दुख न होता? महाराज की परिचर्या मे रत महारानी के लिये इन दिनो सबसे कठिन क्षण वे थे जब कि वे बहला कर समझा कर महाराज को पथ्य ग्रहण करने तथा औषधि के लिये विवश किया करती थी।

आगामी सप्ताह प्रारम्भ होते ही ९ जुलाई को महाराज की वर्षगाठ थी। उनके स्वास्थ्य की दशा को लक्ष्य मे रखकर डाक्टरो की यह सलाह थी कि कोई भी ऐसा समारोह न किया जावे जिसके कारण महाराज को थकान का अनुभव हो और इधर महाराज की यह इच्छा थी कि अन्य वर्षों की भाति ही इस वर्ष भी उत्सव का आयोजन हो। महारानी के सामने यह प्रश्न एक गभीर समस्या के रूप में था। वे

महाराज के स्वास्थ्य की गभीर स्थिति से पूणतया परिचित थी और डाक्टर राने एव उनके साथियो की सम्मति का मूल्य भी वे समझ रही थी किन्तु पति की इच्छा, उनकी खुशी, उनके आदेश उनके लिये सर्वोपरि थे। डाक्टर राने ने उस दिन महाराज को समझाते हुये कहा "महाराज। ज्यादा शोरगुल धूमधाम होने से आपके विश्राम मे व्याघात पहुचेगा, दुबलता बढेगी अत अच्छा तो यही है कि इस वर्ष परिवार के ही सब स्वजन मिलकर आपकी सालगिरह का पव मना ले।"

"क्या कहते है डाक्टर साहब। आपको यह पता है कि मेरा ,परिवार कितना बडा है। आप सब भी तो मेरे परिजन है। ग्वालियर से लोग-बाग आ रहे है। यहा के हितू मित्र स्वजन भी तो मेरे अपने है। इन सब के आने से तो मुझे खुशी ही होगी आराम मे खलल कैसा? नही नही पाटिल, दाजी साहब? आप सबको पिछली साल की तरह ही आमन्त्रित करिये—मेरी तबीयत की चिता न करिये—" महाराजा ने कहा और फिर राजप्रासाद मे उसी प्रकार प्रबन्ध प्रारम्भ हो गये। पति की आज्ञा शिरोधाय कर, उनकी प्रसन्नता के हेतु उनका आदेश स्वीकार कर महारानी व्यवस्था मे रत हो गई। महान चिन्ता के इन क्षणो मे भी इस दिव्या ने अपने पावन कतव्य की पूर्ति के हेतु स्मित हास्य के साथ आगत परिजनो हितुच्छुओ एव परिवार के मित्रो की अगवानी की। अपने कमरे मे कौच पर लेटे-लेटे महाराज ने मुस्कराकर समस्त आमन्त्रित मित्रो के अभिवादन एव वषगाठ-उपहार स्वीकार किये तथा बधाईया ग्रहण की। प्रत्येक व्यक्ति से वे उस क्षण तक मुस्करा कर कुशल मगल पूछते रहे जब तक कि उनकी तबियत घबराने न लगी। डाक्टर राने को स्थिति के समझने मे देर न लगी और तुरन्त ही उन्होने महाराज को लिटा कर कमरे मे ले जाकर आक्सीजन देने की व्यवस्था की एव उपचार प्रारम्भ कर दिया। रात्रि को सर विलियम से लदन से फोन द्वारा सम्पक स्थापित कर उनकी सलाह ली गई तथा उपचार मे आवश्यक परिवतन किये गये। क्लात मुख महारानी पति की

इस व्यवस्था को लक्ष्य कर अपने अतरयामी प्रभु से पति के निरोग होने के लिये प्राथना करने मे रत हो उठी। उन्ही के चरणो मे वे अपनी इस दारुण व्यथा एव करुण निवेदन को समपरण कर कर्तव्य पूर्ति के हेतु वे मानसिक बल प्राप्त करने का प्रयास कर रही थी। भोले राजकुमार को सभवतया स्थिति की गभीरता का पूर्ण आभास न था। उन्हे विश्वास था कि शीघ्र ही उनके पूज्य पितृव्या आरोग्य लाभ करने मे समर्थ होगे। यदा कदा पद्मभूषण प० सूयनारायण व्यास जो कि उज्जैन से महाराज के निमन्त्रण पर १ जुलाई को पधारे,थे उन्हे एव महारानी को कतव्य परायणता के प्रति उद्‌बोधन किया करते थे। व्यास जी के निरीक्षण मे पूजा पाठ अनुष्ठान आदि की व्यवस्था हो गई थी और एक सप्ताह महाराज के समीप रह कर वे उज्जैन वापिस लौट गये थे।

वर्षग्रथि समारोह की थकान महाराज के स्वास्थ्य पर अब शनै शनै स्पष्ट होती जा रही थी और वे अपनी प्रिय पुत्री अक्का राजे से मिलने के लिये आतुर हो उठे थे। त्रिपुरा नरेश के पास महाराज के स्वास्थ्य का समाचार पहुचते ही वे और महारानी बम्बई आ गये। त्रिपुरा की रानी अपनी लाडली बेटी अक्का राजे को अपने समीप पाकर महाराज को परम सतोष हुआ और वे रुग्णशैया पर लेटे लेटे अपनी इस बिटिया से बहुत सी बाते करते रहे। मा को भी अपनी स्नेहमयी बेटी को समीप पाकर दुख के इन क्षणो मे धैय बधा। मा बेटी दोनो ने मिलकर महाराज की परिचर्या मे व्यवस्त हो उठी एव डाक्टरो के आदेशानुसार औपधि आदि की व्यवस्था अपने हाथो मे ले ली। राजकुमार एव राजकुमारी उषा राजे, वसुन्धरा राजे तथा यशोधरा राजे को बाल्यकाल से देखभाल करने वाली सिस्टर केस्टलीनो इन दिनो महाराज की परिचर्या मे पूरा हाथ बटा रही थी। राजदम्पति की पूरण विश्वासपात्री एव राजकुमारियो की स्नेहशीला यह सिस्टर मन लगाकर विपत्ति के इन क्षणो मे राज परिवार को धैय बधा रही थी।

महाराज के स्वास्थ्य की स्थिति शनै शन विषम होती जा रही थी। १२ जुलाई को डाक्टर राने ने अन्य डाक्टरो से परामर्श कर स्थिति को आका तथा सर विलियम से लदन से सम्पक साधा। महारानी का आग्रह था कि सर विलियम से अनुरोध किया जावे कि या तो वे स्वय आकर महाराज के उपचार की व्यवस्था करें अथवा अपने किसी विश्वस्त सहयोगी डाक्टर को बम्बई भेजें जो कि उनकी सलाह से औषधि आदि की व्यवस्था कर सके। १३ जुलाई को बम्बई के डाक्टरो को यह आभास हो गया कि वे शायद ही महाराज के रोग का निदान कर सकें अत सर विलियम से अनुरोध किया गया और उन्होने अपने एक सहयोगी को बम्बई भेजने का आश्वासन दिया। महाराज के जामाता त्रिपुरा नरेश एव राजकुमार माधवराव लदन से आने वाले डाक्टर की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। १५ जुलाई को प्रात काल सर विलियम की सलाह के साथ लदन से डाक्टर आये एव महाराज के स्वास्थ्य की पूरा परीक्षा एव औषधि की व्यवस्था की गई। उसी दोपहर को इस अग्रेज डाक्टर ने त्रिपुरा नरेश एव राजकुमार से कह दिया कि नवीन औषधिया भी अपना पूरा प्रभाव दिखाने मे अब असमथ है एव महाराज के जीवन की अधिक आशा नही और परिजनो को चाहिये कि वे महाराज के अन्तिम क्षणो को शातिपूर्ण बनाने मे सहायक हो। निराशा के यह वचन सुनकर राजकुमार का मन दुख के आवेग से भर आया। १५ जुलाई की उस रात्रि को महारानी, राजकुमार एव महाराज की स्नेहपूण लाडली पुत्री अक्का राजे सो न पाई। उनके मुख चिन्ता से घिरे हुये थे। महाराज बेसुध अवस्था मे थे। कभी कभी उनको कुछ क्षणो के लिये होश आता और वे कराह कर नेत्र खोल देते और अक्का राजे को सामने देखकर अश्रु बरसाने लगते थे। पूज्य पिता की यह अवस्था देखकर उनकी कनिष्ठ पुत्रिया वसुधा राजे एव यशोधरा राजे खिडकी से मरणासन्न पिता की केवल झलक भर देख पाती थी और रह रहकर सुबक उठती थी।

१६ जुलाई १६६१ का वह अभागा दिन भी अपनी विषमता के लिये आया। महाराज रुग्ण शैया पर बेसुध अवस्था मे लेटे हुये थे। अ ग्रेज डाक्टर्र के साथ डाक्टर राने आदि औषधि की व्यवस्था कर इजेक्शन दे रहे थे। आक्सीजन की भी व्यवस्था रह रहकर की जा रही थी किन्तु जीवन दीपक बहुत ही मन्द गति से जल रहा था। ग्वालियर से महाराज का स्वास्थ्य समाचार जानने के लिये लगातार टेलीफोन पर टेलीफोन आ रहे थे और नगर के मन्दिरो, मसजिदो मे ग्वालियर के प्रजाजन महाराज के जीवन की भीख उस नियन्ता से मागने के हेतु स्थान स्थान पर एकत्रित होकर भगवान के सन्मुख नत थे। अपनी महारानी, अपने प्रिय राजकुमार और राजकुमारियो की विपत्ति से उनका मन कातर था और उनके मन की यह आवाज बलवती होकर घर घर की व्यथा बन कर मडरा रही थी। सध्या हुई और डाक्टरो ने पाया कि महाराज की स्थिति मे कोई विशेष परिवतन नही है। समस्त परिजन चिंतित थे कि यह विषाद की कालिमामयी रात्रि कही ।

रात्रि शनै शनै गम्भीरता का स्वरूप धारण करती गई। महाराज की रुग्ण शैया के समीप सेवा मे रत, दुख से कातर महारानी थी, राजकुमार थे और थी त्रिपुरा की राजमहिषी अक्का राजे। तीनो कनिष्ठ राजकुमारिया नीचे के कमरे मे खडी सुबक रही थी। सिस्टर केस्टलीनो राजकुमार के समीप खडी महाराज के मुख की ओर देख रही थी। सहसा महारानी ने देखा कि एक अनुपम आभा से एक विचित्र काति से महाराज का मुख यकायक दीप्त हो उठा। उन्होने आगे बढकर महाराज के कानो के समीप अपना मुख ले जाकर "कृष्ण कृष्ण" का जाप प्रारम्भ कर दिया और राजकुमार को सकेत दिया कि अपना हाथ महाराज के मस्तक पर रखकर भगवान के पावन नाम का उच्चारण करे। पति के जीवन के इन अतिम क्षणो मे महारानी की अगाध भक्ति, साहस एव कर्तव्य परायणता को देखकर समस्त परिजन अनुचर एव डाक्टर

दग रह गये। रात्रि के ११ बजकर ४० मिनट पर जबकि इगलैड से आया हुआ अग्रेज डाक्टर नाडी परीक्षा कर रहा था और डाक्टर राने इन्जेक्शन की तैयारी मे लगे थे युवराज महारानी एव राजकुमारी अक्का राजे ने देखा कि वह टिमटिमाता जीवन दीप विश्राम की ओर बढ चला। नेत्र एक क्षरण को जो खुले तो खुले ही रह गये और फिर महाराज के पावन प्राण महाप्रयाण के पथ पर अग्रसर हो गये—इस नश्वर जीर्ण-शीर्ण व्याधियुक्त पचभूत शरीर के पिंजरे को त्याग कर—इससे मुक्ति पाकर। उसी क्षरण सहसा नभ मे बिजली चमकी और खिडकिया जोर से खुल पडी और नीचे के कमरे मे बैठी कनिष्ठ राजकुमारियो को एव महाराज के समीप खडी महारानी तथा राजकुमार को ऐसा आभास हुआ कि कोई ज्योति शक्ति का कोई पुज प्रासाद के वातावरण से बाहर निकल कर विराट मे समा गया हो। बिजली की चमक और झझावात से कमरे के द्वार जोर से काप उठे और महारानी एव उनकी लाडली अक्का राजे एक करुण क्रदन के साथ पति के पार्थिव शरीर पर गिर पडी। राजकुमार पुज्य पिता के शरीर का स्पर्श कर कातर होकर रो उठे। कठोर भूमि पर सिर पटकती इन नन्ही राजकुमारियो और महारानी के करुण विलाप को देखकर महाराज के वर्षो के साथी गृह अधिकारी कर्नल एकनाथराव पाटिल, मेजर इनदुलकर पवार एव डाक्टर राने आदि के हृदय भी काँप उठे। वे एकटक दृष्टि से शोक सतप्त अवस्था मे खड निहार रहे थे। अपने इस स्वर्गवासी स्वामी की पावन छवि को—कहा मिलेगा उन्हे अब ऐसा दीन दयालु स्वामी ? वे कहा पायेंगे अपने इन स्नेहसिक्त प्रिय महाराज को ? उनकी पावन आत्मा तो इस सब पार्थिव मोह बधनो को त्याग कर परम शक्ति मे समाहित होने के हेतु प्रयाण कर चुकी थी। महाराज के मुख से ऐसा प्रतीत होता था कि अन्तिम क्षणो मे किसी भी स्मृति ने किसी भी मोह बन्धन ने उनकी पवित्र आत्मा को नही बाधा था। महारानी के "कृष्ण कृष्ण" के मन्त्र ने उनके मन और मस्तिष्क मे

प्रवेश कर उन्हे परम शाति पहुचाई थी और निर्विकार भाव से उन्होने स्वय को अपनी महान पुनीत आत्मा को परम आनन्दमय भगवान के चरणो मे समर्पण कर दिया था। अतिम बेला की चिरानन्दमयी शाति उनके मुख पर खेल रही थी। शारीरिक वेदना का एक चिन्ह भी वहा अब शेष न था।

बम्बई के वर्ली के समुद्र महल के उस कक्ष मे जहा महाराज का नश्वर शरीर उस विषादमयी कलुषपूर्ण रात्रि मे चिर विश्राम कर रहा था अवसाद की उस बेला मे गूज उठे ये राजपुरोहित द्वारा उच्चारित गीता के मन्त्र जो शरीर की क्षणभगुरता एव आत्मा की अनित्यता का अवबोधन कर रहे थे—

"वासासि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृहणाति नरो पराणि दिं,
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा,
न्यन्याति सयाति नवानि देही ॥"

और

नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैन दहति पावक
न चैन क्ले क्ले दयन्तयाषो, न शोषयति मारुत

विषाद मे डूबी, आसुओ से भीगी महारानी ने भी सुना कि

देही नित्यम वध्यो अय, देहे सवस्य भारत।
तत्मात्सर्वाणि भूतानि, न त्व शौचितुमहसि ॥

अर्थात्

जैसे पुराने त्याग कर नर वस्त्र नव बदले सभी।
यो जीर्ण तन को त्याग, नूतन देह धरता जीव भी ॥

आत्मा न कटता शस्त्र से है, आग से जलता नही ।
सूखे न आत्मा वायु से, जल से कभी गलता नही ।।
सारे शरीरो मे अमर आत्मा, न वध होता किये ।
फिर प्राणियो का शोक यो तुमको न करना चाहिये ।।

"दिनेश"

और फिर वे सहसा इस दिव्य सदेश को आत्मसात कर उठ बैठी और अपने बच्चो को अक मे भर उनके अश्रु पू छने लगी ।

भगवान दिवाकर की प्रथम रश्मियो ने जब गहन अधकारमयी निशा के अवसान का सदेश विश्व को दिया तो महारानी और राजकुमारियो की आखे अत्याधिक रुदन से लाल हो गई थी, अपनी सूजी हुई आखो से, अश्रु पूरित नेत्रो से वे निहार रही थी महाराज के मुख को । गम्भीर शोक मे डूबे हुये वर्ली प्रासाद मे अन्तिम श्रद्धाजली अर्पित करने वाले, हजारो स्त्री पुरुषो की भीड एकत्रित हो गई थी । सब मौन थे, शोक दग्ध थे और एक एक कर पक्ति मे आकर खडे हो रहे थे पुष्पहारो मे लिपटे महाराज के शव के दर्शन करने के लिये जो महल के प्रागण मे रखा हुआ था । "मोती वाले महाराज" के नमन मे वह अपने नयनो के मोतियो की माला एव उनकी सौजन्यता की अगणित सुधियो भरी भावनाओं की श्रद्धाजलि चढा रहे थे । दिन के १० बजे बम्बई के शाताक्रुज हवाई अड्डे पर वी० आई० पी० व्यक्यियो की भीड पहुच चुकी थी । इन्डिया एअर लाइन का एक स्काईमास्टर महाराज के शव को उनकी जन्मभूमि ग्वालियर ले जाने के लिये तैयार खडा था । बीस मन चन्दन काष्ट विमान पर लादा जा चुका था । महाराज के शव को मोटर मे लिये तभी आई शोक-मग्न महारानी और राजकुमारिया स्वर्गीय महाराज के षोढश वर्षीय एक मात्र पुत्र माधवराव सफेद जोधपुरी कोट और काली टोपी पहने विषाद मे भरे

विमान के पास खडे थे। शव-मजुषा विमान पर चढाई गई और महारानी एव बच्चो के साथ जनसमूह बिलख रहा था। आसू अब सभाले न सभल रहे थे।

महाराज की शवमजूषा के समीप विमान मे बैठे उनके कुछ अभिन्न मित्र एव सचिव तथा दूसरी ओर निकट सम्बन्धियो के साथ बैठी थी महारानी और उनकी पाच सन्ताने तथा दामाद त्रिपुरा नरेश। ग्यारह बजे विमान ने उडान भरी और २-१५ बजे मध्यान्ह मे जब विमान ग्वालियर यान निलय के ऊपर मडराया तो विमान मे बैठे लोगो ने देखा कि महाराजपुरा पर अथाह भीड अपने प्रिय नरेश को श्रद्धाजलि अर्पित करने के हेतु उपस्थित हे। विमान नीचे झुका कि जनसमूह के स्वर स्पष्ट हो उठे

"हमारे जीवाजी महाराज अमर है"

इस शब्दो से नभ कम्पायमान था। सूनी, अवसादपूर्ण आखो से महारानी ने उतरते विमान की खिडकी से देखा उस ग्वालियरवासियो के विशाल जनसमूह को जिसने अपने हृदय का नेवैद्य एव अर्घ्य चढाते हुए उनका एक दिन स्वागत किया था महारानी के रूप मे और जिनका अभिनन्दन स्वीकार कर वे उनकी पूज्या बन बैठी थी। नगे सिर वाले विशाल समूह को देखकर इन क्षणो मे उनका उद्वेग फूट पडा। पास मे बैठी अपनी पुत्री एव त्रिपुरा की महारानी पदमा राजे का कन्धा पकड-कर वे बिलख-बिलखकर रोने लगी। त्रिपुरा महिषि पदमाराजे ने उन्हे पकडकर झझोडते हुए कहा "मा, हमारी ओर देखो! भैया की तरफ देखो, अपने इन लाखो बच्चो की ओर देखो जो महाराज को खोकर अनाथ-से तुम्हारी ओर देख रहे हे। यह सब तुम्हारे ही तो बच्चे है मा। तुम तो आज इनकी मा हो, इस राज्य की माता राज-माता "

"अक्का राजे, तुम क्या कह " और वह राजमाता अपने को फिर भी सभालने मे असमर्थ रही।

यान महाराजपुरा निलय पर उतारा तो सचिव कनल एकनाथराव पाटिल ने राजपरिवार के सदस्यो को सर्वप्रथम उतारा। लोगो ने देखा, रोती बिलखती हुई महारानी को अपनी पुत्रियो का सहारा लेकर विमान की सीढियो से उतरते हुए और महाराज के मौसा सरदार चन्द्रोजीराव आग्रे को, अक्का राजे को सहारा देते हुए शोक मग्न पदमा राजे, (अक्का राजे) विमान के द्वार पर खडी हुई विशाल जनसमूह को देख स्वय को सभालने मे भी असमर्थ हो रही थी। राजपरिवार के सदस्यो को विमान से उतरने पर उन्हे विलास प्रासाद भेज दिया गया और फिर राज्य के बैंड की सलामी की धुन के बीच शव मजूषा को उतारकर राजकुमार माधवराव ने एक लैन्डरोवर मे रखा। अपार जनसमूह ने तभी जयघोष किया

"हमारे महाराज अमर है", "जीवाजी महाराज अमर है"।

शवमजूषा के दर्शनो के लिए भीड उमड पडी। कुछ क्षण पश्चात ही एक गहरी खामोशी, एक अवसाद से भरी चुप्पी के बीच शवमजूषा के लिये लैं डरोवर जयविलास प्रासाद की ओर दौड पडी। उस दिन ग्वालियर के समस्त ट्रक मालिको ने अपने सभी ट्रक ग्वालियर नगर और महाराजपुरा यान विलय के बीच चला दिये थे—ग्वालियर के नगर-वासियो को निशुल्क लाने ले जाने के लिए और इन ट्रको की पक्तियो के कारण दस मील की दूरी मानो कुछ भी नही रह गई थी।

जय विलास प्रासाद के विस्तृत मैदान मे श्वेत सगमरमर के आसन पर तीन फीट गहरे पुष्पाहारो मे ढका हुआ महाराज का शव रख दिया गया था और असख्य नर-नारी, युवा, बाल वृद्ध पक्ति बाधकर चले आ रहे थे अपने राजा की अ तिम छवि अकित कर श्रद्धाजलि अर्पित करने। हाथो मे फूलो के गुलदस्ते और हार लिये अथाह जनसमूह टूट पडा था। जिसे देखो वह या तो रो रहा था या रोकर अपने आसुओ को पूंछ रहा था। कानो को चीर देने वाले उस अवसाद के स्वरो से नभ गू ज उठा था—लगता था जैसे हर परिवार ने अपना निकटतम प्रियजन खो

दिया है और वह श्वेतवस्त्रा शोकदग्धा नारी करुणा की प्रतिमूर्ति-सी जयविलास प्रासाद की खिडकी के पास खडी हुई टुकुर-टुकुर ताक रही थी इस अर्घ्यदान को, इस पूजा को जो ग्वालियर का बाल-वृद्ध, युवक-युवती समुदाय अर्पित कर रहा था अपने स्वामी को, अपने प्रिय महाराज को और ये थे महाराज—जो चिर निद्रा मे लिप्त अपनी प्यारी प्रजा के उपमय की ओर से भी आज उदास से थे। उन्हे स्मरण हो आया महाराज का सदा का वह निरन्तर नमस्कार जिससे वह अपनी प्रिय प्रजा का सदैव अभिनन्दन हसते मुख से स्वीकार किया करते थे। कहा गई वह मनोहारिणी छवि ? कहा गया वह स्मित हास्य ?? अतीत की सुधियो मे सहसा वह दिव्या खो सी गई। उसने देखा कि कुछ समय पश्चात् एक नारगी रग का पर्दा शव के समीप डाल दिया गया। शव को शायद अब स्नान कराया जा रहा था।

राजकीय वेशभूषा मे मराठा वश की पगडी से अभिभूषित चन्दन के टीको से अलकृत महाराज के शव को लोगो ने दूर से देखा। प्रतीत होता था शान्त मौन मुद्रा मे कोई तपस्वी समाधिरत हो। गगाजल से अभिषिक्त, चन्दन चर्चित शव एक पालकी पर रखा गया। शव के ऊपर था एक रेशमी वस्त्र जो फूलो के ढेर से ढक गया था। मुख उघडा हुआ था। पास ही ढाल-तलवार थी। पालकी उठी और क धा देने वालो का ताता सा लग गया। शव यात्रा प्रारम्भ हुई। लाल और नारगी वस्त्रो से ढके हुए हाथियो ने आगे बढकर शव को सलामी दी और उनका दल जयविलास के बाहर की ओर चल पडा। और नगे सिर हजारो नागरिको ने उनका अनुसरण किया। उस अवसादमयी वेला के क्षीण क्षणो मे ग्वालियर के शोक विव्हल नागरिको के एक वग ने देखा कि श्वेत जयविलास प्रासाद की खिडकी के समीप खडी एक शुभ्रवसना ज्योतिमयी अपने नेत्रो से अविरल अश्रु बहाकर अपना अघ्य और पावन उपयम उन पुष्प आच्छादित पावनचरणो मे समर्पित कर रही है जो शवमजूषा के भीतर बन्द थे और जिन्हे वह दिव्या

एकटक निहार रही थी। उन्होने देखा कि उसका सहारा लिए उसका आचल पकडे पडी है चार शोक सन्तप्त राजकुमारिया जिनके अश्रुपूरित नेत्र शवमजूषा पर टिके हुए हैं। धीरे-धीरे पालकी आगे बढ रही थी और उसके चारो ओर था एक विशाल जनसमूह। अधिकाश व्यक्ति नंगे सिर और नगे पैर इस शवयात्रा मे भाग ले रहे थे। विमान ऊपर उड रहे थे और उनकी खिडकियो से दिखाई देता था नगे सिर वाले व्यक्तियो का एक विशाल सागर। जम्मू काश्मीर रेजीमेट के तुरही बाजे और ढोल बजाने वालो का दल हाथियो के पीछे चल रहा था और अस्त्र नीचे किये हुए सिपाहियो की पक्तिया बैंड की मातमी धुन बजा रही थी। शवयात्रा को देखने के लिए अगणित आखें मोती बहाती हुई साथ थी। निमल आकाश मे डूबते दिनकर की रक्तमयी रश्मिया स्वरण विहान की अवसादमयी कहानी कह रही थी और सुदूर भवनो के छज्जो पर से टुकुर-टुकुर ताकती कुलवधुओ की डबडगाती आखे विषाद के मोती बिखरा रही थी। युवराज पालकी के आगे चल रहे थे। मुडा हुआ सिर, श्वेत कोपीन धारण किये यह सुकुमार बालक आखो मे जल भरे कभी इधर देखता था कभी उधर—उसकी खोज का अब अन्त कहा था ?

शनै शनै यह शव यात्रा कटोरा ताल के समीप पहुची जिसके सामने था छत्री का विशाल प्रागण जहा कि इन्ही स्वर्गीय महाराज ने ऐसी ही एक साध्यवेला मे अपनी पूज्या मा का अन्तिम सस्कार किया था। मा की छत्री (समाधि) के सामने चन्दन की चिता लगाई गई थी। शव उस पर रख दिया गया। युवराज ने शव के मुख मे तुलसीदल तथा गगाजल डाला और फिर वेद मत्रो के साथ शव की अन्तिम पूजा की। अन्तत लक्ष लक्ष ग्वालियरवासियो के करुणा क्रदन के बीच, शोक विह्वला मा बहिनो और परिजनो के आर्त स्वरो के मध्य और महाराज के निजी सचिवो और साथियो के हाहाकार के बीच युवराज ने रोते-रोते अपने पूज्य पिता की चन्दन की चिता मे अग्नि आरोपय

किया । सर्वभक्षी अग्निदेव ने घताहुति पाकर कतिपय क्षणो मे ही उसे पार्थिव पचभूतो से निर्मित देह को भस्मसात कर दिया । पावन आत्मा अपने पिंजरे मे मुक्त होकर चिरन्तर शाश्वत सत्य मे पहिले ही समाहित हो चुकी थी अब शेष क्या रह गया था ? बिखरी बिखरी कुछ सुधिया और पावन पुन्य कृत्यो की कहानिया !!

शोकाकुल श्वेत वस्त्रा के आसुओ की लडी मे लाखो ग्वालियर वासियो के अश्रुओ की धारा ने मिलकर उस पवित्र महान आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजली अर्पित की ।

बीस वष पूद की एक सध्या को स्वरग मुक्ता भूषणो से लदी, ग्वालियर नरेश जीवाजीराव के हृदय की स्वामिनी और प्रजावत्सला महा-रानी को आज इस निषाद की वेला मे ग्वालियरवासियो ने श्वेत वस्त्रा, शोकदग्धा, एव श्रृगार विहीन असहाय नारी के रूप मे अतिक्रन्दन करते हुये देखा । उसके हृदय से, उसके पावन वक्ष से चिपके हुये थे पाच बालक जो उसके नयनो से बिखरते मुक्ता कणो को रोकने थामने का प्रयास कर रहे थे । उसके शोक भार को हल्का करने उसके विषाद को बाटने के लिये उसे झझोड झझोडकर कह रहे थे "मा हमारी ओर तो देखो मा ।"

ग्वालियरवासी नर नारी दुख की इस वेला मे मत्र मुग्ध से यह करुण दृश्य देख रहे थे । सहसा नगर की एक कुल वधू ने दौडकर अपने अश्रुओ से उस दिव्या के चरणो को पखारते हुये कहा—

"मा ! राजमाता ! हम भी तो तुम्हारे बच्चे है । तुम तो हमारी राजमाता हो" और तभी एक अन्य कुल वधू ने दौड कर उस श्वेत वस्त्रा अर्तिनाद करती हुई नारी के कोमल ममतापूर्ण वरद हस्त को अपने सिर पर रखकर कहा—"मा । तुम हमारी राजमाता हो । हम अनाथो को अब तुम ही सनाथ करो मा ।" और फिर समवेत कठ से सहसा वह जन समुदाय पुकार उठा—'राजमाता । तुम हमारी राज-माता हो । तुम हमारी हो । तुम राजमाता ।"

अन्त मे आत्म सयत होकर उस तपस्विनी श्रृगारविहीना नारी ने भी अपना वरद हस्त उठाकर उन कुलवधुओ के सिर पर रख दिया। उन्हे उठाकर उसने अपने अक मे भर लिया और स्नेह गदगद कठ से वह बोली—"हा मेरी बच्चियो मैं अब तुम्हारी महारानी नही—मा हू—मा—राजमाता—।"

प्रबल दुख के आवेग से, सीपी सी आखो से उस कल्याणी के मानो मुक्तायो की झडी लगी हुई। ओस के बिन्दुओ ने नभ से बिखरकर रात्रि के उन क्षणो मे जन समुदाय पर वर्षा की और ग्वालियरवासियो को उस दिन मिली "राजमाता" और उसकी पावन प्यार की फुहारें। उस जनकल्याणी का विषाद आज नगर के जन जन का विषाद था।

—०—

सोपान १२

श्रद्धाजलि

१७ जुलाई की कालिकामयी रात्रि मे, महाराज के पार्थिव पचभूत को सिकताकणो मे परिवर्तित होते देखकर वह शोक मग्न तपस्विनी वैधन्य के क्रूर भार को उठाये अपने बच्चो का सहारा लिये आ गई उस श्वेत जय विलास प्रासाद मे जो मौन तपस्वी की भाति अपने विशाल वक्ष को खोले, उदारमना, युग-युग की व्यथाओ को झेलता हुआ ग्वालियर नगर के एक किनारे पर खडा था। उस अवसादमयी रात्रि मे एक ममतापूर्ण जनक की भाति इस श्वेत प्रासाद ने भर लिया अपने अक मे शोक से परिपूर्ण राजपरिवार को और उसको दुखी बेटी अपना अश्रुपरित मुख उसके वक्ष मे छिपाकर सिसक उठी।

ग्वालियरवासियो ने उस धुधले अन्धकार मे देखा उस प्रासाद को जो मौन तपस्वी सा खडा अपने विशाल हृदय मे छिपाये हुये था उनकी वह निधि जो परमो लेखा गी, कल उनकी महारानी थी और आज थी उनकी मा उनकी माता-राजमाता। धीरे-धीरे प्रासाद के काले लोहद्वार बन्द हो गये मानो विश्व की व्यथा को उन दो फौलादी हाथो ने अपने अक मे समेट लिया हो। गहन अन्धकार ने सब कुछ अपने काले अचल मे छिपा लिया। विश्व निद्रा की गोद मे विश्राम पा गया किन्तु एक नारी की व्यथा, एक पतिपरायणा धर्मपत्नी की करुण क्रन्दन उन कक्षो मे गूज रहा था—उसे कौन सात्वना दे? उसे कैसे धैर्य मिले?

ग्वालियर की महारानी



श्रीमत विजयाराजे सिंधीया ।

दिन आये और गये और राजमाता का, राजपरिवार का दुख हल्का करने के लिये चारो ओर से समवेदना के सदेशो का ताता सा लग गया । राष्ट्रपति ने दुख की इन घडियो मे सात्वना प्रदर्शित करते हुये कहा "ग्वालियर के स्वर्गीय महाराज जीवाजीराव सिंधिया के साथ उन दिनो मुझे कई बार मिलने का मौका मिला जब वे मध्य भारत के राजप्रमुख थे । भूतपूव ग्वालियर मे ही नही वरन समस्त मध्य भारत मे वे काफी लोकप्रिय थे तथा सभी श्रेणियो और वर्गो के लोगो से उनका मिलना जुलना था । मैं भी दिवगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धाजली अर्पित करना चाहूगा ।" लाड माउन्टबैटन ने अपने पत्र मे लिखा —

"मैं जीवाजी को सन् १६२१ से जानता था जब कि वे छोटे से बालक थे और मैंने हमेशा उन्हे भारत मे अपने पुराने मित्रो मे से एक समझा । भारत का इतिहास जब निष्पक्ष दृष्टि से लिखा जायेगा तब उनका नाम महान भारतीयो और सच्चे देशभक्तो की सूची मे ऊ चे स्थान पर अकित किया जायेगा ।"

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने लिखा कि —

"महाराज जीवाजीराव सिंधिया उन लोगो मे से थे जिन्होने लोकतत्रीय भारत के निर्माण के लिये अत्यन्त प्रसन्नता से अधिकार और सत्ता का परित्याग कर दिया ।"

श्री मुरारजी देसाई ने कहा कि —

"ग्वालियर के महाराज जीवाजीराव सिंधिया के साथ मेरे ताल्लुकात काफी पुराने और गहरे थे । वे बडे दिलदार, इन्साफ पसन्द और तरक्की-पसन्द थे । उनकी हमेशा यही कोशिश रही कि उनकी प्रजा सुखी और सन्तुष्ट रहे । अपने जीवनकाल मे प्रजा की तरक्की आने वाली रुकावटो को हटाने की कोशिश मे वे कभी पीछे नही हटे और यही कारण था कि वे अपने ध्येय मे काफी सफल हुये और ग्वालियर तथा मध्य भारत के लोकप्रिय बने ।"

श्री यशवन्तराव चौहान ने लिखा कि —

"भूतपूव ग्वालियर के रियासत के स्वर्गीय महाराज जीवाजीराव सिंधिया के साथ मेरा बहुत ही घनिष्ठ सबध था जब कभी मुझे ग्वालियर जाने का मौका मिलता था तब मैं उनसे बिना मिले नही रहता था। केवल ग्वालियर मे ही नही बल्कि सारे मध्य प्रदेश मे वे बहुत ही लोकप्रिय थे। उनके मन मे सदा ही गरीबो के प्रति आदर भावना थी। स्वर्गीय आत्मा के प्रति मैं अपनी श्रद्धाजली अर्पित करता हू।"

श्री जगजीवनराम ने लिखा कि —

"स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के एकीकरण मे जिन राजा महाराजाओ ने सक्रिय योगदान दिया—महाराजा सिंधिया को उनमे विशिष्ट स्थान प्राप्त है। मध्य भारत के राज प्रमुख के रूप मे उनकी लोकप्रियता मे और वृद्धि हुई। एकीकरण के बाद महाराज जीवाजी-राव भूल गये कि वे महाराज हे या देशी नरेश रहे है। अपने जीवन को उन्होने सादा बना लिया और एक साधारण नागरिक की तरह ही उनका व्यवहार हो गया। कई एक अवसरो पर बम्बई मे किसी न किसी मित्र के यहा उनसे मिलने का सुयोग हुआ और यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई कि उनके रहन-सहन, पहिनावा और व्यवहार को देखकर उनमे और किसी अन्य नागरिक मे अन्तर करना असभव था। देश की औद्योगिक और व्यापारिक उन्नति और विकास मे वे सक्रिय दिल-चस्पी लेने लगे थे। उनके निधन से देश की क्षति हुई है।"

राजर्षि डा० राधाकृष्णन ने जिनका राजदम्पत्ति से गहन परिचय था लिखा —

"महाराजा जीवाजीराव सिंधिया से मै पहली बार बहुत समय पूर्व मिला था जबकि सर मनुभाई मेहता ग्वालियर के दीवान थे। महाराजा साहब की उस समय भी उच्च शिक्षा के प्रसार मे दिलचस्पी थी और उन्होने मुझ से ग्वालियर रियासत के लिये प्रस्तावित विश्व-विद्यालय के सम्बन्ध मे कुछ प्रश्न किये थे। उनके चेहरे पर हमेशा

यौवन की दीप्ति रही थी और जैसे तरुण वह बाहर से दीख पडते थे वैसा ही तरुण उनका मन था। नितात प्रगतिशील, आधुनिकतावादी और अपनी जनता के कल्याण के उत्सुक। मुझे उनसे मिलने और देश की समस्याओ पर बातचीत करने का अवसर कई बार मिला और मैं उनकी बुद्धिमतापूर्ण दिलचस्पी और निष्पक्ष विवेक से बहुत प्रभावित हुआ।"

महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश जी ने लिखा —

"महाराज की राष्ट्रीय ध्येय के लिये की गई सेवाओ के लिये हम उनके प्रति चिर कृतज्ञ रहेगे। महाराज जहा कही जाते थे उनके प्रति लोग प्रेम और आदर प्रगट करते थे। अपने मैत्रीपूर्ण स्वभाव और अतिथि सत्कार के कारण जो कोई मिला, उसका हृदय उन्होने जीत लिया। सावजनिक प्रश्नो की उनकी समझबूझ और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण रुख से एव व्यक्तियो और घटनाओ के उनके गहरे ज्ञान से और अनुभव से मै बहुत प्रभावित था। वह देश के एक सच्चे देशभक्त और सावजनिक सेवाभावी नागरिक थे जिन्होने वतमान परिस्थितियो के साथ अपने आपको प्रसन्नता से ढाल लिया और देश के हित को सर्वोपरि रखा। उनके जैसा आदमी सहज सुलभ नही।"

मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री पातसकर ने लिखा कि —

"सिंधिया वश ने भारत मे एक ऐतिहासिक पाट अदा किया है और हिज हायनेस महाराजा जीवाजीराव सिंधिया उस गौरवशाली परिवार के सुयोग्य वशज थे। देश की स्वतत्रता के पश्चात बडे महाराजाओ मे आप ही सवप्रथम थे जिन्होने देशी राज्यो को शेष भारत मे विलीनीकरण की अनिवाय आवश्यकता को अनुभव किया था और अपना समस्त सक्रिय सहयोग स्वर्गीय सरदार पटेल को उनकी इस समस्या की पूर्ति के लिये दिया था—उनके निधन से भारत के एक महान देशभक्त और उदारमना आत्मा की क्षति हुई।"

मध्यप्रदेश के मुख्य मत्री डा काटजू ने लिखा कि

"एक राजकुमार के रूप मे ज-म लेने पर भी वह हृदय से लोकतत्र-वादी थे। उन्होने अपनी जनता को सदा प्रेम किया और पूर्ण निष्ठा के साथ उनकी सेवा की। मैने हमेशा मध्यभारत के कल्याण और समृद्धि मे उनकी गहरी दिलचस्पी देखी। उज्जैन का विक्रम विश्वविद्यालय जनता के प्रति उनके और मध्यप्रदेश मे शिक्षा के ध्येय को आगे बढाने की उनकी उत्कृष्ट भावना का चिरस्थायी स्मारक रहेगा। उनकी मृत्यु एक राष्ट्रीय क्षति है।"

श्री वी० पी० मेनन ने लिखा कि —

"अपनी जनता को उत्तरदायी शासन देने वाले देश के उन पाच प्रमुख नरेशो मे उनका प्रथम स्थान था जि हे २१ तोपो की सलामी का अधिकार प्राप्त था। यदि उनका रूख असहयोगी होता तो मध्यभारत सघ न बनता। वह सदा देशप्रेमी रहे और जब कभी पुकार हुई तो वे अपनी भूमिका अदा करने मे कभी नही झिझके। देश के औद्योगीकरण के प्रारम्भिक चरण का बहुत बडा श्रेय सिंधिया कम्पनी को है"।

ग्वालियरवासियो के मन के भाव श्रीप्रकाश जी के उन शब्दो मे व्यक्त हो गये थे कि "उनके जैसा आदमी मिलना सहज नही है"। भला वे अपने लोकप्रिय महाराजा की सुधियो को कैसे इतना शीघ्र भूल पाते। ग्वालियर का बच्चा बच्चा अपने प्रिय महाराज की याद कर शोक मग्न था। और उनका प्रयास था कि वह अपनी मा का, अपनी राजमाता का शोक किसी प्रकार हल्का कर उनके प्रति सच्चा प्रमाणित हो सके। ऐसे युग पुरूष की पत्नि जिसके सुकृत्यो की सराहना देश के मूर्धन्य नेता एक स्वर से कर रहे थे कैसे इन शोक सदेशो को प्राप्त कर द्रवित न होती। वह विचलीत थी, दू ख के सागर मे डूबी वह सागर कन्या सोच रही थी—कि महाराज तो महाप्रयाण कर गये, वे तो अनत-धाम की ओर कूच कर गये। दुनिया भले ही अब शोक मनाये दुख

मनायें--

"दुनिया रोती धोती रहती।
जिसको जाना है जाता है।।

'बच्चन'

जाने वाला तो चला गया पर ये पहाड से दिन अवसाद और विषाद से भरे ये क्षण अब कैसे कटेंगे? एक एक कर वह श्रद्धालिया पढ रही थी जिनमे विगत अतीत की झाकी थी। युग पुरुष की महानता की गाथा थी और उनके गुणो का वर्णन था।

सबके स्वरो मे मिलकर उसके हृदय की वीणा भी श्रद्धाजली अर्पित कर रही थी प्रतिक्षण, प्रतिपल उस महान आत्मा के प्रति जो उसकी सब कुछ थी।

— ० —

सोपान १३

शोकमग्न तपस्विनी

श्रृ गारविहीन, श्वेत वस्त्रा, गाकाग तपस्विनी सी एक शुभ्र काया बैठी है जयविलास प्रासाद के पूजा गृह मे । मौन उपासना मे रत उसका मन खोज रहा है शान्ति को, ऐसी शान्ति को जिसमे उसकी असीम व्यथा, उसका अपार दुख, उसका भारी पहाड सा अवसाद समाहित हो जावे । अन्तर्यामी प्रभु से, कृपा विधान से, दया सागर से वह याचना कर रही है अपने कतव्य पथ पर दृढ रहने की । योग वशिष्ट मे डूबी, रामायण मे रत वह चाहती है कि अपने गत २० वर्षों के स्वर्णित सुखद अतीत की सुधियो को विस्मृत कर उसका मन भगवान मे रत हो जावे । अपने स्वामी के सानिन्ध्य को भूलने के प्रयास मे पति की पावन सुधिया उसे और भी विचलित कर देती हे । अन्तर के दुख का ज्वार फूट पडता है । अश्रुओ के सहारे उसने रामायण मे पढा कि "नाई तुन • धरए, तजऊ प्रति अनायास हरिजान । जिमि नूतन पट पहिरई, नर परिहर हपुरान" और तभी उसे गीता के "वासासि जीर्णानि" वाले श्लोक स्मरण हो आता है । गीता का मनन, उसके द्वितीय अध्याय के श्लोक, व जीवन और मृत्यु के आवरण से परे जीव की नित्यता का बोध उसे करती है । उसके भ्रमित मन को तब कुछ शान्ति मिलती है जब उसने पढा कि —

"जातस्यहि ध्रवो, मृत्यु धुव जन्म मृतस्य च ।
तस्माद परि हाये अर्थ, न त्व शोचिमुहासे ।।"
"जन्मे हुये मरते मरे निश्चय जन्म लेते कही
ऐसी अटल जो बात है उसकी उचित चिन्ता नही ।"

जन्म और मृत्यु की यह आख मिचौनी क्या सचमुच दुखदायी होनी चाहिये । आत्मा की अमरता तो निश्चित है उसका नाश सम्भव नही फिर शोक कैसा ? उसने पुन पढा —

"देही नित्म वध्योअय, देशे सर्वस्य भारत ।
तस्मात सर्वाणि भूतानि, न त्व शौचितमुहसी"
"सारे शरीर मे अमर, आत्मा, न होता वध किये
फिर प्राणियो का शोक यो तुमको न करना चाहिये ।"

अविनाशी आत्मा से ही प्राणियो को नाता जोडना चाहिये न कि पचभूतमय शरीर से जो कि नाशवान है । उस मनीषियो ने इस अमरवाणी का फिर वह सूत्र पढा जो युग युग से मानव को कर्म के प्रति प्रेरणा देता रहा है । उसे स्मरण हो आया ।

"भोगस्थ कुरू कर्माणि सगम त्यक्त्वा धनजय,
सिद्धयसिद्धयो समो भूत्वा समत्व योग उच्यवते ।।"
"आसक्ति सब तज, सिद्धि और असिद्धि मान समान ही
योगस्थ होकर कर्म कर, है योग समता ज्ञान ही ।"

जीवन पयन्त मानव को कर्म तो करना ही होगा । कम से उदासीन

होना सभव भी कहा है ? कर्तव्य का पथ चाहे कितना कटु और कठोर क्यो न हो उसे ग्रहण करना ही चाहिये। यह देववाणी उस शोकमग्ना तपस्विनी को कतव्य पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। उसका दुबल मन, कुछ क्षणो के लिये कम की महत्ता पर विश्वास करने लगता है। और फिर वह रुचि लेने लगती है अपने परिवार मे। पति की थाती पुत्र की शिक्षा-दीक्षा मे और तीन राजकुमारियो की साज सभाल उसके जीवन की रिक्तता की पूर्ति करने लगते है। उनका प्रयास होता है कि अपने स्वामी की प्रिय धरोहर इन युवराज माधवराव को वह ऐसा भव्य और उज्जवल रूप दे कि स्वागीण शिक्षा पाकर वह मानव सेवा का सफल व्रती बने जिसे पाकर ग्वालियरवासियो का ही क्यो वरन समग्र देश का मस्तक गर्व से ऊचा हो जावे। राजकुमारी उषा राजे, वसुधरा राजे एव यशोधरा राजे आदश रमणी रत्न बन कर देश के गौरव की वद्धि करे। राजमाता इसी प्रयास मे लीन पूजा पाठ से प्रेरणा प्राप्त कर ग्वालियर मे कालयापन कर रही थी। महाराज की मत्यु के पश्चात वे निरामिष भोजन का व्रत ले चुकी थी और महाराज का प्रिय फल "आम" के स्वाद का त्याग कर चुकी थी। निष्ठापूण वैधव्य जीवन और भगवान मे मन का लय करने का प्रयास उन की दिनचर्या थी। १९६१ का नवम्बर मास आया। महाराज की मृत्यु को अभी चार मास ही हुये थे कि राज माता की पूजा पाठ और शाति मे व्यवधान पहुचाने के लिये आ गये देश के पचवर्षीय आम चुनाव। १९६२ के चुनावो मे, इस बार ग्वालियर की ससद सीट पर ही राजमाता को रखने का ग्वालियरवासियो का और परिवार के हितैषियो का आग्रह था। किन्तु महाराज को खोकर उनके शोक मे रत राजमाता को अब यह सब कुछ रुचिकर नही लग रहा था। स्वाध्याय मे लगी हुई इन दिनो वे आत्मसात कर रही थी उस भगवत्त भक्ति और प्रेरणा को जो शेष जीवन मे उनका सबल बन सके। मौन तपस्वी सा खडा शुभ्र जयविलास प्रासाद राजमाता को अपने अक मे छिपाये हुए था और उसके बाहर उनका आना अभी

सभव न था । ग्वालियर की जनता प्रासाद के बाहर खडी अपने आग्रह, अपने अनुरोध की रक्षा की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी । वह चाहती थी उनकी मा, उनकी राजमाता केवल "हा" भर कह दे ।

देहली मे हलचल मची, भोपाल का तकाजा बढा और फिर आया नेहरू जी का, इन्दिरा जी का, शास्त्री जी का, श्री चौहान एव श्री पाटिल आदि का सदेश । फोनो का ताता सा लग गया और पूजा पाठ मे व्यति क्रम होने लगा । चारो ओर एक ही पुकार थी कि राजमाता गुना से न सही इस बार ग्वालियर से ही काँग्रेस की ओर से ससद सीट के हेतु अपना नामाकन पत्र भर दे । काग्रेस के कणधार पीछे पडे हुये थे कि राजमाता को उनका प्रस्ताव स्वीकार करना ही होगा । यह सच है कि उनके ऊपर दुख का पहाड टूट पडा है । महाराज का सदपरामश, उनका सरक्षण भी राजमाता के पास आज नही है किन्तु उनके पुत्रवत ग्वालियर के निवासी तो हैं जिनका सरक्षण अब उन्हें ही करना है । राजमाता सोच रही थी १९५६-५७ की बात जबकि वे गुना के गाव गाव मे, शिवपुरी की छोटी छोटी बस्तियो मे गई थी जनता से सम्पक साधने और इस प्रवास मे उनके सहयोगी थे श्री मुरारजी भाई, श्री लालवहादुर शास्त्री, ढेबर भाई, चौहान साहब और काग्रेस के अन्य चोटी के नेता । आज इस बदली परिस्थिति मे तो यह सब सभव नही है । लोकाचार के अनुसार महाराज की बरसी के पूव वे किसी आयोजन मे, सभा सोसाइटी मे, आम सभा मे भाग नही लेंगी तो फिर यह चुनाव काय कौन करेगा ? लोकतन्त्र मे चुनाव के समय तो प्रत्याशी को जनता के सामने खडा होना ही होगा । यह सच है कि गीता के नित्य प्रति के पाठ मे कर्म की महत्ता को वे समझ रही है और कम से भला वे सन्यास भी कैसे ले सकती है ? किन्तु राजनीति के पचडे मे पडने को अभी उनका मन तैयार नही था । वष की शोक अवधि मे तो वे केवल अपने ही मे सिमट जाने को इच्छुक थी । जन सम्पक उनके लिये सम्भव न था । दुख का घाव एक दम हरा था । शोक

के आवेग को वे लोगो से बात करते समय भी न रोक पाती थी। महाराज का प्रसग आते ही उनके नयनो से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती थी। वे तो खोई खोई सी थी बीस वष की पावन सुधियो मे जो अवशेष जीवन की निधि थी। पुत्र की शिक्षा दीक्षा, वश का कारोबार और पुत्रियो की साज सभाल मे ही वे अपने को व्यस्त रखना चाहती थी। भगवान को अपने मन का अर्ध्य और नैवेद्य चढाकर ही उन्हे अभी सन्तोष था। वे ग्वालियर के काग्रेसी नेताओ को अपने नामाकन की स्वीकृति न दे पाई किन्तु पाच वष पूर्व एक दिन भारत के प्रधान मन्त्री का जब फोन आया था तब तो महाराज ने भी उनकी बात टाली नही थी फिर क्या वे मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री डा० कैलाशनाथ काटजू स्वय ग्वालियर आये और राजमाता से मिले। इस वयोवृद्ध नेता ने कर्म का महत्व समझाया और नेहरू जी का व्यक्तिगत सदेश दिया—उन्होने कहा कि देश के निर्माण मे, इस विशाल कार्य मे तो सबको ही अपना व्रत निभाना ही होगा। नेहरूजी ने ममत्व भरे सदेश मे कहलवाया था कि विजया राजे मेरी पुत्री के समान हैं। उनसे अनुरोध कर दीजिये कि हमारी बात मानकर वे कांग्रेस की ओर से ग्वालियर की ससद की सीट का फाम भर दे। उन्हे कही भी आने जाने की जरूरत नही है। मैं स्वय उनके क्षेत्र मे आकर जनता मे प्रचार करूगा। मैं जानता हू कि वे एक साल तक महल के बाहर नही जा सकती हैं—और फिर राजमाता के लिए यह सभव न हो सका कि वे कुछ भी हीला हवाला करें। एक दिन चुपचाप उन्होने नामाकन पत्रो पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और मौन होकर बैठ रही। चुनाव सभाओ से उन्हे कोई मतलब न रहा वे राजमहल से बाहर न आई। निरासक्त भाव से एक बार फिर पूजा पाठ मे मन लगाया और उनकी अचना उनका उपमय भगवान के चरणो मे समर्पित रहा। दिवगत महाराज के निकट सम्बन्धी कर्नल सरदार चन्द्रोजीराव आँग्रे के सुयोग्य पुत्र कुमार सम्भाजीराव आग्रे एव इस परिवार के अन्य सदस्यो ने अपना

समय एव शक्ति देकर जन सम्पक का कार्य सभाला और वे दत्तचित्त होकर राजमाता के चुनाव काय मे लग गये।

६ फरवरी १९६२ को एक दिन भारत के प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री कैलाशनाथ काटजू के साथ ग्वालियर पधारे। ग्वालियर के राजप्रासाद मे जाकर उन्होने राजमाता को उनके शोक मे सात्वना देते हुये कहा "महाराज की असामयिक मृत्यु का हम सबको बहुत दुख है। भगवान उनकी महान आत्मा को चिरशान्ति प्रदान करे। आपको तो अब देश सेवा मे लगकर अपना दुख उसमे डूबा देना चाहिये। यह ठीक है कि आपने मेरी बात मान ली और दुख के इन दिनो मे भी आपने कॉंग्रेस का साथ देकर उसका नामाकन स्वीकार कर लिया। इस चुनाव के लिये अब आप बिल्कुल फिक्र न करे क्योकि मै हू, कैलाश भाई है, यशवतराव है, सादोबा पाटिल है, लाल बहादुर हैं—हम लोग आपकी जनता से कहेंगे कि वे आपके अलावा और किसी को वोट ने दे। मुझे महाराज की और आपकी लोकप्रियता का पता है। आपको महल के बाहर आने की कतई जरूरत नही है। ग्वालियर के सब लोग इस बात को समझते है।"

नेहरूजी महल से वापिस आये और फिर सध्या को ग्वालियर के कम्पू मैदान मे एकत्रित विशाल जन समूह के सामने उन्होने भाषण दिया। नेहरूजी का उस दिन का भाषण सुनकर ग्वालियरवासी एक बार पुन रो उठे जबकि उन्होने स्वर्गीय महाराज को भाव भीनी श्रद्धाजली दी और महारानी के उस त्याग के विषय मे कहा जो उन्होने सन् १९४८ मे देश के हित के लिये राजपाट छोड कर किया था। जनता के सामने उन्होने राजमाता की प्रशसा करते हुये कहा—

"मैं आज आपकी और हम सबकी तरफ से राजमाता के पास उनके महान दुख मे समवेदना प्रगट करने गया था। उनकी तकलीफ, उनका गम उनका सदमा, हम सबका गम है। इन शोक के दिनो मे भी उन्होने मेरी बात मानी और काग्रेस की सीट मजूर कर चुनाव मे खडी

हुई इसके लिये में उनका शुक्रगुजार हू—आप सबको भी उन्हे धन्यवाद देना चाहिये। अभी कुछ महीने और जब तक कि महाराज की बरसी न हो जाय वे आपके सामने नही आ सकती हैं—आने की जरूरत भी क्या है। वे अब आपकी मा है—राजमाता है। आज आप अपने मत देकर अपने वोट देकर जितायेगे तो कल वह आपके दुख दद मे हिस्सा बटायेगी। उनका दिल बहुत कमजोर है आपकी तकलीफो का, आपकी समस्याओ का उन्हे आज भी पूरा ख्याल है। मा बेटो के, माँ बेटियो के बीच मे, मैं हू ही कौन ? मैं इस बात को भी जानता हू कि आप सब उन्हे बहुत प्यार करते हैं और वे हमेशा आपकी भलाई की बात सोचती रहती हे। उनसे बढकर देश की ससद मे आपकी वकालत भला कर भी कौन सकता है"—नेहरूजी कहते ही चले जा रहे ये और सुनने वाले की आखे बरबस भीग उठी थी। और फिर चुनावो का जोर शोर बढा। नारो से सारा वायुम डल गू ज उठा। देश के कोने कोने मे एक हलचल थी, एक जोश था। हर पार्टी के लोग झण्डे ले लेकर निकल पडे थे। गली गली मे बच्चे पार्टियो के नारे लगा रहे थे। चुनाव का हर प्रत्याक्षी धुआधार भाषण देने मे लगा हुआ था। ग्वालियर मे भी हिन्दू सभा, समाजवादी तथा अन्य पार्टियो का प्रचार जोरो पर थे। किन्तु राजमाता की ओर से न चुनाव भाषण थे और न धुआधार प्रचार फिर भी गाव गाव मे लोग उनका चुनाव चिन्ह पूछ रहे थे। राजमाता प्रासाद मे ही रही और मतदान समाप्त हो गया। जनता ने इन दिनो न उनके दशन पाये और न उनकी वाणी सुनी फिर भी जब चुनाव फल घोषित हुआ तो नेहरूजी ने जाना कि राजमाता को प्रदत्त वोटा की सख्या देश मे एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कर चुकी थी। उनसे अधिक प्रतिशत मत देश के किसी भी भाग मे किसी को भी नही प्राप्त हुये थे—भारत के प्रधान मन्त्री सवमान्य नेहरू को भी नही ?

ग्वालियर की जनता का अपनी राजमाता के प्रति यह भक्ति

समर्पण यह अर्घ्य और नैवैद्य देश के लिये एक आश्चय का विषय था। यह अचना अनुपम थी अनोखी थी और सिंधिया वश की युगो की लोकप्रियता के अनुकूल थी।

सन् १९६२ मे राजमाता पुन भारत की लोकसभा की सदस्या बनी और सफल राजनीति मे जिन गुणो की, जिस त्याग की आवश्यकता है उन्हे अपना कर वे जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सकी। चुनाव का फल सुनकर उन्होने अपने अतरयामी भगवान से शायद यही प्राथना की कि जिस जनना ने उन पर अपने अडिग विश्वास की वर्षा की है उसके प्रति वे सच्ची प्रमाणित हो सकें।

—०—

सोपान १४

राजनीति

सन् १९६२ के चुनावो के पश्चात् देश की राजनीति मे एक भूकप सा आ गया। एक ओर पाकिस्तान और दूसरी ओर चीन से भारत के सम्बन्ध खराब होने लगे। नेहरूजी ने चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ एन लाई पर अगाध विश्वास रखकर तिब्बत के विषय मे उनका "हिन्दी चीनी भाई-भाई" का नारा ग्रहण कर उन्हे भाखडा नगल और देश की बहुमुखी योजनाओ के नवीन तीर्थों को भली-भाति दिखाया था। नेहरूजी के साथ सारे देश ने उनकी प्रशसा के पुल बाँध दिये थे। उस विश्वास को, उस भरोसे को अब एक जबदस्त धक्का लग रहा था। उसी चाऊ एन लाई के देश चीन ने भारत के कन्धे मे पीछे से छुरा भोक दिया।

मध्य प्रदेश की राजनीति भी इन दिनो एक नये मोड पर थी। प्रदेश के मुख्यमन्त्री डा० काटजू अपनी जावरा विधान सभा की सीट पर हार चुके थे अत उन्होने मुख्यमन्त्री के पद से इस्तीफा दे दिया था और उनके स्थान पर श्री बलतन्तराव मडलोई को काग्रेस पार्टी ने अपना नेता चुना था। मडलोई जी अब राज्य के मुख्यमन्त्री के पद पर आसीन थे। प्रदेश काग्रेस मे एक दल था जो कि पुन श्री कैलाश नाथ काटजू को मुख्य मन्त्री बनाने का इच्छुक था और दूसरा दल था श्री देशलहरा के सरक्षण मे जो कि इस समय नेता के परिवतन का इच्छुक

न था। इसी दल मे थे बाबू तख्तमल जैन, सेठ गोविन्द दास के होनहार पुत्र श्री जगमोहनदास, श्री केशवलाल गुमाश्ता आदि। महाकौशल, विन्ध्य प्रदेश और मध्य भारत क्षेत्र को लेकर भी शासन मे क्षेत्रीय भावना की खूब रस्साकशी हो रही थी। मध्य प्रदेश के अतिरिक्त अन्य राज्यो मे भी काग्रेस दलो मे फूट पड चुकी थी। सत्ता की प्राप्ति के लिए हर दल मतवाला था। किसी भी मुख्यमन्त्री को चैन से बैठकर जनता के हित के लिए शासन करने का अवसर ही नही मिल रहा था। सारा समय कुर्सी पकडकर उसकी रक्षा करने मे ही निकला जा रहा था। स्वार्थपरायणता, पद-लोलुपता और सत्ता का मद काग्रेस के हर वर्ग मे घर कर गया था। नेहरूजी दल के अन्दर के इन पारस्परिक झगडो से परेशान थे। उनके कानो मे यह बात पहुच चुकी थी कि आज के शासन मे भ्रष्टाचार का बोलबाला है और धीरे-धीरे काग्रेस से हर क्षेत्र मे पुराने ईमानदार कार्यकर्ता अब विदा ले रहे है। जन-जीवन भ्रष्टाचार और बेईमानी के जहर से विषाक्त हो उठा है। उच्च नेताओ मे परामर्श हुआ, और मद्रास के मुख्य मन्त्री ने यह प्रस्ताव रखा कि काग्रेस के कुछ नेता शासन से हटकर सस्था के सगठन मे लग जायें और उसमे घुसे हुए वैमनस्य तथा दलगत भावना के विष को दूर करने का प्रयत्न करें। नेहरूजी ने बात मान ली और फिर कामराज योजना के नाम पर काग्रेसी शासन के क्षेत्र से हटे श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री मोरारजी देसाई, श्री कामराज स्वय, श्री बीजू पटनायक, श्री गुलाम मोहम्मद बख्शी और कितने ही अन्य मन्त्री। इन्ही मे नाम आ गया मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री बलवन्तराव मडलोई का। त्याग के नाम पर नेताओ के साथ चलने मे प्रधान मन्त्री के आदेश पर मन्त्रि-पद को छोडने मे कौन ऐसा बेशरम था जो मना करता। स्वय की अथवा साथियो की इच्छा का यहा प्रश्न ही नही था। नेहरूजी चुन-चुन कर काटो को अलग कर रहे थे और मजा यह था कि इन कर्णधारो की सेवाओ का सस्था मे उपयोग करने का प्रश्न शीत पेटी मे बन्द था।

आदेश यह था कि बस तुम शासन से हट जाओ और कुछ ही समय के बाद इन्ही नेहरूजी ने पुन श्री लाल बहादुर शास्त्री को शासन मे ले लिया जबकि श्री मोरारजी भाई तथा शेष सब लोग जो उस दिन लटके तो वर्षो तक लटकते ही रहे।

मडलोई के मुख्य मन्त्री पद से हटने के समाचार ने मध्य प्रदेश की राजनीतिक दलबन्दी मे तूफान सा ला दिया। काग्रेस ने तुरन्त सामतवाद की शरण ली और नरसिहगढ के महाराज भानुप्रतापसिह जी ने स्वय इस्तीफा देकर धारा सभा की सीट पर नरसिहगढ क्षेत्र से डा० काटजू को उपचुनाव कराके विजयी बना दिया और उधर सागर के उपकुलपति श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र भी विश्वविद्यालय से पदत्याग कर देहली जा पहुचे। कालाकाँकर के राजा साहब दिनेशसिह जी से उनका अच्छा पूव परिचय था ही और उधर राजा साहब का प्रभाव नेहरूजी की लाडली बेटी श्रीमती इन्दिरा गाधी पर पूरा था। कशमकश प्रारम्भ हो गई। मध्य प्रदेश के रायपुर जिले मे धारा सभा की एक सीट कसडोल मे खाली हुई तो काग्रेस के एक प्रभावशाली वग ने देहली मे यह उत्तरदायित्व उठा लिया कि वे मिश्रजी को कसडोल सीट का काग्रेस टिकट दिलाकर ही दम लेंगे। मिश्राजी ने पल्ला पकडा था इस प्रभावशाली दल का जो इदिराजी के द्वारा उन दिनो नेहरूजी पर दबाव भी डाल सकता था। काग्रेस टिकट की प्राप्ति के लिए मिश्रजी की दौड-भाग प्रारम्भ हुई। इन्दिराजी के प्रति, उनके दल के प्रति वफादारी की कसमे खाई गई और फिर अभियान ने जोर पकडा। नेहरूजी, श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र से युगो से खूब परिचित थे वह उनके प्रखर व्यक्तित्व को और उनकी राजनीतिक सूझबूझ को खूब जानते थे। बारह वष पूव वे काग्रेस से उनका निष्कासन करा कर पूव मध्य प्रदेश के मन्त्रि पद को उनसे छीनकर उन्हे घर बिठा चुके थे। अब एक बार फिर वे काग्रेस का टिकट उन्हे देकर प्रदेश की राजनीति मे विष घोलने और उसमे दलबन्दी की और गाठें उलझाने के लिए तैयार न थे।

मार्शल टींटो के साथ



महारानी विजयाराजे सिंधीया ।

सिंधीया कन्या विद्यालय की जन्मदाता विजयाराजे सिंधीया ।

विनय, सज्जनता एव सत्यना की मूर्ति श्री लाल बहादुर शास्त्री भी मिश्रजी को कांग्रेस टिकट देने के पक्ष मे न थे पर इससे क्या ? नेहरू जी की लाडली पुत्री इंदिराजी तो अब मिश्र जी से प्रसन्न थी। वे तो अपने सुहृद मित्र राजा दिनेशसिंह को वचन दे चुकी थी कि वे मिश्र जी को चुनाव का टिकट दिलाकर ही दम लेंगी। टिकट बाटने वाली बैठक मे, न जाने कितने महारथी नेताओ ने इस टिकट के लिये विवाद किया, विरोध किया। यहाँ तक कि असहमत होकर श्री लाल बहादुर शास्त्री तो सभवतय कमेटी की इस बैठक से उठकर चले तक गये किन्तु भाग्य के धनी मिश्रजी का सितारा इन दिनो उच्च पर था। इंदिराजी की हठ पर अन्तिम निर्णय यही हुआ कि कसडोल सीट का टिकट प्रसिद्ध साहित्यकार और कृष्णायन के कीर्तिभोक्ता श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र को ही दिया जावे। अन्त मे मिश्रजी को टिकट मिल गया और १२ वष की धूल मिश्रजी के भाग्य दपण पर से झड गई। इंदिराजी स्वय चुनाव भाषण देने एक मध्य रात्रि को कसडोल पहुची और मतदाताओ से आग्रह किया कि वे प्रसिद्ध राजनैनिक साहित्यिक मिश्रजी को जिताये। बीडी के प्रमुख सौदागरो की जीपे और मोटर गाडियाँ पेट्रोल फूकने लगी। चुनाव काय के हेतु धन पानी की भाति वहाया गया। मतदाताओ मे प्रचार करने के बहाने मिश्रजी के पुराने साथियो ने थैलियो के मुह खोल दिये। कसडोल क्षेत्र मे गाँव-गाव मे जीपे लाउडस्पीकर लेकर मिश्रजी का कीर्तिघोष करने लगी और उनके मित्रगणो ने, मुख्य सम्पादको ने अपने पत्रो मे जी भरकर प्रतिपक्षियो को कोसकर मिश्रजी के गुण गाये।

अन्त मे मिश्रजी विजयी हुये और उनके प्रतिद्वन्द्वी पराजित। प्रतिद्वन्दियो ने इस चुनाव मे चीख-चीख कर पुकारा कि चुनाव मे मिश्र जी द्वारा भ्रष्टाचार अपनाया गया है। समाचार पत्रो मे प्रकाशित लेख चुनाव कानून की अवहेलना करते है और निर्धारित राशि से कही अधिक धन राशि चुनाव कार्य मे व्यय की गई। इस प्रकार का काय

अनैतिक है और कानून के विपरीत है। किन्तु जहा प्रधान मत्री की लाडली का वरद हस्त हो वहा नक्कारखाने मे तूती की इस आवाज को कौन सुनता। अन्त मे प्रतिपक्षो द्वारा मिश्रजी के विरुद्ध चुनाव याचिका दायर कर दी गई। इधर चुनाव की थकान मिटाये बिना ही मिश्रजी की भोपाल और देहली की नई दौड प्रारम्भ हो गई। कल के विरोधी डा० कैलाश नाथ काटजू अब मिश्रजी के गहन मित्र थे और मिश्रजी ने उन्हे नेता पद के चुनाव मे अपना पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। उधर उन्होने विन्ध्यक्षेत्र के ठा० गोविन्द नारायण सिंह एव श्री अर्जुनसिंह तथा मध्य भारत के श्री गौतम शर्मा एव महाकोशल के श्री वसतराव उडके और श्री कुँजीलाल दुबे को विश्वस्त भागीदार बनाया और फिर सुदृढ मोरचा बाधकर स्वय श्री देशलहरा को चुनौती दे दी। कूटनीति के सिद्ध खिलाडी मिश्रजी ने देहली दौडकर नेहरूजी से, इदिराजी से, दिनेश सिंह से कहा कि वे डा० काटजू को मुख्य मत्री बनाने के लिये खून पसीना एक कर देगे। वे उनके साथ हे। इस प्रकार मध्य प्रदेश मे अब नये मुख्य मत्री के चुनाव का अभियान प्रारम्भ हो गया।

देश की राजधानी देहली मे चीन के अक्टूबर-नवम्बर १९६२ के हमले के कारण नेहरूजी के विश्वास को, उनके नेतृत्व की गरिमा को तथा उनके स्वास्थ्य को भारी धक्का पहुँचा था। देश मे उनके सम्मान का जो ऊचा कीर्तिमान स्थापित हो चुका था वह ढ़हने सा लगा था। जनमत के सम्मुख सिर झुकाकर उन्हे अपने पुराने साथी और मित्र श्री कृष्णा मेनन को अपने मत्री मडल से अलग कर देना पडा और श्री यशवतराव चौहान महाराष्ट्र राज्य से केन्द्र मे बुलाये गये तथा वे देश के अब नये रक्षा मत्री बने। इस उथल पुथल मे जो घटनाये घटी थी उसमे श्री लाल बहादुर शास्त्री नेहरू परिवार के अत्यन्त ही निकट आ गये थे और प्रधान मत्री के वे अब घनिष्ठतम साथी थे।

राजमाता इन दिनो अपना अधिकाश समय देहली तथा बम्बई मे परिवार के कार्यो मे व्यतीत कर रही थी। महाराज के निधन और

परिवार की समम्याओ ने उनको राजनीति से उदासीन कर रखा था। इन दिनो कैलाशवासी महाराज के मौसा सरदार आँग्रे एव उनका परिवार राज परिवार की सेवा मे सलग्न था। सरदार साहब राजनीति मे कुशल थे और उनका अनुभव विशाल था। देश की समस्याओ मे रुचि लेते थे तथा अपने अनुभव का लाभ राजमाता को यदा कदा दिया करते थे। राजमाता भी इस वयोवृद्ध परिजन की बात ध्यानपूवक सुनती थी और उनके योग्य ज्येष्ठ पुत्र कुमार सभाजीराव आग्रे एव पुत्रवधू जो जोधपुर के सभ्रान्त क्षत्रिय परिवार से थी राजमाता के साथ ही रहती थी।

एक दिन देहली के विंडसर पैलेस की कोठी मे जहा राजमाता थी, सहसा सरदार चन्दोजीराव आँग्रे ने प्रवेश किया। उनके साथ थे एक विशिष्ट काग्रेसी नेता। तग चूडीदार खद्दर का पजामा, लम्बा बद गले का कोट, मुख पर सुनहली चश्मा और सिर पर सफेद खादी की टोपी। आगत व्यक्ति ने राजमाता का सादर अभिवादन किया और राजमाता ने उठकर प्रत्युत्तर मे नमस्कार किया और सरदार आग्रे की ओर देखा। सरदार साहब ने आगे बढकर कहा "महाराज आप है श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ! मेरे बहुत पुराने गहरे मित्र। आप हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार है तथा महाकाव्य कृष्णायन के कीर्ति भोक्ता हैं। बडे पुराने काग्रेसी और प्रसिद्ध शिक्षाविद हैं। महाराज आपकी जन्म भूमि सागर मे यह विश्वविद्यालय के अभी तक उपकुलपति थे हाल मे ही त्यागपत्र देकर प्रदेश की राजनीति मे आये है।" "आपसे परिचय प्राप्त कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मिश्र जी सागर तो मेरी जन्म भूमि है। वहा बिताये बचपन के दिनो को तो मै शायद ही कभी भूल सकू"— कहते-कहते राजमाता शायद वर्षो पूव की अपनी बचपन की सुधियो मे उलझ गई। मिश्रजी ने ध्यान से इस श्वेत वस्त्रा नारी के प्रभावशाली व्यक्तित्व को परखा। वह प्रखर था। आदर की भावना से वे बोले, "महाराज ! सागर मे मेरे दिन भी बहुत अच्छे रहे। ऊ ची पहाडी पर

बना हुआ विश्वविद्यालय बहुत ही रम्य हे । और अब तो देश का वह एक प्रमुख विद्या केन्द्र है । राजमाता ने चाय के लिए सकेत किया । और वे सरदार साहब से बोली, "काका साहब ! आपका और मिश्रजी का कब का परिचय है ?" उत्तर मे सरदार आग्रे ने कहा, "वह तो बहुत दिनो का है महाराज ! तब तो शायद आप ग्वालियर की महारानी भी न बनी थी। सन् १९३७ मे मिश्रजी नागपुर मे मध्य वहा पुन प्रदेश के स्थानीय स्वशासन के मन्त्री थे और फिर १९४६ मे जब मन्त्रिमण्डल बना तब आप रविशकर शुक्ल के साथ गृहमन्त्री के रूप मे उनके मन्त्रिमण्डल मे आये । फिर श्री पट्टाभीरमैया नागपुर के जब राज्यपाल बने और मेरा उनके पास काफी आना जाना रहा तब मिश्रजी से उन्ही के यहा मेरा प्रथम परिचय हुआ था । सन् १९५० मे काग्रेस कायकारिणी समिति तथा अखिल भारतीय ससदीय बोड के भी मिश्रजी सदस्य रहे और मेरी इनसे यदा-कदा भेंट होती रही ।" कुछ क्षण सोचकर वे पुन कहने लगे "पिछले दिनो ललितपुर और वीना स्टेशनो पर ट्रेन मे बैठते समय मेरा तथा मिश्रजी का काफी साथ होता रहा । अब तो महाराज मिश्र जी कसडोल सीट से काग्रेस टिकट पर चुनाव जीतकर मध्य प्रदेश की विधान सभा के सदस्य हो गये हे और आजकल अपने प्रदेश को राजनीति मे सक्रिय है । फिर बहुत सी अन्य बाते भी होती रही । मध्य प्रदेश की राजनीति को लेकर भी कुछ चर्चा हुई किन्तु राजमाता का तटस्थ रुख देखकर मिश्रजी ने कुछ न कहा ।

कुछ समय बीता और फिर सहसा एक दिन ग्वालियर राज प्रासाद मे फोन द्वारा यह सूचना आई कि श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र राजमाता से मिलने के लिये आना चाहते हे । एक सप्ताह पश्चात वे आये और राजमाता से मिले । शोकमग्ना राजमाता प्रदेश की राजनीति से अब भी उदास थी । वे स्वय सक्रिय कोई भाग लेने को इच्छुक न थी । कौन मुख्य मन्त्री हो इस प्रश्न मे उन्हे विशेष रुचि न थी । उनके सम्बन्ध

मडलाईजी से भी अच्छे थे और डा० कैलाश नाथ काटजू से भी तथा बाबू तख्तमल से भी उनका अच्छा सम्पक था। मिश्रजी ने इस वार उन्हे प्रदेश की विशेष स्थिति समझाई और कहा कि काग्रेस हाई कमाण्ड ने देहली से यह कहला भेजा है कि वह किसी को भी प्रदेश काग्रेस के ऊपर थोपना नही चाहता। विधान सभा की काग्रेस पार्टी स्वय अपना नेता चुनने के लिये स्वतन्त्र है। डा० कैलाश नाथ काटजू नेता पद स्वीकार करने के लिये तैयार है किन्तु उनकी शर्त है कि उनका चुनाव सर्व सम्मत हो। यदि उनके विरोध मे कोई व्यक्ति चुनाव लडेगा तो वे चुनाव से अपना नाम वापिस ले लेगे। उनकी यह बात श्री मूलचन्द देशलहरा, श्री केशवलाल गुमाश्ता तथा उनके दल के अन्य साथियो को मान्य नही है। वे तो काटजू साहब के मुकाबले मे चुनाव लडने को कटिबद्ध है और उनके इस बार प्रत्याशी है बाबू तख्तमल। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि डा० काटजू चुनाव लडेंगे नही और इस स्थिति मे डाक्टर साहब के अनुयायी यह चाहते है कि मिश्रजी उनके स्थान पर चुनाव लडने के लिये तैयार हो जावे। यदि डाक्टर काटजू तैयार नही हुये तो विवश होकर मिश्रजी को स्वय लडना पडेगा और इस स्थिति मे वे यह चाहेगे कि राजमाता अपना सहयोग मिश्रजी को दे।

राजमाता ने मिश्रजी की बात को समझा और स्थिति देखते हुये कहा कि यदि डाक्टर साहब खडे हुये तो राजमाता का सहयोग उन्हे प्राप्त होगा अन्यथा वह मिश्रजी को मिल जायेगा। सब प्रकार से सन्तुष्ट मिश्रजी अखाडे मे कूदने के लिये अब राजमाता का पूर्ण आश्वासन प्राप्न कर भोपाल आगये। वे देहली भी गये और नेहरूजी के कहने पर भी जब डा० कैलाश नाथ काटजू चुनाव लडने के लिये तैयार न हुये तो मिश्रजी ने घोषणा कर दी कि अब बाबू तख्तमल के मुकाबले मे वे स्वय चुनाव लडेंगे। मिश्रजी की इस घोषणा ने चुनाव मे पूरी गरमी भर दी। अब भोपाल मे दो कैम्प स्पष्ट थे। एक मिश्रजी का जिसका सचालन कर रहे थे विन्ध्य क्षेत्र के युवक कमठ नेता

ठा० गोविन्दनारायण सिह और दूसरा कैम्प था बाबू तख्तमल का जिसका सचालन कर रहे थे काग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष श्री मूलचन्द देशलहरा। विन्ध्य क्षेत्र के नेता थे अर्जुनसिहजी, श्री शम्भूनाथ शुक्ल और भोपाल के डा० शकरदयाल शर्मा व महाकौशल के श्री उडके, डा० रामाचरण राय एव श्री मथुरा प्रसाद दुबे आदि। यह सब मिश्रजी के साथ थे और तख्तमल के साथी थे विन्ध्य के श्री शत्रुघ्नसिह तिवारी, महाकौशल के श्री केशवलाल गुमाश्ता और श्री जगमोहनदास आदि। मध्य भारत क्षेत्र के नेताओ की वास्तविकता का अभी निश्चित रूप से कुछ न पता था। ग्वालियर राजपरिवार से सम्बन्धित कतिपय व्यक्ति भोपाल मे दौड भाग कर रहे थे या तख्तमल के लिये जिससे मध्य भारत क्षेत्र के विधायको मे यह धारणा घर कर गई थी कि राजमाता का सहयोग उनके साथ है। वास्तविकता यह थी कि राजमाता अपने सहयोग का वचन मिश्रजी को दे चुकी थी और उनकी ही प्रेरणा पाकर वे नेता पद का चुनाव लड रहे थे। मिश्रजी के कैम्प के सचालक श्री गोविन्दनारायण सिह ने जिन्होने अपने निवासी की पूरी कोठी चुनाव कार्यालय आदि के लिये मिश्रजी को सौप दी थी और जो दिन-रात उनके चुनाव अभियान मे लीन थे यह कमजोरी मिश्रजी को बताई और उनसे कहा कि जब तक मध्य भारत क्षेत्र के विधानसभा सदस्यो को इसका विश्वास न दिलाया जावेगा कि राजमाता का पूर्ण सहयोग मिश्रजी को ही प्राप्त है तबतक बाबू तख्तमल की विजय निश्चित सी दीखती है। तुरन्त ही मिश्रजी ने ग्वालियर राजप्रासाद से टेलीफोन द्वारा सम्पर्क साधा और राजमाता से आग्रह किया कि यदि वे स्वय भोपाल आकर स्थिति सभालने मे असमर्थ है तो कम से कम वे यह तो घोषणा कर दें कि उनका सहयोग मिश्रजी के साथ है जिससे कि मध्य भारत के विधान सभा सदस्यो मे प्रचारित धारणा का खडन हो सके। राजमाता ने अपना वचन निबाहा और तार द्वारा यह घोषित कर दिया कि जीवाजी विश्वविद्यालय की समिति मे उन्होने अपना

निजी प्रतिनिधि मिश्रजी को नामांकित किया है। मध्य प्रदेश के प्राय समस्त प्रमुख पत्रो मे मिश्रजी के इशारे पर इस घोषणा को मोटे-मोटे अक्षरो मे प्रकाशित किया गया और मध्य भारत के काग्रेसी सदस्यो मे अब यह तथ्य अच्छी तरह प्रचारित हो गया कि बाबू तख्तमल के बजाय राजमाता का सहयोग मिश्रजी को ही प्राप्त है। प्रदेश के कोने-कोने से काग्रेसी विधान सभा के सदस्यो का भोपाल आगमन हो चुका था। भोले-भाले हरिजन और आदिवासी सदस्यो की शानदार खातिर एक प्रदेश मत्राणी तथा ठा० गोविन्द नारायण सिंह के निवास स्थान पर की जा रही थी। राजनीति का हर दाव-पेच लोकतत्र के नाम पर खेला जा रहा था। सदस्यो की आवभगत मे दोनो कैम्प जी-जान से सलग्न थे। आखिर मतदान का दिन भी आ गया और राजमाता के सकेत पर मध्य भारत के सदस्यो ने मिश्रजी को ही सहयोग देकर पासा पलट दिया। मिश्रजी विजयी हुये और बाबू तख्तमल तथा देशलहराजी को यह हार बहुत करारी प्रमाणित हुई। प्रदेश के कमठ और उदीयमान नेता बा० जगमोहनदास तो लोकतत्र के इस खेल मे खेलते ही रहे। कुछ समय पश्चात इस मेधावी युवक का हृदय गति रुक जाने के कारण स्वर्गवास हो गया। मिश्रजी के इस अभियान की विजय का मुख्य उत्तरदायित्व था दो व्यक्तियो पर। एक थे साहस और कर्मयता की सजीव मूर्ति ठा० गोविन्द नारायण सिंह जिनके अथक परिश्रम ने मिश्रजी को विजय दिलाई थी और दूसरा था सकट के क्षणो मे राज-माता का प्रबल समर्थन जिसने मध्य भारत क्षेत्र के मत मिश्रजी को दिलाकर उनकी विजय निश्चित कर दी थी। सहयोगियो के हर्ष का अब अन्त न था। विजयश्री का वरण उनके प्रत्याशी श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने किया था। भोपाल मे कई शानदार जुलूस निकले, स्थान-स्थान पर नवीन मुख्यमन्त्री की अभिनन्दन सभाये हुई और देहली मे एक अनुभवी पिता ने मुस्कराकर अपनी हठीली बेटी से शायद कहा "क्यो दो दिनो मे ही खेल देख लिया ना। प्रादेशिक विधान सभा मे सदस्यता

की शपथ लेने के बजाय मिश्रजी ने तो अब मुख्य मत्री पद की ही शपथ ली। सच है कहा मिश्रजी और कहा बेचारे सीधे-सीधे कैलाश भाई।"

किन्तु बेटी शायद अकचका कर वयोवृद्ध पिता की ओर केवल देख भर सकी। सभवतया वह कहना चाह रही थी।

"यह तो मै भी जानती थी पर मिश्रजी है तो मेरे सहयोगी। मैने ही तो उन्हे कसडौल का टिकट दिलाया था। यह विजय तो मेरी है।" मन ही मन मुस्करा कर शायद फिर वह पिता के सामने से हट गई। लोगो ने सुना कोई हस हस कर कह रहा था।

"बारह वष बाद तो घूरे के भाग्य भी जागते है।"

भोपाल मे मिश्रजी के चुनाव अभियान के चालक और सहयोगी-गण प्रतीक्षा कर रहे थे कि अब उन पर धन्यवाद की वर्षा होगी अब कृतज्ञता यापन होगा, अब अकथ परिश्रम के पुरस्कार मिलेंगे किन्तु—। वे शायद अपने नेता के वर्षो पुराने स्वभाव से परिचित न थे। कृतज्ञता के मनोदगारो को किसी ने न जाना और न सुना। उनके चुनाव अभियान के कप्तान ठा० गोविन्द नारायण सिह की भी यह आशा निराशा मे ही परिणित हो गई। उनका नेता जिसके लिये उन्होने खून पसीना एक किया था अब उत्कप की सीढी पर चढ चुका था। अब उसे नसैनी के बास पहिचानने और उनके गुण गाने की कहा फुरसत थी, उस नसैनी को पहचानना भी शायद अब सम्भव न हो जिसका सहारा पाकर ऊपर की यह कठिन चढाई सम्भव हो सकी थी। महाकवि तुलसीदासजी ने ठीक ही तो कहा है —

"धूम, अनल, सभव सुन भाई।
तेहि बुझाई, घन पदवी पाई॥
रज मग परी निरादर रहई।
सब कर पग प्रहार नित सहई॥
मरुत उडाव प्रथम तहि भरई।
नप किरीट प्रति नयनन्हि परई॥ "तुलसीदास"

सोपान १५

बदलता समय

नवीन मुख्यमन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र के कायभार सभालने ही मध्य प्रदेश के काग्रेस की गतिविधियो मे एक नई लहर आ गई। जनता को आशा हुई कि वर्षो की शासकीय शिथिलता अब दूर होगी और काग्रेसी शासन लोकहित, समाजवादी कायक्रम को जोर शोर से आगे बढायेगा। १२-१५ वष के उलझते मामले सुलझेंगे तथा प्रदेश के निर्माण और विकास के अधूरे काम पूरे होगे। एक उल्लास-भरी उत्सुकता से जनता ने नवीन मुख्य मन्त्री का अभिनदन किया। ग्वालियर अचल के निवासियो ने शासन से आकाक्षा की डाकू समस्या सुलझाने की, पुलिस की ज्यादतियो से उसकी रक्षा करने की, विध्य क्षत्र की जनता ने चाहा सिंचाई और कृषि विकास की सुविधाये और महा कौशल क्षेत्र ने चाहा न्याय और प्रबन्ध अधिकारियो का अलगाव जो पूव ग्वालिवर राज्य मे सन् १६०६ मे हो चुका था। और ब्रिटिश शासन ने जिस सुधार को अमान्य किया था तथा लोकतन्त्र के पोषक काग्रेसी शासन ने जिस सुधार को आजाद भारत मे १५-१६ वष तक जानबूझ कर टाला था।

मुख्य मन्त्री के अभिनन्दन समारोह मे इस प्रकार की कितनी ही मागें स्थान स्थान पर नवीन मुख्य मन्त्री के सम्मुख उपस्थित की गइ और यह आशा की गई कि चूकि केन्द्रीय शासन के प्रधान मन्त्री का

उन्हे बल एव विश्वास प्राप्त है वे इस निर्धन अविकसित क्षेत्र को केन्द्रिय शासन से विकास कार्यो के लिये धन और साधन दिलायेगे और यहा के आदिवासियो का जीवन स्तर सुधारने के लिये नवीन योजनाये कार्यान्वित करायेगे। बस्तर के महाराज प्रवीणचन्द भजदेव ने नये शासन से माग की कि आदिवासियो के क्षेत्र मे विकास की नवीन योजनाये कार्यान्वित कराई जावें और शासन मे उनके उचित प्रतिनिधित्व का प्रबन्ध किया जावे।

इधर जबकि प्रदेश के विभिन्न अचल अपने अपने अभाव की सूचिया मुख्य मन्त्री के सन्मुख प्रस्तुत करने के हेतु तैयार कर रहे थे जनता ने हृष के साथ उनकी नवीन घोषणा सुनी जिसमे उन्होने कहा था कि मध्य प्रदेश काग्रेस सस्था के अन्दर अब विरोधी दल नाम की कोई भी पार्टी न होगी। अर्थात् "डिसिडेन्ट दल" का वे सफाया कर देगे। अब उसमे केवल एक दल होगा जो कि मन्त्रिमण्डल का सहयागी होगा। वे अपनी कुशल राजनीति से विरोवी नेताओ का तथा उनके सहयोगियो जो प्रदेश काग्रेस मे वर्षो से विघटन की ओर प्रवृत है सवथा उन्मूलन कर देगे। मुख्य मन्त्री शीघ्र ही विधान सभा के काग्रेस के नाम मात्र के बहुमत को दल-बदलुओ के द्वारा एक स्थाई बहुमत मे परिर्वतित कर देंगे। क्याकि उन्हे विश्वास है कि वे अपने प्रभाव से विरोवी दलो के कितने ही सदस्यो को काग्रेस मे दल-बदल करा के लाने मे शीघ्र ही समथ हो जावेंगे।

जैसा दल-बदल १९५३ मे काग्रेसी सत्ता की स्थापना के हेतु श्री थानु पिल्ले ने काग्रेस हाई कमान के आदेश से केरल मे करके भविष्य के लिये दल-बदल की एक नवीन परिपाटी स्थापित की थी वही प्रणाली अब प्रधान-मन्त्री के मित्र श्री मिश्र भी मध्य प्रदेश मे अपनायेगे। जैसे जैसे समय की गति बढती गई लोग आश्चय के साथ देखते रहे कि मध्य प्रदेश मे मुख्य मन्त्री की उक्त घोषणा सही प्रमाणित होती जा रही है। श्री मूलचन्द देशलहरा, बाबू तख्तमल, श्री गुमाश्ता आदि विरोधी

नेताओ ने मुख्य मन्त्री की तानाशाही के विरुद्ध चारा ओर चीख पुकार की। देहली मे हाई कमाण्ड के पास कितने ही चक्कर काटे किन्तु उनकी कुछ न चली। उनकी यह माग कि प्रदेश के काग्रेसी मन्त्रिमण्डल मे मुरय मन्त्री के दल के विरोधी काग्रेसी विधान सभाईयो को भी स्थान मिले और मन्त्रिमण्डल मे उनकी सरया उनके दल के अनुपात के आधार पर हो देहली हाई कमाड द्वारा अस्वीकार कर दी गई। काग्रेस अध्यक्ष ने भी इस मामले मे इस बार हस्तक्षेप करने से मना कर दिया। उधर सोशलिस्ट, प्रजा समाजवादी एव निर्दली विधान मभाइयो के कुछ सदस्य मुरय मन्त्री के आश्वासन और प्रलोभन पर विश्वास करके अपने उस दल को जिसके टिकट पर वे चुनाव लड कर विजयी हुये थे त्यागकर काग्रेस दल मे आ मिले। प्रदेश के काग्रेसियो की बात तो दूर रही देहली की हाई कमाड ने भी मुरय मन्त्री की इस दल बदल की उपलब्धि को सराहा, मदस्यो को प्रोत्साहित किया और प्रदेश के विधान सभा के काग्रेसी नेताओ को एव मुख्य मन्त्री मिश्रजी की उनकी कुल राजनीति के लिये सराहना की। जनता ने नवीन नेता की चतुरता का प्रत्यक्ष प्रमाए विधान सभा के अतिरिक्त काग्रेस समिति मे भी देखा जबकि उसके चुनाव मे नरसिहपुर के पुराने काँग्रेसी एव मिश्रजी के प्रबल समथक श्री श्यामसुन्दर मुश्रान प्रदेश के अध्यक्ष चुने गये और कायसमिति के नवीन सदस्यो मे भारी बहुमत मिश्रजी के सहयोगियो का ही रहा। कई वर्षों के उपरान्त मध्य प्रदेश काग्रेसी शासन और प्रदेश समिति के अध्यक्ष मे एकमत हुआ था। यह उपलब्धि मिश्रजी की कुशल कूटनीति का जयघोष था जिसके द्वारा उन्होने विरोधियो को कुचल दिया था और केन्द्रीय नेताओ का समर्थन पाकर उनमे से एक एक का राजनैतिक अस्तित्व मिटाने पर वे तुले हुये थे। इस प्रकार सस्था और विधान सभा मे अपनी पूरी धाक जमा कर नवीन मुख्य मन्त्री ने अब अपना ध्यान शासन सुधार की ओर लगाया। उन्होने पाया कि मन्त्रीगए महत्वपूए मामलो का निएय करते है किन्तु मुख्य-

मन्त्री को उनके निर्णयो का पता भी नही चलता। वे स्वेच्छानुसार जन सम्पक करने प्रवास पर जाते है—बस आदेश हो गये कि मन्त्रीगण अपना अपना दौरा कायक्रम मुख्य मन्त्री से स्वीकृति कराये बिना कार्यान्वित न करे। मत्रियो के आवागमन पर, उनके जन सम्पक दौरे पर पूरा प्रतिबन्ध लगा दिया गया। गृह विभाग, पुलिस प्रशासन आदि विभागो पर तो मुख्य मन्त्री का नियन्त्रण रहता ही था अब प्राय समस्त महत्वपूर्ण विभाग सोपे गये राज्य मन्त्रियो को और साधारण विभाग केबिनेट स्तर के मन्त्रियो को। कृषि, निर्माण, सिचाई, वन विभाग आदि राज्य मन्त्रियो ने सभाल लिए और समाज कल्याण स्वायत्त शासन आदि केबिनेट मत्रियो ने। वे मत्रीगण जो अपने लम्बे अनुभव के कारण शासन का काय, स्वय निर्णय लेकर करते थे अब स्वतन्त्र न रहे क्योकि उनके साथ लगा दिये गये थे उपराज्य मन्त्री जो कि उनकी गतिविधि का पूर्ण समाचार मुख्य मन्त्री को देते रहते थे। इस प्रकार शासन का समस्त महत्वपूर्ण काय मन्त्रियो के हाथो से शनै शनै खिसक कर आ गया मुख्य मन्त्री के हाथो मे और वे ही एकाधिकारी शासन के सर्वेसर्वा हो गये। पुलिस विभाग को सबसे अधिक महत्व मिला और राजनैतिक गुप्तचर शाखा भी पूर्ण सक्रिय हो गई।

मिश्रजी के चुनाव अभियान के नेता एव सफलता के प्रणेता डा० गोविन्दनारायण सिंह को उनकी आशा के विपरीत समाज कल्याण विभाग मिला और वे निरकुशता के इन बढते चरणो को देखकर मन मे व्यथित हो उठे। डा० कैलाश नाथ काटजू और श्री मडलोई के पश्चात् जनतन्त्र शासन का यह एकाधिकारी रूप उनके लिए कुछ कुछ नवीन था। मन्त्रियो का हर मामले मे मुख्यमन्त्री पर अवलम्बन उन्हे कुछ विचित्र सा लगा। जनतन्त्र के प्रतिष्ठित एव उत्तरदायी स्तम्भो का यह उपहास उन्हे किंचित भी न भाया और इस बिगडती निरकुशता के प्रति उनका मन विद्रोह कर उठा तथा इस भावना को वे अपने दल के साथियो से छिपा न पाये। छोटी-मोटी बातो को लेकर उन्हे मुख्यमन्त्री

की ताडना और अप्रसन्नता का शिकार होना पडा और फिर दल के नेता के मन मे भी घर कर गई उनके प्रति क्षोभ और क्रोध की भावना। पुलिस को अब गुप्त आदेश हुए कि श्री सिंह के विरुद्ध मसाला एकत्रित करे। समय साधक, चापलूसी, पुलिस-अधिकारी मुख्यमन्त्री की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अब होड लगाकर अपना स्वभावगत काय करने लगे। ठाकुर गोविन्दनारायण सिंह यह सब देकर परेशान थे। वे अचम्भे मे भरकर देखने लगे इस नवीन लोकतन्त्र के जामे मे चमकती निरकुशता को।

राजमाता के कानो मे भी कतिपय घटनाओ की उडती खबर पहुँची। मन्त्रियो की विवशता का उन्हे भी कुछ-कुछ आभास हुआ। शासन की सारी सत्ता खिसककर इस प्रकार एक ही हाथो मे पहुच जायेगी तथा उसका दुरुपयोग भी होगा इसका उन्हे अनुमान भी न था। इन दिनो ससद ही उनका मुख्यत कायक्षेत्र था अत प्रदेश की राजनीति से वे तटस्थ थी।

सहसा आई १९६४ की वह २७ मई जब कि देश का जवाहर उसका लाल उससे छिन गया। दोपहर को सहसा रेडियो पर नेहरूजी के देहावसान का समाचार सुनकर सारा देश शोक मे डूब गया। राजमाता के मन को एक धक्का सा लगा। उन्होने अनुभव किया कि उनका अपना निजी परिजन उनसे बिछुड गया है। वर्षो की पावन सुधियाँ उनकी कल्पना मे जाग्रत हो आई। नेहरूजी का ग्वालियर आगमन, उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार, पतिविछोह के क्षणो मे उनकी शान्तिदायनी सान्त्वना के दृश्य राजमाता के नयनो मे झूमने लगे जैसे वह सब कल की ही बात हो।

राष्ट्र अपने अमूल्य जवाहर को खोकर सिर धुनने लगा। नेहरूजी के निधन के समाचार ने देश को शोकातुर कर दिया। राजमाता ने अपनी सवेदनाये, ग्वालियरवासियो की सवेदनाये इन्दिराजी के पास भेजी और फिर एक दिन पत्रो मे नेहरूजी की वसीयत पढकर तो वे

द्रवित हो उठी । कितना महान था इस त्यागी तपस्वी का व्यक्तित्व । देश के कोने-कोने मे उसके इस लाडले पुत्र की अगाध प्रेममयी भावनाये गू ज उठी । भावी सन्तति को कितना बल मिलेगा इस अनुपम 'वसीयत' से । मातृभूमि के पावन चरणो पर चढा यह अर्घ्य कितना पावन था । देश की भूमि के कण-कण मे मिलकर नेहरू की महानता और विशालता की गाथा लाखो कण्ठो के द्वारा प्रसारित होने लगी । इन्दिराजी के शोक को बटाने के लिए देश का बच्चा-बच्चा तैयार था क्योकि "नेहरू चाचा" तो उनके अपने थे ।

देश के सामने अब गम्भीर प्रश्न था—"नेहरू के बाद कौन ?" अस्थायी रूप से श्री गुलजारीलाल नन्दा ने प्रधान मन्त्री का कायभार सभाल लिया । काग्रेस कैम्प मे पडी दरार फिर उभर पडी और श्री लालबहादुर शास्त्री और श्री मोरारजी देसाई मे नेता पद के लिए होड प्रारम्भ हुई । इन्दिराजी के इशारे पर श्री कामराज ने शास्त्रीजी के लिए माग साफ किया और भारत के नवीन प्रधान मन्त्री बने श्री लालबहादुर शास्त्री । लोकतन्त्र परम्परा की इस देश मे यह अनुपम विजय थी जबकि बिना किसी बाधा, व्याघात और हिंसा के देश मे नवीन प्रधान मन्त्री ने अपना पद भार सभाल लिया ।

शास्त्रीजी अभी नवीन पद के उत्तरदायित्व से अधिक परिचित भी न हो पाये थे कि पाकिस्तान ने अपनी बन्दूको और तोपो की गडगडाहट से भारत की सीमा को कपा दिया । चीन तो उत्तरी सीमा पर भारत की सेना को उलझाये हुए था ही इधर पाकिस्तान ने भी दूसरा मोर्चा खोल दिया । राजस्थान, अमृतसर के समीप की सीमाओ पर आग बरसने लगी और उधर काश्मीर पर आक्रमण हो गया । इन सकट की घडियो मे देश ने पाया कि उसके छोटे नाटे कद का अनतिकाय प्रधान मन्त्री कितना विशाल, कितना मजबूत और कितना महान है । उसकी दृढता, उसका आत्मबल देश की ढाल थी । समस्त भारत अपनी विभिन्नताओ को भुलाकर एक दृढ सकल्प व्यक्ति की भाति एकता के सूत्र मे बधकर

खडा हो गया। मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा के लिये। भारत की वायुसेना का भार पाकिस्तान को बडा महगा पडा। उसके अमेरिकन पैंटन टेको के शव युद्ध भूमि मे चित गिर पडे तथा चीन और पाकिस्तान की सम्मिलित शक्ति भी भारत की सेनाओ के हौसले को कम न कर सकी। शास्त्री जी को देश का नेतृत्व करते, प्रधान मन्त्री के पद पर आसीन हो कर उसकी सीमाओ की रक्षा करते, अभी ६-७ मास ही बीते थे कि पाकिस्तान के भारत को जीतने के सारे सपने धराशायी हो गये और भारत की सेनाओ ने लाहौर के समीप ही इच्छागिल नहर पर मोरचा डाल दिया। विश्व के राजनैतिक अब इस युद्ध की शाति के लिये प्रयत्नशील हो उठे और सोवियत रूस के निमत्रण पर शास्त्रीजी को ताशकन्द जाना पडा। अचानक आगई वह कालिमामयी निविड अधकार पूर्ण रात्रि—११ जनवरी सन् १९६६ की वह विषादमयी घडी जब देश ने सुना कि ताशकन्द मे उसके प्रिय नेता का निधन हृदय गति रुक जाने के कारण हो गया है। श्रीमती ललिता शास्त्री के क्रन्दनो से उनकी चीख भरी पुकार से देश का कोना कोना दुख के महान सागर मे डूब गया।

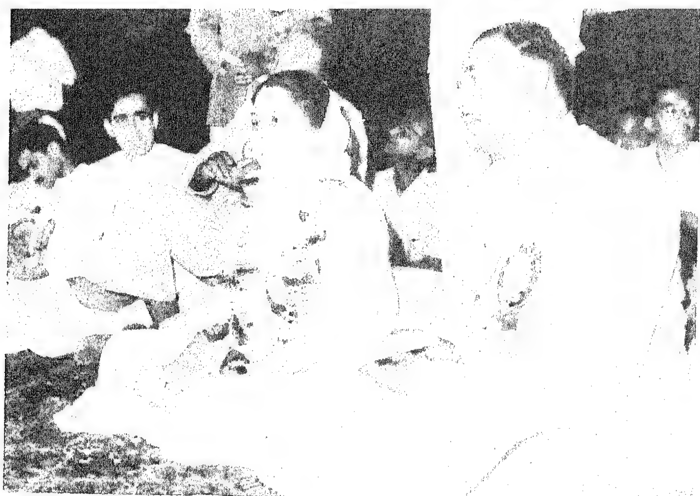
अपने विजयी, विनयी, तप पूत नेता के लिये इस बार देश जी भर कर रोया, और श्रीमती ललिता शास्त्री के अश्रुओ के साथ लाखो भारतवासियो ने अपने आसू मिलाकर उन्हे हृदय से सात्वना दी। उनकी क्षति सारे देश की क्षति थी और उनका शोक सारे देशवासियो का शोक था।

शास्त्रीजी के निधन का समाचार पाकर प्राय सभी प्रदेशो के मुख्य मत्री उनकी शव यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए देहली पहुँचे और दाह सस्कार समाप्त होते ही मुख्यमत्री गण काग्रेस अध्यक्ष कामराज से नवीन नेता के चुनाव के प्रश्न को लेकर मिले और फिर प्रधान मत्रीपद के लिये इस बार जोरदार होड प्रारम्भ हो गई। नेहरु की चन्दवदनी पुत्री श्रीमती इदिरा गाधी अब स्वय पिता के सिंहासन को प्राप्त करने

के लिये सक्रिय थी। उधर मुरारजी देसाई पुन अपनी कमर कस अखाडे मे उतर आये थे। ताकत आजमाने के लिये दोनो दल आतुर प्रतीत होते थे। मध्य प्रदेश के मुख्यमत्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र इन दिनो आ डटे देहली मे और इन्दिरा जी के पक्ष मे दौड धूप प्रारम्भ कर दी। मोरारजी भाई के एक समय के घनिष्ठ मित्र और साथी और गत चुनाव के प्रबल समथक मिश्रजी अब श्रीमती इदिरा गाँधी के समथक थे। उन्होने पता लगा लिया था कि सभवतया श्री कामराज एव श्री दिनेश सिंह जी आदि द्वारा सुखाडिया जी पर दबाव डाला जा रहा है कि वे मुख्य मत्रियो को एकत्रित कर इदिरा जी के प्रधान मत्री पद पर आसीन होने के हेतु प्रयत्न करें किंतु सभवतया सुखाडिया जी इस अगुवाई के लिए हिचक रहे थे क्यो कि सुखाडियाजी को पता चल चुका था कि राजस्थान के ससद सदस्य भी अब दो कैम्पो मे विभाजित है तथा वे एकमत होकर इदिरा जी का शायद ही समथन करे। उधर मुरारजी भाई का वे खुले दगल मे विरोध करने से भी हिचक रहे थे। मिश्र जी ने स्थिति को समझा और राज नीति के इस दाव पर स्वय को रख दिया। बस कूद पडे अखाड म और इसके पूव कि इदिरा जी, दिनेश सिंह जी, श्री कामराज कुछ शतरज की चाल सोचें मिश्र जी ने तुरन्त ८ १० मुख्य मन्त्रियो को समेट कर उनका समर्थन प्राप्त कर पत्रो मे घोषणा कर दी कि भारत के प्रधान मन्त्री पद के लिये उचित अधिकारिणी है श्रीमती इन्दिरा गाधी और उन्हे समथन प्राप्त है देश के विभिन्न राज्यो के मुख्य मन्त्रियो का। इन्दिराजी को प्रधान मन्त्री बनाने का ये मन्त्रीगण बीडा उठा चुके है और बनाकर ही दम लेंगे। इस घोषणा के औचित्य को लेकर विभिन्न राजनैतिको ने, काग्रेस हाई कमाड ने, ससद सदस्यो की कायकारिणी ने, काग्रेस महा समिति ने भाति भाति की आपत्तिया उठाई, भत्सर्ना की, आलोचना की पर इससे क्या होता है ? उन्होने पूछा कि मुख्य मन्त्रियो को तथा मिश्राजी को इस प्रकार



भारत के शासन के शिक्षा मंत्री श्री. त्रिगुण सेन का
स्वागत करते हुये राजमाता ।



मध्यप्रदेश के उद्योगपतियो की सभा में संविद नेत्री राजमाता उद्योगमंत्री के साथ ।



इन्दौर मे मुख्यमंत्री श्री. गोविंद नारायणसिंह को प्रदेश की समस्या को कुछ तथ्यों को सुलझाते हुये संविद शासन नेत्री राजमाता ।

की घोषणा करने का क्या अधिकार था ? ससदीय दल के नेता का चुनाव ससद सदस्यो द्वारा किया जाना है न कि मुख्य मन्त्रियो द्वारा। स्वय श्री मुरारजी भाई इस प्रकार के आचरण से त्रस्त हो उठे पर इससे क्या ? "जो मारे सो मीर" वाली कहावत मिश्रजी को चरितार्थ करनी थी। घोषणा करनी थी सो कर दी। तन मन धन से अब मिश्रजी जुट गये इस चुनाव अभियान मे। साम, दाम, दड, भेद सबका ही प्रयोग किया और अन्त मे मध्य प्रदेश के इन मुख्य मन्त्री से श्री मुरारजी भाई भी हार मान गये। जहा वे फोन करते और पूछते कि आपका मत किधर जायगा तो उत्तर मिलता कि मिश्रजी अभी उनसे वायदा कराकर गये है। राजनीति के इस पुराने खिलाडी के दावा से, वे भी तोबा कर गये। अन्त मे यह जानकर कि बहुमत इन्दिराजी के पीछे चला गया है उन्होने पीछे हटना स्वीकार कर लिया और उन्हे उपप्रधान मत्री पद के लिये समझौता करना पडा। मुरारजी भाई ने युगो के मित्र एव आश्रित मिश्रजी का लोहा आखिर माना पर उनके इन कृत्यो के लिये, सभवतया वे पूर्णतया उदारचित न हो पाये और शायद भविष्य की घटनाये इस बात की साक्षी बने। इस चुनाव अभियान मे, प्रधान मन्त्री पद की इस दौड मे अपने अतरग मित्र मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री का सहयोग पाकर राजा दिनेशसिह द्वारा समर्थित होकर श्रीमती इन्दिरा गाधी विजयी हुई और वे प्रधान मन्त्री के पद पर आसीन हुई। श्री मुरारजी भाई उप प्रधान मन्त्री और राजा दिनेशसिंह केबिनेट स्तर के उद्योग वाणिज्य मन्त्री बने। देश के वरिष्ठ नेताओ ने इन्दिरा जी को बधाई दी, मिश्रजी को बधाई दी और बधाई दी राजा दिनेशसिंह तथा उसके सहयोगियो को जिनके अनवरत परिश्रम से यह विजय सम्भव हो सकी थी।

कसडोल के टिकट की उपलब्धि और चुनाव से लेकर मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्रित्व के चुनाव तक मिश्रजी की कुशल राजनीति से प्रदेश भली भाति परिचित हो गया था और इस बार तो उनकी कूटनीतिज्ञता

एव चतुराई से समस्त देश प्रभावित था जबकि उनके प्रत्याशी ने देश के प्रधान मत्रित्व पद को सभाला था। इन दिनो मिश्रजी के भाग्य का सितारा बुलन्द था। उनकी सफलता की ख्याति अपनी चरम सीमा पर थी और राज्य मे ही क्यो वे सारे भारत मे सवमान्य काग्रेसी नेता प्रमाणित हो चुके थे। देश की राजनीति मे उनका अब बडा हाथ था। लोगो का अनुमान होने लगा कि वे निकट भविष्य मे ही प्रदेश का मुख्य मत्रित्व अपने अनुयायियो के हाथो मे सौपकर देश के गृहमत्री पद को सभालेगे और इदिराजी की कृपा का पूरा पूरा लाभ उठायेंगे। ऐसे चोटी के नेता से भला किसकी हिम्मत थी जो उलझता, किसमे वह साहस था जो कि उनकी निरकुशता को चुनौती देता। ठीक भी है भारत के सविधान द्वारा प्रतिष्ठित लोकतन्त्र परम्परा का सजग प्रहरी, काग्रेस का निष्ठावान सिपाही, देश की दो प्रमुख चन्द्रबदनियो द्वारा समर्थित, भारत के सबसे बडे राज्य का मुख्य मत्री, कृष्णायन का सफल कीर्तिभोक्ता, लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, कुशल चाणक्य नीति का विशारद यह नेता देश मे इन दिनो अपना सानी नही रखता था। यह एक ऐसा प्रखर व्यक्तित्व था जो कि नमदा चम्बल के निवासियो ने अब जी भर कर देखा था और शायद पहिचानने का उपक्रम भी किया था। राजमाता स्वय यह देखकर चकित थी कि निरकुशता को लोकतत्र का जामा पहिनाने वाला, जनहित की रक्षा बदूको की नाल से करने वाला सजग प्रहरी, अहिंसा के नवीन रूप का कीर्तिमान पुजारी, नम्रता और विनय को अपनी मुठ्ठी मे बाधे जनवाद का प्रचार करते वाला प्रदेश का यह मुख्य मन्त्री किस नवीन जनतन्त्र का सदेशवाहक है? उनके मन मे पहिली बार यह प्रश्न उठा कि मध्य प्रदेश मे, जनता की सच्ची आवाज का प्रतिनिधित्व क्या काग्रेस की आज की निरकुश सत्ता कर रही है। क्या लोकतन्त्र इस प्रकार के हठीले हाथो मे और बहरे कानो मे जो कि जनता के कष्टो की कहानिया सुनने को तैयार न हो सुरक्षित है। प्रदेश के विभिन्न मत्रियो के एव काग्रेस के अन्य नेताओ

द्वारा विधान सभा मे दल नेता की तानाशाही की बातें जब उनके कानो मे पहुँची तो उनके मन मे प्रारम्भ हो गया एक अतर्द्वंद्व। वे सोचने लगे कि क्या इसी लोकोपचार के लिये, क्या इसी तानाशाही के लिये उन्होने काग्रेस को अपनाया है ? क्या कांग्रेस टिकट पर चुनाव लडकर और ससद मे काग्रेसी सदस्य का स्थान ग्रहण कर वे स्वय भी इस तानाशाही का समथन नही कर रही है ? एक सशय, एक प्रश्न, एक दुविधा उनके मन मे घर कर गई—जिसने जन्म दिया एक ऐसे अ तर्द्वंद्व को जो कालान्तर मे बढता ही गया।

— o —

सोपान १६

बस्तर काण्ड

फरवरी १६६६ का महीना था। देहली मे हल्की हल्की गुलाबी सर्दी अभी शेप थी। विंडसर प्लेस, नई देहली मे स्थित एक कोठी मे सध्या के समय ग्वालियर के युवक महाराज माधवराव सिधिया और उनके साथी कुमार सभाजीराव आँग्रे बैठे हुए थे। देश की राजनीति पर वार्तालाप हो रहा था। सहसा टेलीफोन की घन्टी बज उठी। महाराज ने फोन उठाया बोले "मैं हू माधवराव सिधिया। ओह आप हे महाराज साहब क्या आप इधर आ रहे है? आइये हा हम लोग अभी एक घन्टे तो यही पर है।" टेलीफोन रखकर महाराज माधवराव ने कुमार आग्रे से कहा, "बस्तर के महाराज प्रवीणचन्द भजदेव हे। वे इधर ही हम लोगो से मिलने के लिए आ रहे हैं।"

१०-१५ मिनट मे कोठी मे आगमन हुआ महाराज बस्तर का। लम्बे लम्बे केश फैले हुए थे, वेश भूषा अस्त-व्यस्त थी। आते ही बडे जोरो से महाराजा ग्वालियर का और फिर कुमार आग्रे का हाथ पकडकर अपने हाथो मे लिया और पुन बोले "मे राजमाता से मिलने के लिए आतुर था। मा कहा हे।—उनसे मे कहा मिल सकता हू।"

"महाराज! मा तो आजकल बम्बई मे है। सभवतया अगले सप्ताह इधर आवे। क्यो कोई आवश्यक कार्य है क्या। आप चाहे तो

उनसे फोन से बातें कर लीजिए। वे आजकल समुद्र महल बर्ली बम्बई मे हैं।"

"ऐसी बाते फोन पर नही हुआ करती भाई और फिर मै तो उनसे अब तक एक बार भी नही मिला हू। एक बार मिलकर मा को मिश्रजी की तथा उनके मन्त्रियो और सचिवो और पुलिस अधिकारियो की ज्यादती और जुल्म की बातें बतलाना चाहता था। मेरे साथी आदिवासी भी आखिर आदमी हैं हैवान नही। उनके साथ इतना निर्मम बर्ताव क्यो किया जा रहा है। मेरी स्वय की जान खतरे मे है। पता नही किस दिन पुलिस की गोली का शिकार बन जाऊ। दुनिया भर के गुण्डे मेरे पीछे मुझे हानि पहुचाने को फिर रहे है भैया। यह है गाधी जी की काग्रेस का राज। "कहते कहते महाराज प्रवीणचन्द्र भजदेव का मुख और नेत्र अरुण हो आये। उनका सारा शरीर कापने लगा। कुमार आग्रे ने उन्हे सात्वना देकर सोफा पर बिठाया और कहा "महाराज शान्त होइये। मैं काफी मगा रहा हूँ। थोडा विश्राम करिये। सब बात बताइये तो सही—आखिर कौन आपके पीछे लगा है—बात क्या हे ?"

"क्या बताऊ आप लोगो को ? एक बात हो तो कही जावे। वह तो शास्त्री जी की हिम्मत थी कि जो गत वष प्रयत्न करने पर भी मध्य प्रदेश का कुटिल शासन मेरा कुछ न बिगाड सका। अब कौन है मेरी रक्षा करने वाला। खैर मा दन्तेश्वरी है। उसी के पैर पकडूगा। इस प्रधान मन्त्री ने तो मेरी पूरी बात सुनी भी नही और प्रदेश के मुख्य मन्त्री की कारस्तानी जो उसका मित्र है वह सुने भी क्यो ? बस अब तो मैं दन्तेश्वरी देवी के पास ही चला। वही मेरा त्राण करेगी—।" कहते कहते वे सोफे से उठ खडे हुये। आवेश मे भर कर पुन कहने से "आप लोग देहली मे पडे पडे क्या करते है ?"

"अन्याय व अत्याचार का आप लोग सामना नही कर सकते ? कुमार साहब आप मा से कहिये कि वह चडी का रूप धर कर हमारे

कष्टो को दूर करें, काग्रेस की चुनौती को स्वीकार करे। एक धूमकेतु से निरपराओ की रक्षा करे—मा नही करेगी तो कौन करेगा—अपने बच्चो की मा को ही चिन्ता होती है।मै जानता हू इस मा के हाथो ही प्रदेश की जनता के कष्ट दूर होगे तथा इस निरकुश तानाशाह का पतन होगा।" बस्तर के महाराज आवेश मे भर कर कहे जा रहे थे।

"मेरा सदेश मेरा यह अनुरोध—आप कह सके तो उनसे कहियेगा—नही तो फिर मैं स्वय ही खुद आकर उनसे सब बात कहूगा।" कहते कहते आवेश मे भरे महाराज सामने रखी काफी को वैसे ही छोडकर बाहर चले गये। और जब तक महाराज माधवराव और कुमार आग्रे बाहर आकर उनसे नमस्कार करे तब तक तो वे मोटर मे बैठकर जा चुके थे। इस आकस्मिक आगमन और प्रयाण को देखकर दोनो ही आश्चयचकित रह गये। उल्का और बवडर की भाति बस्तर के महाराज आये भी और चले भी गये। सुना था कि उनका स्वभाव कुछ उद्धत है।गुस्सेबाज भी है कि तु इन क्षणो मे तो केवल उनकी मानसिक व्यथा ही वातावरण मे गू जती रही। दिन आये और चले गये। अगले मास २६ माच को जबकि श्रीमत माधवराव सिंधिया एव कुमार आग्रे नई दिल्ली के हार्डिज ब्रिज के पास से मोटर मे निकल रहे थे उन्हाने स्पाट न्यूज के बोड पर अचानक पढा "महाराज बस्तर का पुलिस की गोलियो से अन्त"। पढकर मन को गहरा धक्का लगा। अशात अस्थिर चित्र लेकर दोनो वापिस कोठी मे आ गये शोक से आतुर एव व्यथा से द्रवित। आते ही राजमाता को फोन किया और यह दुखदायी समाचार सुनाया। राजमाता भी सुनकर स्तम्भित रह गई। उनके शोक का भी पारावार नहो था। सारा देश इस नरहत्या से काप उठा। देहली मे भारतीय ससद भवन शमनाक शमनाक के नारो से गू ज उठा। गृहमत्री और प्रधानमत्री के ऊपर प्रश्नो की बौछार होने लगी। अहिसा के पुजारियो का यह हिसापूण ताडव नृत्य देखकर गाधी के वास्तविक अनुयायियो का मस्तक लज्जा से झुक गया। मध्य प्रदेश के

मुख्य मत्री के विरुद्ध देश के कोने कोने से आवाजें आने लगी। राज्य की धारा सभा मे विरोधी सदस्यो ने इस आतकवाद के विरुद्ध आवाज उठाई तो मुख्य मत्री ने राज्य के उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश न्यायमूर्ति पाँडे की न्यायिक जाच के लिये नियुक्ति की घोषणा करदी और फिर उन्होने विरोधी दलो के तत्सम्बन्धी प्रश्नो के उत्तर देना भी आवश्यक नही समझा।

बस्तर काड की वास्तविक कहानी जानने के लिये जनता उत्सुक और आतुर हो उठी। विरोधी दलो ने सयुक्त रूप से न्यायमूर्ति के समक्ष तथ्यो को रखने के लिये एक समिति गठित की। देश की जनता बस्तर के विषय मे अब सब कुछ जानना चाहती थी।

उसने जाना कि मध्य प्रदेश के दक्षिण पूर्वी अ चल मे स्थित है एक छोटा सा नगर जगदलपुर जो पूव बस्तर राज्य की राजधानी था और इस समय बस्तर जिले का मुख्य शहर है जहा रहते है जिलाधीश पुलिस अधिकारी एव जिले के अन्य अधिकारीगण। जगदलपुर से ११ मील दूर है एक गाव बस्तर जहा का इतिहास पुराणो और महाभारत के दण्डकारण्य प्रकरण से सम्बन्धित है। आदि कवि वाल्मिक द्वारा वर्णित दण्डकारण्य यही बस्तर अ चल है जिसके विषय मे कहा जाता है कि यह सूयवश के मूल पुरुष इक्ष्वाकु के सौ पुत्रो मे से सबसे कनिष्ठ पुत्र राजा दण्ड का निवास स्थान था। कहते है कि ये दण्ड महाराज अशिक्षित, असस्कृत और मूढ होने के कारण ही दण्ड कहलाते थे और उनके भाग मे आया था विंध्य और शैवाल पवत श्रेणियो के बीच का यह भयावना वन भाग जहा उन्होने राज्य स्थापित कर अपने धर्म गुरू शुक्राचाय महाराज की सहायता से शासन किया था। किवदती है कि शुक्राचार्य का आश्रम इस घनघोर वन मे था और वहा एक दिन मृग्या के फेर मे सुध-बुध भुले हुये जा पहुचे महाराज दण्ड। आश्रम के समीप ही एक अत्यन्त सौन्दयमयी युवती को देखकर उनका मन मचल पडा और बुद्धि खोकर उन्होने बलात् उस बाला का कौमाय भग किया।

यह कन्या थी "अर्जा" महर्षि शुक्राचाय की अविवाहित पुत्री। शुक्राचाय को राजा दण्ड के इस कुकृत्य का जब पता चला तो उन्होने क्रोध मे भर कर श्राप दिया कि दण्ड का और उसकी समस्त सेना का विनाश हो जाये। एक सप्ताह मे उनका श्राप सत्य हुआ और दण्ड की बसाई नगरी एक बार पुन भयावह वन मे परिवर्तित हो गई। वन पशुओ से आक्रात सघन वन मे जन जीवन अचानक अग्नि द्वारा समाप्त हो गया और कालान्तर मे यह निजन अ चल दण्डकारण्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हजारो वर्षो के पश्चात् शनै शनै जन जीवन यहा आया और इतिहास बताता है कि ग्यारहवी शताब्दी के मध्य बस्तर मे चक्रकोट नाम का एक राज्य यहा स्थापित हुआ जहा की सभ्यता शनै शनै उन्नत हुई। तैलगू त्यागवशी राजा यहा राज्य करने लगे थे जिनका राज्य चिन्ह था शेर तथा ध्वजा का चिन्ह था सप। इस वश के शासक थे श्री सोमेश्वर देव।

चौदहवी शताब्दी मे काकतीय राजवश के राजा रुद्र प्रताप को अलाद्दीन खिलजी के दो सेनापति मलिक काफूर और ख्वाजा हाजी ने पराजित किया था। तब इनके छोटे भाई अन्नभदेव उस समय गोदावरी नदी पार कर वारगल से पलायन करके बस्तर मे सघन वनो मे आ छिपे थे। सन् १३१३ मे इन्होने बस्तर ग्राम को बसाकर इसे अपनी राजधानी बनाया। इस राजवश ने लगभग ६०० वष यहा राज्य किया एव इसी वश के महाराज प्रवीण ने यहा की प्रसिद्ध देवी दन्तेश्वरी के मन्दिर के समक्ष नर बलि के प्रश्न को लेकर ब्रिटिश शासन के प्रति सशस्त्र विद्रोह किया जिसे कुचलकर ब्रिटिश शासको ने यहा के सैकडो नेताओ को फासी पर लटकाया तथा दीवान और उसके साथियो को निष्कासित किया तथा राजा को अधिकार-च्युत कर दिया। १९२१ मे राजा रुद्र प्रताप की मृत्यु के उपरान्त उनकी पुत्री प्रफुल्ल कुमारी देवी को शासक के रूप मे मान्यता प्राप्त हुई तथा इनका विवाह मयूरभज नरेश के लघु भ्राता श्री प्रफुल्लचन्द भजदेव के साथ हुआ। १९३६ मे

महारानी प्रफुल्लकुमारी दवी की मृत्यु लन्दन के एक अस्पताल मे हुई। वे अपने दो पुत्र एवं दो पुत्रियो को छोडकर चल बसी थी। ज्येष्ठ पुत्र प्रवीणचन्द्र भजदेव उस समय केवल सात वष के थे। इनका लालन-पालन बस्तर राज्य के उत्तराधिकारी के रूप मे ले० क० गिब्सन के सरक्षण मे हुआ। वे इगलैंड मे चार वष (१९३३ ३६) रह ही चुके थे अब १९३६-४५ तक इनकी शिक्षा-दीक्षा भारत मे रायपुर मे, डैली कालेज इन्दौर मे, तथा मिलिट्री एकेडमी देहरादून आदि मे हुई। १ जनवरी १९४६ को जबकि महाराज १७ वष नवयुवक थे श्री पी०सी० मैथ्यूज एव उनकी पत्नी इनके अभिभावक नियुक्त हुए और इस अग्रेज दम्पति ने, जो चरित्रहीन शराबी एव लम्पट था, महाराज के चरित्र को दूषित किया तथा उनमे उन दुर्गुणो का समावेश करा दिया जो किसी भी युवक के लिए व्याधिमय सिद्ध हो सकते हैं। ३१ जुलाई १९४७ को महाराज प्रवीणचन्द्र भजदेव को बस्तर का राज्य सौप दिया गया। कुछ मास पश्चात् ही छत्तीसगढ की अन्य देशी रियासतो की भाति बस्तर रियासत भी मध्य प्रदेश मे समाहित हो गई और महाराज ने शासन काय से विश्राम ले लिया। बस्तर के आदिवासियो मे दन्तेश्वरी के प्रधान पुजारी होने के नाते महाराज सदैव पूजे जाते थे। महाराज के स्वभाव की अस्थिरता के कारण उनकी सम्पत्ति पर २० जून १९५३ को कोट आफ वाड्स कर दिया गया। महाराज इससे क्षुब्ध हो उठे और आदिवासियो के नेता मीरा माँझी को जो गदर के स्वप्न देखा करता था अपना सहयोग प्रदान कर दिया। यह आदिवासियो का माझी दल बस्तर की स्वतन्त्रता के लिए कटिबद्ध था तथा काग्रेस शासन को उखाड फेकना चाहता था। दुर्भाग्य से ईसाई अधिकारियो का इस क्षेत्र मे बोलबाला हुआ और पादरियो को धम परिवतन के हेतु आदिवासियो को फसाने की छूट कतिपय राज्य के ईसाई अधिकारियो के प्रोत्साहन से मिल गई। महाराज के मतभेद ईसाई राज्य अधिकारियो से बढते गए और फिर वह भी दिन आया जबकि वे इन ईसाई अधिकारियो के

कारण काग्रेस शासन के पूर्ण विरोधी बन गए। इन्ही दिनो कुछ काग्रस के नेताग्रो ने इनसे सम्पर्क साधकर यह प्रलोभन दिया कि यदि वे काग्रेस टिकट पर चुनाव लडे तो उनकी सम्पत्ति पर से कोट ग्राफ वाडस उठा लिया जाएगा। महाराज उनकी बात मान गए और सन् १९५७ के चुनावो मे कॉग्रेस प्रत्याशी के रूप मे वे स्वय विजयी हुए और दल के समस्त सदस्यो को बस्तर और उसके समीपवर्ती क्षेत्र से विजयी बनाया। वे बस्तर काग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बनाये गए। अभी दो वष भी न बीते थे कि काग्रेस मे व्याप्त स्वायपरता, पदलोलुपता से वे दुखित हो उठे। इधर उनकी सम्पत्ति पर से भी काग्रेसी शासन ने कोट ग्राफ वाडस नही हटाया तथा नेतागण अपने वायदे से मुकर गये। ६ नवम्बर १९६० को महाराज ने अपने भाषण मे कोडागाव सभा मे काग्रेस की बुराइयो पर प्रकाश डाला। आदिवासी अपने नेता को काग्रेस विरोधी जानकर शासन से असहयोग करने लगे। माँझी पार्टी का प्रभाव पुन बढा। ९ जनवरी १९६१ को महाराज को देहली बुलाया गया जहा उन्होने देश के गृहमन्त्री को खूब खरी-खोटी सुनाई और आदिवासियो को बगावत के लिए उकसाने की कसम ली। बस्तर लौटते ही १२ फरवरी जो उन्हे पकडकर नरसिहगढ जेल मे भेज दिया गया और शासक के रूप मे उनकी मान्यता समाप्त कर दी गई। अपने लोकप्रिय नेता को जेल के सीखचो मे बन्द देखकर आदिवासी भडक उठे। उनकी रिहाई की माग करते-करते बस्तर मे ३१ माच १९६१ को लोहाडीगुडा के पास १० आदिवासी पुलिस की गोलियो से भुन गये और दो व्यक्ति अस्पताल जाते-जाते चिरनिन्द्रा मे सो गये। दमन का भीषण चक्र किन्ही ईसाई अधिकारियो के इशारे पर जो स्वय को बस्तर के विशेषज्ञ कहते थे चल पडा और मध्य प्रदेश का काग्रेसी शासन इन भोले-भाले आदिवासियो के रक्त से अपने हाथ लाल कर बैठा। वनवासियो के स्वतन्त्र जीवन पर भाति-भाति के प्रतिबन्ध लगाये गए और उन पर जुल्म और ज्यादतियो के पहाड ढाये गए। महाराज की गिरफ्तारी का

मामला जन सलाहकार समिति के समक्ष प्रस्तुत हुआ तो सदस्यो ने यह निर्णय दिया कि महाराज को जेल मे बन्द रखने के लिए पर्याप्त कारण नही है। अत विवश होकर शासन को उन्हे मुक्त कर देना पडा तथा ईसाई अधिकारी मन-ही मन उनसे बदला लेने के हेतु पुन व्याकुल हो उठे।

आदिवासी प्रजा ने अपने महाराज की मुक्ति पर हर्ष मनाया और अमान्य शासक होते हुए भी उन्हे दशहरे के पर्व पर दन्तेश्वरी देवी के पुजारी का पद ग्रहण करना पडा। रथयात्रा मे वे शामिल हुए और आदिवासियो पर उन्होने अपना प्रभाव अक्षुण्य पाया।

अब आये १९६२ के आम चुनाव। कांग्रेस के मच पर न जाने की तो महाराज और उनके आदिवासी प्रतिज्ञा कर ही चुके थे। उन्होने महाराज पार्टी के नाम से एक अलग दल सगठित किया और यद्यपि वे स्वय काकेर के महाराजाधिराज के मुकाबले मे हार गये किन्तु उनके अधिकाश प्रत्याशी विजयी हुए। महाराज का लक्ष्य अब था अपनी सम्पत्ति को मुक्त करना। वे इसके लिए प्रयत्नशील हुए और नई महारानी वेदवती को देहली से दशहरे के अवसर पर बुलाकर एक विशाल प्रदर्शन जगदलपुर मे कराया। महाराज-महारानी के दर्शनो के लिए और उत्सव मे अपना सहयोग देने के लिए ६ अक्तूबर १९६२ को जगदलपुर मे डेढ लाख आदिवासियो की अभूतपूर्व भीड एकत्रित हुई। २५ जुलाई १९६३ को कांग्रेसी शासन द्वारा महाराज की सम्पत्ति मुक्त कर दी गई और ऐसा प्रतीत होता था कि अब इस अचल मे शान्ति स्थापित हो जायेगी। आदिवासियो पर महाराज का प्रभाव अब और भी बढ गया था।

अचानक ३-४ जुलाई, १९६५ को जब कि महाराज अपने जगदलपुर महल से बाहर गये हुये थे, नवीन मान्यता प्राप्त शासक और उनके भाई महाराज विजयचन्द्र भजदेव ने अपने भाई के महल से कई वस्तुए हटवाली जिनमे दन्तेश्वरी देवी की पूजा की सोने की छडिया भी थी।

२६ अगस्त को जब महाराज प्रवीणचन्द्र भजदेव वापिस अपने महल मे आये तो उन्हे इस चोरी का ज्ञान हुआ। वे क्रोध मे भरकर सन्तुलन खो बैठे और उन्होने घोषणा कर दी कि जब तक उक्त छडे और वस्तुए उन्हे नही लौटाई जावेगी वे विजयादशमी को देवी का पूजन नही करेगे। आदिवासियो ने आन्दोलन की धमकी दी तो शासन के अधिकारियो ने बीच-बिचाव करके उक्त वस्तुये वापिस दिलवा दी और दशहरे का उत्सव शाति के साथ सम्पन्न हो गया। आगामी वष फिर दोनो भाइयो के विवाद को लेकर झगडे हुये और आदिवासियो की एक विशाल भीड महल के सामने धरना देकर बैठ गई। जनवरी १९६६ मे एक दिन रायपुर के नवीन राजस्व आयुक्त महाराज वीरभद्रसिंह स्वय जगदलपुर आये और मध्यस्थ बनकर उन्होने अपना यह निणय दोनो दलो को मान्य करा दिया कि श्री प्रवीणचन्द्र भजदेव अपने भाई के ऊपर से चोरी का मामला वापिस ले लेंगे और बदले मे श्री विजयचन्द्र भजदेव अपने भाई और पूव शासक महाराज प्रवीणचन्द्र भजदेव को आजीवन अपने पहिले के राजप्रासाद मे रहने का अधिकार प्रदान कर देगे। एक दस्तावेज के रूप मे यह बात लिपिवद्ध कर ली गई और दोनो के हस्ताक्षर कराके वह आयुक्त के पास रख दी गई। इन नवीन आयुक्त की सज्जनता, न्याय-प्रियता दोनो भाइयो को उनके प्रति आश्वस्त कर चुकी थी तथा पूव आयुक्त की कटुता की कहानिया वे कुछ-कुछ भूलने लगे थे। आदिवासी जनता भी अपने महाराज के झगडे को सुलझता पाकर वापिस गावो मे लौट गई।

जनवरी फरवरी १९६६ का मास बस्तर क्षेत्र के लिये अत्यन्त ही भयावना और दुखदायी होकर आया था। अकाल, सूखा और स्थानीय छोटे अधिकारियो के उत्पीडन के कारण आदिवासी जनता त्रस्त हो उठी थी। लगातार तीन वर्षों की वषा की कमी के कारण खेतो मे धान की फसल बहुत ही कम हुई थी और वैसे भी उन्नत कृषि के साधन इस पिछडे क्षेत्र मे सुलभ न थे। जो कुछ भी धान इस वष हुआ

था उसे बेचकर अधिकाश आदिवासी परिवार वस्त्र और गृहस्थी का अन्य सामान जुटाने मे लगे थे। कतिपय परिवारो मे अब केवल वष भर के लिये खेतो योग्य धान शेष था। इन्ही दिनो सहसा शासन की ओर से प्रभावित कर दिया गया "मध्य प्रदेश पैंडी प्रोक्योरमेन्ट लेवी आडर—यानी म० प्र० धान अधि-प्राप्ति उदग्रहण आदेश"। यह कानून १६ जिलो मे प्रभावशील किया गया जिनमे बस्तर भी था तथा इस आदेश के अनुसार —

(अ) १० एकड से कम तथा ५ एकड से अधिक खेतो के स्वामियो को जिनके यहा ६ आने से अधिक उपज हुई हो १० किलोग्राम प्रति एकड धान की लेवी देनी थी। यही लेवी उन किसानो को भी देनी थी जिसके पास १० एकड से अधिक के खेत थे चाहे उनके यहा उपज हुई हो अथवा नही।

(ब, जहा ६ आने से अधिक उपज हुई हो वहा के कृषको को

(क) ५ से ८ एकड की खेती पर १५ किलोग्राम प्रति एकड धान की लेवी देनी थी।

(ख) ९ से १५ एकड तक की खेती पर ३० किलोग्राम प्रति एकड की लेवी देनी थी।

(ग) १५ एकड से अधिक की खेती पर ५० किलोग्राम प्रति एकड धान की लेवी देना अनिवार्य था।

राजस्व अधिकारियो के साथ पुलिस गाव-गाव मे जाकर गरीब आदिवासियो के परिवार से जबरन उनकी उपज का धान छीनने लगी। आदिवासियो की झोपडियो की तलाशी ली गई, उनके बतन-भाडे बिखेरे गये और पटवारी के इशारो पर उनको बेआबरू किया गया। आदिवासी रोते-रोते महाराज प्रवीणचन्द भजदेव के पास जगदलपुर आये और अपनी दुखमयी कहानी सुनाने लगे। इस प्रकार की जबरदस्ती की लूट से आदिवासियो मे त्राहि-त्राहि मच गई। शासन के अधिकारी किसी सक्षम व्यक्ति के इशारे पर इन अत्याचारो मे मजा ले रहे थे। गाव-

गाव मे घरबार लूटकर कहा जाता था "जाम्रो। जाम्रो। अपने राजा के पास जाम्रो। गाव के बजाय महल मे ही जाकर रहो।" इस प्रकार की उत्तेजनापूवक बातो से आदिवासी और भी खीझ उठते थे। इस सम्बन्ध मे न्यायपूर्ति श्री कन्हेयालाल पाडे की जाच रिपोट मे लिखा है कि —

"मध्य प्रदेश धान अधिप्राप्ति (उदग्रहण) आदेश १९६५ को जिले (बस्तर) पर लागू करने का निणय दुर्भाग्यपूण ही था क्योकि जिले की आदिवासी जनता पर जो कि वनोपज और शिकार पर ही निभर रहती हे फसलो के आशिक रूप से खराब होने का कोई विशेष प्रभाव नही पडता। जिला अधिकारियो का यह बात महसूस करनी चाहिये थी और तदानुसार उसकी सूचना राज्य शासन को देनी चाहिये थी। सम्भवत इस पहलू पर उनके द्वारा यान न दिये जाने के परिणामस्वरूप ही यहा लेवी आदेश लागू किया गया गया।—अधिकारीगण केवल बहुत थोडी मात्रा (१७०० मीट्रिक टन) की वसूली करने मे ही सफल हुये लेकिन ऐसा करने मे उन्हे बल प्रयोग करना पडा जिसके फलस्वरूप कटुता उत्पन्न हो गई—१० जनवरी १९६६ को जब लोहाडीगुडा गाव से इस प्रकार की सूचना प्राप्त हुई तब कुछ राजस्व अधिकारी पुलिस दल सहित उस गाव को गये। उन्होने देखा लगभग ४०० आदिवासी महिलायें करिया साहू (अ सा ४५) को घेरे थी कि समस्त भूमि और उस पर पैदा की गई धान राजा की है इसलिये शासन को धान नही दी जा सकती। वहा उपस्थित अधिकारी महिलाओ को समझाने बुझाने मे असफल रहे और फिर चेतावनी देने के बाद उन्हे तितर बितर करने के लिये अश्रु गैस प्रयोग के बल प्रयोग का निर्देश दिया।"

शासन अधिकारियो द्वारा इसी प्रकार के बल प्रयोग की (लाठीचाज) घटना ३१ जनवरी १९६६ को केसरपाल गाव मे तथा ५ फरवरी को नगरनार गाव मे हुई और फिर असतोष बढता ही गया। महाराज

इस प्रकार के लाठी चाज फायरिंग आदि से बहुत परेशान होकर बार-बार अधिकारियो, मत्रियो, देहली के वरिष्ठ नेताओ के पास आदिवासियो की पुकार लेकर पहुँचे किन्तु कही उनकी सुनवाई न हुई। प्रधानमत्री के लाडले मुरय मत्री के विरुद्ध सुनता भी कौन। देहली मे इसी प्रकार की यात्रा मे उन्होने राजमाता की भी खोज की किन्तु विडसर प्लेस मे जब उनसे भेट नही हुई तो वे निराश होकर जगदलपुर पुन वापिस आ गये। ८ फरवरी १६६६ को उन्होने आदिवासियो के समक्ष शासन के अत्याचार के विरुद्ध भूख हडताल की घोषणा कर दी किन्तु जब जिलाधीश ने लेवी वसूल करने के प्रश्न को भोपाल मत्रियो की ओर भेजने का आश्वासन दिया तो उन्होने १० फरवरी को अपना उपवास भग कर दिया।

इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप शासन द्वारा लेवी वसूली फिर भी स्थगित न की गई और आदिवासियो मे असतोष और शासन के प्रति घृणा घर कर गई। १८ माच, १६६६ को चैतई त्यौहार मनाने के लिये लगभग २००० आदिवासी स्त्री पुरुष जगदलपुर मे एकत्रित हुये। अपने धार्मिक कृत्य के सिलसिले मे कुछ स्त्री पुरुष उस दिन एक ठेला गाडी मे सेमल लकडी का खम्भा महल परिसर मे स्थित ककालिन मन्दिर के समक्ष गाडने ले जा रहे थे तो एक पुलिस दल ने उन्हे महल मे घुसने से रोका। बल प्रयोग किया तथा लाठी प्रहार भी किया गया। आदिवासी आतकित होकर भाग खडे हुये। २१ माच को जब आयुक्त महोदय जगदलपुर आये तो आदिवासियो ने उन्हे अपने शरीर पर चोटो के निशान बतलाये तथा पुलिस के अत्याचारो की शिकायत की। घायल आदिवासी महाराज के महल मे पडे हुए उपचार करा रहे थे तथा उनके भोजन पान की व्यवस्था वही पर थी। २४ माच को जगदलपुर से ११ मील दूर बस्तर गाव मे एक कॉंग्रेसी नेता श्री सूयवाल तिवारी के घर पर कुछ झगडा हुआ तथा २५ माच को जाच के लिये जिलाधीश एव पुलीस अधीक्षक स्वय प्रात ६ बजे वहॉ गये तथा स्थिति का निरीक्षण कर

९ बजे वापिस जगदलपुर आ गये । ये दोनो सक्षम अधिकारी थे तथा इस समय तक किसी प्रकार की असाधारण परिस्थिति उनके सन्मुख नही थी और न इस प्रकार की कोई सूचना भोपाल भेजी । न्यायमूर्ति पाडे के समक्ष अधिकारियो का यह प्रमाणित करने का प्रयास कि उस दिन आदिवासियो द्वारा सशस्त्र बलवा हो रहा था असफल ही रहा ।

२५ माच १९६६ को घटनाक्रम ने द्रुतगति पकडी । अभी भोर हुई ही थी कि लोगो ने देखा भगवान अशुमालि की स्वणिम किरणो ने इन्द्रावती नदी की आभा को अरुण कर दिया और माडिन नदी का शात अचल विक्षुब्ध हो उठा । इन्द्रावती के पुल को पार कर उस बेला मे आदिवासी स्त्री पुरुषे की एक लम्बी पक्ति चली आ रही थी बस्तर ग्राम से जगदलपुर की ओर । नारी समूह उद्वेलित होकर सिर पर छोटी-छोटी पोटली रखे माग मे जोशीले गीत गाता हुआ चला आ रहा था । उसके स्वरो से निकलती गीतो की कडिया वीर रस की वर्षा कर रही थी और युवक मन्डली उनके पीछे पीछे तीरकमानो से सजी महल परिसर की ओर आ रही थी क्योकि आज उनका चैतई त्यौहार था । महल मे दरबार लगेगा, उत्सव होगा और राजा के साथ दन्तेश्वरी के ककालिन देवी के वे दशन करेंगे । आदिवासियो की टोलिया चारो दिशाओ से अपने-अपने गावो से जगदलपुर की ओर उमडती चली आ रही थी अपने राजा के साथ पव मनाने ।

एक-एक कर ये टोलिया महल मे पहुँची । स्त्रियो ने राजा को प्रणाम कर अपनी धान की पोटली उनके चरणो मे बिखेर दी और पुरुष पद स्पर्श कर राजा को ढोक देकर जुहार करने लगे । टोलिया फिर नगर की हाट मे घूमने निकल पडी । एक टोली महल परिसर मे स्थित न्यायिक हवालात के निकट आकर खडी हो गई तथा तमाशा देखने लगी । हवालात मे आज गाव से पकडकर १९ व्यक्ति लाये गये ये जिनमे एक था श्रीराम और उसकी युवा पत्नी शान्ती । सुबह १० बजे ये । श्रीराम अपनी पत्नी शान्ती से जो बाहर वरामदे मे बैठी थी जोर-जोर से बातें

युगल दम्पति



श्रीमंत महाराज माधवराव सिंधीया एवं महारानी श्रीमंत, माधवीराजे सिंधीया

कर रहा था। सहसा पुलिस के एक सिपाही ने उठकर इन दोना को डाट पिलाई, कुछ गाली गलौज कर आपस मे बाते करने के लिये निषेध किया। श्रीराम ने भी चिल्लाकर कहा "हवलदार साहब। अपना काम करो। मेरे और मेरी लुगाई के बीच न बोलो। मैं अपनी जोरू से बात कर रहा हू न कि किसी और की से ।" बस बात बढ गई। हवलदार साहब का तो कोतवाली मे एकछत्र राज्य था। आव देखा न ताव, बस अपनी आज्ञा की अवहेलना कोतवाली मे देखकर उन्होने धुन डाला श्रीराम को। शान्ती अपने पति को पिटते देखकर धाड मारकर रोने लगी और उधर श्रीराम भी मार के कारण चिल्लाने लगा। आदिवासी इस चीख-पुकार को सुनकर हवालात के अन्दर जा पहुचे और हवलदार से श्रीराम को इस प्रकार पीटने से मना किया। अब तो हवलदार साहब और उनके साथी सिपाही और भी बिखर पडे। बोले, "दाल-भात मे मूसरचन्द तुम कौन, निकलो यहा से साले ।" श्रीराम को अब भुला दिया गया और आदिवासियो पर पुलिस के डडे बरसने लगे। फलस्वरूप उनकी औरतो मे भी चीख-पुकार शुरू हो गई। पुलिसवालो की लाठी अपने पटेलो के सिर पर बरसती देख माडिया युवक भडक उठे और उनमे से कुछ सहायता के हेतु दौड पडे महल परिसर मे जहा उन्होने घटना का अतिरजित वर्णन किया। आदिवासियो की भीड महल मे एकत्रित थी। अपने साथियो को पुलिस से बचाने थाने की ओर दौड पडी और उधर पुलिस ने सीटियाँ बजा-बजाकर पास के दूसरे थानो से सहायता मागी। पुलिस की टोलियो ने आते ही अश्रुगैस के गोले छोडे तथा आदिवासियो पर लाठी चाज किया। आदिवासियो ने इसका जवाब ईट-पत्थरो से दिया। हवालात मे शीशे टूट गये और इस भगदड मे दो कैदी भी भाग निकले। सशस्त्र एस० ए० एफ० की टुकडिया अब मौके पर आ गई तथा गोलियो की एक बाड दाग दी गई। आदिवासियो ने वृक्षो और दिवालो का सहारा लेकर गोलियो का जवाब तीरो से दिया। खुले मैदानी भाग मे खडे कुछ आदिवासी पुलिस की गोली

खाकर घराशायी हुए। पास मे खडे आदिवासी युवक घायलो को उठा कर जब महल परिसर मे ले गये तब पुलिस की टुकडियो ने महल को चारो ओर से घेर लिया। पुलिस की ओर से यदाकदा गोलिया चलती रही। सन्ध्या के ४ बजे से रात्रि के ११ बजे तक घटनाओ का क्रम क्या रहा यह स्पष्ट नही। न्यायमूर्ति पाडे आयोग के समक्ष विभिन्न गवाहो के बयान हुए किन्तु आयोग ने भी स्पष्ट निष्कष नही निकाले। प्रमाणित निष्कष यह निकला कि पुलिस की गोलियो द्वारा उस रात्रि को महाराज प्रवीणचन्द्र भजदेव तथा ११ आदिवासियो के प्राण गये। न्यायमूर्ति पाडे के समक्ष महाराज की सेविका कौशल्या देवी ने कहा कि सूर्यास्त के समय सर्किल इन्स्पेक्टर मोहनसिह काग्रेसी नेतागण सूयपाल तिवारी और कुवर बालमुकुन्द के साथ कुछ पुलिस के सिपाही लेकर महल मे आये और महाराज को पकडकर शयनकक्ष मे ले गये। प्रतिरोध करने पर महाराज को पुलिस द्वारा छडियो से पीटा गया और शयनकक्ष का द्वार बन्द कर लिया गया। शयनकक्ष मे उन्हे पीटा गया क्योकि उन्होने "मर गया मा" शब्द जो महाराज के थे सुने। कक्ष मे से फिर गोलियो की आवाज आई और कौशल्या ने देखा कि महाराज प्रवीणचन्द्र को घसीटकर वे लोग बाहर लाये और फिर उन पर गोलिया चलाई। "मा मर गया" शब्द प्रवीणचन्द्र भजदेव के मुख से निकले हुए अन्तिम शब्द थे। श्री प्रवीणचन्द्र के नौकर दिगम्बर सिह ने आयोग के समक्ष जो बयान दिया उसका तथ्य भी यह था कि २५ मार्च १९६६ को मध्यान्ह को महल के ड्राइगरूम के दरवाजे के समीप कुछ अधिकारी आये और उन्होने श्री प्रवीणचन्द्र को बुलाकर रेलिंग के पास खडे होकर उनसे कुछ बातचीत की। महाराज ने कहा कि वे आदिवासियो को उन्हे सौपने के लिए तैयार है किन्तु पुलिस तुरन्त गोली चलाना तथा आदिवासियो की मारपीट बन्द कर दे। श्री प्रवीणचन्द्र फिर नये महल की ओर लौटे तो उन्होने देखा कि पुलिस वाले आदिवासियो को पीट रहे है। उन्होने पुलिस वालो को मारपीट करने से मना किया तो कहा

सुनी हो गई और एक पुलिस वाले ने उनके ऊपर ही गोली चला दी जो उनकी दाहिनी भुजा तथा दाहिनी जघा मे लगी और वे फर्श पर गिर पडे। आदिवासियो ने गोली की बौछारो मे दौडकर अपने राजा को उठाया और शयनकक्ष मे जाकर लिटा दिया। रात्रि को पुलिस के लोग फिर आये और शयनकक्ष के बन्द द्वारो को तोडकर उसमे घुसे और अचेत पडे हुए श्री प्रवीणचन्द्र पर ४ गोलिया और चलाई तथा उन्हे खीचकर नीचे पटक दिया।

भगवान जाने इन बयानो मे कितनी अतिशयोक्ति है और कितना सत्य है किन्तु इस न्यायिक जाच मे एक बात उभर कर स्पष्ट हो उठी कि अधिकारियो द्वारा साक्ष्य को जानबूझ कर तोडा-मरोडा गया था और जाली लिखित साक्ष्य पत्र तैयार किये गये थे। स्पष्ट हे कि सत्य को छिपाने का यह प्रयास था और कुछ न कुछ ऐसी गर्हित बात थी जिसको छुपाना अधिकारियो के लिये परम आवश्यक था क्योकि उससे शायद शासन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण व्यक्तियो पर सभवतया आच आ सकती थी ? उन दिनो यह भी सुनाई मे आया कि भोपाल से किसी वरिष्ठ अधिकारी ने शासन के सकेत पर फोन से यह कहा था कि ‘ We want him dead or alive” यानी ‘हमे वे जीवित अथवा मृत चाहिये।’ सभव है यह कपोल कल्पना हो किन्तु यह बात तो निर्विवाद है कि कांग्रेस शासन के लिये ये आदिवासी और उनके महाराज एक जबदस्त सिर दर्द थे और अधिकारियो की गलतियो के कारण अथवा किसी प्रमुख अधिकारी अथवा उच्चासीन व्यक्तियो के इशारे पर बस्तर का वातावरण हिंसामय हो उठा था। पुलिस और आदिवासियो के मन मे प्रतिहिंसा की भावना जाग्रत की गई थी और पुलिस की बहुत सी गलतियो को जान बूझकर बढावा देने के लिये नजर-अन्दाज भी किया गया था और इस पुलिस राज के आतक और अत्याचार की चरम सीमा ही बस्तर के महाराज श्री प्रवीणचन्द्र भज-देव की ददनाक मृत्यु थी। महाराज का शरीर पुलिस की गोलियो ने

छलनी बना दिया था और उनका अन्त अत्यन्त क्रूर और दुखद रूप मे हुआ था। इस प्रसग पर स्वभावतया जनता मे यह प्रश्न उठें कि क्या शासन अपनी विशाल शक्ति और साधनो से महाराज को बन्दी नही बना सकता था ? क्या ११ आदिवासियो और महाराज को गोलियो द्वारा भूनना शासन के लिये जन हित मे परम आवश्यक था ?

२६ मार्च को प्रात काल ६-३० बजे जब राजस्व आयुक्त महोदय जगदलपुर आकर वरिष्ठ अधिकारियो के साथ महल परिसर मे पहुँचे और आदिवासियो को उनकी स्वतन्त्रता का आश्वासन देकर महल से बाहर आने को कहा तब लगभग २५० स्त्री पुरुष महल से निकल कर आये। आयुक्त महोदय के आश्वासन की अवहेलना करके उस समय भी पुलिस अधिकारियो ने ८०६ पुरुष और ६ महिलाओ को हिरासत मे ले लिया तथा शेष को जाने दिया। सभाभ का सबसे बडा स्थानीय शासन का अधिकारी आयुक्त होता है। इन क्षणो मे पुलिस अधिकारियो ने उनके द्वारा दिये हुये मुक्ति के आश्वासन की अवहेलना की—क्यो ? लोगो ने कहा कि—क्योंकि बयानो एव घटनाओ से सकेत प्राप्त होता है कि शायद उनके पीछे कोई बडी शक्ति काय कर रही थी जिसका उन्हे सहारा था। आश्वासन था और जिसके सकेत अथवा आदेश पर यह दुदमनीय घटना घटी थी। सभव है यह सत्य न हो किन्तु कुछ न कुछ बात ऐसी है अवश्य जिसको सत्यरूप मे प्रकाश मे आने से रोका गया था। दिन के ११ बजे के लगभग पुन आयुक्त महोदय ने चार आदिवासियो को यह जानने के लिये भेजा कि और भी आदिवासी महल मे है अथवा चले गये है ? उन्होने आकर कहा कि महल मे अब कोई आदिवासी नही है और राजा मरा पडा है "राजा मर लो "।

अब आयुक्त पुलिस दल के साथ महल के अन्दर गये और वह भीषण दर्दनाक दृश्य देखा जिससे कि सब ही दर्शको के हृदय काप गये। महारानी प्रफुल्लकुमारी के लाडले ज्येष्ठ पुत्र और किसी समय के बस्तर के वैभवशाली महाराज दन्तेश्वरी और ककालिनी देवी के गौरवपूर्ण

पूजारी का शव वहा क्षतविक्षत अवस्था मे पुलिस की गोलियो से छलनी बना ड्राइ ग रूम के द्वार के पास खून से लथपथ पडा था। प्रतीत होता था कि किसी ने घसीट कर उसे वहा डाल दिया है। आदिवासियो के श्रद्धेय नेता का महात्मा गाधी की, जवाहरलाल नेहरू एव बिहार के गाधी राजेन्द्र प्रसाद की तथा सरदार पटेल द्वारा पोषित कांग्रेस के प्रजातन्त्र लोकहितकारी शासन मे यह ददनाक अन्त कौन से लोकतन्त्र की विजय थी यह तो भगवान ही जाने। हिंसा और प्रतिशोध का यह ताडव नृत्य कितना वीभत्स था ? हा यह सत्य है कि मध्य प्रदेश के मुख्य मत्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र के खूनी शासन का मुख इस घटना से देश विदेश मे काला हो गया और यह एक ऐसा काला धब्बा देश के काग्रेसी शासन के ऊपर लगा जो लाख मिटाने पर भी न मिट पायेगा। बस्तर के आदिवासियो की पीढी दर पीढी इस कुकृत्य के लिये कभी काग्रेसी शासन को क्षमा नही करेगी।

बस्तर-काड को लेकर देहली मे लोक सभा और राज्य सभा गूज उठी। विरोधी दलो ने काग्रेसी शासन की पोलें खोलते हुये उसकी तीव्र भर्त्सना की। इसके प्रमाण प्रस्तुत किये कि महाराज बस्तर की हत्या एक पूव नियोजित षडयत्र का परिणाम थी और शक्तिशाली सत्ता का मद इसके पीछे था। देश के कोने-कोने मे विरोधी स्वर गूजकर मुख्य मत्री और प्रधान मत्री को धिक्कारते रहे। लोकतन्त्र के नाम पर यह कितना बडा कलक था। लोक सभा मे इस विषय को लेकर विवाद करने की अनुमति अध्यक्ष ने नहीं दी क्योकि न्यायिक जाच के लिये एक न्यायमूर्ति की नियुक्ति प्रदेश के मुख्य मत्री मिश्रजी द्वारा घोषित कर दी गई थी। किन्तु राज्य सभा के अध्यक्ष पद पर उस दिन आसीन न्यायप्रिय एक काग्रेसी वरिष्ठ नेता श्री महावीर प्रसाद भागव ने इस विषय की चर्चा की अनुमति देकर लोकतत्र की निष्पक्षता का एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया। विरोधी सदस्यो ने राज्यसभा के मच पर वह सब कहा जिसे सुनकर सत्य और अहिंसा की नीब पर

खडी काग्रेसी के आधार स्तम्भो के मुह काले पड गये। उस दिन का श्री अटल बिहारी वाजपेयी का गम्भीर एव विषादमय गर्जन राज्यसभा के विशाल भवन मे गूजकर समस्त देश मे प्रति-ध्वनित हो उठा।

बाद मे न्यायिक जाच भी हुई, रिपोट भी प्रकाशित हुई किन्तु दोषी कौन ? यह प्रश्न बिना उत्तर के ही रह गया।

राजमाता ने पत्रो एव बस्तर के नेताओ तथा अन्य काग्रेसी सदस्यो द्वारा कुछ-कुछ वास्तविकता जानी। उनका मन जैसे एक विचित्र प्रकार की कडुआस से भर गया। काग्रेसी शासन और उसके न्याय के प्रति सहसा उनका मन अविश्वास से भर उठा। शाति मत्र के प्रतिपादक, अहिंसा के पुजारी भी क्या इस प्रकार के जघन्य कार्यो मे हाथ बटा सकते है। कहा गये सरदार पटेल द्वारा दिये हुये लोकतत्र के आश्वासन ? कहा गये वे रामराज्य के स्वप्न ? कहा गये वे उच्च सिद्धान्तो के बल पर देश को शासित करने के वचन ? वे सोचने लगी आखिर यह सब क्या है ? क्या इस काग्रेसी हाथी के दात खाने के और तथा दिखाने के और होते है। स्वय को इसी काग्रेसी शासन का एक अग पाकर ससद भवन मे इसी दल का प्रतिनिधित्व करते हुये वे इस बार ग्लानि से भर उठी। काग्रेसी शासन की पुलिस का यह साहस कि वे भोले भाले आदिवासियो और उनके नता पर इस प्रकार के जुल्म ढहा सके, उसके अत्याचारो की पराकाष्टा इस चरम सीमा को पहुँच जाये और फिर भी मुख्य मत्री की कुर्सी न हिले, देश का प्रधान मत्री उससे इस हत्याकाड के लिये उचित रूप से जवाब भी तलब न करे ?

कहा गये लोकतत्र के वे श्री लाल बहादुर शास्त्री जिन्होने रेल की एक दुघटना पर रेल मत्री का पद त्याग कर देश मे एक नवीन कीर्तिमान स्थापित किया था।

राजमाता के दया माया भरे मन मे इस दुदयनीय रोमाचकारी घटना ने अकुर जमा दिया एक अतदन्द का, एक उलझन का, एक शका का जिसका समाधान वे चाहकर भी नही कर पा रही थी। वे सोचने

लगी कि क्या सचमुच देश मे व्याप्त इस भ्रष्टाचार निरकुशता के परिषोषण मे ही उसकी सच्ची सेवा है ? क्या सभ्य, शात नागरिको और निष्ठावान देश सेवको की मर्यादा इस राज्य मे सुरक्षित है ? क्या उनका काग्रेस सस्था के साथ सहयोग अब भी आवश्यक है ? राजमाता का मन अतद्वन्द से भर सा गया और उनके प्रश्नो का उत्तर बस फिर उलझता ही गया। अहिंसा के पुजारियो की इस हिंसक वृति के प्रति उनका मन तिक्तकता से भर गया और एक प्रश्न, एक समस्या उनके सामने स्पष्ट हो उठी कि क्यो न इस सस्था से वे स्वय को तटस्थ करले ?



सोपान १७

पचमढी यूथ लीग अधिवेशन

सन् १९६६ के ज्येष्ठ का महीना था। मध्यप्रदेश का उत्तरी अचल धूप और लू से तप रहा था। सदानीरा चम्बल और नमदा की विशाल वेगवती धारायें अपना आचल समेटे क्षीण रेखा सी मद गति से प्रवाहित हो रही थी। इन दिनो न तो थी उनमे ओज भरी प्रफुल्लता और न थी उद्दाम गति। शात, स्निग्ध उनकी निर्मलिय धारायें निष्काम तन्वगी तपिस्वनी सी प्रतीत हो रही थी। ऐसी ही एक दुपहरी मे राजमाता, जयविलास प्रासाद मे बैठी धूप से तपती वसुधरा को देख रही थी। वायु की इस तडपन मे उन्हे न जाने क्यो आभास हो रहा था एक व्यथा भरी आशका का। वे आगामी मास विदेश यात्रा को जा रही थी—पुत्र की शिक्षा-दीक्षा सम्बन्धी व्यवस्था का निरीक्षण करने तथा कतिपय पारिवारिक समस्याओ को सुलझाने। वे तत्सबधित प्रश्नो पर अपने प्रासाद कार्यालय के अधिकारियो से विचार विमश कर रही थी कि टेलीफोन की घटी बज उठी। सचिव ने फोन उठाया और वार्तालाप कर जाना कि देहली से समाचार आया है कि आगामी सप्ताह पचमढी मे यूथ लीग का अधिवेशन है जिसमे प्रधान मन्त्री आ रही है तथा राज्य के समस्त ससद सदस्यो एव धारा सभा के सदस्यो को वहा पहुचने के लिये आग्रहपूएा निमत्रएा है। अन्य सदस्यो का भी विशेष अनुरोध है कि राजमाता भी उन दिनो

अवश्य पचमढी आवें। मुख्य मन्त्री स्वय इस अधिवेशन मे उपस्थित रहेगे तथा इन दिनो प्रदेश की राजनीति की चर्चा भी होगी क्योकि आगामी वष आम चुनावो के लिये दल का सगठित होना आवश्यक है।

राजमाता ने समस्या पर विचार कर सचिव से कहा कि देहली एव भोपाल मे साथी ससद सदस्यो एव विधान सभा सदस्यो को सूचित कर दिया जावे कि वे यूथ लीग के अधिवेशन के समय पचमढी पहुँच जावेंगी। ये वे दिन थे जब कि विरोधी दलो की बात तो अलग स्वय काग्रेस के अधिकाश मध्य प्रदेश के ससद सदस्य एव धारा सभाई मुख्य मन्त्री की स्वेच्छाचारिता एव निरकुशता के कारण अस तुष्ट थे। मत्रियो का सपक जनता से छूटता जा रहा था क्योकि उनके प्रवासो पर अकुश लगे हुये थे। उनके हाथ से महत्व का शासन कार्य निकलकर एक स्थान पर केन्द्रित हो गया था एव पुलिस अधिकारी शासन से प्राप्त सत्ता का सदुपयोग करने मे असमथ थे। बस्तर काड आदि के अत्याचारो से जहा एक ओर जनता एव विशेषकर उसके पिछडे वग सशकित थे वहाँ सामतवाद का बहाना लेकर शासन काग्रेस से उन राजा महाराजाओ को निकालने की गुप्त अभिसधि कर रहा था जो कि इस अराजकता और कुव्यवस्था का दबे स्वर से विरोध कर रहे थे। यह षडयत्र विशेषतया उन्ही राजपरिवारो के विरुद्ध था जो काँग्रेस की सक्षम नेताओ की जी हजूरी और उनका आख मीच कर समथन करने मे अपने को असमथ पा रहे थे। राजमाता की इस सदभ मे मुख्य मत्री मिश्र जी से अब तक चर्चा तो नही हुई थी किन्तु शनै शनै यह स्पष्ट होता जा रहा था कि मध्य भारत तो क्या ग्वालियर क्षेत्र के विषय मे भी अब वे राजमाता से कुछ भी पूछना अथवा विचार विमश करना उचित नही समझते है। ग्वालियर क्षेत्र से निर्वाचित एक मन्त्री ही इस क्षेत्र के भाग्य विधायक और मुख्य मन्त्री के मशीरे खास बन बैठे थे क्योकि वे मुख्य मन्त्री के सर्वाधिक विश्वस्त थे फिर भी शासन के विकास कार्यो मे यह क्षेत्र उपेक्षित था। जातिवाद का बोलबाला था

और पक्षपात की नीति जनत त्र पर कुठाराघात कर रही थी। असतोष शनै शनै प्रदेश के हर क्षत्र मे व्याप्त होता जा रहा था।

सतपुडा शैल शिखर पर स्थित मनोरम पहाडो की रानी पचमढी नैसर्गिक सौदय मे अपना सानी नही रखती। होशगाबाद के निकट नमदा को नमस्कार जब सतपुडा की शैल श्रेणिया नभ से मिलने क्षितिज का पास पहुँचने सी लगती है तो धरापर प्रकृति नटी का एक अनुपम सौदय बिखर जाता है। हरित मनोरम साल वृक्षो के सघन वन सर्पाकार वरण के दोनो ओर खडे यात्री का मन मोह लेते हे। पचमढी पहुचते-पहुचते ज्येष्ठ का आतप भी कार्तिक जैसी गुलाबी सर्दी मे परिवर्तित हो जाता है और पहाडी सैलानी व्यक्तियो के मन को स्फूर्तिमय, आल्हाद से भर देता है। राष्ट्रपति डा राजेन्द्र प्रसाद का यह प्रिय ग्रीष्म आवास भारत के इस मध्य भाग का एक अनोखा श्रृ गार है जहाँ प्रकृति ने मन भर कर सुषमा बिखेरी है। इसी पचमढी मे यूथ लीग का अधिवेशन देखने और उसमे भाग लेने उन दिनो उमड पडी थी ससद सदस्यो की मत्रियो की, धारा सभाइयो की एव प्रदेश के युवक नेताओ की भीड। इसमे अपना सहयोग देने आई भारत की प्रधान मत्री श्रीमती गाधी। प्रदेश के नेताओ और मुख्य मन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र के निमत्रण पर। अधिवेशन मे भाग लेने राजमाता भी पहुची। बैठकें प्रारम्भ हुई प्रधानमन्त्री की अध्यक्षता मे। जनता ने सुना और जाना कि स्वागत भाषण हुये, प्रदेश की राजनतिक चर्चा हुई और समस्त श्रोताओ के समक्ष भाषण करते हुये मुख्य मन्त्री ने शायद कहा कि देश की सच्ची स्वतन्त्रता का अर्थ अब होना चाहिये सामतवाद का तिरस्कार और दमन। युगो के सघर्ष के पश्चात् देश ने सामतवाद की बेडी को इनकी लोह श्रृ खलाओ को तोड कर स्वय को मुक्त किया है और अब आजादी की प्रवर्तक काग्रेस को इन सामतो से किसी प्रकार का लगाव नही रखना चाहिये उनसे भी नही जो आज लोकतन्त्र की दुहाई देते हुये ससद अथवा धारा सभाओ मे बैठते हैं क्योकि ये

राजे महाराजे कभी भी लोकतन्त्र को हृदय से अपना नही सकते । वे तो निरकुशता के परिपोषक है । लोकतन्त्र तो इनके लिये एक अभिनय मात्र है आदि आदि । धारा प्रवाह भाषण चलते रहे और कुछ व्यक्तियो ने करतल ध्वनि कर इस पर साधुवाद भी दिये । प्रधान मन्त्री ने भी शायद यह सब सुना और राजमाता ने भी । श्रोताओ की की दृष्टि अचानक राजमाता पर जाकर स्थिर हो गई । स्पष्ट था कि इस भाषण का मुख्य शिकार वे ही थी तथा उनके जनतन्त्र के विश्वास पर, उनकी देशभक्ति के प्रति नेक-नियती पर इस प्रकार के भाषण एक कठोर व्यग और आघात थे । इस सदिग्ध वातावरण मे जबकि देश भक्ति और जनसेवा की नियत पर ही दल के नेता द्वारा सदेह किया जाता हो किसी भी सत्य प्रिय व्यक्ति का शात रहना तथा काय करना असम्भव हो जाता है । अकारण के इस तिरस्कार से राजमाता का मुख क्रोध और क्षोभ से लाल हो उठा । अधिकाश श्रोताओ ने व्यग से उनकी ओर देखा और उनमे फुसफुसाहट प्रारम्भ हो गई । स्थिति विषम थी । राजमाता इस कटु व्यग को पी रही थी, इस विष को हलक मे उतार रही थी क्योकि वे शब्द कहे थे उस व्यक्ति ने जो उनकी ही कृपा की याचना कर, एक दिन उनके ही द्वारा समर्थित होकर उत्कर्ष की सीढी पर चढ सका था । इस अशोभनीय चर्चा को सुनकर उन्हे अत्यधिक सताप हुआ ।

जनता की सच्ची सेवा की भावना को लेकर पूण निस्वाथ भावना से वे राजनीति के क्षेत्र मे आई थी और यह भी सभव है कि सरलता-वश उनसे कुछ त्रुटिया भी हो गई हो किन्तु उनकी जन सेवा की नियत पर आक्षेप उन्हे चुभ सा गया । सदैव का शात स्वभाव क्षुब्धता से भर सा गया । जिसका फल था मानसिक सताप । अधिवेशन समाप्त हुआ और कतिपय ईमानदार श्रोताओ के साथ राजमाता मुख्य मत्री श्री मिश्र जी से मिलने गई । स्पष्ट शब्दो मे उन्होने, अपने इस तिरस्कार और अपमान का उनसे कारण पूछा और कहा कि हम लोगो को आपने यह

क्या प्रमाणपत्र एक दम दे डाला तो उत्तर मिला कि इस प्रकार की कोई भी अशोभनीय बात भाषण मे नही कही गई। शायद राजमाता के मन में भ्रम का भूत बैठा है जो उनसे इस प्रकार की कल्पना कराया करता है। शिष्टता के वेश मे यह कैसा उपालभ था ? स्वय के कानो पर कौन अविश्वास करता ? प्रदेश के मुख्य मत्री का यह नवीन किन्तु अशुचिपूर्ण रूप देखकर राजमाता स्तभित रह गई। सत्य की ऐसी हत्या से और स्वभाव की अशुचिता से उनका सरल मन विरक्त हो उठा। मानव स्वभाव का यह कलुषित चित्र उन्हे बहुत ही अरुचिकर प्रतीत हुआ। वे मौन ही रहकर वापिस कैम्प मे लौट आई। उन्हे स्मरण हो आई महाकवि तुलसी की ये पक्तिया —

"झुठई लेना झुठई देना,
झूठई भोजन झूठ चबेना।
बोलहि मधुर बचन जिमि मोरा,
खाहि महा अहि हृदय कठोरा।
वयरू अकारण सब काहू सो।
जाकर हित अनहित ताहू सो।"

'सत तुलसीदास'

अगले दिन फिर चर्चाऐ हुई किन्तु समस्या का निदान न मिला। कुछ मास पश्चात आने वाले चुनावो को लेकर प्रधान मन्त्री के समक्ष विस्तृत वार्तालाप भी हुआ। राजमाता ने कहा कि पूर्व ग्वालियर क्षेत्र, के व्यक्तियो से वे परिचित है और उनकी इच्छा है कि चरित्रवान, देश प्रेमी एव सच्चे देश-सेवक ही काग्रेस द्वारा मनोनीत हो तो जनता के सन्मुख काग्रेस का प्रतिबिम्ब सुन्दर एव विश्वसनीय आवेगा। कतिपय सदस्यो द्वारा उनकी इस बात का समर्थन किया गया और नेताओ ने उन्हे आश्वासन दिया कि आगामी चुनाव के हेतु दिये जाने वाले काग्रेस के टिकटो का मध्य भारत क्षेत्र के लिये राजमाता से परामर्श करके ही

निरणय किया जायेगा । राजमाता ने कहा कि वे अगले मास विदेश यात्रा को जा रही है तथा वहा से लौटकर इस सम्बन्ध मे अपना पूरण सहयोग मुख्य मन्त्री एव काग्रेस हाई कमान्ड को प्रदान करेंगी ।

पचमढी अधिवेशन समाप्त हो गया और राजमाता वापिस बम्बई लौट गई । वापिस लौटते समय उनका मन खेद और ग्लानि से भरा हुआ था । उनका मन विद्रोह कर रहा था इस अशोभनीय अरुचिकर असत्य के प्रति । उनका हृदय दुखित था क्योकि लोकतन्त्र के उनके विश्वास पर किसी ने कुठाराघात किया था और उनकी जनसेवा की नियत पर उसकी सत्यता पर सन्देह किया था । उनके मन मे रह-रह कर प्रश्न उठने लगा था कि क्या वे अब भी ? अब भी क्या वे इस प्रकार के काग्रेस के करणधारो का साथ दे ? मुख्य मन्त्री की स्वेच्छाचारिका ने एव बस्तर के हत्याकान्ड ने इस अतर्द्वंद को और भी बढा दिया । इसका अन्त अब उन्हे कही भी दृष्टिगोचर न होता था । इसी अन्तद्वद से भरे मन को लिये वे अपनी यूरोप की यात्रा को रवाना हो गई ।

जिस अन्तर्द्वंद का बीज उनके मन मे बस्तरकाड ने आरोपित किया था वह अब पचमढी मे प्राप्त इस अप्रत्याशित कटु अनुभव से शनै शनै प्रस्फुटित होने लगा ।

— o —

सोपान १८

ग्वालियर छात्र आन्दोलन

सितम्बर सन् १९६६ का प्रथम सप्ताह था। अपनी यूरोप यात्रा से वापिस आकर राजमाता बम्बई मे वर्ली स्थित समुद्र महल मे ठहरी हुई थी। राजकुमारी उषा राजे का स्वास्थ्य इन दिनो उनकी चिन्ता का कारण बना हुआ था। महाराज माधवराव एव महारानी माधवी राजे भी बम्बई मे राजमाता के साथ थे। इसी मास के तीसरे सप्ताह मे राजमाता के निमन्त्रण पर भारत सरकार के रक्षा मन्त्री श्री यशवन्तराव चव्हाण उज्जैन मे पधारने वाले थे जहा नगर के मध्य मे स्थित गोपाल मन्दिर मे उनके नागरिक स्वागत का आयोजन किया जा रहा था। उज्जैन के नागरिक एव वरिष्ठ जन इस समारोह के आयोजन मे सलग्न थे। स्थिति यह थी कि राजमाता की ओर से जब सरदार आँग्रे ने रक्षा मन्त्री श्री चव्हाण को देहली जाकर उज्जैन नगर मे पधारने का निमन्त्रण दिया और श्री चव्हाण ने जब उसे स्वीकार भी कर लिया तो यह बात प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र को कुछ भली न लगी। सभवतया उनके अ ह को राजमाता के इस निमन्त्रण से कुछ ठेस सी लगी और उन्होने इस आयोजन से अपना सहयोग अचानक ही खींच लिया।

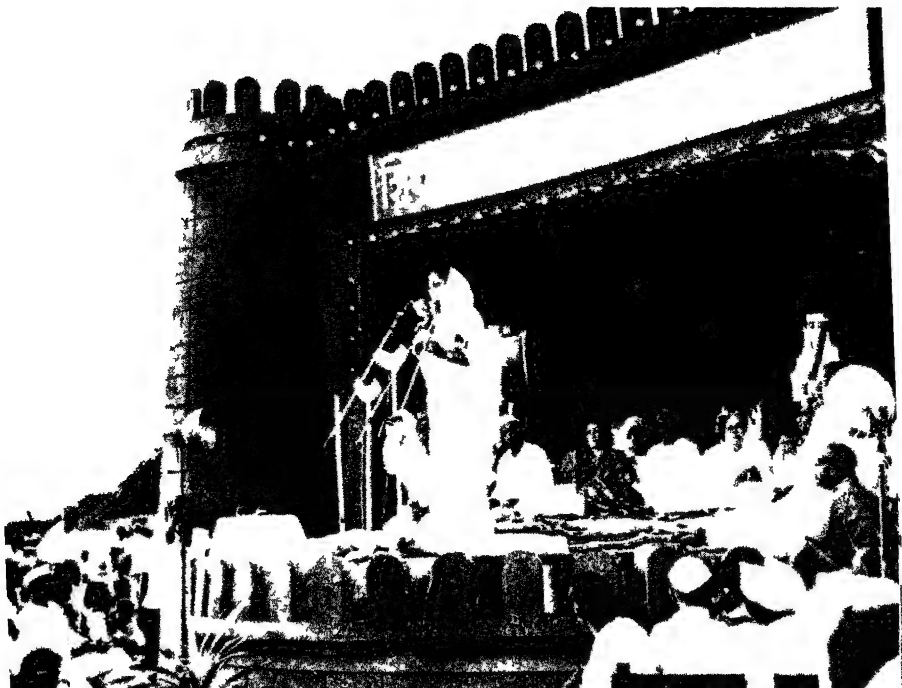
सहसा १७ सितम्बर को फोन द्वारा राजमाता को उज्जैन एव ग्वालियर से यह समाचार प्राप्त हुआ कि १६ सितम्बर को ग्वालियर

मे छात्रो के एक जुलूस पर पुलिस द्वारा गोली चलाई गई जिसमे कई छात्र हताहत हुये है तथा एक व्यक्ति मर भी गया है। पुलिस, विद्यार्थियो को उनके घरो मे घुस घुस कर पकड रही है तथा थाने मे बन्द कर उनकी पिटाई की जा रही है। नगर का वातावरण क्षुब्ध है, जनता आशकित है। दूसरे दिन उज्जैन से पुन फोन आया जिसमे अनुरोध था कि ग्वालियर की ससद सदस्या होने के नाते इस सकट के समय राजमाता की उपस्थिति ग्वालियर मे परम आवश्यक है। राजमाता अपने कतव्य के प्रति पूर्णतया सजग थी एव ग्वालियर छात्र आन्दोलन की घटनाओ का थोडा बहुत विवरण वे अब पत्रो मे पढ भी चुकी थी किन्तु सहसा स्थिति इतनी विषम हो उठेगी और छात्रो पर पुलिस द्वारा इस प्रकार के अत्याचार किये जावेंगे इसका आभास भी उन्हे न था। इधर राजकुमारी उषा राजे की अस्वस्थता के कारण तथा यूरोप प्रवास से लौटने के उपरान्त पारिवारिक समस्याओ एव प्रबन्ध सम्बन्धी उलझनो को सुलझाने मे वे व्यस्त थीं। अब एक ओर तो थी राजकुमारी की अस्वस्थता जो उन्हे बम्बई मे रहने को बाध्य कर रही थी और दूसरी ओर थी कतव्य की पावन पुकार। उनका मन बार बार कह रहा था कि ग्वालियर मे छात्र समुदाय की इन सकट की घडियो मे उनकी ग्वालियर नगर मे उपस्थिति अधिक न सही तो कम से कम छात्रो के घावो पर तो शीतल मरहम लगा ही सकती है चाहे पुलिस के अत्याचारो से वे उनकी रक्षा न भी कर सके। सत्ता के मद मे मस्त, निरकुशता के पथ पर अग्रसर कांग्रेस के शासन से शायद अब उन्हे लोहा लेना ही होगा। आखिर ग्वालियरवासियो की वे मा है, राजमाता है और "मा" के बालक सकट अवस्था मे उनका स्मरण करें तो "मा" को उनके समीप पहुचना ही होगा। वैसे भी ग्वालियर क्षेत्र की वे ससद सदस्या हैं तथा उन्हे जनता के साथ सकटो को झेलना चाहिये। राजमाता ने अब यह निश्चय कर लिया कि श्री चव्हाण रक्षा मन्त्री के स्वागत सत्कार के लिये वे पुत्र को उज्जैन भेजेगी तथा वे

स्वय ग्वालियर जाकर छात्रो का साथ देगी। मुसीबत के इस तूफान मे वे स्वय को झोक देंगी। भगवान का स्मरण कर तथा अस्वस्थ राजकुमारी के परिचर्या की बम्बई मे उचित व्यवस्था कर एव पुत्र महाराज माधवराव को उज्जैन जाने का आदेश देकर राजमाता ग्वालियर के लिये रवाना हो गई।

२० सितम्बर सन् १९६६ को नगर भर मे यह समाचार बिजली की तरह फैल गया कि बम्बई से राजमाता नगर मे आ गई हैं। एक विशाल भीड उनके दर्शन करने तथा अपनी विपत्तियो को बताने के लिये जयविलास प्रासाद मे जा पहुची। ५० छात्र प्रतिनिधियो के मण्डल ने राजमाता के पास उसी सध्या को जाकर अपनी विपत्तिया एव अपनी दुखभरी कहानी उन्हे सुनाई। विद्यार्थियो के नेताओ ने कहा कि वे पुलिस की बबरता से बचने के लिये छिपे छिपे फिर रहे हैं। पुलिस उन्हें पकडने के लिये तरह तरह के जाल बिछा रही है। घरो के अन्दर जाकर छात्रो को पकड पकड कर निकाला जा रहा है और थाने मे जबरन बन्द करके उन्हे पीटा जा रहा है। एक छात्र ने कमीज उतार कर अपनी घावो, भरी-सूजी हुई पीठ राजमाता को दिखाई जिसे देख कर उनकी आखो मे आसू भर आये। छात्रो का रोना बिलखना सुनकर उनका कोमल मन त्रस्त हो उठा और फिर भूमि पर पडे आहत बालक को स्वय उठाकर वे बोली "शेर बहादुर बच्चे, इस प्रकार रोते बिलखते नही है। उठो, मैं तुम्हारे साथ हू। देखती हू मा के सरक्षण मे आये हुये बच्चो का कोई क्या बिगाड सकता है। इस अन्याय का मैं प्रतिकार करूगी, इस दमन के विरोध मे, मैं आवाज उठाऊगी। तुम मेरे बच्चे हो। बहादुर बनो।"

प्रासाद का बरामदा उन क्षणो मे राजमाता की जय जयकार से काप उठा। सबल युवको की टोली आसू पोछकर उठ खडी हुई। क्षत्राणी मा से सम्बल और साहस प्राप्त कर उसमे अदम्य शक्ति आ गई। राजमाता ने पूरी घटना जानने की इच्छा प्रगट की और प्रति-



कोल्हापुर मे आयोजित प्रात स्मरणीय महाराजा शिवाजी की जयती के अवसरपर जनता के समक्ष भाषण देती हुई राजमाता ।

निधियो के उस मण्डल से विस्तृत विवरण प्राप्त कर उन्होने सान्त्वना के शब्दो के साथ छात्र समुदाय को बिदा किया। छात्र प्रतिनिधियो ने घटना का ब्यौरा देते हुये जो स्थिति बनाई उसका साराश इस प्रकार था।

१२ सितम्बर सन् १९६६ की रात्रि को पोलीटेकनिक विद्यालय के छात्रावास मे रहने वाले कुछ छात्रो ने देखा कि कालेज भवन का मुख्य द्वार एक ट्रक वाले ने टक्कर देकर तोड दिया है। ट्रक पास ही खडा था। उन्होने ट्रक वाले से इस दुर्घटना का कारण पूछा तो शराब से धुत्त उसने गाली-गलौच प्रारम्भ कर दी। छात्रो की टोली उसे पकडकर जब थाने ले जाने लगी तो उसने हाथापाई कर अपने को छुडा लिया। छात्रगण उसकी शिकायत करने थाने मे जा पहुँचे। थाने मे उन्होने स्टेशन आफिसर से मिलने की माग की। रात्रि के समय आराम मे व्याघात, थानेदार साहब को रुचिकर न हुआ किन्तु हो हल्ला सुनकर उन्हे विवश होकर जब बाहर आना ही पडा तो वे आते ही छात्रो पर बिगड पडे और लगे डाटने। स्टेशन आफिसर श्री गिल का यह असौजन्यपूर्ण व्यवहार छात्रो को अखरा और उन्होने कहा कि आप एक पब्लिक सर्वेंट यानी "जनता के सेवक है" आपका यह कतव्य है कि आप निष्पक्ष रूप से यह जाच करें कि गलती किसकी है ? भवन का मुख्य द्वार टूटा पडा है, ट्रक वाले ने उसे तोडा है, जिसको हम लोगो ने मौके पर पकड लिया है। आप भवन के समीप चलकर स्वय तफतीश करले। अद्ध रात्रि के समय छात्रो के मुख से यह सुनना कि उन्हे क्या करना चाहिये और क्या नही थानेदार साहब को भला न लगा। कतव्य की व्याख्या इन छोकरो के मुख से सुनकर वे बौखला उठे और दो चार छात्रो को पकड कर थाने मे रात भर बिठा रखने के आदेश वे दीवानजी को देकर पुन आराम करने चल दिये। अब टोली के एक दो छात्र मौका देखकर भाग खडे हुये और छात्रावास मे जाकर अपने साथियो को जगाकर कहा कि उनके चार पाच साथी थाने मे बन्द कर

दिये गये हैं। सबने मिलकर विचार किया कि थाने जाकर साथियो को छुडाया जावे। थानेदार का यह अन्याय सहन करना ठीक नही। साथियो ने कोई अपराध तो किया ही नही है जिसके लिये वे रात भर थाने मे बन्द रहें। छात्रो की टोलिया अब तक थाने मे जा पहुची और उन्होने बहस तथा शोर गुल कर अपने बन्द साथियो को मुक्त करा लिया। थानेदार व सिपाही चिल्लाते ही रहे किन्तु क्षुब्ध छात्रो की भीड के आगे वे विवश थे। जो छात्र रात्रि को थाने मे बन्द किये गये थे उन्होने प्रात काल कालेज के अन्य साथियो को एकत्रित कर लिया तथा शनै शनै छात्रो की एक विशाल भीड एकत्रित हो थानेदार श्री गिल से माफी मगवाने के लिये थाने पर जा पहुँची।

छात्रो की अन्य टोलिया १३ सितम्बर को वरिष्ठ अधिकारियो के पास गई और थानेदार को उसकी अकमण्यता एव अशिष्टता के लिये निलबित करने की माग की तथा कहा कि वे अपनी गलती के लिये माफी मागे। सत्ता के मद मे मस्त अधिकारियो को लडको की यह माग भला कब स्वीकार होती। खीचतान बढती गई और अधिकारी किसी के इशारे पर, अपनी जिद्द पर कायम थे और छात्रगण अपनी बात पर। छात्रो ने जुलूस निकाले, जिलाधीश के, कमिश्नर के, पुलिस वरिष्ठ अधिकारियो के पास अपनी मागें लेकर गये किन्तु शासन, थानेदार को निलबित करने के लिये तैयार न हुआ। दफा १४४ घोषित कर दी गई और छात्रो ने उसकी अवज्ञा कर जुलूस निकाला जिसका उत्तर शासन ने लाठी चाज करा के दिया। छात्र बडी सख्या मे हताहत हुये। भोपाल मे धारा सभा का उन दिनो अधिवेशन चल रहा था छात्र नेता वहा दौडकर अपनी बात कहने गये पर वहा उन्हे मिली केवल झिडकन और डाट डपट। थानेदार कैसे माफी माग सकता है वह तो सत्ता का प्रतीक है? और उसे निलम्बित करना तो बहुत बडा अन्याय होगा? थाने मे बन्द कर उनकी पिटाई की गई उन्हे चुन-चुन कर सीखचो मे बन्द कर दिया गया।

अब १६ सितम्बर का दिन आया। नगर मे दोपहर को छात्रो का एक वृहत जुलूस निकल रहा था कि पुलिस के सशस्त्र दस्तो ने जयेन्द्रगज के समीप उसका माग अवरोध कर लाठी चाज किया। और फिर ३०३ राइफलो से गोलियो की एक बाढ दागी। कुछ क्षणो को भगदड मची। घायला को उठाकर अस्पताल भेजा गया पर भीड तितर-बितर न हुई। इसी बीच नगर के असमाजिक तत्वो की बन आई उन्होने लूट-मार तोड-फोड प्रारम्भ कर दी। टेलीफोन बूथ जला दिया गया मार्ग पर लगी ट्यूब लाइटें तोडी गई। भीड पर अनुशासन और नियत्रण अब कठिन था। भीड अब आगे बढती ही गई। हाईकोट भवन से आगे निकल कर जैसे ही जिन्सी कुये के समीप पहुँची कि सशस्त्र पुलिस के बहुत बडे दल ने उसे रोक लिया। मजिस्ट्रेट ने अपने तितर-बितर के आदेश की भीड द्वारा अवहेलना देखकर फायरिंग का आदेश दे दिया। गोलियो की गडगडाहट भीड पर छा गई और एक युवक श्री श्यामराव अपनी छाती पर गोलियाँ खाकर भूमि पर गिर गया और उसके प्राण पखेरू उड गये। युवक के रक्तिम बलिदान से भूमि लाल हो उठी। पुलिस ने लाश उठवाकर अस्पताल भिजवा दी तथा भीड मे से छात्र नेताओ को पकड-पकड कर पुलिस ने लारी मे बन्द कर थाने भेजना प्रारम्भ कर दिया। घायल व्यक्ति एम्बूलेंस गाडी मे भरकर अस्पताल ले जाये गये और नगर मे कर्फ्यू की घोषणा कर दी गई। छात्रगण शासन के इस तीव्र आघात से तिलमिला गये। उनके नेता अब छात्र सघष समिति का सचालन गुप्त रूप से करने लगे। कहा जाता है कि इन दिनो सभ्रान्त परिवारो मे घरो के अन्दर जा जाकर पुलिस ने उनके नौनिहालो को पकडा और अपमानित किया। गली-गली मे छोटे बच्चो की टोलिया "मिश्रजी मुर्दाबाद" के नारे लगाते हुये घूम रही थी।

१७ सितम्बर, सन् १९६६ को भोपाल मे धारा सभा मे ८ स्थगन प्रस्ताव विरोधी दलो द्वारा उपस्थित किये गये जिनका उत्तर मुख्य मत्री ने यह कह कर दिया कि थानेदार को निलबित नही किया जा सकता और

फायरिंग स्थिति को काबू मे करने के लिये किया गया था । यदि छात्रो ने माफी नही मागी तो स्कूल कालेज अनिश्चित काल के लिये बन्द कर दिये जायेंगे । शासन की इस हठ को देखकर तथा "जबर मारे और रोने न दे" वाली कहावत चरितार्थ पाकर समस्त राज्य का छात्र जगत क्षुब्ध हो उठा । उज्जैन मे आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो शान्त छात्रो की भीड पर माधव कालेज के अन्दर जाकर पुलिस ने हमला कर दिया और छत्रो के साथ प्राचार्या पर भी हाथ छोड दिये । हिन्दी के प्रकाड विद्वान एव उपकुलपति श्री नद दुलारे वाजपेयी और प्राचार्या श्री शिवमगल सिंह सुमन ने पुलिस की बबरता की घोर निन्दा की किन्तु उनकी सुनता कौन था ? छात्र अपने इस अपमान को देखकर खून का घूट पीकर रह गये थे । ग्वालियर एव उज्जैन के समाचार पाकर विदिशा, रतलाम, मदसौर, गुना, शिवपुरी मे अब छात्रगण उत्तेजित हो गये और उनका पुलिस के साथ सघष प्रारम्भ हो गया । १९ सितम्बर को भोपाल मे धारा सभा मे दो घन्टो की बहस का उत्तर देते हुये मुख्य मत्री ने कहा कि अब तक छात्र आन्दोलन मे २८१ व्यक्ति घायल हो चुके है जिसमे से ३४ अस्पताल मे हैं ।

२० सितम्बर को राजमाता ने छात्रो एव अन्य नेताओ के मुख से यह सब विवरण सुना । उन्हे स्थिति की विषमता और शासन की अक्षमता एव दमन नीति की जानकारी प्राप्त कर बहुत दुख हुआ । सबसे बुरी प्रवृत्ति जो शासन की पुलिस मे इन दिनो घर कर गई थी वह थी छात्रो से बदले की भावना । जान-बूझकर छात्र नेताओ को राज्य के विभिन्न स्थानो पर सताया जा रहा था तथा उन पर दमन चक्र चलाया जा रहा था । कानून और शान्ति के नाम पर उनके ऊपर अत्याचार किये जा रहे थे । ऐसा प्रतीत होता था कि शासन की उच्च सत्ता अब छात्रो से बदला लेने के लिए आतुर थी । राजमाता छात्रो के साथ अस्पताल गई और उनके घायल साथियो को सान्त्वना दी । कई छात्र नेताओ के सुचारु उपचार की व्यवस्था राज प्रासाद मे की गई

तथा उनकी सेवा सुश्रुषा के लिए आवश्यक धन का प्रबन्ध किया गया। तन, मन, धन से राज-परिवार से सम्बन्धित व्यक्ति छात्रो की सेवा मे लग गये तथा उनके हरे घावो पर मलहम लगाया गया। राजमाता ने शासन से माग की कि ग्वालियर गोली काण्ड की न्यायिक जाच किसी उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से कराई जाये तथा छात्रो को अब सताया न जाये। किन्तु शासन ने उनकी इस माग को उपेक्षा की दृष्टि से देखा। राजमाता ने पुलिस की बबरता और अत्याचार की ओर मुख्य-मन्त्री का ध्यान आकृष्ट किया और उन्होने छात्र नेताओ को मन्त्रियो से मिलने के लिए भोपाल भेजा ताकि वे सही स्थिति से मन्त्रीगणो को परिचित करा सके और अपनी मागो के औचित्य को स्वय समझा सके। छात्रो का शिष्ट मण्डल भोपाल गया कि तु मुख्यमन्त्री ने उनसे मिलने तक से इन्कार कर दिया। उन्होने सम्भवतया किन्ही मु ह लगे मन्त्रियो के कथन पर राजमाता के पास भी सन्देश भेज दिया कि इस सम्बन्ध मे उन्हे स्थिति का पूण ज्ञान है और वे किसी का भी अनुरोध इस समय मानने की स्थिति मे नही हैं तथा वे अपेक्षा करते हैं कि राज-माता इस विषय मे हस्ताक्षेप न करेंगी। ये वही मुख्यमन्त्री थे जोकि अपने चुनाव के समय राजमाता के पास एक दिन उनके सहयोग की माग करने याचक के रूप मे सरदार आग्रे की सिफारिश लेकर आये थे और आज उन्हे राजमाता से मिलने तथा उनकी न्यायोचित बात तक सुनने को समय न था। ऐसा सूखा उत्तर राजमाता की आशा के विपरीत था। दल नेता के अह की इस भावना पर उन्हे आश्चय हुआ।

उधर माधवराव महाराज भारत के रक्षामन्त्री श्री चव्हाण की अगवानी एव सूय मन्दिर योजना के समारोह के हेतु उज्जैन पहुचे तो उन्हे एक नवीन स्थिति का सामना करना पडा। सूय मन्दिर की योजना के उद्घाटन के लिए उज्जैन आने का निमन्त्रण सरदार आग्रे ने देहली मे स्वय जाकर राजमाता की ओर से श्री चव्हाण को दिया था और

यह बात प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मिश्र को न भाई थी। ग्वालियर के छात्र आन्दोलन की प्रतिक्रिया स्वरूप आशक्ति छात्र उपद्रव के नाम पर उज्जैन नगर मे भी धारा १४४ की घोषणा रक्षामन्त्री के आगमन के एक दिवस पूव करवा दी गई थी जिसके फलस्वरूप अब कोई सभा अथवा शोभा-यात्रा उज्जैन नगर मे सम्भव न थी। उज्जैन की जनता अपने आयोजन को भग होते देखकर क्षुब्ध हो उठी किन्तु युवक महाराज का यह आग्रह था कि कानून को किसी भी दशा मे भग न किया जाये। दूसरे दिन ही नगर के माधव महाविद्यालय मे भी पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया जिसके फलस्वरूप छात्रगण हताहत हुए। महाराज माधवराव स्वय अस्पताल जाकर छात्रो से मिले तथा उन्हे सान्त्वना दी। अब सम्पूण समारोह स्थगित कर दिया गया और वे फिर असुविधा के लिए स्वय क्षमा याचना के हेतु रक्षा मन्त्री श्री चव्हाण से मऊ जाकर मिले तथा स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए क्षमा याचना की। फलस्वरूप रक्षा मन्त्री मऊ से ही फिर वापिस देहली लौट गये।

उज्जैन नगर की स्थिति फिर और भी विषम होती गई और युवक महाराज अब मा के समीप ग्वालियर लौट आये।

इधर राजमाता ने जब देखा कि सम्पूर्ण विरोधी पक्षकी एक स्वर मे की हुई चीख-पुकार तथा छात्रो की न्याय की माग भी मुख्यमन्त्री की सहानुभूति को जाग्रत न कर पाई एव उनके स्वय के अनुरोध तथा आग्रह भी छात्रो को मुख्यमन्त्री से एक भेट तक दिलाने मे असमर्थ रहे तो उन्होने निराश होकर देहली की ओर मुख मोडा। छात्रो के शिष्टमण्डल को लेकर वे देहली गई तथा उन्हे भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी, गृहमन्त्री एव रक्षामन्त्री आदि से मिलवाया। देहली मे नेताओ ने राजमाता के अनुरोध पर छात्रो के शिष्टमण्डल से भेट की। उन पर हो रहे अत्याचारो की कहानी सुनी और उनकी मागो के औचित्य को भी समझा किन्तु प्रबल प्रतापी मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री मिश्र जिन्होने इन्दिराजी को प्रधानमन्त्री के पद पर

आसीन करने मे असीम सहयोग दिया था, के विरुद्ध भला अब किसका साहस था जो कुछ भी आश्वासन देता।

उधर विधान सभा मे काम रोको प्रस्ताव के उत्तर मे उपगृहमन्त्री श्री उइके ने पुष्टि की कि रतलाम मे छात्र-पुलिस सघष हुआ, मऊ के राजेश्वरी विद्यालय मे, चन्देरी मे, अशोकनगर मे छात्रगण बडी सख्या मे हताहत हुए किन्तु श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा, श्री चन्द्र प्रताप तिवारी, श्री सुन्दरलाल पटुआ, श्री कुजीलाल दुबे द्वारा उनकी माग अस्वीकार कर दी गई। ग्वालियर मे काग्रेस के ही उत्तरदायी नेताओ ने यह प्रेस वक्तव्य दिया कि यह सत्य है कि पुलिस की ज्यादतियो का शिकार ग्वालियर के छात्रगण हुए है और जाच करने पर उन्हे यह भी पता चला कि पुलिस ने उन व्यक्तियो को जिनका सम्बन्ध घटनाओ से नही था, घर से बुला-बुलाकर थाने मे परेशान किया है और पीटा है। किन्तु फिर भी काग्रेस के शासनाध्यक्ष श्री मिश्र के कानो मे जू न रेंगी और उन्होने इन निरकुश अन्यायपूर्ण कृत्यो के लिए न तो पुलिस अधिकारियो की भत्सना की और न उन्हे दडित ही किया। इसका स्पष्ट अथ जनता ने यह लगाया कि शासन द्वारा पुलिस को बढावा दिया जा रहा है और शासन बदले की भावना से दमन का चक्र चला रहा है। इस अन्याय के प्रतिकार हेतु जबलपुर, दमोह, सिवनी, साहोर आदि महाकौशल के कालेजो मे भी छात्र-पुलिस सघष हुए। विन्ध्यप्रदेश भी अब अछूता न रहा और छतरपुर सतना मे भी सघर्ष प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। छात्र दल सारे राज्य मे एक ओर था और शासन की सारी दमन मशीन दूसरी ओर। नगी छाती निकाले छात्र पुलिस की बन्दूको के सामने तने खडे थे। ब्रिटिश शासन के रोमाचकारी हिंसक अत्याचार भी आज अहिंसा के पुजारी महात्मा गाधी की काग्रेस राज्य मे फीके पड गये थे। मुख्यमन्त्री का अब देहली से बुलावा हुआ और उनकी अनुपस्थिति मे वित्तमन्त्री श्री शभूनाथ शुक्ल ने विधानसभा मे १७ कामरोको प्रस्ताव के उत्तर मे कहा कि यह सत्य है कि राज्य के विभिन्न

स्थानो मे सघष हो रहे है तथा छात्रगण घायल भी हुये है किन्तु स्थिति को काबू मे करने का शासन पूरा प्रयत्न कर रहा है। विरोधी दलो ने सयुक्त रूप से शासन के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव रखने का नोटिस विधान सभा अध्यक्ष को दिया और उधर शासन ने घोषणा कर दी कि ग्वालियर के छात्र आदि २६ सितम्बर तक अपनी अपनी कक्षाओ मे नही पहुचे तो यहा की समस्त शिक्षा सस्थाए पूरे सत्र के लिये बन्द कर दी जावेगी। इस घोषणा का छात्रो पर कोई प्रभाव नही हुआ और उधर शासन ने भी स्कूल कालेज बन्द करने की आज्ञा दे दी। राजमाता ने विद्यार्थियो को आश्वासन देते हुए कहा कि वे अपना आन्दोलन पूरा अहिंसा रूप मे चलावे तथा नगर के असामाजिक तत्वो से अपने दलो को अलग कर लें ताकि वातावरण हिंसामय न हो।

२६ सितम्बर को जबलपुर मे भीषण छात्र-पुलिस सघष हुआ और ४८ घटो के लिये कर्फ्यू लगाना पडा। कटनी, दुग, जगदलपुर मे भी सघर्ष का जोर बढा और कम्युनिस्ट नेता श्री होमी दाजी ने राजमाता के अनुमोदन मे गोलीकाड की न्यायिक जाच की माग की। जीवाजी विश्व विद्यालय का दीक्षान्त समारोह जिसमे भारत सरकार के शिक्षा मन्त्री श्री छागला आ रहे थे स्थगित कर दिया गया और छात्र आन्दोलन चलता ही रहा। पुलिस की ज्यादतियो के कारण छात्र तो परेशान थे ही अब उसकी बबरता और अकर्मण्यता की शिकार ग्वालियर की ग्रामीण जनता भी हुई जैसे राजमाता का न्यायिक माँग का अनुमोदन करना भी अब पाप था। ग्वालियर जिले के हरसी बाध के निकट एक दिन प्रात काल गाववासियो ने सालमपुर के निकट के निवासी बुद्धा जाटव का शव देखा जिस पर मारपीट के चिन्ह स्पष्ट थे। जिलाधीश ने जनता की माग पर जब अपने विशष्ट अधिकारी श्री सोनी से इसकी जाच कराई तो श्री सोनी ने घटनास्थल पर जाकर छुपाये हुये ४ वर्षीय बालक प्रकाश को चीनोर पुलिस चौकी के अन्दर से बरामद किया और इस बालक ने जो आखो देखा हाल कहा उससे प्रमाणित हुआ कि बुद्धा

जाटव की मृत्यु का उत्तरदायित्व पुलिस पर था। इस गभीर आरोप मे करहैया थाने के थानेदार श्री चन्दनसिंह को जिलाधीश ने निलबित कर दिया और ग्वालियर मे धारा १४४ की अवधि १५ दिन के लिये और बढा दी गई।

अक्टूबर का महीना आ गया और छात्र आन्दोलन ने शात होने का नाम न लिया। ग्वालियर की समस्त शिक्षा सस्थाये बद थी और छात्रो के अभिभावक भी इस कारण परेशान थे। छात्रो की टोलिया जयविलास प्रासाद मे प्राय नित्य ही राजमाता के पास जाकर अपनी विपत्तिया कहती थी और पुलिस द्वारा उनके नेता अब भी परेशान किये जा रहे थे। राजमाता का इन दिनो प्रयत्न था कि शिक्षा सस्थाये शीघ्र खुले ताकि छात्रगण अपना आन्दोलन समाप्त कर, विद्या अध्ययन मे सलग्न हो जावें। उनके सकेत पर जीवाजी विश्वविद्यालय की कार्य-कारिणी ने प्रस्ताव पारित किया कि छात्रो के अभिभावक प्राचार्यों से मिलकर स्कूल कालेजो मे अपने बच्चो को भेजने का प्रयत्न करे किन्तु तभी आ गया भोपाल से शासन का नवीन आदेश कि जब तक सस्थाओ के बहुसख्यक छात्र माफीनामा भरकर अपने अभिभावको के हस्ताक्षर कराके प्राचार्यों को न दे दें शिक्षा सस्थाये अपना काय प्रारम्भ न करें। छात्रगण इस आदेश से फिर असयत हो उठे। आग पुन धीरे धीरे सुलगने लगी। सागर विश्वविद्यालय के छात्रो और पुलिस मे एक साधारण सी टेम्पो की घटना को लेकर भीषण सघप हो गया तथा ४ अक्टूबर को शासन के अराजपत्रिक कमचारियो ने छात्रो की मागो के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए "एक घन्टा काम रोको" का अभियान चला दिया। सारे राज्य मे जनता की सहानुभूति पूर्णतया छात्रो के साथ थी। ५ अक्टूबर को टीकमगढ मे छात्र पुलिस सघष हुआ। गोली चली तथा ६ अक्टूबर को ग्वालियर मे छात्र पुलिस सघष हुआ। शासन ने घोषणा की कि राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ मे किसी भी शासकीय कमचारी का भाग लेना वर्जित है। मध्यप्रदेश के छात्रो की सहानुभूति मे आगरा,

झासी, लखनऊ, देहली मे भी अब छात्र प्रशदन प्रारम्भ हुये तथा भारत के गृहमन्त्री श्री नन्दा ने मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री को देहली बुलवाया। प्रधानमन्त्री ने अपने प्रेस वक्तव्य मे दबी जवान मे केवल यह कहा कि शासन का विद्यार्थियो के प्रति बल प्रयोग करना एकदम गलत है गृहमत्री ने कहा कि वे ऐसी स्थायी व्यवस्था करना चाहते है जिसके अनुसार छात्र अपनी शिकायते शासन को प्रस्तुत करके निदान प्राप्त कर सके तथा अध्ययन भग कर आन्दोलन का सहारा न ले। श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र को हाई कमाड भी ग्वालियर गोली काड की न्यायिक जाच के लिये विश्वस्त न कर पाई और १२ अक्टूबर को श्री मिश्र ने पूरण चतुराई के साथ कहा कि छात्र असतोष के मूल मे तो देश मे व्याप्त आर्थिक सामाजिक अव्यवस्था है। जिमके विश्वव्यापी कारण है इसलिये सयुक्त राष्ट्र सघ को इन कारणो पर विचार करने के लिये एक आयोग की नियुक्ति करनी चाहिये। परम पुनीत भारत देश और उसका यह मध्यप्रदेश राज्य उनके इस उपदेश को पाकर कृतकृत्य हो उठा और छात्रो ने शायद एक उपेक्षित हसी के बीच काग्रेस के इस वरिष्ट अनुभवी नेता की राजनैतिक कुशलता की दाद दी। बात भी बडी दूर की थी। भोपाल प्रदेश के काग्रेसी शासन की और उसकी छात्र दमन नीति की जिम्मेदारी तो अब राष्ट्र सघ को लेनी थी। बेचारी राजमाता की न्यायकि जाच की सुनवाई भला अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क मे स्थित राष्ट्र सघ तक कैसे पहुचती।

१३ अक्टूबर, १९६६ को आचाय कृपलानी ने राज्य और केन्द्रीय शासन की उपेक्षा से त्रस्त होकर कहा कि यदि छात्रो की न्यायोचित माग को शासन नही सुनता तो छात्रो को चाहिये कि वे अपने देश-वासियो के सामने अपनी बातें रखें और अपने पक्ष मे देश का जनमत जाग्रत करें। १४ अक्टूबर को देश के उच्चतम शिक्षविदो की एक समिति देहली मे हुई जिसमे राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के प्रतिनिधि भी थे। ग्वालियर काड पर विशद चर्चा हुई और १६

अक्टूबर को छात्रो ने यह घोषणा कर दी कि १ नवम्बर को भारतीय ससद के सन्मुख १ लाख छात्र प्रदर्शन कर अपनी कठिनाईया ससद भवन के सामने प्रस्तुत करेंगे। केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री छागला ने अब पुलिस की तीव्र भर्त्सना करते हुए कहा कि छात्रो के साथ पुलिस गुडो जैसा व्यवहार करना शोभा नही देता पुलिस को विश्व विद्यालयो के क्षेत्र की पवित्रता को समझना चाहिये।

१७ अक्टूबर को ग्वालियर शिशु मन्दिर मे राजमाता ने शिक्षण सस्थाओ के प्रतिनिधियो की एक गोष्ठी का आयोजन किया। उनका इस समय यह प्रयत्न था कि शीघ्र से शीघ्र स्कूल कालेज खुल जावें ताकि छात्र अपने काम मे लगे तथा नगर की स्थिति सामान्य हो जावे। २२ अक्टूबर को उन्होने शासन से यह अपील की कि शिक्षण सस्थाये खोल दी जावे तथा छात्रो से यह अनुरोध किया कि वे शातिपूवक अपना विद्याध्ययन प्रारम्भ करें। दुर्भावनाओ को त्याग कर प्रेम का वातावरण बनायें। २६ अक्टूबर को गोरखी मदिर के विशाल प्रागण मे छात्रो की एक सभा मे भाषण करते हुए एक छात्रा कुमारी रजनी ने अपने छात्र नेता श्री राजौरिया को तिलक किया और उन्हे १०१ रुपये की थैली भेंट करते हुये छात्र आन्दोलन की सफलता की कामना की। छात्रो ने अब २० अक्टूबर से जिलाधीश के कार्यालय पर धरना प्रारम्भ कर दिया और भोपाल मे सभागीय आयुक्तो के मुख्यमन्त्री ने उनके सम्मेलन मे भाषण देते हुए कहा कि वे छात्रो के साथ नरमी न बरतें और शिक्षण सस्थाओ के प्राचार्यो को वे गुप्त आदेश दें कि छात्रो को चालचलन का प्रमाणपत्र देते समय वे सावधानी बरतें। मुख्यमत्री की इस हटधर्मी पर छात्रो के साथ, जनता भी हसी। राजमाता अब भी अपना कतव्य निभाने के हेतु छात्रो और शासन से तथा देहली से सम्पक साधे हुए थी तथा शिक्षण सस्थाओ को खुलवाने के लिये प्रयत्नशील थी। अत मे उनके प्रयत्न सफल हुये, शिक्षण सस्थाओ को शासन ने खोल दिया तथा ग्वालियर के छात्र प्रयत्न सफल हुये, राजमाता का

आभार मानकर स्कूलो और कालेजो मे जाना प्रारम्भ किया । ग्वालियर के गोलीकाड ने छात्रो एव शासन के बीच एक खाई बना दी और राजमाता को इस सिद्धात विहीन काग्रेस से विलग होने के हेतु गम्भीरता से विचार करने के लिये विवश किया ।

छात्र आन्दोलन समाप्त हुआ और राजमाता के मन मे एक प्रश्न घुमड घुमड कर उठने लगा कि क्या अब भी वे काग्रेस का साथ दे ? गत १८ वर्षो से काग्रेसी शासन ने देश को क्या दिया है, निरकुशता, भ्रष्टाचार, भाई भतीजावाद, और भुखमरी सत्ता की लोलुपता ने इसके नेताओ को कितना जन विरोधी बना दिया है । वे सोचने लगी कि क्या काग्रेस द्वारा देश की अर्थव्यवस्था को भारी धक्का नही पहुचा है । क्या जनतन्त्र के नाम पर इसके कर्णधार निरकुशता स्वेच्छाचारिता का प्रतिपादन नही कर रहे है ? राजमाता का अन्तद्वन्द इन दिनो चरम सीमा पर था । किशोर अवस्था से उन्होने भारत की आजादी के सघष का नेतृत्व काग्रेस को करते देखा था । उस तिरगे झण्डे ने जिसे काग्रेस ने युगो पूर्व फहराया था जन मन को कितना बल प्रदान किया था । कहा गई गाधी जी की अहिसा और सत्य की बुलन्द आवाज ? कहा गई त्याग और बलिदान की वे मान्यतायें ? कहा गई वे लगनभरी देशभक्ति और पुनीत देश की जनता की सच्ची सेवा की कामना ? उन्होने पाया कि आज की काग्रस जनता की दृष्टि मे आदरणीय नही रही है । क्योकि उसके कणधारो मे अब सत्तालोलुपता की भावना घर कर गई है । मन मे उठती विचारो की ये लहरें राजमाता को उद्वेलित करने लगी । अहिंसा के प्रचारक काग्रेस का यह हिंसामय रूप देखकर उनका मन इस बार काप उठा । वह विद्रोह कर उठा था इस काग्रेस मे समाई अशुचिता के प्रति जिसका साथ देने को उनका मन अब गवाही न भरता था । उन्होने पाया कि आज का प्रदेश का शासन एक ऐसे "अह" का पोषण कर रहा है जो लोकतन्त्र के सिद्धान्तो के सवथा विपरीत है और इस शासन से न्याय की आशा करना सिकता कणो से तेल निकालने के

समान है। शासन के कतिपय मन्त्रियो से, प्रदेश के विधान सभाई सदस्यो से उन्होने सम्पक साधा तो उन्हे विदित हुआ कि उनमे से अधिकाश ने अपने विवेक का हनन कर मिश्रजी की निरकुशता के प्रति विद्रोह करने की क्षमता नही है, साहस नही है। वे मौन है, क्योकि आत्मा की आवाज की पवित्रता की रक्षा वे नही कर पा रहे है, वे मौन हैं क्योकि अनुशासन का अथ उन्होने समझ रक्खा है मुह सीकर अन्याय को सहन करना और उसका साथ देना। राजमाता का मन आश्चय और व्यथा से भर गया क्योकि युगो की वह भावना जिसे काग्रेसियो मे गाधी जी ने जगाया था और जिसके बल पर देश ने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त की थी सहसा बुझ सी गई प्रतीत हो रही थी। गाधी जी ने ब्रिटिश राज्य की चुनौनी को स्वीकार कर कहा था कि "अन्याय का प्रतिकार" करना भारतवासियो का धम है, कतव्य है, अधिकार है और गीता की अमरवाणी को अपने देशवासियो के कण कुहरो मे फूक फूककर उन्होने गुजाया था। फिर भी आज अन्याय का प्रतिकार करने को कोई काग्रेसी तैयार नही था। उनकी इस शिथिलता कमठहीनता, चरित्र की अशुचिता के प्रति राजमाता का मन विरक्ति से भर उठा। सत्ता और ऐश्वय का मादक प्रभाव इतना तीव्र हो सकता है कि वह समस्त सिद्धान्तो को भी भुला दे ? देश की भोली जनता इन दिनो यह नाटक देख रही थी। राजमाता का विवेक उनसे पुकार-पुकार कर कहने लगा कि अन्याय का प्रतिकार तो करना ही होगा। असत्य के ऊपर सत्य की विजय के हेतु सघर्ष करना ही मानव मात्र का पावन कर्तव्य है और यही गीता की अमर वाणी है। उनके मन के अन्तद्धन्द की समाप्ति का सभवतया यह पूर्वाभास था।

— ० —

सोपान १६

अन्धा बाटे रेवडी

मई १६६६ का महीना था । ग्वालियर नरेश महाराज माधवराव सिंधिया का शुभ परिणय देहली मे ८ मई को होने का निश्चय हुआ था । इस महोत्सव मे भाग लेने देश के कोने-कोने से सिंधिया परिवार के हितेच्छु देहली पधार रहे थे । पुत्र के विवाह की धूमधाम मे राजमाता व्यस्त थी । ग्वालियर के सम्भ्रान्त नागरिको, सरदारो एव सिंधिया वश के परिजनो की भीड स्पेशल ट्रेन से ग्वालियर से देहली आ रही थी । राजकुमारिया अपनी भाभी के स्वागताथ उनका अगवानी करने के हेतु विभिन्न तैयारियो मे व्यस्त थी । इस हष के अवसर पर कतव्य निष्ठा राजमाता और उनके इकलौते पुत्र महाराज माधवराव को रह-रह कर स्मरण हो आ रहा था दिवगत महाराज जीवाजी राव का और ज्येष्ठ राजकुमारी एव त्रिपुरा की महारानी पदमा राजे का । अपनी इस प्रिय पुत्री अक्का राजे को २६ अप्रेल १६६४ को खोकर राजमाता का मातृ हृदय बिलख उठा था और इस अभाव को वे भूल ही न पाती थी । अक्का राजे की दो पुत्रिया राजकुमारी कनिका राजे और राजकुमारी प्रतिभा राजे को जो क्रमश अब ५ और ४ वष की थी इस शुभ अवसर पर अपने समीप पाकर राजमाता को कुछ सतोष था । वैसे भी इन दोनो नवासियो को अपनी नानी का विरल स्नेह विशेष रूप से प्राप्त था ।

८ मई १९६६ को धूमधाम के साथ महाराज माधवराव का विवाह हुआ और बहूरानी का मुक्त हृदय से स्वागत किया राज माता ने और तीनो राजकुमारियो ने। नव दम्पति पर चारो ओर से शुभाशीषो और शुभ कामनाओ की वर्षा होने लगी और देश के वरिष्ठ नेताओ ने, राजा महाराजाओ ने और ग्वालियर की जनता ने अपनी भाव भीनी शुभाकाक्षाये युगल दम्पति को अर्पित की। अपनी लाडली बहूरानी नवीन महारानी को राजमाता ने माधवी राजे कह कर सम्बोधित किया और हर्ष एव उल्लास के साथ आगत परिजनो ने इस नवीन नाम को सराहा।

पुत्र के विवाह उत्सव से कुछ अवकाश पाकर राजमाता पुन मध्य प्रदेश की राजनीति के पचडे मे उलझ गई। काग्रेस के केन्द्रीय वरिष्ठ नेताओ से खुलकर विमश हुआ तो राजमाता ने अपनी शकाये उनके सन्मुख प्रस्तुत की। प्रदेश के निरकुश, सिद्धान्तविहीन, द्वेषपूर्ण एव जातिवाद से पोषित भ्रष्ट शासन पर उन्हे असतोष था। इस शासन के नेता मिश्रजी के दृष्टिकोण से तथा उनकी नीतियो से स्वार्थपरता एव जातिवाद की बू आती थी। अन्याय और अत्याचार की पराकाष्ठा के एक नही कई उदाहरण जनता के समीप थे। विधान सभा के यथेष्ठ काग्रेसी सदस्य तथा केबिनेट स्तर के मत्री अपने नेता की कूटनीतिज्ञता से त्रस्त थे। वे नेता मे परिवतन चाहते थे और इस विषय मे हाई कमाड के सन्मुख कई शिष्ट मडल भी आ चुके थे किन्तु मिश्रजी के विरुद्ध कुछ भी सुनने के लिए हाई कमाड तैयार न थी। चिनगारी धीरे धीरे सुलग रही थी। लोक तात्रिक प्रणाली घुटन मे बद्ध थी।

कार्तिक कृष्णा चतुर्थी १ नवम्बर सन् १९६६ की बात है। राजमाता की ४८वी वष ग्रन्थि का पव था। पुत्र एव पुत्रवधू तथा राजकुमारी उषा राजे के साथ राजमाता देहली मे थी। वषगाठ के उपलक्ष मे हितू परिजनो एव अन्य इष्ट मित्रो की मडली राजमाता को बधाई

अर्पित करने ग्वालियर हाउस मे आई हुई थी। सध्या को प्रतिभोज के लिए देहली के विशिष्ट नागरिक एव सिंधिया परिवार से सबधित समन्त परिवार निमत्रित थे। महाराज माधवराव महारानी माधवी राजे, राजकुमारी उषा राजे आदि अभ्यागतो के स्वागत सत्कार मे व्यस्त थी तभी राजमाता को वष ग्रन्थि की बधाई देने आये कतिपय वरिष्ठ काग्रेसी नेता। औपचारिक शिष्टाचार के पश्चात वे एकान्त मे राजमाता से परामर्श करने लगे तो उनमे से एक ने कहा—महाराज। आपको मिश्रजी का विरोध त्याग देना चाहिए। उनसे यदि कुछ गलती भी हो गई है तो उसका निराकरण करने को आप क्यो उलझ रही है, आप जानती ही है कि उन्हे प्रधानमत्री का समर्थन प्राप्त है और उधर काग्रेस कायकारिणी मे भी उनके पक्ष का बहुमत है। "बहुमत का अर्थ सिद्धान्तो को कुचलना तो नही होता है " राजमाता बोली। "महाराज। आप भी इन दिनो सिद्धान्त की बात करती है। यह तो कोरा आदशवादिता है—सिद्धान्तो पर मनन और उनका पालन तो गाधी जी और पटेल के साथ गया। अब तो सिंडीकेट है—एक व्यक्ति देश का समस्त उत्तरदायित्व वहन नही कर सकता। मिश्रजी का सितारा आजकल उच्च स्तर पर है। अब हमारी तो महाराज ! यह सलाह है कि आप ।"

"कि मैं अपनी अन्तरआत्मा की आवाज को, अपने विवेक को कुचल दू और मिश्रजी के अन्याय का विरोध न करू नही साहब यह तो मुझ से न कभी हुआ है और न होगा। जहा अयाय और भ्रष्टाचार को बढावा मिले, जहा स्वेच्छाचरिता-जन प्रतिपादित नियमो और सिद्धान्तो की अवहेलना करे जहा लोकतत्र का उपहास करके निरकुशता पनपे उस स्थिति से मैं सौदा करने को तैयार नही यह मुझ से कभी भी न हो सकेगा राजमाता ने कहा। फिर अधिक कुछ न कह कर काग्रेसी नेताओ की वह मित्र मडली ग्वालियर हाउस से विदा हो गई। राजमाता इस वार्तालाप से सतृप्त हो उठी।



जनता को नमन करती हुई उनकी सेवा मे रत राजमाता

ाह आप क्या कह रहीं है ? मिश्रजी की सरकार------" मध्यप्रदेश
के राज्यपाल माननीय के. सी.. रेड्डी को मिश्र सरकार का तख्ता उलटनेका
ज्ञापन देती हुई राजमाता विजयाराजे सिंधीया

धान सभा में मिश्र सरकार के पतन का जयघोष करनेवाले दलबदलू एवं जनसंघी
ायकोके साथ राजभवनको जाती हुई राजमाता विजयाराजे सिंधीया

मध्यान्ह को मध्य प्रदेश के समाज कल्याण विभाग के मत्री श्री गोबिन्द नारायण सिंह का फोन आया तो विदित हुआ वे भोपाल से देहली आये हुये हैं और ग्वालियर मे वे राजमाता से मिलने के इच्छुक है किन्तु जब पता चला कि राजमाता देहली मे है तो वे स्टशन से ही ठा लोकेन्द्र सिंह को लेकर ग्वालियर से देहली आ गये। राजमाता ने उन्हे सध्याकालीन भोज पर निमत्रित किया। अभ्यागतो की भीड के कारण उस रात्रि तो उनसे विशेष बातचीत न हो पाई किन्तु दूसरे दिन २ नवम्बर को जब वे पुन राजमाता से मिलने ग्वालियर हाउस आये तो प्रदेश की राजनीति पर उनसे विशद चर्चा हुई।

श्री गोबिन्द नारायण सिंह का परिवार प्रारम्भ से ही काग्रेसी था तथा उनके यशस्वी पिता ठा अवधेश प्रताप सिंह विन्ध्य प्रदेश के मुख्य मत्री रह चुके थे। वे नेहरू जी के भक्त थे और नेहरू जी उनका सम्मान करते थे और उसी नाते इदिरा जी भी इस वयोवृद्ध नेता को श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी। कप्तान साहब के चिरजीव के रूप मे श्री गोबिन्द नारायण सिंह प्राय सभी केन्द्रीय काग्रेसी नेताओ के स्नेह-भाजन थे तथा मिश्र जी के नेता पद के चुनाव अभियान की अगुवाई करने के उपरान्त श्री सिंह को विश्वास था कि अब वे मिश्र जी के प्रिय भाजन बन सकेंगे। श्री सिंह के यह स्वप्न पूरे न हुये और अकस्मात ही उन्होने पाया कि मिश्रजी ने मुख्य मत्री का पद सभालते ही अपना रुख बदल लिया। महत्वपूर्ण विभाग के स्थान पर समाज कल्याण विभाग श्री सिंह को प्राप्त हुआ। उनके दौरो पर, गतिविधियो पर अकुश लगे और फिर भी जब श्री सिंह काबू मे न आये और उनकी विद्रोही प्रवृति की गुप्त रिपोर्टें मिश्रजी को प्राप्त हुई तो पत्रकारो को उनकी बदनामी के प्रचार के सकेत मिले। पुलिस को गुप्त आदेश प्राप्त हुये कि उनके आचरण पर फाइलें बनाई जावे, उनका पीछा किया जावे। मत्रिमडल से श्री सिंह को निकालने के प्रयास जोर शोर से प्रारम्भ हो गये किन्तु कप्तान अवधेश प्रताप सिंह जी के प्रभाव के

कारण मिश्रजी को उसमे सफलता न मिली ।

इस बार श्री गोबिन्द नारायण सिह ने राजमाता से मिल कर बताया कि मिश्रजी की कुचक्र नीति के वे ही नही कतिपय अन्य मत्री भी शिकार है और वे प्राय सब ही उनके व्यवहार से त्रस्त है । मुख्य मत्री से मिलने के लिए और राजकीय मामलो पर आदेश प्राप्त करने के हेतु मत्रियो को तीन तीन घन्टे प्रतीक्षा करनी पडती है । उनके सचिवो को सीधे गुप्त आदेश मुख्य सचिवालय से प्राप्त हो जाते है तथा मत्रियो को अपमान के घूट पीने पडते है । देहली के मध्य प्रदेश हाउस मे गुप्त पुलिस अधिकारी आगत मत्रियो की गतिविधि की पूर्ण जानकारी मुख्य मत्री की ओर भेजते है और यही कारण है कि इस बार श्री सिह देहली के एक होटल मे ठहरे हुए है न कि मध्य प्रदेश हाउस मे ।

वार्तालाप के दौरान राजमाता ने कहा कि वे अब काग्रेस सस्था मे रहने की इच्छुक नही क्योकि उन्हे यह अब एक सिद्धातविहीन, जन-हित एव लोकतत्र विरोधी सस्था प्रतीत हो रही है । अन्याय के प्रति-कार के हेतु वे अपना सम्बन्ध इस सस्था से विच्छेद कर लेना चाहती हैं । श्री सिह ने बतलाया कि मुख्य मत्री का यह प्रयास है कि आगामी आम चुनाव के हेतु काग्रेसी प्रत्याशियो का चुनाव वे स्वय करे और प्रदेश समिति उनके द्वारा चुने हुए प्रत्याशियो का समथन कर दे । पूव-ग्वालियर राज्य के क्षेत्र के प्रत्याशी भी सुना है ग्वालियर के ही मिश्रजी के एक पिट्ठू मत्री की सलाह पर चुने जावेगे और यह मत्री तो राजमाता का पूर्णतया विरोध करने का व्रत ले चुके है । अत प्रतीत होता है कि इस बार तो "अन्धा बाटे रेवडी" वाली कहावत चरिताथ होती प्रतीत होती है ।

राजमाता मौन हो यह सब बाते सुनती रही और जितनी अधिक जानकारी प्रदेश की राजनैतिक स्थिति के विषय मे उन्हे प्राप्त होती थी उतनी ही अधिक अरुचि उन्हे काग्रेस के इन सत्ताधारी नेताओ से होती

जा रही थी।

श्री सिंह दूसरे दिन वापिस भोपाल चले गए और जाने के पूव वे राजमाता को अवगत करा गये कि कप्तान साहब के प्रभाव के कारण उनका कांग्रेस त्यागना इस समय सम्भव नही है किन्तु यह अवश्य है कि वे विन्ध्य क्षेत्र के उन प्रत्याशिम्रो को कांग्रेस टिकट दिलवाने के प्रयास करेंगे जो चुनाव के पश्चात् नवीन नेता के चुनाव मे उनकी सहायता कर सकेंगे। इस प्रकार श्री सिंह कांग्रेस मे रह कर ही मिश्रजी को नवीन नेता के पद से वंचित कराने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। राजमाता श्री सिंह के इस प्रयास पर मन ही मन मुस्करा उठी। यह अविश्वास की मुस्कराहट थी क्योकि राजमाता यह भली भाति जानती थी कि श्री सिंह मिश्रजी के रहते अपने इस प्रयास मे कभी भी सफल नही हो सकते। श्री सिंह अपने प्रत्याशियो की सूची लिए ही बैठे रहेंगे और उनके गुण गान गाने मे अपना कण्ठ थकाते रहेंगे पर अन्धे की रेवडी तो बटती ही रहेगी।

दो सप्ताह और बीते तथा नवम्बर ६६ का अन्त आ गया। राजनैतिक चक्र तेजी से घूमने लगा। फरवरी ६७ मे होने वाले आम चुनावो की तैयारिया प्रत्येक राजनैतिक दल ने जोर-शोर से प्रारम्भ कर दी। उधर देहली हाई कमाड के कतिपय कांग्रेसी वरिष्ठ सदस्यो ने जो कि जनता के ऊपर राजमाता के प्रभाव से परिचित थे और जिन्हे १९५७ और १९६२ के चुनावो मे राजमाता की विजय का स्मरण था प्रधान मत्री पर जोर डालना प्रारम्भ कर दिया कि वे राजमाता और मिश्रजी के बीच मध्यस्थ बन कर उनके मतभेदो को दूर कर दें तथा पूव मध्य भारत क्षेत्र मे काँग्रेस को बलशाली बनावे किन्तु इन्दिरा जी तो अब मिश्रजी द्वारा समर्थित प्रधान मत्री थी और मिश्रजी अब प्रधान मत्री द्वारा समर्थित देश के सबसे बडे प्रदेश के मुख्य मत्री थे। सत्ता से विभूषित दोनो नेताओ को भला इन छोटी-छोटी बातो के लिए अब कहा समय था। नेताओ का यह प्रयास विफल रहा किन्तु फिर भी केन्द्रीय

कार्यकारिणी के कतिपय सदस्यो का यह प्रयत्न रहा कि राजमाता पूव-ग्वालियर राज्य के अचल के प्रत्याशियो की सूची तैय।र करे और काग्रेस उन्ही को टिकट देकर मान्यता प्रदान कर ले। राजमाता का कहना था कि वे किसी भी व्यक्ति विशेष को टिकट दिलाना नही चाहती—वरन् उनकी इच्छा तो यह है कि केवल निष्ठावान, ईमानदार, सचरित्र व्यक्तिओ को ही काग्रेस मान्यता प्रदान करे तथा ग्वालियर राज्य क्षेत्र की सूची स्वीकार करते समय राजमाता की भी सलाह ली जावे। उधर मिश्रजी इस बात पर तुले हुए थे कि उन्हे राजमाता की सलाह की आवश्यकता नही है। ग्वालियर क्षेत्र के जो काग्रेसी मत्री हैं वे उनके विश्वस्त है तथा उनकी सलाह पर काग्रेसी प्रत्याशियो का वे चयन कर लेगे।

बात बस बढती ही गई और राजमाता की उपेक्षा कर अन्धे की रेवडिया बटती रही। चाटुकारिता, और जातिवाद का बोलबाला रहा तथा सिद्धान्त कुचले जाते रहे। यह सब देख कर राजमाता के क्लात मुख पर खिन्नता की भावना एक फीकी मुस्कान का सहारा लेती हुई फैलने लगी। एक सध्या को उनके पुत्र महाराज माधवराव ने मा को चिन्तित देखकर कहा, "अम्मा क्या आपका अब काग्रेस त्यागना परम आवश्यक है ?"

"मैं तो यही ठीक समझती हू भैया।" राजमाता बोली।

"क्यो ?"

"क्योकि मेरी अनुभूति ऐसी ही है।"

"और अम्मा ! यह अनुभूति क्या है ?"

"भैया, अत प्रेरणा का ही दूसरा नाम अनुभूति है।"

"तो फिर बाह्य प्रेरणा ?"

"वह तो केवल सयोग की बात है। किन्तु जो बाहर है वह गौण है और जो अन्तर मे है वही मुख्य है" राजमाता ने कहा।

और स्नेहल पुत्र उन क्षणो मे अनुभवी मनीषी मा की अनुभूति का इस व्याख्या को समझने का प्रयास भर करता रहा, और अन्त प्रेरणा के श्रोत को खोजता रहा।

सोपान २०

अंतर्द्वन्द्व का अंत

दिसम्बर १९६६ की बात है। श्री गोबिन्द नारायण सिंह एव प्रदेश के अन्य विधायको से परामश किए एक सप्ताह भी न बीता था कि कांग्रेस के एक वरिष्ठ ईमानदार प्रभावशील नेता ने ग्वालियर हाउस देहली मे आकर राजमाता से भेंट की और कहा कि "महाराज आश्चय है कि मध्य प्रदेश कांग्रेस समिति ने ग्वालियर और गुना की ससद सीटो के लिए भी आपके नाम की सिफारिश नही की है। मैंने जब एक सम्बन्धित व्यक्ति से पूछा तो उत्तर मिला कि आपका कोई भी प्राथना पत्र इन सीटो के लिए नही आया है।" "नेहरू जी यदि आज होते तो वे बताते कि सन् १९५७ और १९६२ के आम चुनावो मे मैंने कितने प्राथना पत्र भर कर कांग्रेस प्रदेश समिति के पास भेजे थे जो आज भेजती।" राजमाता ने कहा।

"महाराज, आपकी अनुमति हो तो कांग्रेस प्रत्याशी के रूप मे मन्दसौर सीट पर आपका नामाकन कराने के लिए हम प्रयत्न करें।"

"नही साहब ! नही ! मैंने स्वय के लिए किसी भी दल से न अब तक किसी सीट की याचना करी है और न करूगी और कांग्रेस से— उसमे तो मुझे आज चारो ओर से घुन लग रहा सा प्रतीत हो रहा है। मैं तो देख रही हू कि देश के लोकतान्त्रिक जीवन मे कांग्रेस ने ही भ्रष्टता की अगुआई की है और ऐसी गर्हित परम्परायें स्थापित की

हैं जो हमारे जनतन्त्र के उच्चादश को कही समाप्त ही न कर द ।"

"महाराज, आप ठीक ही कहती है। हम लोगो का आपसी चलन, आपसी व्यवहार, इन सब मे गन्दी प्रतिस्पर्धा है जो दल मे घर कर गई है। एक दूसरे को हडप जाने के लिए हम मगर की तरह मुख खोल कर तैयार बैठे रहते है। आज तो स्वाथ सिद्धि के हेतु मान अपमान का ध्यान ही नही तो कोई भी स्वाभिमानी व्यक्ति अपमान के हेतु काग्रेस मे क्यो रहेगा ? उसको तो घर के चने ही भले है क्योकि

रहिमन रहिला की भली, जो परसे मन लाय ।
परसत मन मैलो कियो, सो मैदा जरि जाय ।।"

कह कर राजमाता चुप हो रही। पुन कुछ क्षणो के उपरान्त वे बोली —

"देखिये बात यह है कि मेरे स्वसुर, मेरे पति सदा ही अपने राज्य मे लोकप्रिय रहे। आज उनके पुण्य कृत्यो के फलस्वरूप मुझे जनता का प्यार मिला है। वैसे तो मैं राजनीति से अलग ही हो जाती क्योकि आज का जन जीवन काग्रेस ने बहुत विषाक्त कर दिया है, एक दूसरे पर कीचड उछालने मे ही देशभक्ति का कीर्तिमान है और फिर जो अत्याचार मिश्रजी ने छात्रो के ऊपर, राज्य के नौनिहालो के ऊपर, प्रदेश भर मे किया है उसको मैं चाहकर भी नही भूल पाती हू। गोली-काडो की न्यायिक जाच कराने मे बताइये शासन का क्या बिगडता था। बबर कृत्यो के दोषी चद पुलिस अधिकारी ही तो दडित होते पर जनता के समक्ष शासन की न्यायप्रियता तो प्रमाणित हो जाती। शासन ने वह भी न माना। बस्तर काड तो उनके शासन पर एक बडा काला दाग है उसके लिये तो आदिवासी जनता भला क्यो उन्हे क्षमा करने लगी । और फिर पचमढी मे हम लोगो की नीयत पर जो कीचड उछाली गई है, देशभक्ति पर जो सन्देह प्रकट किया गया है वह ।"

महाराज । हम सब आपके मन की टीस को समझते है किन्तु "
वे सज्जन बोले ।

"मैं आप सबसे केवल सहानुभूति की ही अपेक्षा करती हू और कुछ नही चाहती । हा काग्रेस मे रहने को अब मेरा मन नही है । अब गम्भीरता से इस समस्या पर भैया के साथ, और अपने साथियो के साथ मै विचार विमश कर रही हू । आपकी सद्भाग्रो के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद । कृपा कर आप मेरे टिकट के विषय मे किसी से भी कुछ न कहे । मैं अब आगामी आम चुनाव मे काग्रेस की प्रत्याशी किसी भी दशा मे न बनूगी ।" कहकर राजमाता ने इन काग्रेसी नेता को सादर बिदा किया ।

रात्रि को पारस्परिक विचार-विमश के लिए बैठे महाराज माधवराव, राजमाता, कुमार सभाजीराव आग्रे एव राजपरिवार से सम्बन्धित कतिपय अन्य महानुभाव । समस्या पर खुलकर विचार हुआ

राजमाता ने काग्रेस की वतमान सकुचित असहिष्णु नीति की चर्चा करते हुए कहा कि वे अब तक काग्रेस का साथ दे रही थी इस विश्वास पर कि "व्यक्तियो की अपेक्षा सिद्धात ऊचे है" किन्तु गत १० वष के अनुभव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बात बिलकुल उलटी है । काग्रेस के बहुसख्यक नेता गाधीजी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो की सतत उपेक्षा करते रहे है तथा इनको देश की अपेक्षा स्वय की भक्ति प्यारी हे । इनकी देशभक्ति गाधीजी की परिभाषित देशभक्ति नही है जिसके लिये उन्होने एक दिन कहा था कि —

यदि देशभक्ति का मतलब व्यापक मानव मात्र का हित चिन्तन नही है तो उसका कोई अथ ही नही है ।"

जिस हिसा के लिये गाधीजी ने कहा था कि —

"मेरा पूर्ण विश्वास है कि हिसा पर कोई शाश्वत वस्तु स्थिर

नही हो सकती।" उसी हिंसा को आज काग्रेस अपने शासन की आधार शिला बना बैठी है।

राजमाता के विचारो का पूर्ण समथन उनके पुत्र महाराज माधवराव एव कुमार सभाजीराव आग्रे ने किया। एक हितेच्छु मित्र ने कहा कि यह सत्य है कि जिस धर्म और पवित्रता का प्रतिपादन गाधीजी करते थे वह अब काग्रेस के लिये त्याज्य है क्योकि गाधीजी ने ही तो एक दिन कहा था—

"धर्मरहित जीवन सिद्धान्तरहित जीवन है और सिद्धान्तरहित जीवन पतवाररहित नौका के सदृश है—"

"जीवन मे जो कुछ पवित्र और धार्मिक है स्त्रिया उसकी विशेष सरक्षिकाए है।"

हम देख रहे हैं कि काग्रेस मे रहने से राजमाता को और भी अधिक कटु अनुभव प्राप्त होगे अत उसमे उनका रहना अब अभीष्ट नही है। एक वयोवद्ध परिजन ने कहा कि "राजमाता को तो काग्रेस अब त्याग ही देना है किन्तु प्रश्न यह है कि काग्रेस छोडने का तात्पय राजमाता यह न निकाले कि वे देश की राजनीति से सन्यास ले रही है। सिंधिया वश युगो से लोक सेवा मे रत रहा है। इसी वशागत परम्परा का अनुकरण राजमाता को भी करना चाहिये। ग्वालियर के छात्रो का, वहा की जनता का हित राजमाता के हाथो मे है। जिस दिन उन्होने ग्वालियर राज्य को काग्रेस सरकार के हाथो सौपा उसी दिन से उन पर यह उत्तरदायित्व आ गया था कि यदि जनता को कष्ट मिले उनका अनहित हो तो वे आगे आकर अन्याय का प्रतिकार करेगी और फिर वे तो वीर क्षत्राणी है—जनता उनकी पूजा करती है क्योकि उनमे विनय है, चरित्र है, ईमानदारी है, धम का ज्ञान है और सफल नेतृत्व करने की शक्ति है। इसी शक्ति को वे अब जनता जनार्दन के हित के लिये समर्पित कर दे और वे पावेंगी कि एक नही हजारो पथ-

भ्रष्ट नेता भी उनका कुछ नही बिगाड सकगे । भगवान उनकी रक्षा करेगा, उनकी सहायता करेगा ।"

महाराज माधवराव ने कहा "सक्रिय राजनीति मे कूद पडने का अथ होगा—दलबदी की गन्दगी को, कीचड को सहन करना । इसको भी तो अम्मा को दृष्टि मे रखना होगा ।"

"भैया जिसके तुम्हारे समान पुत्र हो, जो चरित्रवान दृढ, तथा सत्यप्रिय हो और जिसे जनता का अडिग विश्वास प्राप्त हो तो बेटा उसे किसी प्रकार के अपवाद की चिन्ता नही । आप सब मेरे साथ है, ग्वालियर की जनता का मुझे विश्वास और प्रेम प्राप्त है । वह मेरे साथ है और उसी का मुझे बल है बस फिर मुझे किसी का भय नही है । हा यह बात अवश्य है कि काग्रेस छोड कर मिश्रजी मे नेतृत्व को और काग्रेस की दमन से पूण सत्ता को चुनौती देने का अथ होगा कष्ट और व्यथा । अपमान, उपेक्षा और तिरस्कार भी प्रसाद मे मिलेगा और यथेष्ट धनराशि की भी हानि होगी । आप सबको भी मेरे लिए अमित कष्ट उठाने होगे, त्याग करना होगा, विद्रोही बनना पडेगा, पुलिस हथक डो का शिकार होना पडेगा । यदि ये सब कष्ट आप उठाने को तैयार हो तो मैं अपने जन सेवा के व्रत की रक्षा कर सकूगी ।" राजमाता भावातिरेक के कारण अधिक कह न पाई उनका कठ रुद्ध हो आया ।

"अम्मा ! आप हम लोगो की ओर से चिंचित न हो । इस चुनौती का अथ हमने खूब समझ लिया है और जो काटे मार्ग मे आयेंगे उनको भी तौल लिया है । हम सक्रिय राजनीति मे नाम कमाने अथवा धनाजन करने प्रवेश नही कर रहे है । भगवान ने वह सब हमे दे रखा है । हमारी आन्तरिक भावना तो जन सेवा की है और उसकी पूर्ति काग्रेस के माध्यम द्वारा अब सम्भव नही है । अत उसे तो अब आप छोड ही दीजिये" महाराज माधवराव ने कहा ।

"महाराज ! यदि असगत न माना जावे तो मै एक प्रश्न करू ?" महाराज के एक तरुण साथी ने राजमाता की ओर लक्ष्य कर कहा ।

"हा हा, पूछिये ना ?" राजमाता ने उत्तर दिया ।

"क्या यह सच है कि आप काग्रेस केवल इसलिए छोडना चाह रही है कि मिश्रजी से आपकी न तो पटती हैं और न पटेगी तथा जिन काग्रेसी व्यक्तियो को आप आगामी चुनाव के लिए काग्रेस द्वारा टिकट दिलाना चाहती थी उन्हे मिश्रजी टिकट न मिलने देगे ?"

"इस स्पष्ट पश्न से मैं बहुत प्रसन्न हू आपने यह पूछकर मेरे मन के सशय का निवारण ही किया है ।" राजमाता ने अप्रसन्न होने के स्थान पर उस तरुण की ओर प्रशसा से देखते हुए कहा ।

"सच तो यह है कि मेरे काग्रेस त्यागने के निश्चय मे मिश्रजी की रीति नीति निमित्त हो सकती है एव उनसे हुआ पारस्परिक विरोध इस अग्निकाड का एक स्फुलिग हो सकता है किन्तु वास्तविक कारण तो काग्रेस की सिद्धान्तविहीनता है । जिन सिद्धान्तो और कायक्रम को लेकर वह जनता से मत चाहती है उनको अधिकार पा जाने पर वह क्रियान्वित नही कर रही है । पिछले कुछ वर्षो मे तो हम सबने ही देखा है कि काग्रेस मे स्वार्थी और अवसरवादी तथ्य पनप रहे है तथा तपे हुए पुराने नेता इससे विलग हो रहे हैं । आचाय कृपलानी, जय प्रकाश नारायण जी, श्री कृष्ण मेनन आदि इसकी नीतियो से त्रस्त हो उठे हैं और जो व्यक्ति सत्ता में है उन्होने अपना लक्ष्य केवल प्रभुत्व स्थापन ही समझ लिया है । यह उनकी कृपा है कि काग्रेस का सैद्धान्तिक स्तर इतना नीचे गिर गया है कि वास्तविक सच्ची नियम से जन सेवा करने वालो को इस सस्था मे रहना ही दूभर हो गया है । मैंने बहुत प्रयत्न किया है कि इस स्थिति मे सुधार हो और मैं काग्रेस मे रहकर ही जन सेवा करती रहू किन्तु जैसा आप सब जानते है कि यह सम्भव न हो सका ।" राजमाता ने कहा ।

"ठीक है महाराज ! इस स्थिति मे हम सब भी यह उचित समझते है कि आप निशक होकर काग्रेस से अपना सबधविच्छेद कर ले। इस स्थिति विश्लेषण के लिए हम सब आपके आभारी हैं।" कहकर वह तरुण महाराज माधवराव के समीप बैठ गया। "महाराज ! सभवतया आपको विदित ही होगा ।" एक अन्य युवक ने खडे होकर कहा।

"क्या ?" राजमाता ने पूछा।

"यही कि एक ओर तो पचमढी के अधिवेशन मे राजा महाराजाओ की निस्वार्थ देश-सेवा की नीयत पर सन्देह प्रकट किया गया तथा श्रीमत को व्यग वचन कहे गये उधर महाराज रीवा के साथ मिश्र जी ने गठ-बधन करके उनके समस्त प्रत्याशियो को काग्रेस ने टिकट दिलवा दिये है तथा काग्रेस ने उनकी चाटुकारिता कर उनका सहयोग प्राप्त कर लिया है ।"

'मैं जानती हू मिश्रजी के लिए इस प्रकार की दुहरी चाल सभव है किन्तु हमे उससे भयभीत अथवा आशकित होने की आवश्यकता नही" राजमाता ने कहा।

"अम्मा ! विन्ध्य क्षेत्र मे तो अब मिश्रजी की तूती बोलेगी। पता नही गोविन्दनारायण सिह जी के प्रत्याशियो को काग्रेसी टिकट क्यो नही मिले।"

'महाराज रीवा के समक्ष श्री सिह का सहयोग मिश्रजी के लिये उतना मूल्यवान कहा ?" राजमाता ने कहा।

मध्य रात्रि तक इस प्रकार का विचार विमश उस दिन जय विलास प्रासाद मे चलता रहा। विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये और शकाओ का समाधान भी हुआ।

उस रात्रि को उन निस्तब्ध क्षणो मे राजमाता को सहसा स्मरण हो आये अपने वे वसत आश्रम बनारस मे बिताये हुये दिन जब कि वे अपनी एक 'दीदी' के अन्याय का प्रतिकार करने के लिये विद्रोही बन

बैठी थी। उस सध्या को उनकी सखी कमला शर्मा, तारा सतूर और लवग ने, स्नेह ने, सभी सहेलिया ने तो कहा था कि "लेखा तू तो क्षत्राणी है, क्षत्राणी ! अन्याय का प्रतिकार करने की तुझमे अद्भुत क्षमता है। आज उसी लेखा की परीक्षा है उसी क्षत्राणी की जो अपने दबग स्वभाव के लिये बसत कालेज मे प्रसिद्ध थी। उसके मन ने कहा कि सघर्ष से डरना, भयखाना, कायरता होगी। यह सच है कि सघर्ष मे न जाने कितनी आपत्तिया झेलनी पडे। कितनी धन, मान एव शारीरिक हानि सहनी पडे। महलो की रानी को जगलो और गावो की धूल फाँकनी पडे। किन्तु वह यह सब सहन करेगी। क्यो ? क्योकि मा अपने बच्चो के लिये कौन से कष्ट नही झेलती वह अब राजमाता है पूर्व ग्वालियर राज्य की जनता की वह जन्म जन्म तक ऋणी रहेगी क्योकि उन्होने उसे अपना अर्घ्य दिया, नैवेद्य दिया, अपनी महारानी को सिर आखो पर रखा और फिर ममता भरा प्यार भी दिया। आज वे ही सब जब अन्याय के भोगी हैं, अत्याचार के शिकार है, तो वह कैसे उनकी मुसीबतो से मुख मोड ले। नही नही यह उससे न हो सकेगा। वह अपने को भी झोक देगी इस जुल्म की आधी मे, इस अत्याचार और दमन की दावानल मे। वह चुनोती देगी इस काग्रेस को, इसके कर्णधारो को, दमन नीति को, उनके भ्रष्टाचार को, उनके गर्हित जातिवाद और भाई भतीजावाद को और वह प्रयास करेगी इन सबकी समाप्ति के लिये। प्रदेश की जनता को वह देने का प्रयत्न करेगी एक स्वच्छ शासन, एक ईमानदार लोकतत्र जिसमे उसके कष्ट लुप्त हो जावे, जो उनका राज हो, सब दलो का राज हो, उनके सगठन का राज्य हो।

अर्द्धरात्रि मे यह सब विचार करते करते राजमाता के मन का अतद्वन्द्व जो गत तीन वर्षों से उनके मन को उद्वेलित कर रहा था समाप्त हो गया। उलझी ग्रन्थि सुलझ गई। विवेक और अतरात्मा की आवाज ने प्रबल होकर निर्णय का पथ प्रशस्त कर दिया और फिर

वह मनीषी, वह दिव्या, वह कल्याणी मानसिक शाति प्राप्त कर गहरी निद्रा मे निमग्न हो गई। सुख और शाति की इस मीठी नीद मे उसकी समस्त शकाये, उसके मन का सारा सघष समाप्त हो गया।

राजमाता को आभास हुआ कि एक बार पुन वह प्रदेश के हित साधन मे, प्रदेश की जनता की निस्वार्थ सेवा मे आज स्फूर्ति एव नवीन मानसिक बल का सचय कर एकाग्र चित से अग्रसर हो सकती है। सेवा की बलतीव किन्तु सरल भोली भावना उसके अतर मे एक नवीन प्रकाश पुज की ज्योति से आलोकित पथ पाकर जाग्रत हो उठी। निष्काम कर्म का रहस्य उसे स्पष्ट हो उठा और भृतहरिजी के निम्न वचन का गूढ अथ उनकी अतरात्मा मे गूज उठा।

"र्श एके सत्पुरुषा परार्थ घटका स्वार्थान्परत्यज्यतो ।।"

अर्थात अपने स्वार्थो की तिलाजलि देकर दूसरे का हित करने वाला लोक सेवा को अपनाने वाला ही सच्चा सत्पुरुष होता है।

सोपान २१

चुनाव

ग्वालियर के जयविलास प्रासाद के पूर्वी भाग का एक मनोरम, धूप चन्दन से सुवासित भव्य कक्ष, प्रात काल के १० बजे थे। राजमाता अपने उपासना गृह से निकलकर आ रही थी कि ए० डी० सी० ने सूचना दी कि ग्वालियर काग्रेस का एक शिष्टमडल उनसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा है। राजमाता ने स्वय नीचे आकर अपने कार्यालय के कक्ष मे आसीन शिष्ट मडल का स्वागत किया। आगत व्यक्तियो को कॉफी दी गई और फिर शिष्टमडल के नेता ने कहा, "महाराज ! प्रदेश मे अफवाह है कि आप काग्रेस त्याग रही है। यहा के पुराने काग्रेसी इस समाचार से बहुत परेशान हैं। आप १९५७ से काग्रेस टिकट पर यहा की जनता का प्रतिनिधित्व भारतीय ससद मे कर रही है। अब १० वष बाद उसे अकारण किसी छोटी-छोटी बात पर रुष्ट होकर त्यागना कहा तक उचित होगा ? हमे तो विश्वास है कि आपने इस समस्या के सब कोणो पर विचार कर लिया होगा। हम लोग भी वस्तु स्थिति जानने के लिए उत्सुक है और आपसे प्राथना करने आये है कि आप काग्रेस न त्यागें।" राजमाता ने शिष्टमडल की बात को ध्यान से सुना और कुछ क्षण विचार कर वे बोली, "आप लोग तो ग्वालियर के ही हैं। सब प्रकार से मेरे हितू हैं। आप ही बताइये मैं क्या करू ? आपके और मेरे सम्मिलित प्रयास क्या प्रदेश के काग्रेसी शासन से ग्वालियर के छात्रो को न्याय दिला सके ? उनके ऊपर जो अत्याचार हुआ पुलिस ने जिस

प्रकार उन्हे घर घर से बुलाकर चोर उचक्को की भाति पीटा, उसे न मै रोक पाई और न आप। उनके शिष्टमडल से मुख्य मत्री मिले तक नही। मैं उनकी पुकार लेकर कहा नही गई ? मुख्यमत्री, देश के गृह-मत्री, प्रधानमत्री, काग्रेस के अध्यक्ष और हाई कमाड ने इस गोली काड की जाच की माग तक को तो स्वीकार नही किया। इतना बडा काड ग्वालियर मे हो गया और छात्रो के आसू पूछने, उनके घावो को देखने, काग्रेसी शासन का एक मत्री भी उन दिनो ग्वालियर न आ सका। यह कैसा जनता का राज्य है यही मेरी समझ मे नही आ रहा है ? जनता पर गोलिया चले, लाठी चाज हो और उसके मनोनीत नेता को जनता के दु खो के सुनने का भी समय नही ?" राजमाता का स्वर व्यथित हो उठा "महाराज गलती तो छात्रो की भी थी न वे लूटमार मचाते और न गोलीकाड होता ।" शिष्ट मडल के एक सदस्य ने कहा।

"वाह ! साहब वाह ! यह आपने एक ही कही" कुमार आग्रे बोले, "छात्रगण कोई विदेश से तो आये नही है। वे तो हमारे आपके घरो के बच्चे ही तो है। घर मे कोई बच्चा उधम भी करें तो क्या उसके माता पिता उसे जान से ही मार देते है। उसको सही रास्ते पर लाने का किसका उत्तरदायित्व होता है ?" और फिर राजमाता बोली, "ग्वालियर गोलीकाड ही नही, बस्तर के गोलीकाड को लीजिये। वहा के महाराज की पुलिस की गोलियो से कैसी दर्दनाक मृत्यु हुई है ? वे आदिवासियो के नेता थे। उनके ऊपर हो रहे अत्याचार का वे विरोध कर रहे थे। अपने आदिवासी भाईयो को वे उनके अधिकार दिलाना चाहते थे। बस यही तो उनका अपराध था ? और इसके लिये उन्हे और उनके ११ साथियो को पुलिस की गोलियो ने भून दिया। यह कहा का न्याय है ? २० वष पूर्व मेरे कैलाशवासी पति आपके राजा थे—वे लोकप्रिय थे, आपका और उनका सुख दुख एक था। देश के हित मे उन्होने राज्य त्याग दिया जिसके लिये सरदार पटेल ने नेहरूजी ने और देश के अन्य

काग्रेसी नेताओ ने उन्हे सराहा। नवीन भारत का निर्माणकर्ता, सह-शिल्पी कहा किन्तु आज हम लोग काग्रेस की दृष्टि मे सामन्तवाद के विषधर सप हो गये है, उसके एक दल का कहना है कि काग्रेस को इनसे बचना चाहिये और उधर ऐसे भी राजे महाराजे है जो काग्रेस के अपने है। यह सौतेला व्यवहार क्यो? महाराजा रीवा, महाराजा नरसिंहगढ क्या राजाओ अथवा सामन्तो की श्रेणी मे नही है, महाराजा बडौदा और महाराजा कश्मीर क्या पूव नरेश नही है? सच तो यह है कि सत्ता के मद ने काग्रेस नेताओ को जनता का भाग्य विधायक बनाकर उनके द्वारा लोकतन्त्र के पावन सिद्धान्तो को कुचलवाया है। मैं तो देख रही हूँ कि जातिवाद, भाई भतीजावाद और स्वार्थपरता ने आज निर्मल सिद्धान्तो की भी हत्या कर दी है। आज प्रत्येक बुद्धि-जीवी अनुभव कर रहा है कि देश मे दिग्भ्रम फैलाया जा रहा है और निरकुशता, स्वेच्छाचारिता का विराट पोषण हो रहा है। इस स्थिति मे काग्रेस सस्था के मच पर से देश सेवा मेरे द्वारा सभव नही प्रतीत होती है।" राजमाता ने कहा। शिष्टमडल के नेता और सदस्य अब मौन थे। इन तर्को का उनके पास कोई उत्तर न था। राजमाता के काग्रेस त्यागने के निश्चय को अब अडिग जान वे मौन हो वापिस लौट आये। लौटते समय उनमे से एक अनुभवी नेता ने कहा कि "हमारा अनुभव था कि राजमाता व्यक्तिगत कारणो से काग्रेस छोड रही है किन्तु यह सत्य नही है इस सस्था को त्यागने के कारण वास्तव मे काग्रेस की आज की दोहरी नीति है। हमारे नेता कहते कुछ हैं और करते कुछ है।" ग्वालियर के काग्रेस कैम्प मे अब १९६८ के चुनावो के प्रति कोई उत्साह न रहा। काग्रेसी प्रत्याशियो ने यह समझ लिया कि इस बार उनकी इस क्षेत्र मे विजय सदिग्ध है।

दूसरे दिन राजमाता से भेंट करने आये प्रदेश जनसघ के अध्यक्ष एव ग्वालियर के सफल वकील नेता श्री नारायण राव शेजवलकर।



विचार मग्न राजमाता।



प्रसिद्ध साहित्यकार श्री वृंदावनलाल वर्मा का
अभिनंदन करती हुई राजमाता ।

नेपाल सम्राट के साथ सिंधीया परिवार ।

ये दोनो



महारानी विजयाराजे सिंधीया एवं श्रीमती
इंदीरा गांधी माधव-भवन का शिलान्यास करते हुये।



कमला राजा गर्ल्स कॉलेज ग्वालियर में छात्राओं को सम्बोधित करती हुई महारानी विजयाराजे सिंधीया ।

सन १९५७ के चुनाव अभियान में जनता को सम्बोधित करती हुई विजयाराजे सिंधीया ।

देश की राजनैतिक स्थिति पर विशद चर्चा हुई। उनका कहना था कि जनसघ के उच्चतम नेता यह चाहते हैं कि अब जबकि राजमाता कॉंग्रेस को त्यागने का निश्चय कर ही चुकी हैं तो वे जनसघ मे प्रविष्ट हो जावे तथा काग्रेस के प्रत्याशियो के विरुद्ध चुनाव लडने मे सघ को सहयोग दे। जनसघ राजमाता का, महाराज का एव उनके अन्य सहयोगियो का स्वागत करता है और सघ के प्रत्याशियो के चरित्र बल के कारण पूर्व-ग्वालियर राज्य क्षेत्र मे तो कॉंग्रेस को काय सफलता मिलेगी नही। जनसघ के इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिये राज माता ने, कु० आँग्रे एव महाराज माधवराव ने, समय चाहा। उधर देहली एव राजस्थान मे यह समाचार कि राजमाता ने काग्रेस छोड दी है शीघ्र ही प्रसारित हो गया तथा स्वतत्र पार्टी एव अन्य राजनैतिक दल भी उनके सहयोग के लिये प्रयत्नशील हो गये। राजमाता आगामी सप्ताह देहली गईं तो उनसे वार्तालाप करने के लिये स्वतत्र पार्टी तथा एस० एस० पी० दल, एव जनसघ के वरिष्ठ पदाधिकारी आये और यह आकाक्षा व्यक्त की कि राजमाता उनके दल मे प्रविष्ट हो जावे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मभूमि ग्वालियर ही थी और उनकी शिक्षा दीक्षा भी यही हुई थी। उनके स्वर्गीय पिता प० कृष्ण-बिहारीलाल वाजपेयी ग्वालियर के एक लब्ध प्रतिष्ठ कवि, साहित्यकार एव स्वाभिमानी अध्यापक थे। अटलजी का ग्वालियर के प्रति गहन प्रेम था। अत वे भी राजमाता से मिले, प्रोफेसर एम० एल० सोधी, श्री दीनदयाल उपाध्याय, श्री बलराज मधोक आदि जनसघी नेताओ का यह प्रयास था कि राजमाता जनसघ मे प्रविष्ठ होकर चुनाव लडे। उधर डह्या भाई पटेल, श्री मसानी एव वयोवृद्ध नेता राजाजी का आग्रह था कि वे स्वतन्त्र पार्टी मे आ जावे, राजस्थान तथा गुजरात मे स्वतन्त्र पार्टी का जनता पर यथेष्ठ प्रभाव था और इसकी लोकप्रियता भी देश मे बढ रही थी। चुनाव फरवरी मे होने वाले थे और अब

केवल ६-७ सप्ताह ही शेष थे जिसमे राजमाता को इन प्रश्नो पर निर्णय लेना था। राजवश के शुभाकाक्षी एव सबधी परिजनो की गोष्ठी हुई। ग्वालियर के वयोवृद्ध नेताओ ने अपना सदपरामर्श दिया और अत मे यह निश्चित हुआ कि विभिन्न दलो के चुनाव परिपत्रो एव सैद्धान्तिक सगठनो को दृष्टि मे रखकर राजमाता जनसघ एव स्वतन्त्र पार्टी के प्रत्याशियो को अपना सहयोग प्रदान करे किन्तु वे स्वय किसी भी दल मे प्रविष्ट न हो। अत राजमाता जिन सुयोग्य व्यक्तियो को चुनाव मे प्रत्याशी बनावे उनके विरुद्ध जनसघ अपने प्रत्याशी न खडे करे तथा जनसघ अथवा स्वतन्त्र पार्टी के प्रत्याशियो के विरुद्ध राजमाता का कोई प्रत्याशी खडा न किया जावे। जनसघ एव स्वतन्त्र पार्टी ने इस समझौते को पूर्णतया स्वीकार कर लिया और यह निश्चय हो गया कि काग्रेसी प्रत्याशियो का मुकाबला ये दल मिलकर करेगे तथा राजमाता पूर्व-ग्वालियर राज्य मे चुनाव अभियान करेगी तथा मध्य प्रदेश के अन्य क्षेत्रो मे-यथा-विन्ध प्रदेश, भोपाल, महाकौशल आदि मे जनसघी नेता दौरा करके चुनाव प्रचार करेगे। प्रदेश के जन काग्रेस के नेताओ से भी इसी प्रकार समझौता हो गया। राजमाता ने अब जन सम्पर्क कर पूर्व-ग्वालियर राज्य मे ससद एव विधानसभा की सीटो पर स्वतन्त्र एव जनसघ के नेताओ के साथ बैठकर प्रत्याशियो का निर्णय किया तथा उन्होने स्वय अपना नामाकन पत्र ससद एव धारा सभा की सीटो के लिये भर दिया। गुना क्षेत्र से काग्रेस की ससद सीट के प्रत्याशी थे सरदार देवराज जाधव जो मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र के सहयोगी थे तथा करेरा विधानसभा सीट से काग्रेस के प्रत्याशी थे प्रदेश के खाद्य मत्री श्री गौतम शर्मा जो मिश्र जी की नाक के बाल थे। ये दोनो सीटे कॉग्रेस के प्रचड गढ थी और काग्रेस इन्हे प्रतिष्ठा की सीट बनाकर पूर्व-ग्वालियर राज्य के क्षेत्र मे चुनाव लडने वाली थी। राजमाता ने इन्ही दोनो सीटो पर स्वय खडे होकर चुनाव लडने का निश्चय किया। वैसे ग्वालियर नगर की सीट

उनके लिये अधिक उपयुक्त थी किन्तु प्रश्न था उन क्षेत्रो से जो जनसघ और स्वतन्त्र पार्टी ने राजमता को सौंपे थे काग्रेस के प्रत्याशियो का सफाया करने का। चुनाव के काय को लेकर राजवश के नवीन और पुराने हितेच्छु एव वे छात्र नेता जिन्हे राजमाता का आशीर्वाद छात्र आदोलन के समय प्राप्त हो गया था अब जय विलास मे एकत्रित होने लगे। राजमाता ने करेरा धारा सभा की सीट के लिये जनसघ के 'दीपक' के चिह्न को एव गुना ससद सीट के लिये स्वतन्त्र पार्टी के "तारा" चिन्ह को ग्रहण कर लिया जिसका स्पष्ट आशय यह था कि इन सीटो पर उनकी पूरी सहानुभूति है। इसी प्रकार ग्वालियर ससद सीट के लिये नगर के समाजसेवी श्री रामावतार शर्मा को जनसघ के प्रत्याशी के रूप मे उन्होने अपना सरक्षण प्रदान किया एव पिछोर विधानसभा सीट पर खडे हुये लोकसेवक श्री लक्ष्मीनाराण गुप्त को उन्होने "तारा" चिन्ह दिलवाकर अपना सहयोग दिया। सब श्री शीतला सहाय, जगदीश गुप्त, नरेश जौहरी जो जनसघी कायकर्ता ग्वालियर क्षेत्र मे थे, उन्हे धारा सभा के लिये जनसघ का प्रत्याशी बनाकर खडा किया और राजमाता ने उन्हे अपने दल का पूर्ण सहयोग का वचन दिया। हरिजन नेता श्री आतमदास को ससद सीट मुरैना पर राजमाता का सरक्षण प्राप्त हुआ तथा श्री यशवन्तसिह कुशवाह को भी ससद सीट के लिये राजमाता का समथन मिला।

जनवरी ६७ का दूसरा सप्ताह प्रारम्भ होते ही चुनाव प्रचार के कार्य मे गरमी आ गई। गाव गाव नगर नगर मे विभिन्न दलो के प्रत्याशियो के पोस्टर चिपक गये और चुनाव प्रचार टोलिया फेरिया लगाने लगी। इन दिनो राजमाता के प्रमुख सहयोगी थे कु० सम्भाजी राव आग्रे, शिवपुरी के दीवान सुरेद्रलाल, भिण्ड के श्री यशवन्त सिह कुशवाह, पिछोर के श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त, ग्वालियर के श्री लोकेन्द्र सिह जी, श्री अर्जुन राव फालके एव प० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा आदि।

उत्साही नवयुवको की एक टोली थी महाराज माधवराव सिंधिया के साथ और नवयुवतियो का एक झुण्ड था राजकुमारी उषा राजे के साथ। महाराज माधवराव और राजकुमारी उषा राजे अपने दलो के साथ मा के चुनाव क्षेत्रो मे कार्य करने को निकल पडे और राजमाता जनसघ तथा स्वतत्र पार्टी के चिन्हो पर खडे अपने साथियो के क्षेत्रो मे जा कर चुनाव अभियान मे सम्मिलित हुई। आम चुनावो की पग ध्वनि अब सारे देश मे सुनाई पडने लगी। ऐसा प्रतीत होने लगा कि अथाह सागर का मथन हो रहा हो। इस विराट जन-मथन मे कितना पीयूष और कितना विष निकल पडेगा, कितनी मणिया और कितने काच के नकली टुकडे ऊपर आयेगे इसका विश्लेषण तो सन् १९६८ के बाद का काल ही करेगा और फिर विष को कठस्थ करने के लिए नीलकठ भगवान का आव्हान भी तो आवश्यक है। यदि नही तो कौन जाने इस मथन से निकला विष देश की व्यवस्था को ही आत्मसात कर जावे। इसमे सदेह नहीं कि चुनाव एक अनुपम साधन है—सही नेताओ की खोज का किन्तु एक महान विराट लोकतत्र के अस्तित्व के लिए जिस गभीरता, जिस निष्ठा की आवश्यकता है वह तो देश के मतदाताओ मे अभी कहा है? मतदाता जिस दिन इतने शिक्षित, समझदार और निष्ठावान हो जावेगे कि वे अपने उत्तरदायित्व को पूर्णतया समझ कर किसी भुलावे मे न आकर स्वय अपने विवेक के निर्देश पर अपना मत दे सकेंगे उस दिन शायद देश स्वस्थ जन शासन की परम्परा को निभा सकेगा। आज तो स्थिति यह है कि व्यक्तिगत लिप्सा, स्वार्थ प्रियता, जातिवाद आदि ने चुनावो के स्वरूप को ही निकृष्ट कर दिया है। फिर भी देश के सवि-धान के अनुकूल तो कार्य करना ही होगा। चुनावो द्वारा नेताओ को खोज कर लाना ही होगा और उनके हाथो देश की व्यवस्था, आयोजन एव विकास को सौंपना ही होगा।

मध्य प्रदेश मे भी इन चुनाव अभियानो ने गर्मी पकडी और आवश्यक धन की खोज मे हुए कई अनैतिक कार्य। गुलाबी चने की निकासी की

परमिटें धनी व्यापारियो को काग्रेस के चुनाव कोष के लिए उन से धन लेकर दिये गये। और जनता ने सुनी "गुलाबी चना भ्रष्टाचार काड" की गूजती आवाज। कतिपय मन्त्रियो के क्षेत्र मे अप्रत्याशित तेजी से प्रारम्भ हो गये "राहत काय"। शासन के लाखो रुपये इन कार्यों के हेतु केन्द्रित हो गये इने गिने स्थानो मे। भ्रष्ट अधिकारियो द्वारा किसी के सकेत पर किसी के इशारे पर खोल दिये गये थैलियो के मुह। उधर मानो झूठी रसीदे तैयार करने वाले के कारखाने खुल पडे और "दमोह काड भ्रष्टाचार" की बात जन जन मे फैल गई।

छात्रो की अनगिनत टोलिया चल पडी कटगी की ओर जहा से मुख्यमत्री श्री मिश्र धारा सभा सीट के चुनाव लड रहे थे। टोलियो का प्रयास था कि वे इस क्षेत्र के गाव तथा घर घर मे जा कर श्री मिश्र के विरुद्ध प्रचार करे। किन्तु छात्रो के दलो को मिश्र जी के साझेदारो द्वारा परेशान कर वहा से भगाया गया। गुप्त रूप से सत्ता के भागीदार मिश्र जी की विजय के लिए प्रयत्नशील थे। उधर घर घर मे बीडी बनाने वाले मजदूरो को ठेकेदारो द्वारा अनाप शनाप धन वितरित किया जा रहा था उनका सौहाद प्राप्त करने के लिए। जनतत्र के ये चुनाव प्रत्याशियो द्वारा, अनैतिकता बरती जाने के कारण एक मखौल बन कर रह गये थे। अशिक्षित भोले-भाले आदिवासियो और हरिजनो के वोट थैलियो के मुख खोल कर प्राप्त किये जाने का प्रयास चल पडा। सामन्तवाद के नाम पर अब राजा महाराजाओ का जो काग्रेस के नेतृत्व को चुनौती दे रहे थे काग्रेस के उच्चतम व्यक्तियो द्वारा तिरस्कार किया जा रहा था, उनका मजाक उडाया जा रहा था और वे पूर्व नरेश जो काग्रेस के साथ थे आज की सत्ता के प्रिय भाजन थे तथा उनकी देश भक्ति की सराहना हो रही थी। मध्य प्रदेश मे भी रीवा, नरसिंहगढ, सारगढ, आदि के राजा इस वग मे थे और राजमाता दूसरे वग मे। मजा तो यह था कि प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरागाधी द्वारा भी देश की जनता को सस्ते प्रचार का शिकार बनाया जा रहा

जा रहा था।

१६ जनवरी, १६६७ को श्रीमती इन्दिरा गाधी ने जयपुर मे आयोजित एक बृहद चुनाव सभा मे राजस्थान की जनता से कहा कि "और अपने महाराजाओ से पूछिए कि उ होने अपने शासन काल मे आप लोगो के लिए कितने कुए खुदवाए, कितनी सडके बनवाइ, ब्रिटिश राज सत्ता को देश से हटाने मे उन्होने क्या सहयोग दिया ? यदि आप उनसे इसका हिसाब मागेंगे तो उत्तर मे आपको मिलेगा एक बडा शून्य।"

भारत की प्रधान मन्त्री यह भाषण देते समय भूल गईं कि इसी जयपुर नगर को शोभामय बनाया था सर मिर्जा इस्माइल ने, जयपुर महाराज के राज्यकाल मे उनके आदेश प्राप्त कर और बीकानेर के महाराज ने स्वय अपने हाथो "गगा नहर" की खुदाई का पहला फावडा चलाया था और इस मरुस्थल को पानी का एक ऐसा भडार प्रदान किया था जिसके सहारे लाखो सूखे खेत हरी फसलो से लहलहा उठे थे। वे भूल गई कि जिन सडको का निर्माण राजाओ ने अपने शासन काल मे कराया था उनकी ठीक तरह से देख भाल भी आज का काग्रेसी शासन नही कर पा रहा है और जिनके शासन काल मे जनता को गेहू, चना, दूध, घी, कौडियो के भाव प्राप्त था आज काग्रेस राज्य मे वे ही दाने दाने और बूद बूद को तरस उठे है। वे भूल गईं सामन्त वादी झासी की रानी का जिसने अपने जीवन की आहुति देकर ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी थी और भारत के स्वाधीनता सग्राम का सूत्रपात किया था। जनता अब जनतत्र का वास्तविक मूल समझने लगी थी तथा उन नेताओ को जो इतिहास को तोड मरोड ने का प्रयास कर रहे थे उसे भुलावे मे न डाल सका और ये चनाव अभियान काग्रेस की कमजोरियो को छिपाने मे सफल न हो सके।

मध्य प्रदेश मे उन दिनो चुनाव के लिए मुख्यत तीन चार शक्तिशाली दल कार्य कर रहे थे। काग्रेस, जनसघ, सोशलिस्ट, सयुक्त समाजवादी एव प्रजा समाजवादी दल। काग्रेस विन्ध्य क्षेत्र मे सामन्त

वाद के प्रतीक महाराज रीवा की शरण ले चुकी थी तथा नरसिंहगढ राजगढ मे महाराज नरसिंहगढ की तथा छतीसगढ मे कतिपय अन्य राजवशो की जिनम सारगगढ के राजा नरेशचन्द्र प्रमुख थे। जबलपुर सागर, दमोह के क्षेत्र मुख्य मन्त्री के अपने क्षेत्र ये जहा उनके वर्षों पुराने सम्पक थे। इस प्रकार प्रदेश के दो तिहाई भाग मे काग्रेस का चुनाव अभियान सामन्तवादी राजवशो की सहायता से सफलतापूर्वक चल रहा था किन्तु शेष भाग में उसका सबसे बडा प्रतिद्वन्दी था जनसघ। वैसे विन्ध्य प्रदेश मे भी कुछ भाग थे जहा प्रजा समाजवादी दल के प्रत्याशी श्री चन्द प्रताप तिवारी आदि अपनी लोकप्रियता के कारण महाराज रीवा से समर्थित काग्रेस प्रत्याशियो को चुनौती देने मे समर्थ थे। मत्रिमडल मे मुख्यमत्री का सर्वाधिक स्नेह और सहयोग प्राप्त था दो व्यक्तियो को—एक थे श्री गौनम शर्मा जिनका क्षेत्र था शिवपुरी जिले का एक भाग करेरा और दूसरे थे श्री अर्जुनसिंह जिनका पैतृक घर था चोरहट मे जहा से वे काग्रेस टिकट पर खडे हुए थे। ये दोनो प्रत्याशी काग्रेस की प्रतिष्ठा को लेकर मुख्यमत्री के पूण सहयोग से चुनाव लड रहे थे तथा इ हे हर प्रकार की सुविधा प्राप्त थी। मुख्यमत्री स्वय इन दोनो के क्षेत्रो मे चुनाव भाषण देने वाले थे। प्रयत्न यह था कि चाहे जितना ही त्याग क्यो न करना पडे इन दोनो प्रत्याशियो को तो जिताना ही होगा। एक के विरोध मे खडी थी स्वय राजमाता और दूसरे के विरोध मे थे सश्वत प्रजा समाजवादी नेता श्री चन्द प्रताप तिवारी।

चुनाव अभियान फरवरी १९६७ मास के प्रारम्भ होते ही बहुत जोर पकड गया। ग्वालियर, के महाराज माधवराव एव राजकुमारी उषा राजे ने शिवपुरी क्षेत्र सभाला और वे रात-दिन गाव गाव मे जनता को सम्बोधित करने जाने लगे। उधर राजमाता स्वय अपने सहयोगियो के साथ विभिन्न स्थानो मे निरन्तर प्रयास कर रही थी। प्रात काल ध्यान पूजा से निवृत हो कर गावो मे तीनो दल विभिन्न स्थानो के लिए

रवाना हो जाते थे। राजकीय डाक बगलो मे मन्त्रियो के लिए कमरो मे ताले डाल दिये गए थे तथा राजमाता को और उनके दल के व्यक्तियो को वहा ठहरने की सुविधा अधिकाशत न मिल पाई। जोर-जबरदस्ती से शासन के अधिकारियो से लड झगड कर यदा-कदा एक कमरा राजमाता का दल भी हथिया लेता था किन्तु लगातार मन्त्रियो के चुनाव अभियानो मे भाषण करने के लिये आने के कारण डाक बगलो मे ठहरने की सुविधा राजमाता को मिल ही न पाती थी। अत कभी कभी १००—१२५ मील तक दल के साथ राजमाता महाराज और राजकुमारी को रात्रि विश्राम के लिए जाना पडता था। भोजन पान की व्यवस्था तो यह थी कि प्रात काल तैयार भोजन लेकर प्रत्येक दल निकल पडता था और माग मे कही भी पानी की सुविधा देखकर वृक्षो के तले भोजन कर लिया जाता था। राजमाता को तो बहुधा मोटर मे बैठे-बैठे ही मार्ग मे दो-चार कौर निगल लेने पडते थे क्योकि गाव-गाव घूमकर प्रचार का काय ही अधिकाश समय ले लेता था। इन निवालो को ग्रहण करने के पूव भी राजमाता सदैव अपने साथियो की भोजन व्यवस्था को स्वय देख लेती थी तथा उनकी असुविधाओ का उन्हे निरन्तर ध्यान रहता था। महलो की रानी आज गाव-गाव की धूल छान रही थी। घर-घर जाकर जनता से वोटो की भिक्षा चाह रही थी तथा उनके मतो का महत्व उन्हे समझाकर जनतन्त्र की ज्योति जगा रही थी। लोकतत्र की यह तपस्विनी ग्रामवासियो को प्रदेश के मुख्य-मत्री श्री मिश्र के अत्याचारी कृत्यो की कहानी सुना रही थी और उसके साथी थे ग्वालियर के, शिवपुरी के तथा गुना के नवयुवक छात्र जो हरबोलो की भाति साइकिल हाथ मे पकडे हर झोपडी के सामने खडे अलख जगा रहे थे। उन्हे न चिन्ता थी भोजन पान की और न विश्राम की। राजमाता की इस मायावद दिनचर्या से उन पर छा गया था एक नशा जो उन्हे विश्राम न करने देता था।

गावो के घर-घर मे ग्राम वधुयें प्रतिदिन इस मा बेटे की अभ्यथना

करती थी। एक दोपहरी को जब मुख पर घूघट डाले एक ग्राम्य वधू ने महाराज को हार पहनाकर उनके मस्तक पर तिलक किया तो हर्ष विह्वल अवस्था मे उसकी आखें मोतियो की लडे बरसाने लगी। राजमाता और महाराज के पदस्पश करने, उनका अभिनन्दन करने को गावो मे अपार भीड लग जाती थी किन्तु राजमाता उनके समक्ष करबद्ध खडी होकर केवल कहती थी "मुझे तो आप सब अपना प्यार दो, निस्वाथ सेवा की भावना से भरे लोगो को अपना मत देकर हमारी सफलता की कामना करो। मै तो मिश्रजी के राज्य को जिसने देश के जीवन को पतित किया है प्रदेश से उखाड फेकना चाहती हू। आप अपना मत मुझे देगे मेरे साथियो को देगे तभी तो यह सभव होगा।"

और फिर एक गाव से दूसरे गाव को वह टोली बढती ही चली जाती थी। दिन भर मे १५ २० चुनाव सभाओ मे भाषण दिये जाते, सरपचो से, ग्राम्य वासियो से, उनकी बहू-बेटियो से मिला जाता था और अर्द्ध रात्रि के करीब टोलिया अपने विश्राम स्थल पर पहुंचती थी। महाराज की वक्तृत्व शक्ति की, राजकुमारी के भाषणो की चारो ओर प्रशसा हो रही थी और इनकी मोटरे देखकर गाव वालो की भीड दौडकर घेर लेती थी। मा-बेटे को मच पर बिठाकर ग्रामवासी अपने मुखियाओ के साथ उनका नमन करते थे उन्हे अपना नैवेद्य अपना अर्घ्य समर्पित करते थे। कभी कभी गावो के बाहर वृक्षो के तले एकत्रित होती देखकर राजमाता मोटर से उतर कर उनके बीच जा पहुचती और बस फिर एक सभा प्रारम्भ हो जाती। वे जहा जाती वहा जनता उनके दर्शनो को पागल हो उनकी ओर दौड पडती थी। उनकी मोटर को जन समूह चारो ओर से घेर लेता और फिर उन्हें उतरकर सबसे मिलना ही पडता। वार्तालाप होता और जनता अपने कष्टो की गाथा उन्हे सुनाती। अन्न दुलभ हो गया था। महगाई उनकी कमर तोड रही थी, शक्कर और मिट्टी के तेल के दशन भी न होते थे और पीने का पानी लेने के लिये गाव की बहू-बेटियो को मीलो चलना पडता

था। कई गावो मे तो जल की उचित व्यवस्था भी न थी।

शासन की ओर से जो बाधाये इन दिनो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप मे राजमाता को, महाराज को एव उनके दलनायक को उठानी पडी वे तो जनतन्त्र की परम्परा के एकदम विपरीत थी। किसी के सकेत पर पुलिस की डाट डपट प्रारम्भ होती, गावो मे कायकर्त्ताओ को परेशान किया जाता, तहसीलो मे पटवारी सर्वसर्वा बनकर गाववासियो को धमकाने लगते और अन्न वितरण केन्द्र पर कहा जाता कि "जाओ। जाओ। अपनी राजमाता से, अपने महाराज से गेहू मागो, शक्कर मागो। यहा कुछ न मिलेगा।" उद्योगपतियो का पैसा मन्त्रियो के इशारो पर मुफ्त बहने लगा था, ठेकेदारो की थैलिया किसी के सकेत पर खुल गई थी और फिर वह सब हुआ जिससे कि जनतन्त्र की पद्धति को यश नही मिल सकता था। प्रत्याशियो के दल के दल धुआधार प्रचार मे लग गये। राजमाता ने, उनके सहयोगियो ने और उनके क्षेत्र के ग्राम्यवासियो नेयह सब सहा और फिर आया वह दिन जबकि प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री मिश्र स्वय चुनाव अभियान मे भाग लेने अपने कृपापात्र मन्त्री श्री गौतम शर्मा के साथ करेरा पधारे।

फरवरी १९६७ का महीना था। शिवपुरी झासी सडक पर करेरा का डाक बगला पुलिस दल से भरा हुआ था। खाकी वर्दी मे, सफेद पोशाक मे चारो ओर पुलिस का जमघट था। आज की सभा के लिये जिसे मुख्य मत्री सम्बोधित करने वाले थे चारो ओर गावो से पकड-पकड कर लोगो को लाया जा रहा था। बिना पुलिस के घेरे के जनता को सम्बोधित करने का साहस तो इस क्षेत्र मे न मुख्य मत्री को था और न खाद्य मत्री को क्योकि ग्वालियर के गोली काण्ड के पश्चात कोई भी मत्री आम सभा मे ग्वालियर की जनता के समक्ष आने से डरता था। आशका की इस अवस्था मे त्रस्त गत ५-६ मास मे ग्वालियर अथवा उसके आस पास कही भी शासन के किसी मत्री ने जनता की सभा मे भाषण नही दिया था।

मिश्रजी को आज भी मध्य भारत क्षेत्र मे जनता के समक्ष आने मे आशका थी। अपने कृपापात्र मत्री के काफी आश्वासन पर वे करेरा आये थे। सभा प्रारम्भ हुई। श्रोतागण पकड पकड कर जबरन बुलाये गये। कतिपय ग्राम्यवासी तथा सादे वस्त्रो मे पुलिस के जवान जो कि समीप के शिक्षण केन्द्र से भाषण सुनने की ड्यूटी पर बुलाये गये थे वहा उपस्थित थे। करेरा नगर के कतिपय नागरिक, अधिकारियो एव मत्रियो की आगवानी को खडे हुए थे। मत्रीजी ने काग्रेस के गुण गाये। क्षेत्र और प्रदेश की जनता के प्रति अपनी सेवाओ की सराहना की। अन्य वक्ताओ ने राजमाता को गत निरकुश सत्ता का प्रतीक एव सामन्तवादी कहा और बताया कि वे पुन सिंधिया वश का राज्य चाहती है इस कारण जनता उन्हे अपना मत न दे। मुख्यमत्री ने अपना भाषण प्रारम्भ किया और मत्रिगणो का तथा काग्रेस का कीर्तिगान प्रारम्भ ही किया था कि लोगो ने सामने से एक बडी मोटर को दिनारा ग्राम की ओर जाते देखा। ग्राम्यवासी श्रोता राजमाता की मोटर को पहचान कर सभा छोड उठ खडे हुए और लगे उनके पीछे भागने। शनै शनै प्राय समस्त ग्राम्यवासी श्रोता दिनारा की ओर भाग पडे और सभा मे रह गए केवल ड्यूटी पर तैनात सादे वस्त्रो मे पुलिस के कतिपय जवान और वर्दीधारी पुलिस सैनिक। मुख्यमत्री जनता की इस बदतमीजी पर बौखला उठे। उनके मिजाज का पारा गरम हो उठा। सभा स्थल अब प्राय श्रोताविहीन सा था। खिसिया कर उन्हे अपना भाषण समाप्त कर देना पडा और मत्रीजी का मुँह गम्भीरता से लटक सा गया। उधर जन समूह दौडता हुआ जा पहुचा दिनारा गाव मे। लोगो ने देखा कि युवक महाराज माधव राव एक सभा मे भाषण कर रहे है। उनके देखते-देखते राजमाता की मोटर सभा स्थल पर जा पहुची। पुत्र ने भाषण बद करके मच पर चढती "मा" के पदस्पश किये और मा ने स्नेह से पुत्र को वक्ष से चिपका लिया। दशको के नेत्रो से अश्रु टपक पडे। मा-बेटे के इस स्नेह

दुलार की अभिव्यक्ति पर। राजमाता की जय जयकार से सभा स्थली गूज उठी और उनका अभिनन्दन प्रारम्भ हो गया।

चुनाव के उन दिनो की बातें ही निराली थी और अजीब अजीब अनुभव महाराज को, राजमाता को और राजकुमारी को अपने इन प्रवासो मे प्राप्त हुए। एक दिन की बात है महाराज माधवराव अपने ए० डी० सी० श्री महेन्द्र प्रतापसिंह के साथ भिन्ड जिले मे चुनाव अभियान के हेतु जा पहुचे। जनता अपनी भक्ति अर्पण करने के लिये उमड पडी। सभा मे महाराज को चारो ओर से घेर लिया गया। भिन्ड जिला अपने वीर सिपाहियो और डाकुओ के लिये प्रसिद्ध है ही। वीरता और दिलेरी यहा के निवासियो मे कूट कूट कर भरी हुई है। उस दिन सभा मे जब महाराज को मच पर बिठाया गया तो एक क्षत्रिय सज्जन ने आव देखा न ताव। एक क्षण मे कमर पेटी मे से कटार निकालकर काट डाला अपना अगूठा। लाल रक्त सबके देखते-देखते धार बाधकर बहने लगा और फिर रक्त भरे अगूठे से उस सज्जन ने महाराज के मस्तक पर तिलक कर दिया और चिल्लाकर बोले "सिंधिया वश की जय हो, राजमाता की जय हो। हमारे माधव महाराज की जय हो। इनके इशारे पर हम अपना खून नौछावर कर देंगे।" सारी सभा इस क्षत्रिय दर्प को देखकर राजमाता और महाराज की जय-जयकार से गूज उठी। चुनाव मे मतदान राजमाता दल के व्यक्तियो को देने की शपथे ली गईं और जोश मे भरी यह सभा रक्त के उस फव्वारे की स्मृति को न भूली। एक अजीब सी भावना से वह ओत-प्रोत हो गई। उधर आगामी सप्ताह मे करेरा के समीप एक सभा मे विरोधी दल के बहकाने मे आकर किसी अज्ञात व्यक्ति ने दूर से महाराज के ऊपर जोर से एक हार फेंका जो उनके मुख पर आकर लगा। आखे बाल-बाल बच गईं। महाराज और उनके ए० डी० सी० महेन्द्रसिंह जी ने आश्चय मे भर कर देखा कि फूलो के साथ उस हार मे गुथे हुये थे छोटे नीबू, छोटे अमरूद जिसमे लगी थी तीखी सुईया। एक भी सुई यदि नेत्रो के

समीप पहुच जाती तो महाराज की दृष्टि के लिये खतरनाक साबित हो सकती थी। भगवान ने ही उस दिन महाराज के नेत्रो की रक्षा की। जनता सत्य घटना जानते ही बौखला उठी और खोज होने लगी उस शैतान की जिसने ऐसा साहस किया था। बहुत कठिनाई से जनता को उस सध्या को शान्त किया जा सका जबकि महाराज पूर्णतया अविचलित रहकर अपना चुनाव भाषण देते रहे।

उन दिनो समय की बचत की दृष्टि से महाराज एक डकोटा वायुयान से चुनाव क्षेत्रो मे दौरा कर रहे थे और उनके साथ केवल रहते थे विमान चालक कैप्टन कुमार और एक ए० डी० सी० श्री महेन्द्रप्रताप सिंह जी। पूर्व ग्वालियर राज्य के विभिन्न जिलो मे चुनाव अभियान के हेतु इसी विमान से दौरा किया जा रहा था। प्रात काल दोपहर का भोजन साथ लेकर महाराज विमान मे जा पहुचते थे और सध्या तक सुदूर स्थित ७ ८ सभाओ मे भाषण दे आते थे।

एक दिन राजकुमारी उषा राजे मोटर तथा जीप द्वारा चुनाव क्षेत्र मे गई तो शायद विरोधी सत्तारूढ दल के इशारे पर एक ट्रक द्वारा उनकी मोटर का पीछा किया गया तथा उन्हे जान बूझकर परेशान किया गया। जनता को जब यह समाचार मिला तो क्रोध मे भरकर ट्रक वालो की खोज प्रारम्भ हो गई। ग्राम-ग्राम मे राजपरिवार के सदस्यो की रक्षा का भार ग्राम के युवको ने अपने हाथो मे ले लिया और शासकीय शक्ति से सक्रामित विरोधी पक्ष के कुचक्र चल न पाये। महाराज मालवा के धार क्षेत्र मे भी गये क्योकि पूव ग्वालियर जिला अब धार जिले का एक तहसील था। वे मार्ग मे नीमखेडा से निकले। जहा उनका परिचय नीमखेडा के युवक राजा साहब ठा० सुरेन्द्रसिंहजी से हुआ। चुनाव के इस अभियान मे महाराज को इस सौजन्यशील, नम्र एव विनय से परिपूर्ण साहसी युवक से बहुत सहायता प्राप्त हुई।

राजमाता का प्रवास क्षेत्र जन काग्रेस के निश्चय के अनुसार केवल मध्य भारत क्षेत्र मे सीमित था क्योकि जन काग्रेस के नेताओ का यह

विश्वास था कि उनके प्रत्याशियो की स्थिति मध्य भारत क्षेत्र मे ही सुदृढ बनाना चाहिये। इस नियम के अनुसार मध्य प्रदेश के मध्य भारत क्षेत्र मे ही राजमाता, महाराज और उनके साथियो ने अपना चुनाव अभियान सगठित किया था। राजस्थान के गैर काग्रेसी नेताओ के निमत्रण पर केवल कुछ दिनो का समय निकालकर राजमाता राजस्थान के कतिपय भागो मे चुनाव अभियान मे गई और उसमे उनको यथेष्ठ सफलता भी प्राप्त हुई।

जनसघ की यह कामना थी कि राजमाता एव जयपुर की महारानी श्रीमती गायत्री देवी मुख्य मत्री श्री मिश्र के क्षेत्र कटगी मे उनके विरुद्ध प्रचार हेतु अवश्य आवे एव उसकी पूर्ति के हेतु १७-१८ फरवरी १९६७ को दोनो ने आने का कायक्रम भी बना लिया। विमान द्वारा कटगी पहुचकर चुनाव सभाओ को दोनो महिलाये सम्बोधित करने वाली थी। सभाओ का आयोजन किया जा रहा था एव जनसघी कार्यकर्ता फोन द्वारा राजमाता से आग्रह पर आग्रह किये जा रहे थे कि वे विमान द्वारा शीघ्र पधारे। महारानी गायत्री देवी एव राजमाता के साथी विमान-निलय अधिकारी से प्राथना कर रहे थे कि वे राजमाता के विमान को कटगी के समीप उतरने की आज्ञा दे दे किन्तु किसी अज्ञात सत्तापूण व्यक्ति के इशारे पर हर बार अधिकारियो द्वारा यह उत्तर दिया जा रहा था कि एरोड्राम की अवस्था ठीक नही है, मरम्मत चालू है अत इस दशा मे किसी भी विमान को निलय पर उतरने की आज्ञा नही दी जा सकती। अधिकारियो को सभवत यह सकेत प्राप्त हो चुका था कि चुनाव के दो तीन दिन पूव जयपुर एव ग्वालियर के विमानो की निलय पर उतरने की सभावना है क्योकि कटगी क्षेत्र मुख्य मत्री का क्षेत्र है एव विरोधी पक्ष की ओर से अभियान मे भाग लेने दोनो महिला वहा विमान द्वारा पहुचेंगी किन्तु प्रदेश की सत्ता शायद केन्द्रीय सत्ता के साथ जोड मिलाना चाहती थी। फलत भरसक -प्रयत्नो के पश्चात् भी दोनो विमानो को निलय पर उतरने की आज्ञा

नही मिल पाई और चाहकर भी मिश्रजी के विरुद्ध अभियान मे अपना सहयोग देने कटगी मे न तो राजमाता पहुच पाईं और न महारानी गायत्री देवी ही।

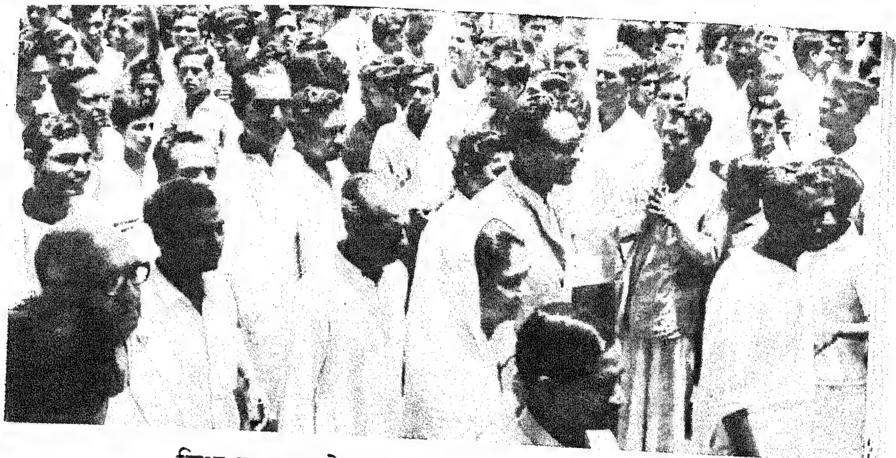
इन्ही दिनो मध्य प्रदेश मे एक और अनहोनी घटना घटी जिसमे जनता ने काग्रेस सत्ताधिकारियो की नैतिकता की परख की। विदिशा जिले के काग्रेसी प्रत्याशी ने घोषणा की कि यदि जनता अपना मत देकर उसे विजयी बनावे तो वह पठानकोट एक्सप्रेस को गुलाबगज स्टेशन पर रोकने की व्यवस्था केन्द्रीय शासन के मन्त्रियो के द्वारा करा लेगे और फिर सबने देखा कि फरवरी १९६८ के दिनो मे सचमुच यह ट्रेन गुलाबगज स्टेशन पर रुकने लगी। स्थानीय जनता ने राहत की एक सास ली क्योकि उसकी यह माँग बहुत दिनो से चली आ रही थी और अब चुनाव के दिनो मे पूरी हुई थी। फिर हुए चुनाव और उसमे काग्रेसी प्रत्याशी की हार। गुलाबगज की जनता को उसकी उद्दडता के लिए दड देने हेतु पठानकोट एक्सप्रेस का गुलाबगज पर रुकना बद कर दिया गया मानो कहा जा रहा है "और दो काग्रेस को वोट" प्रतिशोध की भावना स्पष्ट हो उठी थी।

अन्त मे २० फरवरी का वह दिन भी आया जबकि मतदान हुआ। गुना और करैराक्षेत्र मे जनता ने आश्चय से देखा कि गावो से स्त्री, पुरुषो की टोलियो पर टोलियाँ चली आ रही है मतदान करने और ग्वालियर मे नागरिको की भीड मतदान केन्द्रो की ओर उमड पडी है। मतदाता चारो ओर केवल पूछते है राजमाता का, उनके प्रत्याशियो का चुनाव चिन्ह और उस पर अपनी छाप लगाकर चले आते हैं। सुना गया कि करेरा और गुना क्षेत्र मे पुलिस की धाधलेबाजी के दृश्य भी देखने को मिले। मतदान करने आती हुई जनता को शायद पुलिस के सिपाही डराने धमकाने मे व्यस्त थे वे कह रहे थे कि राजमाता के विरुद्ध वोट डाला जावे। लोगो ने कहा कि पुलिस वालो का यह अनपेक्षित हस्त-क्षेप देखकर जनता मे रोष फैल गया। उधर मतकेन्द्रो पर काग्रेस

के पक्ष मे शायद प्रचार चल रहा था और काग्रेस प्रत्याशी ट्रको मे मतदाताओ को लाला कर पोलिग स्टेशन से कुछ दूर उतार रहे थे उनसे यह वचन लेकर कि वे अपना मत काग्रेस के बैल जोडी को देंगे। लोगो ने कहा कि ये समस्त बाधाये भी जनता को अपने निश्चय से न डिगा सकी और मतदाताओ ने राजमाता के पक्ष मे ही मत दिये।

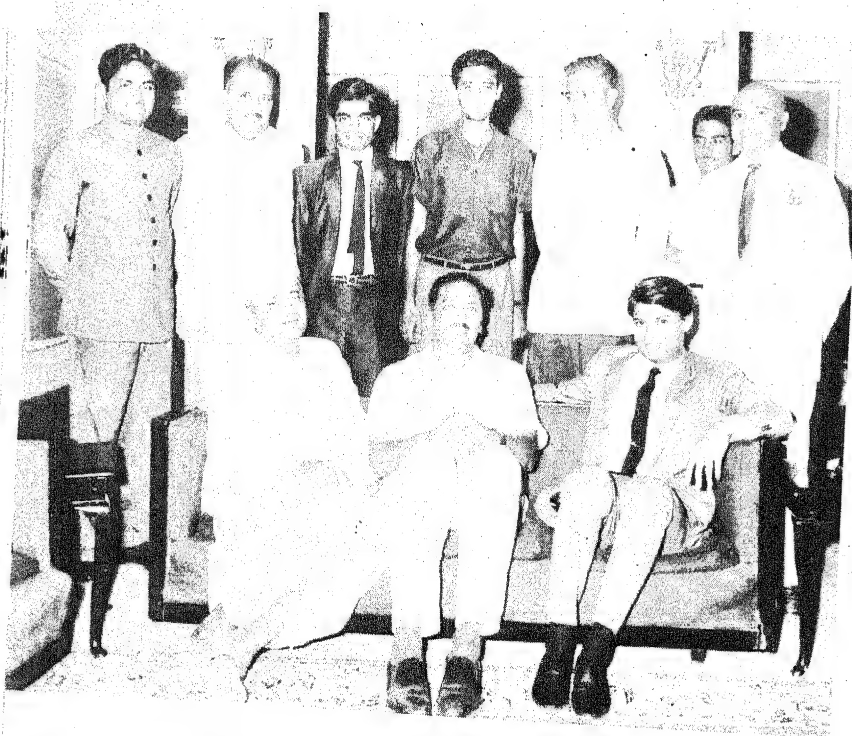
२२ फरवरी को चुनाव के फलो की घोषणा हुई और सारे प्रदेश ने आश्चर्य से सुना और देखा कि प्रदेश के उस भाग मे जो राजमाता को सौपा गया था और जिसमे उनके सरक्षण मे चुनाव अभियान हुआ था एक भी सीट काग्रेस को प्राप्त नही हुई। राजमाता के प्रत्याशियो की, उनसे समर्थित जनसघी प्रत्याशियो की शत प्रतिशत विजय हुई। क्या धारा सभा और क्या ससद! जिस सीट पर राजमाता समर्थित प्रत्याशी खडा हुआ वह विजयी हुआ और करेरा तथा गुना सीट पर राजमाता विजयी ही नही हुई वरन् उनके विरोधी एव काग्रेसी प्रत्याशी श्री गौतम शर्मा और सरदार देवराज जाधव की जमानते भी जब्त हुई। राजमाता के प्रति जनता के अडिग विश्वास का यह प्रत्यक्ष प्रमाण था।

मिश्र मन्त्रिमडल के सात मत्री इन चुनावो मे पराजित हुये तथा काग्रेस की प्रतिष्ठा को धनी एव मिश्रजी के विशेष कृपापात्र खाद्य मत्री श्री गौतम शर्मा राजमाता द्वारा एव कृषि मत्री श्री अर्जुनसिह, प्रजा समाजवादी नेता श्री चन्द्र प्रताप तिवारी के हाथो पराजित हुए। काग्रेस की यह करारी हार थी, उसकी प्रतिष्ठा को मध्य प्रदेश मे एक बहुत बडा धक्का पहुचा था। किन्तु फिर भी मिश्रजी कटगी क्षेत्र से विजयी हुए थे। विन्ध्य प्रदेश मे काग्रेस प्रत्याशिओ को अभूतपूर्ण सफलता मिली थी। महाराज रीवा के प्रयत्नो से वहा भी महाराज का प्रजा एव ग्रामीण जनता पर प्रभाव था। ठा० गोविन्द नारायण सिह अपने गाव रामपुरा क्षेत्र से विजयी हुये। राज्य की धारा सभा मे काग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ और दूसरा दल जो अच्छी सख्या मे धारा सभा



मिश्र सरकार के पतन का संदेश राज्यपाल को देने के हेतु राजभवन को प्रयाण करती हुई राजमाता ।

मिश्र सरकार के पतन का संदेश राज्यपाल श्री. के. सी. रेड्डी को देने के लिये आतुर ज
के साथ राजभवन को जाती हुई राजमाता । तीन वर्षों की अनावृष्टि के कष्टों को



मिश्र सरकार के पतन के हेतु कार्य करनेवाले महाराज सिंधीया के कतिपय साथी ।

मे आ सका था वह था जनसघ। जन काग्रेस का तो मानो दिवाला ही निकल गया था।

जैसा की अपेक्षित था मध्य प्रदेश म पुन काग्रेस का मत्रिमडल बना और मिश्रजी एक बार फिर मुख्यमत्री बने। राजमाता के प्रयत्न इस सम्बन्ध मे सफल नही हुए शायद भगवान को अभी उनकी और भी कडी परीक्षा लेना अपेक्षित था। सत्ता का जोश एक बार पुन मिश्रजी के सिर चढ कर बोला। देश मे सन् १९६७ के चुनावो ने स्थिति अब बहुत कुछ बदल दी थी। केन्द्र मे यद्यपि काग्रेसी बहुमत होने के कारण उसका मत्रिमडल बन गया था किन्तु वह बहुमत १९६२ जैसा न था और इधर केवल ७ राज्यो मे काग्रेसी शासन रह गये। कई प्रसिद्ध काय कर्ता यथा काग्रेस अध्यक्ष कामराज साधारण से युवक प्रत्याशी द्वारा मद्रास मे पराजित हुए और सादोवा पाटिल के हाथ भी पराजय लगी। काग्रेस का सुदृढ २० वप का गढ कागज के महल के समान इन चुनावो मे उड गया था। मद्रास मे डी० एम० के दल के बहुमत ने काग्रेस को धराशाई किया था और बगाल, केरल, उडीसा मे काग्रेस को बहुमत न मिल पाया था। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश सौराष्ट्र मे भी काग्रेस की स्थिति डावाडोल थी।

इन चुनावो ने राजमाता के इस विश्वास को बलवती किया कि जनता अब काग्रेस के हाथ नही है तथा काग्रेसी शासन के दिन अब देश मे इने गिने है। वे जनमत को अपनी ओर मोडने के हेतु पुन सलग्न हो गईं। भगवान पर अमिट अडिग विश्वास रखकर जो उनका अविचल सम्बल था।

राजमाता ने पाया कि मध्य प्रदेश मे काग्रेस का विधान सभा मे बहुमत तो अवश्य है किन्तु जनता की भावनाओ मे घुटन सी प्रतीत हो रही थी। जनता चाहती है इस २० वष के काग्रेसी शासन के जुये को उतार फेकना। यह कैसे सम्भव होगा यह तो भगवान ही

जाने किन्तु निरकुशता का शासन तो यह प्रदेश और इसके साहसी राजनैतिक नेता शायद ही सहन कर पाए। जनयुग मे जनता की जाग्रति ही साथ देती है और उसकी जाग्रति के हेतु वे प्रयत्नशील हो उठी।

ग्रौर ग्रनजाने पथ पर निरन्तर ग्रागे बढते ही जाना फिर कोई साथ दे ग्रथवा नही। सेवा के व्रत को निभाने के लिए, ग्वालियर के छात्रो को राहत दिलाने के लिए, कॉंग्रेस के शासन की जडे खोखली करने के लिए धारा सभा मे जाना ग्रावश्यक था। फूलो को त्याग कर शूलो का वरण करना जरूरी था। ससद के गैर काग्रेसी सदस्यो का ग्राग्रह था कि राजमाता ससद मे ग्राकर काग्रेस विरोधी मोर्चे के गठन मे सहायक हो। वे उन्हे ग्रपने बीच पाने को उत्सुक थे। ग्रब जब कि काग्रेस का बहुमत प्रदेश की धारा सभा मे हो ही गया है तो वे प्रयत्न करके भी मिश्रजी के शासन से राज्य की जनता को मुक्ति न दिला सकेगी। ग्रत उनका ससद मे ग्राना ही ठीक हे ग्रौर उधर विरोधी दलो के धारा सभाई चाहते थे कि वे धारा सभा मे ग्राकर उन्हे मिश्र विरोधी एक सूत्र मे बाधने का प्रयत्न करे।

देश के चौथे ग्राम चुनाव की समाप्ति पर माच १९६७ मे प्रदेश मे काग्रेसी मत्रिमडल बना श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व मे ग्रौर उसने ४ माच सन् १९६७ को गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। काग्रेस दल के विधान सभाईयो को बहुत ग्राश्चय हुग्रा मत्रिमडल की सूची मे दो नामो को न पाकर, जो थे श्री ब्रजलाल वर्मा ग्रौर दूसरे विन्ध्य क्षेत्र के ठा० गोवि द नारायण सिह। मिश्रजी का ग्राश्वासन प्राप्त कर वर्माजी को विश्वास था कि उनका नाम मत्रिमडल मे ग्रवश्य होगा ग्रौर उधर हाई कमाड के कई नेताग्रो ने मिश्रजा पर दबाव डाला था ठा० गोविन्द नारायण सिहजी को मत्रिमडल मे लेने के लिए। विन्ध्य प्रदेश के कॉंग्रेसियो का यह विश्वास था कि उनके नेता श्री शम्भू नाथ शुक्ल को, जो कि गत २० वर्ष से मत्रिमडल के सदस्य थे, ससद मे भेज कर श्री ग्रर्जुन सिह के चुनावो मे पराजित होने पर मिश्रजी ठाकुर गोविन्द नारायण सिह को ग्रवश्य ही मत्रि-मडल मे ले लेगे। ग्रपना यह ग्रनुमान भी गलत निकलते देख कर उन्हे कुछ ग्राश्चय हुग्रा। इस समय विधान सभा मे विरोधी दलो की सख्या के

समक्ष कांग्रेस का केवल १९ का बहुमत था।

नवीन मन्त्रिमडल के सामने एक नही कई विकट समस्याये थी। जिनमे सबसे प्रमुख थी प्रदेशीय शासन की वित्तीय स्थिति १६० करोड के वार्षिक व्यय के बजट मे लगभग ६० करोड तो वेतन आदि का ही व्यय था। चुनाव के समय दिए गए वचनो के पालन के हेतु १८ करोड रुपयो की और भी आवश्यकता थी जो कि शासन के कमचारियो को केन्द्रीय दर पर भत्ता देने के हेतु चाहिये थी। उधर सन १९६६-६७ मे राजस्व मे १ ८४ करोड रुपये के स्थान पर कमी हो गई थी। १२ ४५ करोड रुपयो को केवल भूमि कर मे ही १ ७५ करोड की क्षति थी। और अकाल सुविधा के कार्यो मे भी शासन को १६ ३० करोड रुपये व्यय करने पडे थे। आलोचको ने इस तथ्य को जनता के सन्मुख ला रखा था कि प्रदेश विकास कार्यों मे व्यय निरतर गिरता जा रहा था। इस पर भी काग्रेसी शासन की यह हठधर्मी थी कि तीन हारे हुए मन्त्रियो को तथा अन्य पराजित काग्रेसी सदस्यो को पुन लाभ पहुचाने के लिए विधान सभा का गठन आवश्यक था और उसके लिए ६ लाख रुपये की धनराशि का प्रावधान भी किया जा चुका था। यदि इस पर वार्षिक व्यय ८ लाख रुपये था। इस आर्थिक सकट के समय भी फजूल-खर्ची का ठिकाना न था क्योकि प्रावधान के अनुसार विधान सभा भवन मे दूसरी मजिल के लिए बिजली का लिफ्ट लगाने के लिए ५०,००० रुपया व्यय होना था और भवन की मरम्मतो मे ५०५,००० रुपये। इस प्रकार राजभवन के व्यय मे १ लाख रुपयो की वृद्धि थी और मन्त्रियो आदि के लिए नई मोटरे खरीदने पर १ लाख रुपये व्यय होने थे। ग्रीष्मकाल मे पचमढी के लिए राजधानी ले जाने मे १५ लाख रुपये से अधिक ही व्यय होता था जनता के धन को इस प्रकार बहाना विशेषकर उस समय जब कि अकाल से ग्रस्त लाखो प्राणी क्षुधा से तडप रहे ह कहा तक न्याय सगत था ? इसी प्रकर खाद्यान्न की, महगाई की ऐसी कठि-नाइया थी जिससे प्रदेश की जनता अत्यधिक त्रस्त थी।

राजमाता इस स्थिति से अवगत थी तथा उन्हे आभास हो रहा था कि साथियो के हार्दिक सहयोग के बिना एव सस्था के सहयोगियो के अडिग विश्वास के बिना नवीन मत्रिमडल के लिए इन समस्याओ का सुलझाना अत्यन्त कठिन है। विरोधी दलो के विभिन्न नेता एक एक कर राजमाता से मिले और प्रदेश की राजनीति की चर्चा हुई। राजमाता के लिये अब यह निर्णय करना परम आवश्यक हो गया कि वे विधान सभा और ससद सीट के बीच मे एक का चुनाव कर ले। वे इस समस्या से उलझ ही रही थी कि उन्होने पत्रो मे पढी मुख्य मत्री की चुनौती। मुख्य मत्री ने कहा था कि महलो के अन्दर रहने वाली राजमाता अब मैदान छोडकर ससद की ओर न भागे। भोपाल विधान सभा मे आकर अपनी शेखचिल्ली की कहानी को पूरा करे और काग्रेसी मत्रिमडल को, काग्रेस शासन को धराशायी करे, जनता को इससे राहत दिलावे। प्रदेश मे गैर सरकारी काग्रेस का स्वप्न देखने वाली राजमाता जनता के समक्ष अपने किये हुये वचनो को पूरा करे। राजमाता ने मिश्रजी की इस चुनौती को स्वीकार कर लिया और उन्होने ससद सीट पर से त्याग पत्र दे दिया। वे अप्रैल मास मे होने वाले विधान सभा के अधिवेशन मे आई और अपने साथियो का एक दल 'क्रान्तिकारी विधायक दल के नाम से गठन किया तथा प्रजा समाजवादी, ससोपा, जनसघ आदि विरोधी दलो ने मिलकर अब उन्हे अपना नेता चुना। प्रमुख विरोधी नेता के पद पर आरूढ हो राजमाता ने काग्रेसी शासन को समाप्त करने के अपने निश्चय को पुन दोहराया।

उधर देश मे अन्य राज्यो मे भी काफी उथल पुथल मच रही थी। बिहार मे श्री महामाया प्रसाद सिन्हा ने ५ मार्च को गैर-काग्रेसी मत्रिमडल बना लिया था और उडीसा मे तो काग्रेस सत्तारूढ ही न हो पाई थी। बगाल मे श्री अतुल्य घोष के नेतृत्व मे मिली-जुली गैर-काग्रेसी सरकार १ मार्च को शपथ ग्रहण कर चुकी थी तथा केरल और मद्रास मे गैर-काग्रेसी शासन छा गया था। पजाब मे भी सरदार गुरनामसिंह

के सयुक्त मन्त्रिमडल ने ८ मार्च को गैर-सरकारी काग्रेस बना ली थी। इस प्रकार देश का एक बडा भाग काग्रेस के हाथो से निकल गया था। राजस्थान मे उन्ही दिनो राज्यपाल के अनुचित हस्तक्षेप के कारण विधान सभा की बैठके स्थगित कर दी गई थी और सविधान की मर्यादा की हत्या करके केन्द्रीय शासन काग्रेस मन्त्रिमडल की रक्षा कर रहा था। समस्त देश मे इस घटना को लेकर केन्द्र की तीव्र आलोचना की गई और फिर देखते देखते देश का सबसे अधिक सम्बद्ध एव जनसख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश भी काग्रेस के हाथो से निकल गया। ईमानदार कतिपय काग्रेसी विधान सभा के सदस्यो ने दल का त्याग कर दिया और श्री चन्द्रभानु गुप्त के काग्रेसी मन्त्रिमडल १४ मार्च सन १९६७ को गोपनीयता की शपथ ली थी केवल १६ दिन राज्य कर १ अप्रेल को धराशायी हो गया। उत्तर प्रदेश के बडे बडे नगरो मे खुशिया मनाई गई। दीपावली मनाई गयी और जनता अह्लाद मे मस्त हो नाचने लगी। ३ अप्रैल, १९६७ को श्री चरणसिह के नेतृत्व मे सयुक्त विधायक दल के मन्त्रिमडल ने शासन सूत्र ग्रहण कर लिया। इसी प्रकार हरियाना मे श्री भगवतदयाल शर्मा के काग्रेसी मन्त्रिमडल का जिसने १० मार्च, १९६७ को शासन सभाला था २२ मार्च को पतन हो गया तथा सयुक्त दल के नेता राव वीरेन्द्र सिह मुख्य मन्त्री बने। एक मास की अवधि मे काग्रेस के मन्त्रिमडलो का विभिन्न प्रदेशो मे इस प्रकार पतन देखकर जनता स्तम्भित थी। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे काग्रेस के जुये को फेंककर उसने मुक्ति की सास ली हो। वयोवृद्ध अनुभवी काग्रेसी नेता जनता के इस अह्लाद को देखकर परेशान थे। चारो ओर पुकार थी काग्रेसी शासन का पतन हो।" राजमाता इन परिवतनो को ध्यान से देख रही थी और जो कुछ राजस्थान मे हुआ था उसकी प्रतिक्रिया देश के अन्य भागो पर देखकर वे स्वय स्तम्भित थी। जयपुर मे उग्र प्रदशन हुए, जनता पर गोलियो की वर्षा हुई और सत्ता की लोलुप काग्रेस ने अपने शासन को बचाने के लिये क्या नही किया?

अप्रैल १९६७ का महीना था। भोपाल मे इम्पीरियल होटल मे राजमाता अपने सचिव आदि के साथ ठहरी हुई थी। मध्य प्रदेश विधान सभा का सक्षिप्त अधिवेशन चल रहा था क्योकि पाच मास का बजट पारित होना था। राजमाता अब विरोधी दलो के नेता के रूप मे काय कर रही थी। उनका अपना भी एक दल था "क्रातिकारी विधायक दल" जिसमे वे विधायक सम्मिलित थे जो उनके सरक्षण मे विजयी हुये थे तथा जो जनसघ से सबधित न थे। राजमाता एव उनके सह योगियो की गतिविधि पर शासन की पूरी आख थी विशेषकर उत्तर प्रदेश और हरियाना मे हुई दल बदल को देखकर।

एक दिन रात्रि के १० बजे जबकि राजमाता भोजन से निवृत हो शायन के पूव आवश्यक पत्र व्यवहार को देख रही थी तथा निजी सचिव को विभिन्न कार्यो के हेतु आदेश दे रही थी। ए० डी०सी० ने ठा० गोविन्द नारायण सिह के आने की सूचना दी। राजमाता ने बाहर कक्ष मे आकर ठाकुर साहब का स्वागत किया और पाया कि उनके साथ है एक अन्य सज्जन। श्वेत खद्दर का परिधान, नाटा कद, श्यामल वरण, नाक पर चश्मा लगा हुआ, हसमुख व्यक्तित्व। ठाकुर साहब ने अपने साथी का परिचय कराते हुये कहा 'महाराज। आप हैं ब्रजलाल वर्मा। रायपुर जिले के निवासी। आप है श्री शारदा चरण तिवारी, श्री श्यामाचरण शुक्ल आदि रायपुर जिले का प्रतिनिधित्व धारा सभा मे करते है। छत्तीसगढ क्षेत्र के पुराने कमठ जनसेवक हैं। आइये वर्माजी बैठिये। राजमाता ने वर्मा जी का स्वागत करते हुये कहा।

"महाराज! क्षमा करियेगा। इतनी रात गये हम लोगो ने आपको कष्ट दिया? बात यह है कि "

"वर्मा जी विधान सभा की वास्तविक स्थिति से मैं कुछ कुछ परिचित हू अधिक नही क्योकि चारो ओर शासन के जासूस लगे हुये हैं गतिविधि को देखने। कौन कौन व्यक्ति मुझसे मिलते है इन सबकी भी विस्तृत रिपोट शायद की जाती होगी। किन्तु हम सबको इसकी

चिता नही करना चाहिये। आजकल की राजनीति मे यह सब तो साधारण सी बात है जनतत्र के पहरुये सदा जागते ही रहते है किन्तु ठाकुर साहब आप से आजकल मिश्रजी इतने रुष्ट क्यो हो गये कि इस बार मत्रिमडल मे आपको लेना भी ठीक नही समझा। अब क्या आप पूरे बागी हो गये ह।

"महाराज ! बागी ये कब नही थे ? मनमर्जी जीव ठहरे। वह तो कप्तान साहब का सिर पर अकुश है अन्यथा अब तो कभी के लगाम तुडा कर भाग खडे होते। उनके लिहाज के कारण काग्रेस से अभी तक इनका गठबन्धन है।"

"किन्तु इन्होने तो वर्मा जी मिश्रजी की कम सेवा नही की। इनकी नसेनी पर चढकर तो वे एक दिन मुख्य मत्री बने थे ।

महाराज उनके नेता पद पर निर्वाचन के लिये तो आप भी उत्तर दायी है मै एक नसेनी का पाव था तो दूसरी ओर आप थी। मेरे सारे प्रयत्न अकारण जाते यदि आप उन दिनो अपना सहयोग मिश्रजी को न देती और ये वर्मा जी छत्तीसगढ के पूरे ब्लाक को उनके पीछे न लगा देते। ठाकुर गोविन्द नारायणसिह ने कहा "आप ठीक कह रह ह ठाकुर साहब निरकुशता के इस प्रतीक के लिये गलती तो हम लोगा की ही है। मै, आप और वर्माजी ही सभवतया इसके लिये दोषी है। किन्तु मुझे स्वप्न मे भी आभास न था कि काग्रेसी नेताओ मे इतनी निरकुशता और स्वेच्छाचारिता होगी कि जनतत्र उनके समक्ष हास्यापद हो उठेगा। इसी निरकुशता का परिणाम है कि उत्तर प्रदेश के सबसे अधिक ईमान दार और पुराने काग्रेसी नेता चौधरी चरणसिह को भी काग्रेस त्यागने के लिये विवश होना पडा।"

"महाराज अब तो अन्य राज्यो मे भी कई चरणसिह होने के आसार नजर आते है। राव वीरेन्द्रसिह ने हरियाना सभाल लिया और अब " वर्माजी कहते कहते ठाकुर गोविन्द नारायणसिह की तर्जनी देखकर रुक गये।

"वर्माजी दिवालो के भी कान होते है। इतनी जोर जोर से बात-चीत न करिये" श्री सिंह ने कहा।

लगभग दो घन्टे तक राजमाता, उनके सचिव सरदार कुमार आग्रे, ठाकुर गोविन्दनारायणसिंह और श्री ब्रजलाल वर्मा मे गुप्त मत्रणा होती रही। प्रश्न यह था कि बिना लोभ लालच दिये बिना रुपये लुटाये कम से कम २५-३० काग्रेसी सदस्यो को विरोधी पक्ष मे मिलने को सहमत किया जावे। उ हे विश्वास दिया जावे कि प्रदेश को स्वच्छ जनहित का शासन देने के लिये मिश्रजी की सरकार को डुबाना आवश्यक हे।

काग्रेस मे रहकर तो ठाकुर साहब भरसक प्रयत्न कर चुके किन्तु मिश्रजी को नेता पद से हटा नही पाये अब तो काग्रेस के बाहर आकर ही उनकी स्वेच्छाचारिता का अन्त किया जा सकता है क्योकि हाई कमाड और प्रधानमत्री सदा उनकी ही बात को दुहराते हैं। उनके विरुद्ध कुछ भी सुनने तक को तैयार नही।

अद्धरात्रि को जब यह मत्रणा समाप्त हुई तो यह निश्चय हुआ कि ठाकुर साहब एव वर्मा जी जीपे लेकर गुप्त रूप से क्रमश विन्ध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ के काग्रेसी सदस्यो से सम्पक स्थापित करे तथा शनै शनै उन्हे अपने विचारो से सहमत कराने का प्रयत्न करे। कि तु यह साव-धानी परम आवश्यक है कि इसकी भनक भी मिश्र जी को न लगे और सही परिस्थितियो से वे निताात अनभिज्ञ रहे क्योकि मिश्र जी भी राजनीति के कच्चे खिलाडी नही है। वे भी प्रतिशोव लेने के माग से अपरिचित नही।

एक सप्तांह पश्चात विधान सभा का अधिवेशन समाप्त हुआ और राजमाता ठाकुर गोविन्द नारायणसिंह, ब्रजलाल वर्मा और तीनो नेताओ के चुने हुये साथी अपने प्रयत्नो मे ईमानदारी के साथ लग गये। वैशाख ज्येष्ठ की तपती धूप मे त्राण पाने के लिये मिश्र जी अपने मत्रिमडल को लेकर पहाडियो की रानी पचमढी मे पहुचे और त्रस्त

नेता प्रदेश की दुखी जनता का साथ देने के लिये लू भरी दोपहरी मे चम्बल और नबदा के मैदानो मे जन सम्पर्क करने लगे। भीषण अकाल से त्रस्त भुखमरी आदिवासी जनता त्राहि त्राहि पुकार रही थी। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि कोई उसके दुख को बटाये, उसकी मुसीबतो को समझे। दाने दाने के लिये मोहताज, जल के अभाव मे प्यासे खडे नर-ककाल दृष्टि से अपने सूखे खेतो की ओर, उसकी चटकती दरारो की ओर देख रहे थे।

सोपान २३

भूखा सरगुजा

वे व्‌प बरसात मे सदा एक समान तपते झुलसते है,
उनके दोनो हाथ मिट्टी मे सने है ।
उनके पास जाना है, तो सुन्दर परिधान त्यागकर,
मिट्टी भरे रास्तो मे जा ।

"गीताजलि"

जेठ की तपती दोपहरी । लू के झकोरे क्षरण क्षरण मे जल की सुधि दिलाते थे । प्यास के मारे कठ सूख रहे थे । और ऐसी भरी गर्मी मे जय विलास प्रसाद के "एग्ररकडीशन" कक्ष को त्यागकर बिजली के पखो की शीतल हवा को छोडकर एक श्वेतवस्त्रा, महलो की रानी अपने कतिपय साथियो को लिये घूम रही थी सरगुजा के गाव गाव मे । सूखे दरार पडे खेत, भूख से व्याकुल नर ककाल अपने धँसी आखो से उसकी ओर टुकुर टुकुर ताक रहे थे । अम्बिकापुर, रामानुजगज, रघुनाथ पुर का यह तेज अपने अक मे लिये था आज उन अबोध भोले भोले कौरव, पाडुव, वेगे और उरावो को जो सूखे से त्रस्त, अकाल, भूखमरी से परेशान पटा पट मर रहे थे मिश्रजी के इस शासन को कोसते हुये । झोपडियो मे खाने को एक दाना न था और भूख से आकुल इन आदि-वासियो के बालक अब जगलो से जडे और कन्द मूल फल लाकर उन्हे चूसकर दिन काट रहे थे । इनके मा बाप रामचन्द्रपुर होते हुये बिहार

राज्य के पालयू इलाके मे विदेशी कायकर्ताओ के पास दूध का चूरण और चावलो के कुछ कण मागने जा पहुचे। मध्य प्रदेश के इस आदिवासी क्षेत्र मे जब राजमाता इनके बीच जाकर एक दोपहरी को खडी हुइ तो इन आदिवासी बालको, युवतियो और वृद्धो ने उन्हे चारो ओर से घेर लिया। भूखमरी की शिकार ये ग्राम्य वधुये और बालाये क्षुधा और अभाव की प्रतिमूर्ति सी थी। चिथडो से अपना लाज ढके एक युवती मा अपनी सूखी छाती। से एक हड्डी के ढाचे बालक को चिपकाये हुये रोकर बोली "मा। कुछ कनके मिल जाते तो रॉध कर हम बच्चो को दे देते। आज पाच दिन से अन्न के दशन भी नही हुये हे। अतएव राजमाता यह करुण दृश्य को देख न सकी। उनकी आखो मे जल भर आया। पास खडी जीप मे जो कुछ भी भोजन सामग्री थी वह उन्होने इस भीड मे बटवा दी। आज उनका और साथियो का भोजन करना इतना आवश्यक न था जितना इन नर ककालो का। साथ मे आये हुए एक सर्वोदय कायकर्ता से उन्होने कहा—"

"सुना है कि बडे बडे नेता अकाल क्षेत्र मे प्रवास कर व्यवस्था कर रहे हैं यहा कोई भी नही आया क्या ?"

"मा ! अकाल से त्रसित जनता को उनके सूखे खेता को हवाई जहाज से नही देखा जाता। उनकी पीडा जानने के लिये उनके कष्टो को दूर करने के लिये तो उनके बीच मे आकर खडा होना पडता है।

करने वाले लोगो की जीपे यदा कदा पलायू (बिहार) से इधर भी आ जाती है। और कुछ विमान की गोलिया, दूध का चूण बाट जाती है पर इससे कही क्षुधा निवृत्ति होती है।"

"शासन की ओर से अम्बिकापुर, रायगढ, जसपुर के लोगो की ओर से इन अकाल ग्रस्त क्षेत्रों के लिये कोई प्रबन्ध नही है क्या ?" राजमाता ने पूछा —

"जो है सो तो आप देख रही है मा। एक जिले से दूसरे जिले को, एक तहसील से दूसरी तहसील को अनाज का यातायात शासन ने

बद कर दिया है वही खुल सकता तो सभवतया जनता की कुछ सस्थाये यहा अन्न लाकर राहत काय करने मे जुटती। यहा तो ऐसा प्रतीत होता है कि जान बूझकर मृत्यु को निमत्रण दिया जा रहा है। शासन के अधिकारी कहते है कि अम्बिकापुर, रायगढ सीधी आदि जिलो मे भूख से कोई व्यक्ति नही मरा है और ये क्षेत्र अकाल ग्रस्त है ही नही तो फिर सुविधा कैसी ? सरगुजा जिले को अभी तक अकाल घोषित नही किया है। यदा कदा कुछ राहत कार्य किये जा रहे हैं पर शासक तो यहा के नग्न सत्य को स्वीकार करने की जिद पकडे हुए है। पुराने जिलाधीश महोदय तो बस आखे मीचे बैठे है। उनकी दृष्टि मे तो उनके जिले मे सुख चैन बरस रहा है।"

"आपकी जिला सार्वोदय समिति ने कुछ सर्वेक्षण किया था ना" कुमार आग्र ने कहा।

"हा किया है। जिला सार्वेदय समिति के ५० कार्यकर्ता ने ६ मई से २८ मई तक सरगुजा के रामचन्द्रपुर, प्रतापपुर और वाड नगर नामक विकास खण्डो की पद यात्रा कर जो प्रतिवेदन प्रकाशित किया है उसे पढता हू । कह कर जेब से कायकर्ता महोदय ने एक छपा पत्र निकाला और उसे पढते हुए बोले "केवल तीन खण्डो के आकडे ही देख लीजिये—

१—भूख से भरे	२०७ व्यक्ति
२—पोषक तत्वो की कभी से रोग्रस्त	६३० ,,
३—अकाल से सशक्त	९१४ ,,
४—राहत कार्यों से लाभान्वित गाव	७९
५—सस्ते अनाज की दुकानो से लाभान्वित गाव	२३०
६—मुफ्त भोजन केन्द्र	१९१

हमारा सर्वोदय समाज तो कोई राजनैतिक दल नही है और न हमारा कोई स्वार्थ। झूठी रिपोर्ट लेने मे है किन्तु शासन और उसके

अधिकारी तो हमसे आज इसलिये रुष्ठ हैं कि हमने इस सत्य को भी उदघातित क्यो किया । हम यह क्यो कहते है कि सरगुजा मे अकाल है और वहा इससे मृत्यु हुई है ।"

राजमाता खडी खडी यह सब सुनती रही और देखती रही अपने साथियो की ओर । तभी शासन के एक छोटे अधिकारी ने जो वहा खडे थे एक विद्रप हसी हस कर कहा—

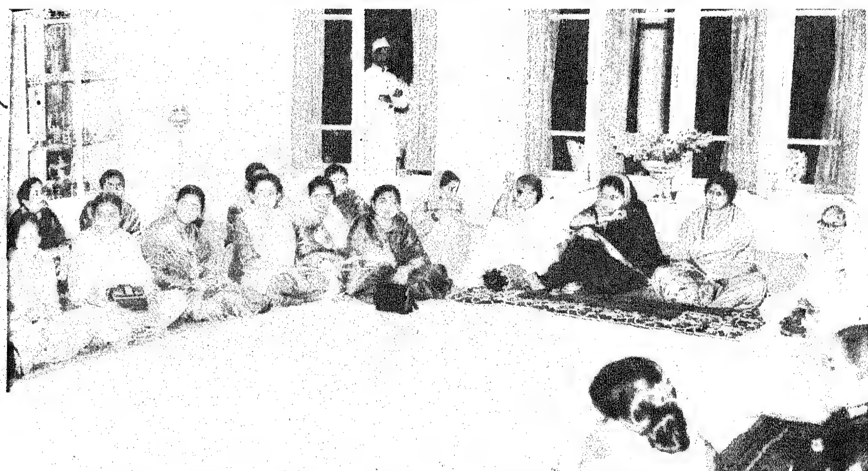
"नेता जी । आप क्या गगा उठाकर कह सकते हैं कि हम लोगो ने गावो मे दूध दलिया नही पहुचाया ।"

"सुना है दूध का चूरण और दलिया गाँवो की कुछ सीमाओ पर पटक-पटक कर तो आप लोग चले गये पर यह किसी ने भी न सोचा कि उनको पकाने के लिये जल की भी आवश्यकता है । गावो मे आप देख रहे है मीलो तक जल नही है । चारो ओर सूखा पडा है । मरघट का सा सन्नाटा फैला हुआ है । तहसीलदार साहब, नायब तहसीलदार साहब, सर्किल साहब, पटवारी क्या दलिया राँधकर देने की व्यवस्था के लिये शासन की स्वीकृति प्राप्त नही कर सकते थे—बिहार मे भी तो कार्य हो रहा है । और बिहार की बात छोडो वहाँ है महामाया बाबू और जय प्रकाश बाबू । वे खुद लगरो पर खडे होकर दलिया रधवा कर दे रहे है, हजारो विदेशी मोटरे लेकर दौड रहे हैं, पानी के पम्प लगाने को । हमारे मुख्य मत्री मिश्र जी को कहा फुरसत है ऐसे औघड कार्यों की । वे तो शीतल पहाडी पर हवा का सुख लूटने पच मढी मे आसीन हैं और उनकी जी व हजूरी को वहा नेताओ-मत्रियो का दरबार लगा हुआ है । विकास खण्ड के एक काग्रेसी महोदय ने कहा जो तमाशा देखने भीड की ओर चले आये थे ।

दिन भर लू मे तपकर गाँव-गाव मे अलख जगाती साझ पडे, जब राजमाता अपने कैम्प मे वापिस आई तो उनका मन अत्यन्त दुखित था । उस रात्रि वे ठीक से भोजन भी न कर पाई । कौर गले से नीचे उतरता ही न था । दोपहरी को देखा हुआ दृश्य रह रहकर आखो के

सामने घूम रहा था । रात्रि को सरगुजा के विपय मे एक पुस्तक उठाकर पढने लगी । वर्षो पूव के इस क्षेत्र के वैभव की गाथा उनके सन्मुख साकार हो उठी । आज के मध्य प्रदेश का यह पूर्वी अचल सन् १६०५ तक बगाल का एक भाग था पाच रियासत सरगुजा, कोरिया, रैराखोल, पटना, जसपुर, उदयपुर के विनियम मे उडिया भाषी कापरा, वोग खाले, पटना, मोनपुर और कालाहान्डी के पाच देशी राज्य उडीसा प्रान्त मे सम्मिलित कर लिये गये और हिन्दी भाषी ये रियासते ईस्टन एस्टेट एजेन्सी के अन्तर्गत आ गई थी । १ जनवरी सन् १६४८ को देशी रियासते जब सघो मे विलीन हुई तो सरगुजा राज्य के साथ वाली चारो रियासते भी मध्य प्रदेश का एक भाग बन गई और सरगुजा सबसे बडी इकाई होने के कारण जिले का केन्द्र बनी और जिलाधीश रहने लगे अम्बिकापुर मे । कृषि वन एव खनिज की दृष्टि से यह क्षेत्र सब प्रकार से समृद्ध था । सरगुजा की मुख्य उपज थी चावल और यहा का विष्णु भोग, श्रीकवल, चम्पा कनकजीर और युवराज चावल दूर दूर तक विख्यात था । १६४५ मे केवल सरगुजा क्षेत्र मे १४,८४८ मन चावल उत्पन्न हुआ था और १६४३ मे वगाल मे दुर्भिक्ष के समय यहा से ८०,००० मन चावल का निर्यात बगाल की सहायतार्थ किया गया था । पास मे लगे बिहार, उडीसा एव उत्तर प्रदेश के भागो मे यहा का ही चावल प्रसिद्ध था । छत्तीसगढ जो चावल का कटोरे कहलाता है यह सबसे अधिक सम्बद्ध भाग था ।

यहा के सघन वन साल के हरित वृक्षो के आच्छादित अपनी रम्यता मे श्वेत शेर, श्वेत मृग एव वृद्धाकार श्वेत साभर छिपाये हुये थे तथा शिकारियो के लिए यहा के वन भाग सदा से ही आकषक रहे । १०० फीट ऊचे सदा हरित साल के वृक्ष के नीचे यहा उगते थे विभिन्न भाति के कद मूल फल वनोषधियो एव उच्च कोटि का वास । ३५०० फीट ऊचाई पर स्थित मेनपाट पर उगने वाली सोधी-सोधी घास से आर्कषित होकर मिरजापुर तथा बनारस के गूजर अपनी हृष्ट पुष्ट



अखीलभारतीय महिला मंडल की अध्यक्षा महारानी विजयाराजे सिंधीया ।

महारानी विजयाराजे सिंधींया अपनी चारो पुत्रियों और पुत्र के साथ ।



महारानी विजयाराजे सिंधीया जनता को सम्बोधित करते हुये ।

गाय भैंसो के दलो को प्रति वर्ष चराने के लिये लाया करते थे और सरगुजा महाराज को कर स्वरूप प्रति भैंस ४ सेर और प्रति गाय २ सेर घी देकर वे अपने पशु धन को अगहन में वापिस लेकर चले जाते थे। इस घी कोष को सुरक्षित रखने के लिये वन भागो में मेन पाट पर अब भी पत्थरो के बडे बडे होद (कुन्ड) बने हुये है। यहा से घी पीपो में भर कर नीचे तलहटी मे लाया जाता था तथा उसका निर्यात बनारस प्रयाग आदि नगरो में होता था। भोडन और कायना की खदाने यहा की भूमि के अक्ष में छिपी हुई मूल्यवान सम्पत्ति थी। इस अंचल के वनवासी थे कौरव, पाडवो की सन्ताने जो अब भी अपने को कौरो, पाडो उराव कहती है। जनश्रुति है कि इसी अंचल के वनो मे रावण द्वारा सीताहरण हुआ था जहा कि सीता बागरा और उत्कर्ण लक्ष्मण रेखा आज भी उनकी स्मृति दिलाती है। जमदग्निऋषि की पत्नी एव परशुराम भार्गव की मा रेणुका की तपस्थली भी यही है जिनके नाम से रेण अथवा रिहन्द नदी इस अंचल में प्रवाहित होती है। तपो-वनी ऋषियो के पावन पूजन मे अर्चित वसुधरा की उस महिमामयी रंगथली में जहा की हरितिमा पथिको को सदा शान्ति प्रदान करती रही है सूखे का ऐसा भीषण प्रकोप १९६७ के इस वर्ष मे देखकर राजमाता को आश्चर्य हुआ और फिर उस पर शासन की अक्षम्य यह उदासीनता। दुग्ध चूर्ण और दलिया के बोरे भ्रष्टाचार का प्रश्रय पाकर अकाल पीडितो के पास न पहुचकर काले बाजार में ले जाये गये थे, शासन के अधिकारियो के आखो के नीचे। गिद्ध मानव जीवित मानव को नोच नोच कर खा रहा था। महाकवि नवीन की इस भावना को चरितार्थ करने के हेतु कि

> "लपक चाटते झूठे पत्ते जिस दिन मैंने देखा नर को।
> उस दिन सोचा क्यो न लगादू आग इस दुनिया भर को।
> अभाव और दारिद्रय और क्षुधा की कैसी विभिषका थी।

सामन्तवाद के प्रश्रय मे महाराज के राज में इस प्रकार के कष्ट

यदि जनता उठाती तो उसे सामन्तवाद द्वारा जनता के रक्त शोषण को कहानी कहा जाता किन्तु मिश्रजी के इस जन राज्य मे, इस लोक तन्त्र मे, इस जनयुग के शासन मे दाने दाने के लिये तरस कर राष्ट्र के नोनिहालो का मरना और उसके नेताओ का हिल स्टेशनो की रानी पचमढी से नीचे उतरकर भी न आना कोनसा समाजवाद है, कौनसा जनतन्त्र है यह भगवान ही जाने। जनता जब अपने मन्त्रियो, नेताओ से यह अपेक्षा करती थी कि वे आकर उसके दुखो को, कष्टो को, इस अचल मे आकर उसके आदिवासियो की सहायता के काय का सचालन और निरीक्षण नही कर सकता था। क्षोभ और दुख से राजमाता सतप्त हो उठी। उन्होने उन क्षणो मे निश्चय किया कि वे तुरन्त देहली जावेगी, देश के प्रधानमन्त्री को यहा के बेजुबान आदिवासियो की मुसीबते बतायेगी तथा उनसे अनुरोध करेगी कि वे स्वय इस क्षेत्र मे आकर सहायता के लिये अन्न, औषधि एव पौष्टिक खाद्य सामग्री भिजवायो जल की व्यवस्था के लिये साधन जुटाने मे जनता के कष्टो की ओर से बहरा हो चुका है। उन्होने सोचा कि वे फिर एक बार शासन से याचना करेगी कि अन्न के यातायात प्रतिबन्धो को वह हटालें ताकि जन सस्थाये यहा अन्न सहायताथ भेज सके और यदि शासन ने उनकी यह माग भी स्वीकार न की तो वे भूख हडताल करेगी सत्याग्रह करेगी, और प्रदेश मे एक ऐसी आधी, उल्का और बवडर को उठावेगी जो इस बहरे शासन को धराशायी कर देगी।

दूसरे दिन पुन अकाल ग्रस्त क्षेत्रो मे गई और दुखी जनता को धीरज बधवाया तथा उनसे अपने सकल्प के विषय मे बातचीत की। उन्हे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि यहा का निस्वाथ सर्वोदयी काय कर्ता भी शासन की इस उपेक्षा से त्रस्त है एव सशकित है। वह अन-मना और थका हुआ है किकर्तव्यविमूढ सा वह एकदम हारा सा होकर बैठ गया है आदिवासियो के बीच मे और दे रहा है उनको केवल दिलासा उन क्षणो मे जबकि उनके चिपकते भूखे पेट माग रहे है चावल आटा और दलिया। वनवासियो का यह अचल सरगुजा अगार

रहा है भूख, रोग और मौत की भीषण बिभीषिका। आगामी सप्ताह संस्था के द्वारा मध्य प्रदेश के सूखे पीडित क्षेत्र मे जिसमे सरगुजा एक था दो करौड पैंसठ लाख रुप्ये के खाद्यान वितरित किये गये तथा ५४२० केन्द्र खोलकर ६ लाख व्यक्तियो को भोजन कराये जो आयोजन किया गया और उसके कार्यकर्त्ता चीख चीख कर पुकार उठे कि सरगुजा भीषण अकाल मे मर रहा है। सरगुजा सूखा से त्रस्त है। किन्तु सरगुजा के जनतन्त्र शासन को मिश्रजी की सरकार को अब भी मान्य न था कि यह क्षेत्र अकाल ग्रस्त है और यहा का एक भी व्यक्ति भूख से मरा है। अन्न के यातायात बधन मे इस क्षेत्र को अब भी वह मुक्त करने को तैयार नही था। बलिहारी है इस राज्य की और इस राज्य के सचालको की।

राजमाता आगामी सप्ताह विन्धय क्षेत्र गई और मिरजापुर से लगे अचलो से व्याप्त भुखमरी को देखा। रीवा मे उन्होने जनता को सम्बोधित कर सरगुजा और विन्धय प्रदेश की वास्तविक दशा बताई। शासन की चरम उदासीनता ने कितने नोनिहालो की जाने ले ली हैं। सूखे से त्रस्त कितने आदिवासी मौत के शिकार हुये है ये तथ्य और आकडे उन्होने जनता के सामने रखे और मागा जनता का सहयोग इस जन कष्ट से उदासीन शासन को उखाड फेकने मे। विन्धय क्षेत्र के छत्तीसगढ के विधायको से जो जनता के प्रतिनिधि थे उन्होने याचना की कि अब समय आ गया है जब वे बहादुरी के साथ सामने आये और जनता का सच्चा राज्य उसे दे जो उसके कष्टो का विमोचन करे।

राजमाता फिर दूसरे सप्ताह जा पहुची देहली जहा प्रधान मत्री को, केन्द्रीय शासन के कर्णधारो को उन्होने सरगुजा की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया। उन्होने प्रधानमन्त्री से अपील की कि वे स्वय सरगुजा जावे और वहा के सूखाग्रस्त आदिवासियो को देखे। राजमाता के प्रयत्न साथक हुये। पचमढी की शीतल मद सुगन्धित समीर को त्याग मुख्यमन्त्री को सरगुजा प्रधानमन्त्री की अगवानी करने आना पडा

और विवश होकर उन्हे घोषणा करनी पडी कि अन्न के यातायात पर लगे हुये बधनो के इस क्षेत्र से उठालने की । जनता की आवाज बलवती हुई तो एक जिले से दूसरे जिले को अन्न का मुक्त यातायात पुन प्रारम्भ हो गया । सरगुजा के पुराने जिलाधीश का स्थान ग्रहण किया एक उत्साही युवक अधिकारी ने और सरगुजा मे आदिवासियो मे वितरण के हेतु आने लगा चावल, दलिया और दूध चूर्ण तथा विटामिन की गोलिया ।

राहत कैम्पो मे भोजक वाले समय इन आदिवासी भाई बहिनो को उन क्षणो मे स्मरण हो आया एक श्वेत वस्त्रा तपस्विनी महिमा मयी नारी का जो उनके बीच एक दिन भरी दोपहरी मे आई थी उनकी दुखभरी कहानी सुनने को और वचन दे गई थी उनके प्रति सहायता उपलब्धि का । आज उसका वचन पूरा हुआ था । अन्न वितरण केन्द्रा से उन्हे मिलने लगा थी निशुल्क खाद्य सामग्री और उनके भूखे बालको की क्षुधा समाप्ति के अन्य उपकरण । वे एक दूसरे से अब मुस्कराकर कह रहे थे "रानी मा जो कह गई थी वह उसने कर दिखाया ।"

सोपान २४

आचार्य कृपालानी का चुनाव

लम्बा छराहरा बदन, खादी की वेश भूषा, मुख पर ज्ञान की गरिमा और पकी आयु वाले सम्भ्रान्त आचाय का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा प्रखर था कि प्रथम दृष्टि पडते ही मन आता था उनका नमन करने का। विशाल अर्जित अनुभव के सहारे खडे इस वयोवृद्ध राजनैतिक के मुख पर झलकता था एक तेज और इसकी वाणी अभ्यस्त थी अपने खरेपन के लिए किसी भी स्थिति के ईमानदारी पूर्ण विश्लेषण के लिए। देश की राजनीति मे सभवतया यह आचाय की स्पष्टोक्ति एव खरापन ही था जिसने उन्हे विभिन्न दलो से तटस्थ रखा था और उस सस्था को जिसे उन्होने तप और त्याग से सवारा था, त्याग को विवश किया था। वर्षो तक गाधी जी के विश्वस्त अनुयायी एव सच्चे काग्रेसी रहकर उसके अध्यक्ष पद का गहन उत्तरदायित्व वहन कर सत्य अहिसा और देश की निष्ठापूर्ण सेवा उनके लिए अब स्वभावगत थी और वे किसी भी मूल्य पर उससे जो वचना थी, छल कपट से युक्त थी, अशुति थी सौदा करने को तैयार न थे। जो बाहर वह मन मे वाली उक्ति को चरिताथ करने वाला यह सत आज देश मे अपना सानी नही रखता था, स्वभाव का कोमल किन्तु एक कदम खरा और पक्का सिद्धान्तवादी यह आचाय अपनी उन धारणाओ का, उन विश्वासो का, उन विचारो का जो अब उसके जीवन के अग हो चुके थे किसी के ऊपर भी लादने को

तैयार न था। यहा तक कि अपनी प्रिय महधर्मिणी के ऊपर भी नही जो इसकी निष्ठापूण जीवन साथिन थी। एक दिन था जब आचाय कृपालानी और सुचेता जी ने गाधी के चरणो मे साथ साथ जाकर अपनी समस्त शक्तिया, सावनाए और जीवन देश की सेवा के लिए, स्वतत्रता सग्राम के लिए अर्पित कर दी थी। और फिर वह दिन भी आया जब कि देश ने अपना आजादी पर्व मनाया और इस साधु दम्पति ने अपना हष देश के पावन पर्वोत्सव मे मिला दिया। गाधी जी की दुखद मृत्यु पर जिन देशवासियो ने व्यथा और असीम दुख की अभि व्यक्ति की उनमे कृपालानी दम्पति भी थे क्योकि इन्होने अपना आत्मिक गुरू, अपना सत, अपना पथपदर्शक खो दिया था। देश की स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात गाधीजी काग्रेस को भग कर 'लोक सेवक मडल' म परिवर्तित का निश्चय कर चुके थे क्योकि उन्हे आभास हो गया था कि शायद काग्रेस की नई पीढी सत्ता के मद और सेवा का समन्वय करने मे सफल न होगी। सत्ता का मद स्वाथवाद को जन्म देगा और फिर भ्रष्टा चार, अव्यवस्था, निरकुशता और उसके साथ हजारो दुगुण सस्था मे भर आएगे। किन्तु इसके पूर्व कि वे अपने निश्चय को कार्यान्वित कर पाते कराल काल ने उन्हे देश से छीन लिया। गाधी जी के बाद की, सरदार पटल के बाद की काग्रेस, उनके अनुयायियो के स्वाथपूण भ्रष्ट आचरण से आचाय का ताल माल न बैठा और बस आचाय हो गये काग्रेस से अलग। सुचेताजी को अब भी विश्वास था कि काग्रेस द्वारा ही देश की समथ सेवा हो सकती है किन्तु न तो वे अपने विश्वास को आचाय पर थोप सकी और न आचाय ने अपनी धारणाओ को उन पर लादने का प्रयत्न किया। फलस्वरूप सुचेताजी के इर्दगिर्द घूमने लगी उत्तर प्रदेश काग्रेस की राजनीति जिसने उन्हे एक त्रस्त मुख्यमत्री ही बना कर छोडा और आचाय फिर अकेले ही नेहरू शासन की कटु आलोचना कर, उन्हे ताडना दे कर सचेत करते रहे। आचाय के तीखे प्रहरो से कभी कभी कुछ क्षण को ही सही नेहरू जी भी विचलित होते

दिखाई दिये किन्तु ग्राचाय के प्रखर चरित्र का, उनके दृढ विश्वासो का उन्होने सदा ग्रादर किया। गाधी जी की काग्रेस के ग्रध्यक्ष रह कर ग्राचाय ने जिस निष्ठा, जिस साधना ग्रौर निस्वाथ सेवा का परिचय दिया था उसके प्रति नेहरू जी सदा ही नत रहे। ग्राचाय के प्रति ग्रादर मे उनके मन मे मात्र भी कमी न हुई।

१९६७ के चुनावो मे ग्राचाय विजयी न हो सके क्याकि राजनीति के धोखा धडी वाले दाव पेचो को वे ग्रपनाने म ग्रसमथ थे। राजमाता ग्राचाय कृपालानी के प्रखर व्यक्तित्व से, उनकी प्रतिभा, निष्ठा, देश की भावना से बहुत ही प्रभावित थी। ग्रब जब कि ससद की सीट से इस्तीफा देने का निश्चय कर चुकी थी उनका प्रयास यह हुग्रा कि गुना की ससद सीट को वे किसी निष्ठावान सच्चे प्रमाणित देश सेवक को सौप कर गुना के नाम मे, उसके निवासियो के नाम मे चार चाद लगाये। राजमाता ग्राचाय स मिली ग्रौर उन्होने ग्रपना नम्र सुझाव उनके सम्मुख रखते हुए कहा —

"हम सबको ग्रापके सिद्धान्तो पर ग्रापकी निष्ठापूण देश सेवा पर, ग्रापकी प्रखर प्रतिभा पर ग्रडिग विश्वास ह। गुना के निवासी ग्रपने को उपकृत समझेगे यदि ग्राप उनका प्रतिनिधित्व ससद मे करने के लिए ग्रपनी सहमति दे दे। काग्रेस की नीतियो का प्रबल विरोध करने के लिए, देश के शासन को सही माग पर लान के लिए हम लोग ग्रापकी उपस्थिति ससद मे ग्रावश्यक समझत ह।

"किन्तु मेरे पास चनाव का काय करन के लिए गाव गाव जा कर प्रचार करने के लिए साधन कहा है। एक सुचेता जी ह सो वह भी काग्रेसी "

"ग्राप इसकी रचमात्र भी चिन्ता न करे। केवल ग्रपनी सम्मति दे दे फिर म ग्रापको पूण रूप से यह विश्वास दिलाती हू कि हम सबके प्रयत्न ग्रापको ससद मे भिजवाने के लिए यथेष्ट हे " राजमाता ने ग्राचार्य से ग्रनुरोध करत हुए कहा।

"किन्तु   "

"किन्तु क्या ? आप तो केवल अपनी सम्मति दे कर हा भर कर दिजिये। शायद आपको पता न हो इदिराजी और आपके मुख्य मत्री उस सीट पर काग्रेस प्रत्याशी के रूप मे खडा कर रहे है श्रीमती सुभद्रा जोशी को। देहली मे काग्रेस की ही मानी हुई नेता है और आज कल वैसे भी जनता की सहानुभूनि महिला प्रत्याशियो के प्रति अधिक होती है। यह सच है ना राजमाता साहिब।" खिलखिला कर हसते हुए आचार्य कह रहे थे। "जी हा यह बिलकुल सचहै कि इसलिए तो सुभद्रा जी के खिलाफ जनता से वोटो की भीख मागूगी मै। म क्या महिला नही हू   ।"

'किन्तु मै तो गुना की जनता मे सवथा अपरिचित एक वृद्ध पुरुष हू। भीलो जगलो के अन्दर रहने वाले भील भिलाल, गौद, मवते भला मुझे क्या जाने ? उन्होने तो मेरा नाम भी नही सुना होगा। मेरे लिए तो उनके पास तक पहुचना भी शायद सम्भव न हो ?"

"आचाय जी। आपसे सब परिचित हैं और देश मे आपकी ख्याति है। रही गाव वालो की बात सो वे तो बस अपनी राजमाता को जानते है" कुमार आग्रे ने कहा।

"ठीक है। यह तो मुझे पता है कि ग्वालियर राज्य के गाव गाव मे राजमाता पुज रही ह।' आचाय ने कहा।

और फिर यह घोषणा कर दी गई कि राजमाता द्वारा समर्थित गुना ससद सीट के पुन निर्वाचन मे खडे हो गये हैं आचाय कृपालानी। समाचार कुछ घण्टो में ही जा पहुचा भोपाल और देहली काग्रेस नेताओ के माथो पर बल पड गय। आचाय का राजमाता द्वारा यह समथन उन्हे फूटे आखो न सुहाया। मिश्रजी देहली गये प्रधान मत्री से, काग्रेस अध्यक्ष से, हाई कमाड स विस्तृत चर्चा हुई। सुभद्राजी को साथ ले कर चुनाव अभियान की योजना बनी और फिर प्रारम्भ हो गई जोरदार तैयारिया। मध्य प्रदेश के काग्रेस नेताओ ने श्रीमती सुभद्रा जोशी को

वचन दिया कि वे कांग्रेस की प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर यह चुनाव लडगे और गाव गाव घर घर जा कर जनता मे प्रचार करेगे। कृपालानी जी को गाव मे कौन जानता है। १८ १६ वर्षो से वहा कांग्रेस की तूती बोलती रही हे। राजमाता की बात दूसरी थी। उनके स्वय के लिए जनता ने वोट दिये किन्तु एक बाहर के व्यक्ति के लिए वे उनसे वोट न छीन पायेगी। प्रदेश मे शासन कांग्रेस का है। सत्ता मंत्रि मन्डल इस चुनाव मे लग जावेगा और सुभद्रा जी को सफल रग कर ही दम लेगा।

चुनाव सघप अब आरम्भ हो गया। एक ओर थे राजमाता द्वारा समर्थित आचाय कृपलानी और दूसरी ओर श्रीमती सुभद्रा जोशी, कांग्रेसी प्रत्याशी जिनके समथन म लगा हुआ था मध्य प्रदेश का पूरा कांग्रेसी मत्रिमडल। श्रीमती जोशी अपने दल बल के साथ आ गई गुना क्षेत्र मे और उधर राजमाता का पूरा दल आचाय जे० बी० कृपलानी को लेकर जा पहुचा। बीना गज, अशोक नगर, मे सभाये प्रारम्भ हुई। श्रीमती जोशी, प्रदेश मत्रियो ने धुआधार भाषण दिय और जनता से अनुरोध किया कि व कांग्रेस प्रत्याशी सुभद्रा जोशी को अपना मत देकर गुना ससद क्षेत्र से उन्हे विजयी बनाये। गुना जिले के समस्त डाक बगले मत्रियो के नाम पर रिजव हो गए और राजमाता के लिए यह एक समस्या थी कि वे इस क्षेत्र मे रात्रि विश्राम कहा कर? सैकडो मीलो की प्रतिदिन यात्रा कर कही भूले भटके किसी डाक बगले मे स्थान मिला तो वे रात्रि वही ठहर जाती थी। अन्यथा शिवपुरी आकर अपने आवास की व्यवस्था करनी होती थी इन दिनो महाराज माधवराव, राजकुमारी उषाराजे, कुमारे आंग्रे, श्री लोकेन्द्र सिंह आदि आचाय के चुनाव अभियान मे पूरी तरह लगे हुए थे। ऐसे भी अवसर आए जब कि रात्रि विश्राम को कही स्थान न पा कर राजमाता एव उनके अन्य साथियो को झासी माता टीला आदि उत्तर प्रदेश के डाक बगलो मे रात्रि काटनी पडी। आखिर प्रति

स्पर्धा थी शासन के सर्वे सर्वा से और उसके सहायको की विफल फौज से।

चुनाव अभियान ने गति पकडी ही थी कि एक दिन सहसा कांग्रेस प्रत्याशी श्रीमती सुभद्रा जोशी की जीप दुघटना ग्रस्त हो गई और वे स्वय तथा उनके साथी घायल हो गये। श्रीमती जोशी को घटनास्थल से अशोक नगर अस्पताल मे ले जाया गया। दुघटना की सूचना पाते ही महाराजा माधवराव तुरन्त अशोक नगर पहुचे तथा श्रीमती जोशी की परिचर्या मे सहयोग दिया। उन्होने कहा कि उनका हेलीकोप्टर विमान श्रीमती जोशी की सेवा के लिये तैयार है। वे जब चाहे तब उसका उपयोग ग्वालियर अथवा देहली परिचर्या के लिए जाने मे कर सकती है। उसी सध्या को राजमाता का दल प्राथना सभा मे सम्मिलित हुआ जहा श्रीमती जोशी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए सामूहिक सभा की गई थी। श्रीमती जोशी साघतिक रूप से घायल हुई थी और कांग्रेस कायकर्ताओ ने राजपरिवार के सौजन्य से, सहानुभूति का उत्तर दिया उनके विरुद्ध पुलिस थाने मे यह रिपोट अकित कराके कि उन्हे सन्देह है कि इस घटना के लिए राजमाता के सहयोगी कायकर्ता उत्तरदायी है जिन्होने अभिसधि करके जीप के कुछ पुर्जे रात्रि को निकलवा दिये ताकि कांग्रेस प्रत्याशी दुघटना ग्रस्त होकर गुना क्षेत्र से पलायन कर जावे। पुलिस ने भी जाच अपने हाथो मे ले ली किन्तु शुद्ध दुघटना के लिए कैसे किसी को उत्तरदायी बनाया जा सकता हे। श्रीमती जोशी को मोटर द्वारा उपचार के लिए ग्वालियर अस्पताल मे लाया गया जहा राज्य शल्य चिकित्सक डा० धारकर ने उनका तत्काल आपरेशन किया तथा कालान्तर मे वे स्वास्थ्यलाभ कर ग्वालियर से देहली जा सकी।

गुना क्षेत्र मे चुनाव प्रारम्भ हुये और मतदाताओ का चुनाव केन्द्रो पर केवल एक ही प्रश्न था कि राजमाता के प्रत्याशी का कौन सा चुनाव चिन्ह है ? मतदाताओ की लम्बी लम्बी पक्तिया जिनमे स्त्री

पुरुप, वृद्ध युवा सब ही थे राजमाता की जय जयकार करते आती थी और शान्त भाव से मत पेटी मे अपना मत राजमाता मे समर्थित आचाय कृपलानी के लिए डालकर चली जाती थी। विरोधी पक्ष इस गतिनिधि से परेशान था। चुनावा के फल घोपित हुए तो जनता न सुना कि आचाय कृपलानी के मतो की सख्या राजमाता द्वारा प्राप्त सख्या से भी कही अधिक है। उनकी सफलता का गुना की जनता न, ग्वालियर क्षेत्र की जनता ने हृदय से स्वागत किया और आचाय कृपलानी ने भरी सभा म अपने मतदाताओ को धन्यवाद देन हुए राजमाता के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया। उन्होन कहा कि जेठ की कठिन धूप, गरमी और लू की परवाह न कर ग्वालियर के राज परिवार ने जिस उदारता से उनके चुनाव अभियान मे काय किया है उसके लिए वे जितना भी आभार माने कम है। गुना की जनता के प्रेम की, सहयोग की याद उन्हे भुलाये न भूलेगी। आचाय न अपनी चुनाव सफलता पर राजमाता को बधाई दी और राजमाता ने देश के सच्चे सेवक आचाय कृपलानी को।

चुनाव की इन पराजयो से काग्रेस हाई कमाण्ड भी विचलित हो उठा। २६ जून १९६७ को राजधानी के मावलकर सभा गृह म काग्रेस महा समिति का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ तो चुनाव पराजय को लेकर वाद विवाद प्रारम्भ हो गया। एक दूसरे पर आरोप तनाव वातावरण के बीच काग्रेम अध्यक्ष कामराज ने कहा कि इस विफलता के लिए वे अपने को जिम्मेदार मानते हे। बदले की भावना से प्रेरित होकर कुछ सदस्यो ने कहा कि काग्रेस की इस विफलता की जड मे है देशी नरेशो और उनकी लोकप्रियता। बस एक प्रस्ताव द्वारा इसी अधिवेशन मे उन्होने माग की देशी नरेशो के विशेषाधिकार और प्रिवीपस समाप्त कर दिये जावे चाहे उसके लिए भारतीय सविधान को भी क्यो न बदलना पडे। राजमाता ने इस प्रस्ताव की बात को ध्यान के साथ सुना और कहा कि देश की जनता यदि यह त्याग भी मागेगी तो

इससे कौन इकार कर सकेगा।

गुना के उन चुनावो ने, सरगुजा के प्रवास न, रीवा, सतना की सभाओ के विशाल जनसमूह ने राजमाता के समक्ष यह तथ्य स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर दिया कि प्रदेश की जनता काग्रेस सरकार को उखाड फेकने के लिए कटिबद्ध है। विधान सभा मे काग्रेस का बहुमत अवश्य है किन्तु विन्ध्य क्षेत्र, छत्तीसगढ के यथेष्ट सदस्य ऐसे हे जो मुख्य मत्री की स्वेच्छाचारिता से त्रस्त हे तथा वे इसे जनतत्र के सिद्धान्त के विपरीत समझते ह। महाराजा रीवा इन दिनो भी मुख्यमत्री के प्रबल समथक थे और उनका यह प्रयास था कि उनके समथन से जिन सदस्यो को विधान सभा मे स्थान मिला हे वे उनके साथ ही रहे तथा मुख्य मत्री को अपना पूरा समथन देते रहे। विन्ध्य क्षेत्र मे आयोजित सभाओ मे राजमाता के भाषण सुनने के लिए उत्सुक विशाल जनसमूह की उपस्थिति इस बात का प्रमाण थी कि काग्रेसी शासन को जन मानस का पूर्ण समथन प्राप्त नही है और वे राजमाता की इन दोनो मागो से भी सहमत थे कि अन्न के यातायात पर से प्रतिबन्ध तुरन्त हटा लिये जावे ताकि अकाल ग्रस्त क्षेत्रो मे अनाज पहुच सके और शासन अकाल पीडित जिलो को अकालग्रस्त घोषित कर उनमे बडे पैमाने पर राहत काय प्रारम्भ कर दे जिससे जनता कम से कम भूखी तो न मरे किन्तु इसके लिए वे मुख्य मत्री का, शासन का विरोध करने को तैयार न थे। इस सम्बन्ध मे ठाकुर साहब ताला ने उनसे विशद चर्चा की थी किन्तु वे महाराज को मिश्र विरोधी कैम्प मे लाने मे सफल न हो सके थे। फिर भी विन्ध्य क्षेत्र और छतीसगढ क्षेत्र के काग्रेसी सभाईयो मे अन्दर ही अन्दर आग सुलगती रही और महाराजा पन्ना, महाराजा बिजावर इस अग्नि मे पखा झलते रहे।

सन् १९६७ का अन्तिम सप्ताह आया और ग्वालियर नगर राज कुमारी उषा राजे के परिणय उत्सव की शहनाईयो से गूज उठा। नैपाल के एक सम्भ्रान्त क्षत्रिय परिवार के उत्साही प्रतिभा सम्पन्न युवक के

साथ राजकुमारी का गठब धन निश्चित हुआ था। राजमाता अपन समस्त सहयोगियो के साथ पुत्री के विवाह काय मे व्यस्त हो गई। महाराज माधवराव अपने युवक मित्रो के साथ अतिथियो के स्वागत सत्कार मे लग गये और नवीन महारानी माधवी राजे अपनी ननद के परिणय का कायभार सभालने लगी। जनता की जय जयकार और शुभाशीषा से ग्वालियर का वायुमडल गूज उठा। राजे, महाराज उत्सव मे सम्मिलित हुए एव वर वधू को अपने शुभ आशीर्वाद प्रदान करने के लिए ग्वालियर पधारे। जम्मू काश्मीर नरेश महाराज करण सिंह ने शुभ परिणय के अवसर पर राजकुमारी को शुभाशीष दिया तथा आचाय कृपलानी ने आगे बढकर वर वधू को बधाई दी और उनके भावी सुख की कामना की। आचाय कृपलानी का सहयोग पाकर यह उत्सव निखर उठा। मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री रेड्डी ने भी विवाह स्थली पर शुभाकाक्षा की अभिव्यक्ति की और जन समूह ने अपनी राजकुमारी के सौभाग्य के हेतु उनका जय वन्दन।

दूसरे दिन मध्य रात्रि को जब बरात विदा हुई तो स्पेशल ट्रेन मे राजकुमारी को गले से लगाकर राजमाता स्नेह विगलित हो उठी। लाडली बेटी उषा को विदा करते समय सदा की सौम्य यह नारी आद्र हो उठी। उसके अश्रु मुक्ताओ की लडी बरबस बिखर उठी। मुरैना स्टेशन पर श्री यशवन्तसिंह कुशवाह, श्री आत्मदास एव श्री लोकेन्द्रसिंह को साथ रखकर भिण्ड मुरैना के नागरिको ने नव दम्पत्ति का अभिनन्दन किया और उनकी जय जयकार से स्टशन और स्पेशल ट्रेन के डिब्बे गूज उठे। फूलो की वर्षा के बीच, नागरिको का अभिनन्दन ग्रहण कर अध रात्रि को यह स्पेशल ट्रेन मुरैना से देहली की ओर चल पडी। राजकुमारी के विवाह उत्सव मे नही आये तो केवल मुख्यमत्री श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र।

बेटी को विदा करके भारी मन लिये हुए राजमाता मुरैना से लौटी और कुछ ही क्षणो मे २ जुलाई की अद्धरात्रि को वे रवाना हो

गई भापाल क लिय क्योंकि आगामी दिवस धारा सभा का अधिवेशन प्रारम्भ होने जा रहा था। सघष की इस बेला मे कम परायणता मनीषी उसके परिजनो का प्रेम, उसकी थकान उसके घर की व्यवस्था भा न रोक पाई। राजकुमारी के विवाह के पश्चात् वह दो दिन भी तो आगत परिजनो को विदा करने के हेतु ग्वालियर मे न रुक सकी क्योकि उसके अ तर मे तो थी जय केवल एक लगन और वह थी प्रदेश मे काग्रेसी शासन के पराव की उत्कृष्ट कामना और उसके लिए सतत प्रयत्न और भी भीपण सघष।

सोपान २५

पर्दे के पीछे और बाहर

' आय पुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।"

—मैथिलीशरण गुप्त

राजकुमारी उषा राजे के विवाह समारोह के कार्यो से थकी राजमाता ३ जुलाई १९६७ को विधान सभा के बजट अधिवेशन म भाग लेने के लिए भोपाल आ गई और अपने राजनैतिक साथियो से सम्पक साधने पर उन्होने पाया कि काग्रेस सगठन की ऊपरी शान्ति के नीचे तीव्र अशान्ति की अग्नि सुलग रही है और काग्रेस विधान सभा दल के नेता के रवैये के प्रनि चारो ओर असतोष छाया हुआ है। उनकी निरकुशता और जातिवाद के नीति के प्रति दल के अन्दर तीव्र प्रतिक्रिया हो रही है। उसी रात्रि को १० बजे के लगभग काग्रेस दल के कतिपय सदस्य चुपचाप चारो ओर बिछे हुए जासूमी जाल को सफलतापूवक लाधकर राजमाता से मिलने आय और उन्हे बतलाया कि दो मास पूव मई १९६७ मे जबकि भोपाल मे काग्रेसी विधायको की एक बैठक हुई थी तो उसमे नेता ने कई सदस्यो को घुडकते हुए कहा था कि "आप लोग यह न समझे कि मैंने धूप मे बाल पकाये हैं या अब तक पचास वर्ष के राजनैतिक जीवन मे केवल धूल फाँकी है। मेरे जासूस हर तरफ फैले हुए है और मुझे पता है कि आपमे से कुछ

लोग विरोधी दल के साथ अभिसधि कर मेरे मत्रिमडल को उलटने की कोशिश मे है । म उन्हे सावधान कर देना चाहता हू कि यह विश्वास घात उन्हे बहुत महगा पडेगा । उत्तर प्रदेश और हरियाना की आये राम गये राम की कहानी मध्य प्रदेश मे नही दोहराई जा सकती है ।" उस बैठक के पश्चात् ही उन्होने यह चुनौती भी दी कि वे अपने विरोधियो के साथ सुलह करने के अभ्यस्त नही है वे तो उनको केवल समूल नष्ट करना जानते है । असतोषियो को वे मत्रिमडल मे लेने को तैयार नही चाहे लोग उन पर फिर भले ही यह आरोप लगाये कि मत्रिमडल मे अधिकाश मत्री मुख्यमत्री के सजातीय ही है । उन्होने यह भी निश्चय कर लिया है कि उनके मुँह लगे कुछ लोग तो मत्री पद पर अब आ ही गये है और शेप हारे हुए लोगों को भी वे अगस्त म नवीन विधान परिषद का सदस्य चुनवाकर अथवा नामाकित कराके मत्रिमडल मे ले लेंगे । वे दल-बदल करने वालो की भी परवाह नही करते क्योकि १९६३ मे वे स्वय अन्य दलो के ३९ विधायको को कांग्रेस मे ला चुके है । वे जानते है कि ऐसी राजनैतिक घटनाओ का सामना कैसे किया जाता है । इस समय स्थिति यह थी कि मिश्रजी की राज नैतिक चतुरता अमर कुशलता की धाक दल के सदस्यो पर छाई हुई थी किन्तु उनसे असतुष्ट वग शनै शनै वृद्धि पर और वह नेता की धौस अधिक काल तक सहने को तैयार न था ।

राजमाता ने इन कांग्रेसियो विधायको से पूछा कि वे हाई कमाण्ड के पास देहली जाकर क्यो नही अपनी बाते बताते तथा नेता परिवतन के हेतु क्यो नही प्रयत्न करते तो उनका उत्तर था कि गत मास इसकी भी वे चेष्टा कर चुके है किन्तु हाई कमाड उनकी शिकायते दूर करने को तैयार नही और मिश्रजी के होते हुये नेता बदलने की बात भला प्रधानमत्री अथवा कांग्रेस अध्यक्ष सुन भी कैसे सकते हैं ? उन पर तो मिश्रजी की राजनैतिक कुशलता की धाक पूरी तरह जमी हुई है । अब

ग्वालियर की महारानी



श्रीमत महारानी विजयाराजे सिंधीयाँ ।

आदर्श राज दम्पति ।



श्रीमत महाराज जीवाजीराव सिंधीया अपनी हृदये-
श्वरी महारानी विजयाराजे सिंधीया के साथ ।

तो केवल एक ही माग उनके सामने रह गया है और वह है मिश्रजी के नेतृत्व के प्रति विद्रोह एव काग्रेस दल का त्याग। गत दो मास मे काग्रेसी मन्त्रियो ने खुले आम विरोधी दलो के सदस्यो को काग्रेस मे आने के लिये उकसाया है, दबाव डाला है और इसका जवाब उन्हे उसी रूप मे मिलना भी चाहिये। उस रात्रि मे देर तक विचार विमर्श होते रहे और राजमाता के मन मे भी यह बात घर कर गई कि मिश्रजी की तानाशाही का उत्तर इन परिस्थितियो मे केवल यही है कि वैकल्पिक सरकार के निर्माण की तैयारी मे लग जाये।

विधानसभा का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ तो पहिले दिन ही उसमे काग्रेसी मन्त्रियो के कारनामे गूंज उठे। रायपुर के आदिवासी विधायक जनसघी श्री खेमसिंह ने आरोप लगाया कि वनमत्री श्री गुलाबचद तामोट ने रायपुर के जिलाधीश एव तहसील अधिकारियो द्वारा उन पर दल परिवतन करने के हेतु दबाव डाला है। ११ जून १९६७ को श्री तामोट वन मत्री के रूप मे परियावाद दौरे पर आये तथा विचार विमर्श के बहाने उन्हे अपनी मोटर मे बिठाकर ले गये साथ मे जिलाधीश तथा सरक्षक भी थे। उन्होने कहा कि यदि वे काग्रेस मे आ जावे तो उनके क्षेत्र मे नये राहत काय खोले दिये जावेगे। दबाव पडने पर श्री खेमसिंह ने हा कहा तो मन्त्री जी और कलेक्टर ने उनसे हाथ मिलाया और कहा कि २४ जून को अपने क्षेत्र की मागे लेकर वे रायपुर आ जावे। १९-२० जून को एस० डी० ओ० तथा सर्किल पुलिस इन्सपेक्टर गरियाबन्द उनके पास आये तथा कहा कि सहायताथ उन्हे पाच हजार रुपये मिलेगे वे जीप मे अधिकारियो के साथ भोपाल चले तथा अधिकारी गण यहा उनके क्षेत्र मे उनके इच्छित सब काम पूरे करा देगे। उन्हे केवल काग्रेस का साथ देना होगा। २२ जून को जब श्री खेमसिंह ने काग्रेस दल मे आने से इकार कर दिया तो पुलिस व अन्य अधिकारियो ने चेतावनी दी कि अब उन्हे मुसीबते झेलनी पडेगी

क्योकि उन्होने वन मन्त्री की बात नही मानी है । जबकि यह चर्चा विधान सभा मे चली तो विधायक श्री परमानन्द ने वन मन्त्री के विरूद्ध मर्यादा भ ग का प्रस्ताव रक्खा और काग्रेसी दल की ओर से सदन मे खूब हल्ला मचाया गया । यह प्रश्न तीन-चार दिन तक निरन्तर सदन मे उठाया गया तथा अन्त मे १० जूलाई को अध्यक्ष ने इसे अस्वीकृत कर दिया । उधर विरोधी पक्ष के सदस्यो के विरूद्ध चुनाव याचिकाये हाईकोर्ट मे उपस्थित कर दी गई थी तथा उन पर दबाव डाला जा रहा था कि वे यदि काग्रेस मे आ जावेगे तो ये याचिकाये वापिस ले ली जावेगी । इन परिस्थितियो मे राजमाता को यह आश्वासन देना पडा कि चुनाव याचिका के भय से कोई भी सदस्य काग्रेस मे न जावे उनकी सामुहिक पैरवी वकीलो की एक कमेटी द्वारा की जावेगी । जिसमे सदस्य होगे श्री चन्द्रप्रताप तिवारी (प्रसोपा), श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा (जनसघ), श्री कन्हयालाल मेहता (ब० का० द०), श्री यज्ञदत्त शर्मा, श्री महादेव गोविन्द जोशी, श्री गोविन्दजी वाला एव श्री वसन्त सदाशिव प्रधान ।

परिस्थितिया अब तेजी से बदल रही थी । विभिन्न स्थानो से सूचनाये प्राप्त हो रही थी कि शासन के इशारे पर मत्रियो द्वारा प्रोत्साहित होकर विभिन्न विभागो के अधिकारी गए दल परिवतन के लिये विरोधी पक्ष के सदस्यो पर अपना दबाव डाल रहे है । काग्रेस की क्षमता बढाने के लिये भाति भाति के हथकडे काम मे लिये जा रहे है । राजमाता के पास नित्य प्रति ही इस प्रकार के उदाहरए प्रस्तुत हो रहे थे । अन्त मे विवश होकर १७ जुलाई को एक प्रेस वक्तव्य सयुक्त विधायक दल की नेत्री राजमाता, जनसघ के श्री सकलेचा, ससोपा के श्री शिवप्रसाद चिपुरिया, प्रसोपा के श्री चन्द्र प्रताप तिवारी द्वारा प्रकाशित कराया गया । इस वक्तव्य मे कहा गया कि पुलिस एव शासन के वरिष्ठ अधिकारी राजनीति मे हस्तक्षेप कर रहे है जो स्वस्थ लोकतन्त्र परम्परा के लिये घातक है । विधायक बिना खण्डो मे

सरकारी गुप्तचरो की भीड को भेजना तथा वरिष्ठ शासकीय अधिकारियो द्वारा विधायको को प्रभावित करने का सिलसिला लोकतन्त्र की पुनीत मर्यादा को तोड रहा है। अब वरिष्ठ शासकीय अधिकारियो को सावधान किया जाता है कि किसी भी सक्रामण काल मे उनकी अवस्था व्यक्तियो से न होकर भारतीय सविधान और शासन की निष्पक्षता के प्रति होनी चाहिये। शासन के मन्त्री तो बदलते रहते ह किन्तु प्रशासकीय अधिकारी सदैव रहते है। अत यह आवश्यक है कि यदि ऐसे सबधित अधिकारी विधायको के स्वतन्त्र विवेक पर अपना प्रभाव डालने की कुचेष्टा करगे तो उसके कुपरिणाम उसको भुगतने पडेगे। इस वक्तव्य ने यह तथ्य स्पष्ट उभार दिया कि प्रदेश की राजनीति मे काग्रेसी शासन के इशारे पर अधिकारीगण कितने सक्रिय है तथा शासन की मशीनरी का दुरुपयोग काग्रेसी मन्त्रिगण कितने अनैत्यि रूप से कर रहे है। विधानसभा की इस बैठक के समय शासक दल अपनी सत्ता का प्रभाव हरिजन आदिवासी विधायको के ऊपर डालने को जो कुप्रयास कर रहा था उसके प्रति काग्रेसी विधायक भी घृणा से परिपूण हो उठे। लोकतन्त्र का यह कैसा उपहास था। विधायको की छोटी टोलियो मे इसकी चर्चा होने लगी तथा इन सम्बन्ध म अपने-अपने अनुभव सब ही सुनाने लगे। काग्रेस दल के चार कमठ नेता भी इन दिना विशेष सक्रिय थे और वे अपने दल के सदस्यो की इस विचारधारा को प्रोत्साहित कर रहे थे कि दल के नेता को बदलने का प्रयास अब व्यथ हो। मिश्रजी की तानाशाही का उनके जातिवादी मन्त्री मडल से मुक्ति का अब केवल एक ही उपाय है और वह हे खुला विद्रोह। जब इस नेता ने खुले विचार विमर्श का द्वार भी बन्द कर दिया है तो सडाद आवेगी ही। मुक्त होकर इन द्वारो को खोल दिया जावे। विचार स्वतन्त्र के इच्छुक जो भी साथी काग्रेस दल को त्यागना चाहे वे उनके साथ आ जावे। राजमाता इनका साथ देगी। मिश्रजी के पुलिस राज्य का उन्मूलन करने मे इनकी सहायता को तत्पर है। सभव

है विपत्तिया आवे किन्तु उनका सामना तो अब करना ही होगा। ये चारो नेता अपने समुदाय को एकत्रित करने मे लग गये और उन्होने पाया कि उनकी सख्या अब ३० से ऊपर ही पहुच रही है। १७ जुलाई को ये नेतागण इम्पीरियल होटल सावरे मे राजमाता से विचार विमश करने पहुचे। सर्व श्री ब्रजलाल वर्मा, ठाकुर गोविन्द नारायण सिंह, धमपाल गुप्त (मुख्य सचेतक काग्रेस दल) एव नर्मदा प्रसाद श्रीवास-तव (सदन उपाध्यक्ष) की इस मण्डली का राजमाता ने स्वागत किया। बिजावर के महाराज श्री गोविन्द सिंह देव भी अपने साथियो के साथ उपस्थित थे। विरोधी दल के अन्य नेतागण तथा श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा व शिवप्रसाद चिनपुरिया, श्री चन्द्र प्रताप तिवारी आदि भी राजमाता के साथ थे। मुख्य प्रश्न यह था कि मिश्रजी के पास शासन की असीम शक्तिया है जिनका उपयोग करने मे वे आवश्यकता पडने पर न चूकेगे।

इस स्थिति का सामना शात रूप से किस प्रकार किया जावे यदि उन्हे विद्रोही विधायको के नाम पता चल गये और यह आभास भी हो गया कि अमुक अमुक सदस्य काग्रेस दल त्याग कर सविद मे मिल रहे है तो वे कोई न कोई बहाना लेकर उन्हे गायब तक करा सकते है। अभी यह विचार विमश हो ही रहा था कि अद्धरात्रि की निस्तब्धता को भग करती हुई एक जीप इम्पीरियल होटल से आकर खडी हुई और उसमे से उतरे श्री ब्रजलाल वर्मा के कतिपय विश्वस्त साथी। उन्होने आकर बताया कि मिश्र मत्री मडल के दो प्रमुख मत्री हम लोगो के साथ आने को तैयार है किन्तु उन दोनो की अलग अलग शत यह है कि उन्हे मुरय मत्री बनाया जावे तथा विस्फोट होने तक मिश्र जी को इसकी गध भी न लगे। शर्त ऐसी थी कि जिसका मानना आज की स्थिति मे सभव न था क्योकि मुख्यमत्री तो एक ही व्यक्ति बनाया जा सकता था दो नही और फिर इन दोनो मे से किसी को भी मुख्य मत्री बनाने को वे बहुसख्यक काग्रेसी सदस्य तैयार न थे जो दल

बदलकर आ रहे थे। यह सत्य है कि मिश्रजी दूसरी बार मुख्य मंत्री न बनाये जाते तो मध्य प्रदेश मे कांग्रेस मन्त्रि मन्डल को कोई भय न होता और यदि वे १९६७ मे राजनीति से हट गये होते और ससद मे चले जाते तो २९६ विधान सभा के स्थानो मे से कम से कम २०० स्थान कांग्रेस जीत लेती जब कि उनके न हटने से कांग्रेस को १६२ स्थान ही मिल पाये है। मिश्र जी का इस समय का व्यवहार इतना असौजन्य पूर्ण एव सूखा था कि साधारण व्यक्ति तो उनसे मिलने से भी डरता था और मंत्रीगण भी अपनी बात स्पष्ट रूप से उनसे नही कह पाते थे। आपस की बातचीत मे आज मन्त्रियो मे भी यह भावना घर कर रही थी कि किस प्रकार मिश्रजी को नेता के पद से हटाया जावे किन्तु अपनी भावना के अनुरुप कार्य करने मे वे असमर्थ थे क्योंकि एक तो उनके मन मे भय समाया हुआ था और दूसरे उनके सारे प्रयत्न इंदिराजी एव कामराज के मिश्र जी के समर्थक होने के कारण अब तक विफल हो चुके थे। नेहरू जी का अभाव आज सबको खल रहा था और वे दिन जब कि मिश्र जी दाव-पेच खेलकर मंडलोईजी को तथा श्री काटजू को हटाकर स्वय मुख्यमंत्री बन सके थे भुलाये न भूलते थे। १५ व्यक्तियो की इस मंडली मे उस रात्री १ बजे तक चर्चा होती रही तथा इस मंत्रणा के फलस्वरूप एक योजना बनाई गई जिसको कार्यान्वित करने के लिये विभिन्न व्यक्तियो को विभिन्न कार्य भार सौंपे गये तथा प्रत्येक को यह चेतावनी दे दी गई कि थोडी सी भी असावधानी का अर्थ होगा मिश्रजी की सत्ता की असीम शक्ति को चुनौती देना तथा अपार विपत्ति मोल लेना। बस्तर कांड की स्मृति अभी धुंधली न हुई थी। सावधानी के साथ योजना के प्रत्येक भाग के नेता ने अपना कर्तव्य स्पष्ट रूप से समझ लिया तथा उसे पूरा करने का व्रत लिया।

राजमाता अपने सन्मुख योजना का स्वरूप देखकर मन मे चिंतित हो उठी और कई बार उन्होने कहा भी वर्मा जी क्या यह सब

आवश्यक है ? मैं तो समझती हू कि विधान सभा मे अपना बहुमत न पाकर मिश्रजी तुरन्त मुख्य मत्री के पद से त्याग पत्र देकर शासन से अलग हट जावेंगे। लोकतत्र की परम्परा तो यही है क्यो ठाकुर साहब।"

"महाराज। आपका यदि यह अनुमान है तो आप मिश्र जी को अब तक समझ ही न पाई है। वे आपको "शेखचिल्ली राजमाता" कहते है सत्ता का काग्रेस के हाथ से जाना अपने स्वय के हाथो मे से जाना वे कभी सहन न कर सकेंगे। उनकी खिझलाहट उनका रोष अवश्य ही विचित्र स्थिति उत्पन्न कर देगा। स्वेच्छा से लोकतत्र के अनुसार त्याग पत्र मिश्र जी कभी न देगे। मैं इस लोह पुरुष को खूब जानता हू" श्री सिह ने कहा।

"जैसी भगवान की इच्छा। अब ओखली मे सिर दिया तो मूसली से क्या डरना। मैं तो प्रदेश की जनता को मिश्रजी के इस आँतक से छुटकारा दिलाने को कटिबद्ध हू फिर चाहे कितनी ही विपत्तियाँ क्यो न आवे। हरि इच्छा बलवती।" कह कर राजमाता उठ गई। बैठक समाप्त हुई और आने वाले ब्रह्म मूहूर्त को मगल वेला मानकर शेष नेतागण भी अपने अपने निवास स्थानो को चले गये।

१८ जुलाई को सदन का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ तो राजमाता के समीप आसीन श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा ने कहा "महाराज। मिश्रजी के होसले तो कम नही प्रतीत होने हें यद्यपि कल सबके मना करते रहने पर भी श्री तख्तमल जी ने प्रेस व्यक्तव्य मे यह कह डाला है कि मिश्र जी की सरकार का पतन कुछ दिनो मे ही हो जावेगा। अखबारो मे तो यह भी समाचार है कि श्री गोविन्द नारायण सिंह कई काग्रेसी ससद सदस्यो और केन्द्र के मत्रियो से मिल चुके है तथा उनसे मिश्र जी के स्थान पर नवीन नेता का चुनाव करने के लिये जोर डाल रहे है। उनका दावा है कि गुप्त मतदान मे मिश्र जी को नेता पद के लिये बहुमत नही मिल सकता है। देहली से केन्द्रीय मत्री श्री प्रकाश चन्द सेठी भी यहाँ आये हुये है तथा वे श्री ब्रजलाल वर्मा एव श्री गोविन्द

नारायण सिंह जी से आज मिल रहे हैं।"

"ठीक है सकलेचा जी। काग्रेसी मत्री और काग्रेसी नेता कुछ भी सोचते रहे किन्तु जनता तो इस शासन से परेशान है। आपका दल तो सबसे पूर्णतया सहयोग करने को तैयार है ना।"

"यह भी कोई पूछने की बात है। जनसघ मे अनुशासन की कमी नही। नेता के पीछे सब लोग सदैव चलने को तैयार है। हम अपने नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास है तथा काग्रेस को प्रत्येक अवसर पर नीचा दिखाने को हम कटिबद्ध है।"

उस दिन विधान सभा के अधिवेशन मे काग्रेसी मत्रियो के ओर इगित कर श्री नरेश जौहरी (जनसघ) ने कहा कि प्रदेश की जनता शासन की इस अक्षमता के कारण परेशान है। भ्रष्टाचार सर्वत्र व्याप्त है। सतर्कता आयोग के कामो मे अनुचित दबाव डाला जा रहा है। स्कूल, कालेज की परीक्षाओ के लिये परीक्षिको मे रखे गये है अनुभव-हीन डाकखाने के कर्मचारी, रेलवे के गार्ड आदि जिन्हे शिक्षा का कोई अनुभव नही। पूछने पर कृषि मत्री श्री मुश्रान ने बताया कि यह सत्य है कि इन्दौर के १९५७ के काग्रेस अधिवेशन पर दिया हुआ सरकारी सामान का मूल्य १०,८००) अब भी काग्रेस के ऊपर बकाया है तथा अब तक शासन को केवल २०००) के लगभग धनराशि प्राप्त हुई है। यह सूचना इस बात की परिचायक थी कि काग्रेस शासन ने जनता के धन से किस प्रकार खिलवाड किया है तथा यह दल कितना ईमानदार है।

विधान सभा की आज की बैठक जब सध्या को समाप्त हुई तो लोगो ने देखा कि श्री प्रकाशचन्द सेठी एव कतिपय काग्रेसी ससद सदस्यो के साथ श्री गोविन्द नारायण सिंह जा रहे है। रात्रि को राज-माता के कैम्प मे सूचना प्राप्त हुई कि नेता परिवर्तन के लिये किये गये सब प्रयत्न विफल हुये। श्री गोविन्द नारायण सिंह ने श्री सेठी एव अन्य नेताओ से बातचीत की तथा भरसक कोशिश की कि काग्रेस हाई-

कमाड जिसके कहने पर ससद सदस्य भोपाल आये है नेता के नवीन चुनाव के लिये तैयार हो जावे किन्तु उनकी इस बात को किसी ने नही माना। देहली से भी टेलीफोन द्वारा परामश हो चुका है किन्तु केन्द्रिय नेता एव कॉंग्रेस अध्यक्ष नवीन नेता के चुनाव को तैयार नही है।

अर्द्धरात्रि को काग्रेसी सदस्यो की वह मडली जो अब निराश होकर विद्रोह करने को तैयार हो चुकी थी इम्पीरियल होटल सावरे आई तथा राजमाता को बतलाया कि वे दोनो मत्री जो कल अपने साथ आने को तैयार थे अब इकार कर गये है तथा उनका नाम निकाल कर ३६ विधायको की सूची तैयार है जो काग्रेस दल त्यागने को तत्पर है। विचार विमश के पश्चात् यह निश्चय हो गया कि योजना के अनुसार काय करने को समय आ गया है तथा सबको कृत सकल्प होकर अब आगे बढना होगा। यह थी १८ जुलाई सन् १९६७ की अर्द्ध रात्रि।

सोपान २६

विस्फोट

देव न थे हम, और न ये हैं, हम अब मिट्टी के पुतले।
या कि गर्व रथ पर तुरग सा, जितना तू चाहे जुत ले ।।

'प्रसाद'

आज १६ जुलाई, १६६७ का सवेरा था। भोपाल नगर मे एक अजीब चहल-पहल थी। नगर की जनता मे कौतूहल था और उत्सुकता थी। राज कमचारी वर्ग कुछ अपेक्षा कर रहा था क्या ? निश्चित रूप से नगर की उत्सुकता मडरा रही थी। उधर इम्पीरियल होटल के चारो ओर सादे वस्त्रो मे गुप्त पुलिस के अधिकारी घूम रहे थे—वे तलाश कर रहे थे कुछ सुराग मिले जिसे पाकर वे मुख्यम त्री निवास की ओर दौड पडते। प्रत्येक आगत व्यक्ति पर तीखी छुपी नजर थी। हर आती हुई मोटर गाडी को झाक-झाक कर देखा जा रहा था और इस होटल के अन्दर थी राजमाता, उनके पुत्र महाराज माधवराव और पुत्र वधू महारानी माधवी राजे अपनी नन्ही-सी बेटी के साथ। राज परिवार के अनुगामी और हितेच्छाओ की इस भवन मे आज एक भीड सी लगी थी। कुमार सम्भाजी राव आग्रे, कुमार अर्जुनराव फालके, राजा सुरेन्द्र सिह नीमखेडा, राजा साहब विजावर ठाकुर विक्रमादित्य सिंह, राजा साहब राजगढ, ठाकुर मोरध्वजसिह लाता वाले, महाराजा पन्ना, श्री लोकेन्द्रसिह देवगढ,

महेन्द्र सिह करोली, श्री भूपेन्द्रसिह, श्री वसन्त सरे, जलाल आगा, प्रवल प्रतापसिह, श्री देवेन्द्र सिह खोडमनपुरा, श्री महिपालसिहजी पिपलोदा, कुवर विश्वनाथसिह, ठा० महिपतसिह प्रासाद के एक कक्ष में बैठे थे किन्तु चारो ओर एक अजीब-सी शान्ति छाई हुई थी। इशारा द्वारा ही यदा-कदा बातो का आदान-प्रदान हो रहा था। प्रात के ६ बजे और तभी राजमाता अपने पूजा-गृह से निकल कर भोजन कक्ष मे आई जहा उनके पुत्र, पुत्र वधू एव अन्य परिजनो ने उनके पदस्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्न किया। राजमाता ने हँस कर अपने पुत्र के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—बेटा आज तो बडी कठिन परीक्षा है। सबको सावधानी से काय करना चाहिए। मैं तो चाहती थी कि दो चार दिन के लिये हम लोग रुक जाते तो अच्छा था।

"मा। यह अब कहा सम्भव है महाराज। राजा साहब विजवर और कुमार वाला साहब अत्रे तो फिर अवश्य ही गिरफ्तार हो जावेगे। हम लोगो को देरी करना ठीक न होगा सामने खडे हुए एक विधायक ने कहा—"महाराज। हमने सुना है कि आज सन्ध्या तक तो हम मे से कुछ को अवश्य ही पुलिस हिरासत मे ले लेगी। आज विधान सभा मे श्री अजमेरासिह के अपहरण का आरोप राजा साहब विजावर तथा कुमारवाला साहब आग्रे पर काग्रेस की ओर से लगाया जावेगा" तथा दूसरे विधायक बोले—"आप लोग चिन्ता न करे। भगवान् सत्य के सदा सहायक है"। राजमाता ने अश्वस्त स्वर मे कहा। जलपान के पश्चात् वे पुत्र, पुत्रवधू एव कुमार आग्रे को साथ लेकर विधान सभा के लिये रवाना हो गई और उधर साथी विधायको की टोली भी दूसरे माग से सदन की ओर मुड पडी।

प्रात काल १० बजे विधान सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ। अध्यक्ष थे श्री काशीप्रसाद पाडे। सभा भवन मे आज वातावरण क्षुब्ध था तथा मुख्यमन्त्री श्री मिश्र के मुख पर भी उदासीनता के चिह्न स्पष्ट

थे। धारा सभा के काग्रेसी सदस्य श्री लक्षमनदास ने किसी के इशारे पर सहसा उठ कर अध्यक्ष को सम्बोधित कर कहा कि कल रात्रि को विरोधी दल द्वारा उनका अपहरण किया गया और उनसे जबरदस्ती एक पत्र पर हस्ताक्षर करा लिये गये है। जिसमे लिखा हुआ है कि अब काग्रेस का समथन नही करते हैं। एक अन्य काग्रेसी सदस्य श्री अजमेरा सिह का अपहरण कर लिया है और इसके दोषी है विधान सभा के सदस्य श्री गोविन्द सिहजी, देव महाराज विजावर और राजमाता के सचिव सरदार कुमार आग्रे। अन्य काग्रेसी सदस्यो ने बारी-बारी से उठकर उक्त दोनो व्यक्तियो के विरुद्ध विशेषाधिकार भग के लिए प्रस्ताव रखने की अनुमति चाही। मुख्य मत्री श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने कहा कि मै अध्यक्ष से आग्रह करता हूँ कि वे सदन को तुरन्त स्थगित कर दे क्योकि अपहरण के दोनो आरोप एक ऐसी गमीरता की ओर सकेत करते है जिसका निराकरण करना तुरन्त आवश्यक है। वे स्वय इन घटनाओ की जाच कराना चाहते है जिनकी सूचना उन्ह गत रात्रि को ही प्राप्त हुई है।

इसके पूव कि अन्य सदस्य कुछ कहे प्रजा समाजवादी दल के नेता श्री चन्द्रप्रताप तिवारी ने उठकर कहा कि वास्तव मे अपहरण हुये ही नही है। यह आरोप मिथ्या है और केवल बहाना मात्र है। मुख्यमत्री अपनी कुर्सी बचाने के लिये अखाडे से भागना चाहते है क्योकि उनके दल की बेच खाली पडी है और बहुमत उनका साथ छोड रहा है।

मुख्य मत्री ने बौखला कर श्री तिवारी से कहा कि वे क्या बकवास कर रहे है। शायद पता नही कि वे किससे बात कर रहे हैं। इस पर तिवारी का उत्तर था कि उन्हे खूब पता है। सत्य तो यह है कि अपहरण की बात एकदम झूठी है और बनाई हुई है। शीघ्र ही वे समस्त सदस्य जिनके अपहरण की बात यहा कही जा रही है इसी सदन मे

उपस्थित होकर अपना कांग्रेस दल से त्यागपत्र देकर विरोधी पक्ष के साथ बैठेंगे। बजट पर मतदान के समय सदन का स्थगन एकदम अनावश्यक है।

अब तो एक के पश्चात् दूसरे फिर तीसरे मन्त्रियो ने उठ उठकर अध्यक्ष से आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया कि वे सदन की बैठक तुरन्त स्थगित कर दे। श्री गुलाबचन्द तामोट वनमन्त्री ने तो आवेश मे उठ कर चीख-चीख कर कहा कि अध्यक्ष ने सदन को यदि स्थगित न किया तो इसके परिणाम बडे भयकर होगे, प्रदेश के मुख्य नगरो मे बलवे होगे। खूनी काड होगे और प्रदेश भर में गदर मच जावेगा।

सदस्यगण एक के पश्चात् एक बोलते ही रहे किन्तु अध्यक्ष सदन को स्थगित करने को तैयार न हुए। नियमानुसार मध्याह्न १ बजे तक सदन की कार्यवाही चलती रही और पुन भोजन के लिए सदस्य गण बिखर पडे।

दोपहर के भोजन के अवकाश के पश्चात् सहसा कांग्रेसी सदस्य श्री ब्रजलाल वर्मा ने नाटकीय ढग से उठकर अध्यक्ष को सम्बोधित कर कहा कि वे और ३५ साथी कांग्रेस दल त्याग कर विरोधी पक्ष मे जाने का निश्चय कर चुके है उनके बैठने की व्यवस्था विरोधी दल के साथ कर दी जावे। उन्होने अपने ३५ सदस्यो के नाम जो दल बदल कर विरोधी पक्ष मे जा रहे थे अध्यक्ष को पढ कर सुनाये जिनमे कुछ पूर्व कांग्रेसी मन्त्रियो के नामभी थे तथा डा० रामाचरणराय, श्री गोविन्द नारायणसिंह, श्री रामेश्वरप्रसाद शर्मा, श्री गणेश राय अनन्त, आदि तथा सदन के उपाध्यक्ष श्री नर्मदाप्रसाद श्रीवास्तव एव कांग्रेस दल के मुख्य सचिव श्री धर्मपाल गुप्ता के भी नाम उनमे थे। पूर्ण सूची के पढे जाने के उपरान्त विरोधी दल के उपनेता श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा ने

बजट की शिक्षा विभाग की मागो पर मतदान की माग की क्योकि इस विषय पर अब बहस समाप्त हो चुकी थी।

काग्रेस सदस्यो ने सूची के सुनने के पश्चात् एकदम शोरगुल मचाना प्रारम्भ कर दिया और कुर्सिया छोड वे गुलगपाडा को तैयार हो गये। कहते है कि लोगो ने उत्तेजित मुख्यमन्त्री को तो श्री सकलेचा से चीख-चीख कर यह कहते भी सुना कि यह सब बकवास है तुम समझते क्या हो, यदि काग्रेस का मन्त्रिमण्डल न भी रहा तो हम तुम्हे भी इन कुर्सियो पर बैठने न देगे। काग्रेस का बहुमत न रहा तो हम मध्यावधि चुनाव कराके ही रहेगे। तुम लोग समझते क्या हो। भगवान जाने इसमे कहा तक सत्य है।

शोरगुल और उधम न जाने किस-किस ने क्या-क्या कहा किन्तु आखो देखी बाते जो सामने आईं उनसे पता चलता है कि गाली-गलौच और अपशब्दो की उन क्षणो मे सदन मे भरमार थी और कुछ सदस्य क्रोध और बौखलाहट के कारण और कुछ हर्षातिरेक के कारण अपनी स्वाभाविक गम्भीरता खो बैठे थे।

सदन की कार्यवाही आगे चलना सम्भव जान अध्यक्ष ने श्रीवर्मा से कहा कि वे कल उनके और उनके साथियो के बैठने का प्रबन्ध विरोधी पक्ष के साथ करा देगे और तत्पश्चात् उन्होने सदन को स्थगित कर दिया। दर्शको ने देखा कि काग्रेसी मन्त्री और सदस्य सदन के बाहर जाते जाते भी अपने उन ६ साथियो को जो अब दल-बदल चुके थे, क्षोभ मे भरे जबरदस्ती बाहर खीच ले जाने के प्रयत्न मे थे। सम्भव कि और हाथापाई भी हो जाती किन्तु राजमाता के आदेश के अनुसार समस्त दल-बदल सदस्य शात हो अपने-अपने स्थानो पर आसीन रहे।

सदन स्थगित हो गया किन्तु विरोधी दल का एक भी सदस्य सदन के बाहर न गया और वे ३६ दल-बदलू भी सदन के अन्दर ही रहे।

जिनके नामो की घोषणा ने प्रदेश मे एक खुशी की लहर दौडा दी थी। सदन के बाहर अब भोपाल के नगरवासी हजारो की सख्या मे एकत्रित हो गये थे और राजमाता की जय जयकार से वातावरण गू जा रहे थे। जल की बूदे आकाश से गिर कर मानो जन-जन को हर्ष की इस अभिव्यक्ति मे सहयोग कर रही हो और वर्षा की इस झडी के बीच प्रतिक्षण नगर के हर कोने से जन समूह हर्ष ध्वनि करता हुआ विधान सभा भवन की ओर उमड पड रहा था। वे सब आतुर थे राजमाता का दर्शन और उनका अभिनन्दन करने के लिये।

अपने १५५ साथियो के साथ राजमाता उस सन्ध्या को जब सदन से बाहर आई तो जनता की भारी भीड ने उनका स्वागत किया। ३६ दल बदलू विधायको को जिन्हे जनता ने आज लोकतन्त्र के रक्षक की सज्ञा दी थी। राजमाता अपने सहयोगियो के साथ राज्यपाल को स्थिति से अवगत कराने के लिए राजभवन की ओर वर्षा मे भीगती पैदल चल पडी। इस समय विभिन्न विरोधी दलो के नेतागण श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा, श्री चन्द्रप्रताप तिवारी आदि भी उनके साथ थे। बडी कठिनता से भीड मे से डा० गोविन्दनारायणसिंह अपना मार्ग जलूस मे से बनाते हुए राजभवन मे पहुँचे और महामहिम महोदय श्री के० सी० रेडी को राजमाता ने एक स्मरण पत्र दिया। तथा विधान सभा मे घटी घटनाओ से उन्हे अवगत कराया। राज्यपाल महोदय ने उत्तर मे कहा कि सदन मे मत विभाजन के पश्चात् ही दलो की शक्ति का निर्णय और कांग्रेस का बहुमत न होने का फैसला हो सकता है अत सविधान के अनुसार किसी भी दल की सरकार को हटाने के पूर्व सदन मे शक्ति परीक्षण आवश्यक है, सदन मे ही यह परीक्षण होगा राजमाता और उनके साथी राज भवन से जब लौटे तो उन्हे विश्वास था कि कल सदन मे शक्ति परीक्षण होगा तथा निश्चय ही मिश्र मन्त्रिमण्ल की हार के बाद प्रदेश मे पहली बार एक गैर सरकारी मन्त्रिमण्डल शासन सूत्र अपने हाथ मे सम्भाल लेगा।

उधर घटनाओ का क्रम इतनी तेजी से आगे बढ रहा था कि राजमाता के कैम्प के साथियो के लिये यह आवश्यक हो उठा कि वे ३६ दल-बदलुओ की रक्षा का समुचित प्रब ध करे। उन्हे विश्वस्त रूप से यह समाचार प्राप्त हुए थे कि विधायक विश्राम गृह मे खुफिया पुलिस बडी सख्या मे तैनात है तथा इन सदस्यो को वहा पहुँचते ही शायद मुख्यमत्री तथा अन्य मन्त्रियो की कोठियो मे ले जाया जावेगा। सुना गया कि मुख्यमन्त्री इन बागी ३६ सदस्यो से सम्पक साधने को आतुर थे तथा शासन की मशीनरी को आदेश थे कि जिस प्रकार भी हो उ हे उनके पास लाये। सन्ध्या को सदन मे जबकि इन ३६ धारा सभाइयो की मण्डली एकत्रित थी उन्हे खबर मिली कि किसी न किसी बहाने उ हे सदन के बाहर आने के लिये उनके पुराने काग्रेसी साथी सन्देश भेज रहे है। उन क्षणो मे तुर त निणय लेना आवश्यक था अत सबने मिलकर यह निश्चय किया कि यह मण्डली तीन-चार टुकडो मे विभक्त होकर स्थानो पर रात्रि निवास के लिये चली जावे। राजमाता के परिजन तथा साथियो ने जिनमे मुख्य थे महाराज माधवराव सिंधिया के मित्र एव युवक अनुगामी। इस योजना को पूण उत्तरदायित्व के साथ कार्यान्वित किया और मिश्रजी की मशीनरी इन ३६ साथियो का पता प्रयत्न करने पर भी उस रात्रि को न पा सकी।

आज का यह समाचार कि मध्यप्रदेश के ३६ काग्रेसी धारा सभा के सदस्यो ने काग्रेस दल त्याग कर मिश्र मन्त्रिमण्डल के पतन का निश्चित कर दिया है देश के कोने-कोने मे बिजली की तरह फैल गया। प्रदेश के हर नगर मे सन्ध्या के समय यही चर्चा थी और सन्ध्या के ७ बजे भोपाल, इन्दौर आकाशवाणी द्वारा प्रादेशिक समाचार सुनने को लाखो व्यक्ति आतुरता से रेडियो के पास एकत्रित थे। ग्वालियर नगर मे उस रात्रि मशालो का एक लम्बा जुलूस मिश्र मन्त्रिमण्डल के भावी पतन के प्रति निकला कर जनता ने अपने हष की अभिव्यक्ति की।

नगर की सडको पर हजारो युवको की टोलिया जिनमे छात्रगण विशेषकर थे घूमती हुई खुशी के गीत गा रही थी और राजमाता की जय जयकार से गली-गली गूज रही थी। छात्रो ने मत्रिमडल के इस पतन को अपनी विजय माना और जन जन ने अपनी प्रिय नेत्री राजमाता की रात्रि भर जय-जयकार कर घरो मे दीपावली जलाई जैसे यह उनका मुक्ति दिवस हो। दर्शक गण मिश्र मत्रिमडल के प्रति घृणा का इस प्रकार का जन प्रदशन देखकर अचभित हो गये और नगर के वे कांग्रेसी नेता जिन्होने गत २० वर्षो मे नगर की जनता का एकाधिकार नेतृत्व किया था आज अपने अपने घरो मे जा छिपे थे। कांग्रेस के प्रति उपेक्षा के वाक्य इन क्षणो मे नगर के बच्चो के मुख पर थे जो नारे बनकर गलियो को भी जगा रहे थे।

इन्दौर, ग्वालियर, रायपुर, विलासपुर तथा रीवा कमिश्नरी की जनता ने हजारो की सख्या मे तार द्वारा बधाई और अभिनन्दन अपने भोपाल स्थित नेताओ को भेजकर उस रात्रि उनके निर्भीक कृत्यो को सराहा तथा अपना आभार प्रदर्शित किया।

२० जुलाई, १९६७, नीलगगन के विशाल प्रागण मे प्राची दिशा मे उषा की अरुणिमा अपने कोमल कर जोड जब भगवान अशुमाली के अभिनन्दन किया ही था। अभी अभिषेक भी हुआ था कि भोपाल के इम्पीरियल होटल के एक कक्ष मे राजमाता ने अपने कृष्ण भगवान की अचना मे दीप, नैवैद्य, गध पुष्प चढाकर उनकी पूजा मे अपने मन का अर्घ्य समर्पित किया। प्रभात के इन पावन क्षणो में उन्होने अपने इष्टदेव से मागा आत्मिक बल और सत्य के पथ पर निश्चय दृढ रहने की शक्ति।

उधर मुख्यमन्त्री आवास मे जहा आज मानो रात्रि हीन थी और निस्तब्धता को एक क्षण के लिए भी राजकीय कमचारियो एव मन्त्री

माँ—बेट



श्रीमत महारानी विजयाराजे सिंधीया
अपने पुत्र राजकुमार माधवराव सिंधीया के साथ ।



महारानी विजयाराजे सिंधीया अपनी दोनो पुत्रियो राजकुमारी पद्माराजे एव राजकुमारी उषा राजे सिंधीया के साथ ।



सन १९६७ के चुनाव अभियान मे जनता को सम्बोधीत करते हुये श्रीमत महाराज माधवराव सिंधीया ।



विचारमग्न राजमाता ।

वग के आवागमन ने न आने दिया था। सवेरे की इस वेला मे मिश्रजी को एक अजीब बेचैनी और उदासी का अनुभव हुआ। शासन के विधि विभाग और गृह विभाग ने भारतीय सविधान का रूप मानो एक ही रात्रि मे बदल डाला था और अपने मन से मुख्यमन्त्री को सान्त्वना देने का प्रयास किया था। काग्रेस के सुपुत्र प्रहरी आज सजग थे किन्तु उनके सारे प्रयत्न भी मिश्रजी को आश्वस्त न कर पाये। प्रात काल ही एक प्रमुख नेता ने सूचना दी कि बागी ६ सदस्यो के अतिरिक्त वे किसी की भी तलाश करने मे असमथ रहे है और ये ६ तो ऐसे कट्टर बागी हैं कि इनसे पुन काग्रेस मे आने की बात इस समय करना एकदम व्यथ है। शेष ३० सदस्य जिनमे हरिजन, आदिवासी सदस्य शामिल हैं भोपाल मे है भी या नही इसका पता नही चल पाया है। उनके विधायक विश्राम भवन के कमरो मे कल सुबह से ही ताला पडा है। यह निराशा-जनक समाचार पाकर मिश्रजी ने विवश हो देहली से सम्पक साधा और टेलीफोन द्वारा काग्रेस अध्यक्ष तथा प्रधानमन्त्री को स्थिति की सूचना दी। उन्होने कहा कि यदि विधान सभा मे आज मतदान हुआ तो काग्रेस की हार निश्चित है और उसको टालने का केवल यही मार्ग है कि सदन स्थगित कर दिया जाए क्योकि दल-बदलुओ से सम्पर्क साधने के लिए समय चाहिए। सदन के अध्यक्ष तो बैठक स्थगित करेंगे नही जैसा रात्रि मे वे मुझे बता चुके है। अत राज्यपाल को स्थगन का आदेश प्रसारित करना होगा। मुख्यमन्त्री की सलाह को सविधान के अनुसार राज्यपाल इस सम्बन्ध मे मानने को बाध्य है। वैसे देहली आकर स्थिति को पूर्णरूपेण स्पष्ट किया जावेगा। देहली से प्रधानमन्त्री का समथन प्राप्त कर मिश्रजी राज्यपाल से मिले और कहा कि विरोधी पक्ष डरा-धमका कर काग्रेसी सदस्यो को जबरन अपनी ओर मिला रहा है एव इन परिस्थितियो मे शक्ति परीक्षण नही हो सकता। सविधान के अनुसार राज्यपाल मुख्यमन्त्री की सलाह मानने को बाध्य है तथा वह सलाह इस समय यह है कि अनिश्चित काल के

लिये सदन का सत्रावसान कर दिया जावे । बस देहली के सकेत पर गुत्थी उलझ गई ।

प्रात ९ बजे से विधान सभा भवन के चारो ओर भीड एकत्रित होना प्रारम्भ हो गई और १ घण्टे मे ही राजभवन के समीप हजारो की सख्या मे जनता एकत्रित हो गई । अखबारो के प्रतिनिधि जो सभा भवन के अन्दर न जा सके थे बाहर ही घूम-घूम कर भावी घटनाक्रम की टोह ले रहे थे । ठीक १० बजे जबकि मुख्यमन्त्री, राजमाता एव दलो के सदस्य व नेतागण सदन मे उपस्थित थे, सदन-अध्यक्ष पधारे और उन्होने कार्यवाही प्रारम्भ करने का सकेत दिया । वे स्वय उठे और राज्यपाल का निम्न सदेश पढकर सुनाने के पश्चात वे सदन से उठकर चले गये

"भारतीय सविधान की १७४वी धारा द्वारा प्रदत्त अधिकारो को प्रयोग मे लाकर मै, के० सी० रेड्डी, राज्यपाल, मध्य प्रदेश राज्य विधान सभा का सत्रावसान करता हू ।"

"नही नही, ऐसा नही हो सकता" की आवाजो से सदन गू ज उठा । विरोध दल आज शक्ति परीक्षण के लिए तैयार था व उसे विश्वास था कि राज्यपाल द्वारा दिये हुये आश्वासन के अनुसार आज बजट पर मत-दान होगा तथा वे मिश्र मत्रीमडल को परास्त कर प्रदेश मे नवीन शासन स्थापित करा सकेंगे । किन्तु राज्यपाल के इस आकस्मिक आदेश को सुन वे स्तम्भित रह गये ।

"मिश्र मत्रीमडल का पतन होगा ।"

"यह विश्वासघात है, चालबाजी है ।"

इस प्रकार के नारे सदन मे बाहर से आने लगे । अध्यक्ष के जाते ही मुख्यमत्री अपने मत्रियो की टोली एव अन्य काग्रेसी सदस्यो के

साथ सदन से बाहर चले गये और सदन मे अन्दर रह गये केवल विरोधी सदस्य जिनकी सख्या अब १५५ थी। नेताओ ने राजमाता से कुछ परामश किया और कुछ ही क्षणो मे अध्यक्ष की कुर्सी पर आ विराजे श्री ब्रजलाल वर्मा। मेज को ठोक कर विधायक ने सदस्यो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुये कहा

"भाइयो। राज्यपाल का आदेश विपक्ष को दबाने के हेतु दिया गया है। मिश्रजी काग्रेस छोडकर आये हुये सदस्यो को फुसलाने के लिये समय चाहते है। ठीक है, हम सब उनके नेतृत्व को चुनौती देकर जनहित के लिये विरोधी पक्ष मे आये हैं। उनकी पराजय निश्चित है। राज्यपाल के इस अनुचित आदेश के विरोध मे मै निम्न प्रस्ताव उपस्थित करता हूँ। जिसे हम सब एक मत से पारित करे तथा राजभवन चलकर उन्हे इसकी एक प्रति दे दें। हम सबने इसी सदन मे अब धरना देने का निश्चय किया है।"

इसके पश्चात श्री गोविन्द नारायण सिंह ने उठकर उन कारणो पर प्रकाश डाला जिन्होने काग्रेस के ३६ सदस्यो को काग्रेस दल त्याग करने को बाध्य किया था जिससे कि वे काग्रेस के इस विधान सभा के नेतृत्व को समाप्त कर प्रदेश की जनता को राहत पहुँचाने का प्रयत्न करें। उन्होने कहा कि मिश्रजी का राज्य निरकुशता का राज्य है। वे अपने साथियो के विरोध को बर्दाश्त करना तो दूर उनसे सलाह तक करने मे अपना अपमान समझते हैं। उनके शासन को अब साथ देने का अथ हम लोगो के लिये अपनी आत्मा की आवाज के विरुद्ध कार्य करना था। दम घुटने के इस वातावरण मे रहकर विवेक को कुठित करना अधिक समय तक हम लोगो के लिए सम्भव न था। मिश्रजी के नेतृत्व को बदलने का प्रयास हम ३६ ने ही नही किन्तु और भी ४०-५० सदस्यो ने किया किन्तु नक्कारखाने मे तूती की इस आवाज को भला देहली मे कौन सुनता। उन्होने कहा कि उनके

स्वय के विरुद्ध मिश्रजी के शासन ने पुलिस द्वारा मनगढन्त किस्सो की मिसलें बनाई। उनके चरित्र पर कीचड उछाली, उन्हे बदनाम करने का प्रयास किया किन्तु उन्होने दृढता से यह सब भी सहन किया। परसो तक उनका प्रयत्न यह रहा कि काग्रेस हाई कमाड मिश्रजी के स्थान पर किसी और को नेता स्वीकार कर ले, पुन चुनाव कराले और ऐसा कराना अनुचित भी न था जबकि वह मडलोई जी को हटाकर श्री काटजू को नेता बनाना एक दिन पसन्द करती थी। किन्तु यह सब न होना था, न हुआ। अपनी-अपनी आत्मा को पुकार कर, विद्रोही बनकर लोकतत्र हेतू जनहित मे इस उदण्ड कुशासन का अन्त करने के लिये ३६ सदस्यो ने काग्रेस दल को छोडा है इसलिये अब किसी भी प्रकार का प्रलोभन उन्हे पथ से न हटा पायेगा।

इसके पश्चात अन्य सदस्यो ने भी अपने काग्रेस त्यागने के कारण बताये और फिर निम्न प्रस्ताव राज्यपाल महोदय को सम्बोधित कर पारित हुआ।

सम्माननीय महामहिम राज्यपाल महोदय,
मध्य प्रदेश शासन,
भोपाल

महोदय,

हम निम्नलिखित हस्ताक्षरकर्ता, मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य-गण, सेवा मे निम्न निवेदन करते है

१—यह कि कल दिनाक १९ ७ ६७ को जबकि शिक्षा की मागो पर चर्चा चल रही थी तब काग्रेस पक्ष के एक माननीय सदस्य श्री ब्रजलाल वर्मा ने यह वक्तव्य दिया कि उन्होने स्वय एव अन्य ३५

कांग्रेसी पक्ष के माननीय सदस्यो ने कांग्रेस पक्ष से त्यागपत्र दे दिया है व विरोधी पक्ष मे सम्मिलित हो गये हैं।

२—श्री ब्रजलाल वर्मा ने समस्त ३६ सदस्यो को विधान सभा भवन मे विरोधी पक्ष मे बैठने के लिए शासन से भी माग की थी। तब अध्यक्ष महोदय ने कल उन्हे स्थान निश्चित करने को कहा था और आज भी कुछ कांग्रेसी सदस्यो ने कांग्रेस पक्ष से त्यागपत्र दे दिया है।

३—इस प्रकार कांग्रेस पक्ष के सदस्यो द्वारा विरोधी पक्ष मे सम्मिलित हो जाने से गैर कांग्रेसी पक्ष की विधान सभा मे १५५ से अधिक की सख्या बन गई है।

४—इस प्रकार विधान सभा मे १५५ से अधिक सख्या सयुक्त विधायक दल की हो जाने से श्री द्वारिकाप्रसाद मिश्र के नेतृत्व मे मन्त्रिमण्डल का अल्पमत हो जाने से उसको सत्ता पर बने रहने का अधिकार प्राप्त नही है।

५—श्रीमान के समक्ष विरोधी पक्ष व कांग्रेस पक्ष को छोडकर आये कई प्रमुख सदस्यो द्वारा कल भी सयुक्त विधायक दल के बहुमत मे होने बाबत निवेदन किया गया था। उस समय श्रीमान ने कल सदन मे बजट की मागो पर मतदान मे अपना बहुमत सिद्ध करने को प्रजातान्त्रिक परम्परा अपनाने को कहा तथा विधान सभा का अधिवेशन चालू होने से विधान सभा से ही निर्णय कराने के मार्ग का अवलम्बन करने की राय व्यक्त की थी। तदानुसार हम सयुक्त विधायक दल के सदस्य आज मतदान करके बहुमत सिद्ध करने को सम्बद्ध थे किन्तु सविधान के सवथा विपरीत सदन का सत्रावसान आज कर दिया गया तथा

प्रजातन्त्र को सभी परम्पराओ के विपरीत विधानसभा के सत्र मे अपना बहुमत सिद्ध करने के माग को भी आपके माध्यम से अवरुद्ध कर दिया है। अत पुन अपना बहुमत सिद्ध करने के हेतु सदन का बहुमत प्रत्यक्षत आपके सामने उपस्थित हो रहा है।

६—काँग्रेस पक्ष के मत्रिमडल को अब मध्यप्रदेश राज्य शासन काय-भार चलाने का अधिकार नही रहा।

७—मध्य प्रदेश शासन के लिए मत्रिमडल बनाने का अधिकार अब केवल सयुक्त विधायक दल को है जो कि १५५ से अधिक हैं।

८—अत आपसे निवेदन है कि आप आज ही काग्रेस के मन्त्रिमण्डल को भग कर गैर-काग्रेसी सयुक्त विधायक दल के नेताओ को बुलाकर मत्रिमडल बनाने का निर्देश देंगे। हम मन्त्रिमण्डल बनाने हेतु पूण सक्षम है और निवेदन करते हैं कि सत्र को पुन शीघ्र ही बुलाये जाने की कृपा करे।

दिनाक २०-७-६७ भववीय

विधान सभा सदस्यगण

(सयुक्त विधायक दल के १५५ सदस्यो के हस्ताक्षर)

सदन के बाहर उस दोपहरी को मूसलाधार वर्षा हो रही थी फिर भी सदन के चारो ओर खुले मैदान मे जनता की अपार भीड थी। विधान सभा के १५५ सदस्यो के साथ जब राजमाता सदन से बाहर आई तो जय-जयकार के मध्य जनता ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया और फिर जनता जुलुस बनाकर उनके पीछे चल पडी।

पुलिस एव स्वयसेवको के एक बडे दल ने घेरा बाधकर उनको समीप आने से रोका तथा राजमाता के नेतृत्व मे सयुक्त विधायक दल के सदस्यो की टोली राजभवन मे जा पहुची। राज्यपाल के समक्ष राजमाता ने उक्त पारित प्रस्ताव की प्रतिलिपि प्रस्तुत की एव यह माग की कि चू कि बजट के समय सदन का सत्रावसान सविधान की आत्मा के प्रतिकूल है अत सदन की बैठक पुन बुलाने का वे प्रबन्ध करे ताकि सदन के अन्दर शक्ति परीक्षण करके विरोधी दल अपना बहुमत प्रमाणित कर सके। वैसे १५५ सदस्य स्वय राज्यपाल के समक्ष आज उपस्थित है तथा वे जिस प्रकार चाहे उस प्रकार उनसे बातचीत कर सत्य का निश्चय कर सकते है। उस व्यक्ति को जिसे सदन का बहुमत अब प्राप्त नही है, मुख्यमत्री रहने का एक क्षण को भी अधिकार नही है तथा राज्यपाल के समक्ष उसकी सम्मति कोई मूल्य नही रखती है। प्रजातन्त्र की रक्षा करना राज्यपाल का कर्तव्य है एव सविधान के अनुसार ही उनका आचरण करना उचित है। राज्यपाल का उत्तर था कि सविधान के अनुसार ही परिस्थिति का विश्लेषण कर उन्होने सत्रावसान किया है। उनका लक्ष्य है सविधान का पालन। सदन को पुन बुलाने का वे शीघ्र ही निर्णय लेंगे। उन्हे विदित है कि बहुमत अब काग्रेस दल का नही है फिर भी राज्यपाल की ओर से सदन की बैठक एक दो दिन मे बुलाने का स्पष्ट आश्वासन प्राप्त करने मे असमर्थ यह दल पुन सदन मे लौट आया तथा नेताओ मे भविष्य के कार्यक्रम के हेतु परामर्श होने लगा।

उधर कुमार अर्जुनराव फालके ने सरकारी बस कम्पनी मे जाकर किराये की धनराशि जमाकर चार बसो को देहली यात्रा के लिये निश्चित किया। सरकारी बसो को किराये पर प्राप्त कर ये राजमाता के साथ भोपाल के एक अज्ञात सुनसान सी कोठी मे जा

पहुँचे और रात्रि के अधकार की प्रतीक्षा करने लगे। उस सध्या को विरोधी दल की इस मडली ने धारा सभा भवन मे ही भोजन किया एव रात्रि विश्राम की भी यहा व्यवस्था होने लगी। सदस्यो को भय और शका थी कि यदि वे विधायक विश्राम गृह मे गये तो उनका अपहरण भी हो सकता है और कुछ नही तो किसी भी बहाने पुलिस द्वारा गिरफ्तारी भी सम्भव है। उन्हे पता था कि शासन की सारी मशीनरी और उसके सचालक इन क्षणो मे क्रोध और खिजलाहट से भरे हुए हैं जबकि जनता राज्यपाल को उनके सत्रावसान के आदेश के कारण नगर-नगर और गाव-गाव मे धिक्कार रही है। मिश्रजी के प्रति जनता मे अपार रोष था तथा वह उनके कुर्सी के लोभ और सत्ता के मद को अब भली भाति समझ चुकी थी। उसी दिन सन्ध्या की ४ बजे भोपाल प्रेस सम्मेलन मे श्री गोविन्द नारायण सिंह ने कहा कि मुख्यमन्त्री मिश्रजी ने मध्यप्रदेश के जनजीवन को विस्मय और चरित्र-हीन बना दिया था। उनकी नीति आतक, भय और विभाजन पर आधारित थी। हम ३६ सदस्यो ने उससे स्वय को अलग करना आवश्यक समझा। बजट मे जो कर लगाये गये हैं उनके लागू होने पर जनता त्रसित होगी तथा प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था बिगड जावेगी। मिश्रजी ने अपना दुष्प्रभाव काग्रेस सगठन एव अखिल भारतीय काग्रेस समिति तक फैला रखा है। फलस्वरूप हम लोगो का काग्रेस मे रहकर देश की सेवा करना असम्भव हो गया था। बहुत से दिग्गजो ने काग्रेस से सम्बन्ध बाध्य होकर तोड लिया है जिसके अनेक कारण है। राजमाता, ससोपा के श्री शिवप्रसाद चिनपुरिया, जनसघ के श्री सकलेचा एव प्रसोपा के श्री चन्द्रप्रताप तिवारी आदि ने प्रेस प्रतिनिधियो के प्रश्नो के उत्तर देते हुए कहा कि राज्यपाल का आज सदन को स्थगित करके काग्रेस की पराजय को बचाना असवैधानिक है तथा जनता उनके इस कृत्य से अत्यन्त क्षुब्ध है।

रात्रि के समय राज्यपाल ने एक प्रेस वक्तव्य मे कहा कि लोकतत्र के सिद्धान्तो को दृष्टि मे रखकर ही उन्होने सत्रावसान किया है तथा वे सदन की बैठक पुन शीघ्र ही बुलाने का निर्णय करेंगे।

राज्यपाल से जब राजनैतिक स्थिति का स्पष्टीकरण करने को कहा गया तो उन्होने इस पर विशेष कुछ कहने से इकार कर दिया तथा उनका उत्तर था कि "अर्थात् उसी सीमा तक जहा तक कि सविधान आज्ञा देता है।"

उसी रात्रि को श्री मिश्रजी ने प्रेस सम्मेलन मे कहा कि राज्यपाल को मत्रावसान की सलाह मैंने दी है क्योकि वे अभी तक दल-बदलुओ से सम्पक साधने मे असमर्थ रहे है। जिनमे से कुछ का तो जबरदस्ती अपहरण किया गया है। सदन मे यदि काग्रेस का बहुमत न रहा तो वे राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह देंगे क्योकि जनता ने आम चुनावो मे काग्रेस के पक्ष मे मत देकर सदन मे उसको स्पष्ट बहुमत प्रदान किया है। उस जनमत का अनादर कर यदि कुछ विघायक दल-बदल करते है तो मुझे जनता के समक्ष पुन जाकर उसका निणय प्राप्त करने का अधिकार है।

भोपाल की राजनैतिक स्थिति से उस दिन यह स्पष्ट हो गया कि गुत्थी यहा सुलझेगी नही एव मुख्यमत्री, राज्यपाल आदि इसी समस्या को लेकर देहली जा रहे है। अत राजमाता भी समस्त सहयोगी विधायको के साथ देहली की यात्रा को तत्पर हो गई। देहली जाते समय उन्होने कहा कि ५ और काग्रेसी सदस्य सयुक्त विधायक दल मे मिल रहे है तथा उनके दल की सख्या २९६ के सदन मे अब १५५ के स्थान पर १६० हो जावेगी। जनता के समक्ष उस रात्रि भोपाल मे बोलते हुए श्री ब्रजलाल वर्मा एव श्री सकलेचा ने कहा कि राज्यपाल ने सत्रावसान कर काग्रेस का पक्ष लिया है तथा उनकी निष्पक्षता पर

उन्हें अविश्वास है । उनका यह काय जनतत्र के सिद्धान्तो एव भावनाओ के विपरीत है तथा वे लोग देहली जाकर इसके निराकरण का प्रयत्न करेगे । उसी रात्रि राज्यपाल और मुख्यमत्री भी देहली के लिये रवाना हो गये और मुख्यमत्री की रक्षा-व्यवस्था के लिए पुलिस की दस्तिया ३ ४ बसो मे भरकर भेजी गयी जैसे कि केन्द्र की पुलिस उनकी रक्षा करने मे समर्थ न थी । जनता के धन का यह अपव्यय भला किसको भाता ।

उस दोपहरी को जब आकाशवाणी ने यह समाचार प्रसारित किया कि मध्य प्रदेश की विधान सभा की बजट की बैठक का सत्रावसान राज्यपाल द्वारा कर दिया गया है तो देहली मे लोक सभा एव राज्य सभा के सदस्यो मे एक बिजली सी दौड गई । काग्रेस दल के सदस्य तो अपनी पार्टी के कृत्यो के कारण क्षुब्ध होते हुए भी मौन थे किन्तु विरोधी दल के सदस्य भला कैसे चुप रहते । स्वतत्र पार्टी के एक ससद सदस्य श्री देसाई ने राष्ट्रपति को उक्त पत्र लिखकर उनका ध्यान राज्यपाल द्वारा सविधान की इस हत्या की ओर आकर्षित किया । इस पत्र मे उन्होने लिखा कि मध्य प्रदेश की राजनीति मे जो कुछ हुआ है व होना है, उसके प्रति राष्ट्र के सरक्षक होने के नाते आपका कतव्य है कि आप सविधान की रक्षा करे । उन्होने लिखा

मध्य प्रदेश की नवीनतम घटनाये राष्ट्रपति की राजनैतिक कुशलता एव विचार, स्वतत्रता एव निष्पक्ष काय-शक्ति को चुनौती देती है क्योकि वे भारत के सविधान के प्रहरी और रक्षक है ।

पत्र मे यह कहा गया कि प्रदेश के मुख्यमन्त्री का दावा, कि आम चुनाव मे जनता ने काग्रेस पार्टी को प्रदेश का शासन करने का अधिकार सौपा है और यदि यह अधिकार कुछ दल-बदलुओ के कारण चला जावे तो उन्हे जनता का मत पुन प्राप्त करने का अधिकार है, पूर्णतया सही नही है । क्योकि बहुत से सदस्य अपने व्यक्तित्व एव

चरित्र पर जनता का मत प्राप्त कर सके हैं तथा जनहित मे अपना पथ ग्रहण करने को वे स्वतन्त्र है। साथ ही जब तक कोई भी दल शासन करने के योग्य अपना बहुमत सदन मे रखता है तब तक एक अल्पमत वाले मुख्यमन्त्री की सलाह मान कर राज्यपाल का सदन का सत्रावसान करना और वह भी बजट की मागो को पारित करने के समय असगत और अवैधानिक है। इसी प्रश्न पर राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री की निष्पक्षता को आज चुनौती है। चू कि प्रधानमत्री तथा मुख्यमन्त्री एक दल विशेष के है अत केवल राष्ट्रपति ही पूण निष्पक्षता के साथ इसका निर्णय कर सकते है। इस अवसर पर उन पर ही औचित्य का उत्तरदायित्व है। विरोधी दल के नेता को अपना बहुमत का दावा सिद्ध करने का अवसर सदन मे ही मिलना चाहिये तथा यदि वह विजयी होता है तो शासन उसे सौप देना चाहिये। यदि यह सभव न हो तो राष्ट्रपति को, श्री मिश्र को अब एक क्षरण भी मुख्यमन्त्री रखने का अधिकार नही है। इन परिस्थितियो मे यदि पराजित मुख्यमन्त्री, जिसका बहुमत अब सदन मे नही है, राज्यपाल को यदि मध्यावधि चुनाव की सलाह भी देता है तो उसका भी कोई मूल्य नही है। राज्यपाल उसे अमा य कर सकते है। राष्ट्रपति का यह कतव्य है कि वह पूण निष्पक्षता के साथ निराय लेकर सविधान की रक्षा करे।

उक्त पत्र राष्ट्रपति की सेवा मे ससद् सदस्य श्री देसाई द्वारा भेज दिया गया। तब विभिन्न विरोधी दलो ने अपने वक्तव्य तुरत अखबारो मे देकर राज्यपाल के इस अवैधानिक कृत्य की निन्दा की तथा इसके विरोध मे जनमत जाग्रत कर देश की राजधानी मे एक तहलका सा मचा दिया।

काग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज को जब सत्रावसान की सूचना मिली तो उन्होने अपनी दक्षिरण भारतीय यात्रा स्थगित कर दी, एव अपने

दल की प्रतिष्ठा को बनाये रखने एव जनता की दृष्टि मे उसका प्रतिबिम्ब गिर न जाये इसके लिये वे सन्नद्ध हो गये। एक ओर प्रधानमत्री के कृपापात्र प्रदेश के मुख्यमन्त्री की हठपूर्ण बात थी और दूसरी ओर सविधान की आत्मा के प्रति निष्ठा। उन्होने प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री से सम्बन्ध साधा तथा रात्रि को बहुत देर तक नेताओ मे इस प्रश्न को लेकर चख-चख होती रही। भारतीय शासन के गृह विभाग तथा विधि विभाग के उच्चाधिकारी उस रात्रि सलग्न रहे, यह खोजने मे कि सविधान के अनुरूप कौन-सी व्यवस्था ठीक है तथा उन प्रश्नो का जो कि कल लोकसभा मे मध्यप्रदेश की समस्या को लेकर उठाये जावेगे, वैधानिक विधान क्या होगा ? उनके सामने इस रात्रि को जो प्रश्न थे वे कुछ इस प्रकार हैं

१—क्या विधान सभा को भग कर मध्यावधि चुनाव इस अवस्था मे उचित है जबकि एक बहुमत खोया हुआ मुख्यमन्त्री इसकी माग की हठ करे। इस मुख्यमन्त्री की सलाह मानना क्या राज्यपाल के लिये आवश्यक है ?

२—क्या राज्यपाल द्वारा किया हुआ बजट अधिवेशन के बीच सदन का सत्रावसान सविधान की आत्मा के अनुकूल है। क्या बहुमत खोये हुये मुख्यमन्त्री की सलाह मानने को राज्यपाल बाध्य है ?

३—क्या बहुमत का निर्णय करने के लिए सदन की बैठक एव सदन में शक्ति-परीक्षण आवश्यक है अथवा राज्यपाल अपने स्वय की जाच पर भी इस सम्बन्ध मे निर्णय दे सकता है ?

४—क्या राज्यपाल के लिये आवश्यक है कि वह सविद मन्त्रिमण्डल की सभावना पर विचार करे तथा सदन द्वारा बहुमत का निर्णय लेकर उसे शासन सौप दे ?

५—राष्ट्रपति का इन प्रश्नो से क्या सम्बन्ध है तथा वह इन प्रश्नो पर प्रधानमन्त्री की राय मानने के लिए कहा तक बाध्य है ?

२० वष के स्वतन्त्र भारत के युग मे यह प्रथम अवसर था जबकि इस प्रकार के एक साथ कई कानूनी जटिल प्रश्न देश के सामने आ खडे हुए थे और वे राष्ट्रपति की निष्पक्षता को चुनौती दे रहे थे। व्यक्तिगत सम्बन्ध, दल के सगठन के समन्वय तथा काग्रेस की प्रतिष्ठा का भी सम्बन्ध इन प्रश्नो से जुडा हुआ था। इस वेला मे राष्ट्र के कर्णधारा की सचमुच बहुत कठिन परीक्षा थी जो राष्ट्र के सविधान के प्रति वफादार रहने की शपथ ले चुके थे।

इस प्रकार २० जुलाई की यह रात्रि भोपाल और देहली मे एक बवडर को लिए हुए आई थी जिसके फलस्वरूप न तो राजमाता को निद्रा की शान्तिमय घडियाँ उपलब्ध हुई और न उनके निष्ठावान साथियो अथवा विपक्षियो को। मिश्रजी की अन्धी हठ ने तो भोपाल और देहली के वातावरण को और भी क्षुब्ध बना दिया था। इन क्षणो मे मिश्रजी को शायद राजमाता एक चण्डिका के रूप मे ही नजर आ रही थी जिसे वे कुछ दिवस पूव ही 'शेखचिल्ली राजमाता' कहकर गर्व के रथ पर बैठे स्वय तुरगो बने वायुगति की उडानो के स्वप्न देख चुके थे। सच है "अहकार का सिर नीचा"। तभी तो प्रसादजी ने लिखा है कि

देव न थे हम और न ये है, हम सब मिट्टी के पुतले।
था कि गव रथ पर तुरग सा, जितना तू चाहे जुतले।।

सोपान २७

भोपाल से देहली

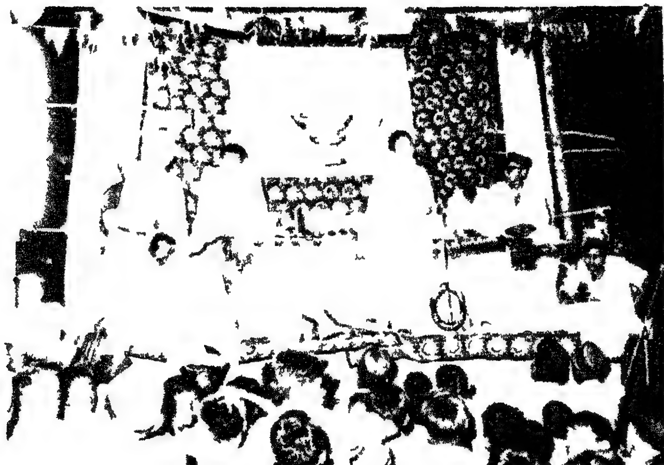
मध्यप्रदेश मे

२० जुलाई की रात्रि को यामिनी की स्वाभाविक निस्तब्धता तो मानो भोपाल मे आई ही नही। रात्रि के दो बजे तक बाजारो मे चहल-पहल थी और पान वालो तथा चाय के होटलो की दुकानें, जो प्रति रात्रि तीन-चार घण्टो को तो बन्द हो ही जाती थी आज रात्रि भर खुली रही। भोपाल की जनता भला उस रात्रि सोती भी कैसे ? उत्सुकता के कारण स्थान-स्थान पर जनता की टोलिया एकत्रित होकर राजनैतिक चर्चा मे सलग्न थी। मध्य रात्रि के पश्चात् नगर के एक सुनसान कोने से राजमाता एव जनसघ के स्वय सेवको की सुरक्षा मे चुपचाप चार बसे रवाना हो गई जिनका लक्ष्य था देहली तथा जिनमे यात्रा कर रहे थे मध्यप्रदेश के गैर-काग्रेसी विधायक। जब यह बसे प्रात काल की वेला मे ब्यावरा पहुची तो वहा की जनता ने एकत्रित होकर विधायको का हार्दिक अभिनन्दन किया तथा उन्हे लोकतन्त्र के प्रहरी एव रक्षक की सज्ञा देकर उनके साहस की लोकप्रियता का परिचय दिया। ब्यावरा के जनप्रिय नेता श्री राधावल्लभ विजयवर्गीय ने विधायको को जलपान कराया एव जनता की ओर से उन्हे पुष्पहार अर्पित किये गये। जनता द्वारा जब सजी-सजाई ये बसें बीनागज, गुना तथा शिवपुरी पहुची तो विधायको के आश्चय का का ठिकाना न रहा। प्रत्येक नगर मे जनता की विशाल भीड उनका अभिनन्दन करने तथा मिश्र मन्त्रिमण्डल का बेडा गर्क करते

के हेतु उन्हे बधाई अर्पित करने को तैयार थी। चारो ओर उन ३६ विधायको के साहस की प्रशसा हो रही थी जिनकी निर्भीकता एव राजनैतिक पटुता के कारण प्रदेश के राजनैतिक वातावरण मे कुछ परिवर्तन होने एव कांग्रेसी शासन के जुये को उतार फैंकने की सम्भावना दृष्टिगोचर होने लगी थी। सदन के सत्रावसान के कारण जनता क्षुब्ध थी तथा इसका परिचय उनके नारो से लग रहा था। ग्वालियर नगर मे विधायको के इस दल के आगमन का समाचार बिजली की भाति प्रसारित हो चुका था तथा जनता की एक विशाल भीड नगर के जयाजी चौक मे भरी दोपहर की तपती धूप मे एकत्रित हो चुकी थी। दोपहर को २ बजे के लगभग मार्ग की ग्रामीण जनता का आभार मानता हुआ विधायको का यह दल ग्वालियर की जनता के सन्मुख आया जहा कि उनका अभिनन्दन नगर के जनसघी नेता श्री नरेश जौहरी द्वारा किया गया। नागरिको की विशाल भीड को सम्बोधित करते हुए श्री ब्रजलाल वर्मा, श्री नर्मदाप्रसाद श्रीवास्तव, श्री वीरेन्द्रकुमार सकलेचा ने कहा कि यह प्रदेश की जनता की प्रबल आकाक्षाओ का ही परिणाम है कि श्री मिश्रजी जैसे निरकुश शासक से हम लोग लोहा ले सकने में समथ हो सके हैं तथा हमे विश्वास है कि हम उन्हे पराजित भी कर देंगे। श्री मिश्रजी की तानाशाही एक खूनी तानाशाही है जिसका पोषण आज राज्यपाल द्वारा भी किया जा रहा है। प्रजातन्त्र मे तानाशाही का कोई स्थान नही। जनता की शक्ति अजय है जिसके सन्मुख मध्यप्रदेश के राज्यपाल को तो क्या देहली की केन्द्रीय सरकार को भी झुकना पडेगा। अन्त मे राजमाता ने उठ कर कहा कि श्री ब्रजलाल वर्मा उन दिलेर विधायको मे से हैं जिन्होने श्री मिश्र के नेतृत्व को तिलाजली दे दी है। इन सब विधायको का आपसे परिचय श्री सकलेचा करा ही चुके हैं। यह उनके साहस का ही परिणाम है कि वही मिश्रजी जो मेरी राजनीति को ताश का घर कहा करते थे आज अपने ताश के महल को जनता

की बवण्डरमयी भावना की आधी के सन्मुख ढहता देख रहे है। भगवान की दया और आप सबके सहयोग से यह सब सम्भव हुआ है। हम सबकी और आपकी भी जो घटो से तपती धूप मे अडे हुए हैं यह तपस्या ही मिश्रजी सरीखे तानाशाह का गर्व चूर करेगी। आप विश्वास रखिये कि मध्यप्रदेश से काग्रेस के काले शासन की छाया अब उठने ही वाली है। हमे आपकी भावनाओ का बल है जिसका प्रतिरोध कोई भी न कर पायेगा। उन्होने जनता को शान्ति के साथ अहिंसापूर्ण माग अपनाने को कहा तथा अनुरोध किया कि २२ जूलाई को राज्यपाल के अन्याय-पूर्ण कृत्य के विरोध मे सम्पूर्ण प्रदेश मे जनता हडताल करे।

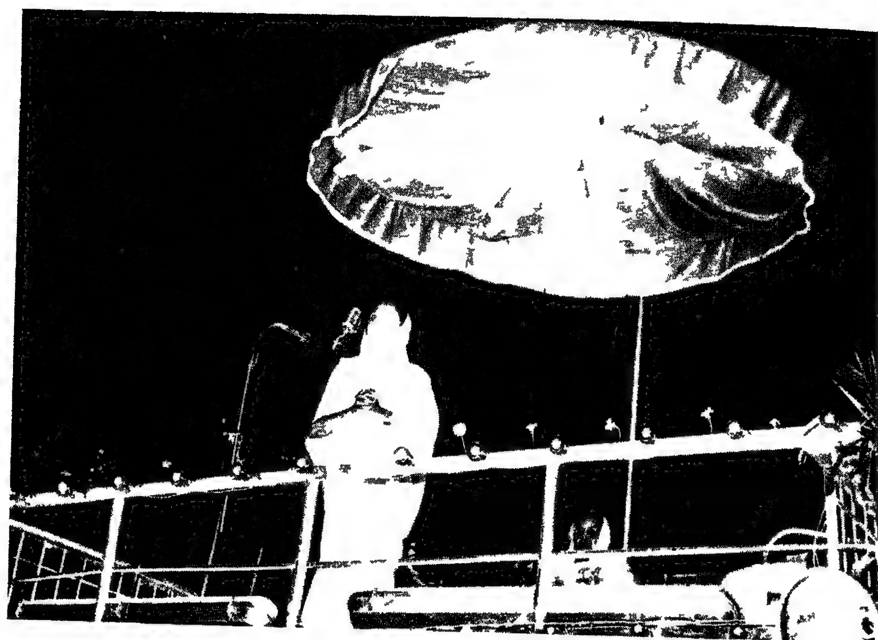
उस सन्ध्या को ग्वालियर के जयविलास प्रासाद मे विश्राम करके विधायको की यह टोली मुरैना होती हुई देहली की ओर चल पडी। मुरैना की जनता ने इनका उत्साहपूर्ण अभिनन्दन किया तथा देहली यात्रा के लिये अपनी शुभाकाक्षाये अर्पित की। बसे मध्य रात्रि के लगभग देहली जा पहुची जहा विधायको को जनसघ के स्वयसेवको ने इन्हे पहाडगज की एक धर्मशाला मे ठहराया। कुछ घन्टो के उपरान्त जब राजमाता देहली पहुची तो वे तुरन्त अपने १५० से ऊपर सहयोगियो से मिली तथा धमशाला के आवास को कष्टपूर्ण जान करके राजधानी के विभिन्न होटलो मे साथी विधायको के ठहरने का प्रबन्ध किया। इन दिना कुमार सम्भाजी राव आग्रे एव महाराज के युवक साथियो की एक बडी टोली निस्वाथ भाव से प्रबन्ध करने मे रत थी एव युवक महाराज माधवराव सिधिया प्रबन्ध कार्य को सम्भाले हुये थे। लोकतन्त्र के पर्दे के पीछे रहस्यो एव चालबाजियो का सामना इस टोली के समस्त सदस्यो ने अपूर्व साहस के साथ किया तथा मिश्रजी के साथियो के सतत प्रयत्न भी उन पर विजय न प्राप्त कर सके। एक भी विधायक का बाल बाका न हुआ और राजसत्ता तथा लोकतन्त्र का सघर्ष अपनी चरम सीमा पर जा पहुचा।



जनसघ के मच से जनता को सम्बोधित करती हुई राजमाता ।



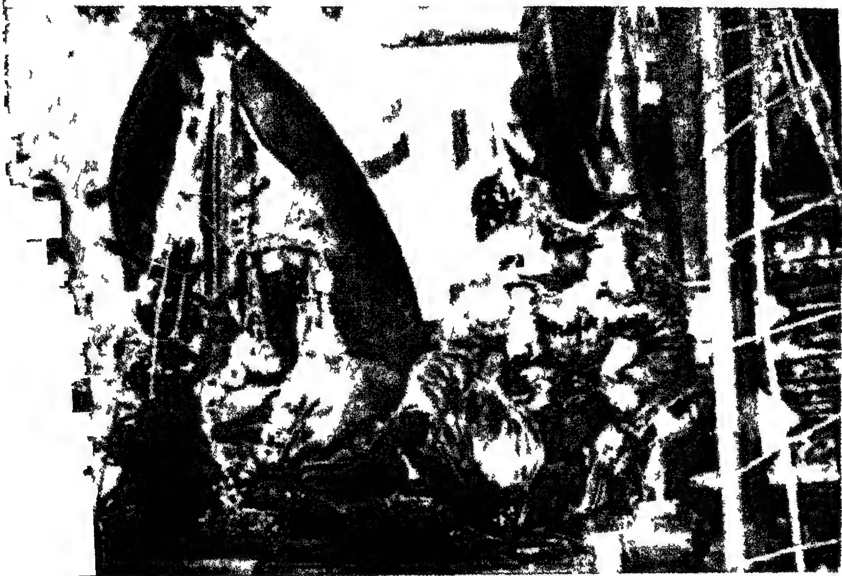
उत्तरप्रदेश के प्रवास मे ग्रामवासियों द्वारा रोकी हुई कार मे राजमाता ग्रामीण उनके दर्शनो को उत्सुक थी ।



कोल्हापुर की विशाल जनसभा की मचपर से
सम्बोधीत करती हुई राजमाता विजयाराजे सिंधीया।



शुभ परिणय ग्वालियर नरेश महाराजा जीवाजीराव सिंधीया की विवाह बेला की झाकी।



वर – वधू

देहली मे

२१ जुलाई का दिन देहली के राजनितिक क्षेत्र मे एक अपूव हलचल लेकर आया। ससद सदस्य श्री सी० सी० देसाई गत रात्रि राष्ट्रपति का पत्र लिख ही चुके थे। आज ससद मे विरोधी दलो के माननीय सदस्य, शासकीय दल का खाका उडाने और सविधान के प्रति उनकी २० वष की झूठी निष्ठा का पर्दाफाश करने को तैयार थे। लोकसभा प्रारम्भ होते हो श्री मधु लिमये ने मध्यप्रदेश के राज्यपाल के विधानसभा के सत्रावसान के आदेश को लेकर कामरोको प्रस्ताव रखने की अनुमति मागी तथा प्रदेश काड को लेकर विरोधी दल ने शम शम के नारो से लोकसभा को गूँजा दिया। श्री लिमये ने बजट की चर्चा के समय मतदान को रोकने के लिये विधानसभा के सत्रावसान को सविधान के प्रतिकूल बताते हुए कहा कि लोकतत्र पर यह एक तीव्र आघात है और यह आघात केन्द्रीय शासन की साठगाठ से हुआ है। बहस को रोकते हुए अध्यक्ष ने कहा कि वे कामरोको प्रस्ताव की अनुमति तब तक नही दे सकते जब तक कि वे प्रश्न के कानूनी एव वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जाच नही करा लेते है। इस सम्बन्ध मे भोजनावकाश के समय उन्होने श्री लिमये से चेम्बर मे मिलकर चर्चा करने की अपेक्षा की। विरोधी पक्ष इससे सन्तुष्ट नही हुआ तथा सदन मे नारे लगने प्रारम्भ हो गये। बिलासपुर के काग्रेसी ससद सदस्य श्री अमरनाथ सहगल ने कहा कि इसका क्या प्रमाण है कि ३६ काग्रेसी विधान सभाई मध्यप्रदेश मे विरोधी पक्ष मे जा मिले है। क्या प्रधानमन्त्री अथवा अध्यक्ष के पास इसकी अधिकृत सूचना आई है? अखबारो मे प्रकाशित समाचारो पर कैसे विश्वास किया जा सकता है। विरोधी पक्ष ने इस कथन का जब मखौल उडाया तो प्रधानमन्त्री ने कहा कि उनके पास अभी तक कोई अधिकृत सूचना राज्यपाल की ओर से नही आई है आर उन्होने गृहमत्री से कहा है कि वे राज्यपाल से सम्पक स्थापित कर पूरा स्थिति की सही

जानकारी प्राप्त करे ।

ससद सदस्य श्री अमरनाथ ने तुरन्त उठकर प्रधानमन्त्री के इस कथन को चुनौती देते हुए कहा कि अखबारो मे यह प्रकाशित हा चुका है कि प्रधानमत्री ने राज्यपाल एव मुख्यमन्त्री से फोन द्वारा बातचीत की है अत उनका यह कथन सही नही है । श्री सहगल के इस दावे मे भी कोई तथ्य नही कि अखबारो मे प्रकाशित समाचारो पर विश्वास कर इस सदन मे इस विषय पर बहस नही हो सकती है क्योकि विगत काल मे कई बार इसी सदन मे ऐसा हो चुका है । सरकार आज यह नही कह सकती कि उसको स्थिति की जानकारी नही है । अन्त मे विवश होकर गृहमन्त्री को कहना पडा कि वे राज्यपाल से सम्पक स्थापित कर आज ही सदन मे इस सम्बन्ध मे अपना वक्तव्य दे देगे ।

श्री लिमये का कामरोको प्रस्ताव अध्यक्ष ने दोपहर को स्वीकार किया तथा सध्या को ५ बजे से ८॥ बजे तक लोकसभा मे इस प्रश्न पर बहस हुई । गृहमन्त्री ने जब राज्यपाल के आदेश को सविधान के अनुकूल बताया तो सदन "शम-शर्म" के नारो से गूज उठा । उन्होने कहा कि चूकि मुख्यमन्त्री को कतिपय सदस्यो के अपहरण के समाचार मिले थे अत उन्होने राज्यपाल को सत्रावसान की सलाह दी तथा इस सलाह को मानने के लिये राज्यपाल बाध्य थे । बजट पारित करने के लिये सदन का अधिवेशन राज्यपाल इस मास के अन्त तक बुलायेगे ।

विरोधी पक्ष की जयघोष के मध्य सदन के अध्यक्ष ने कहा कि बजट की बहस के समय सदन का सत्रावसान करना सविधान की आत्मा के अनुकूल नही है तथा ऐसे कार्यो को रोकने के लिये केन्द्रीय सरकार को जिम्मेदारी लेना चाहिये ।

जब कि प्रधान मत्री ने कामरोको प्रस्ताव को सविधान के विरुद्ध बतलाया तब प्रो० रगा ने उत्तेजित होकर कहा कि बजट की चर्चा के

समय सदन का स्थगन सविधान के विरुद्ध है। अब तो २४ घन्टे के अन्दर सदन की बैठक बुलाई जाकर ४८ घन्टो मे नवीन बहुमत के अनुकूल मत्रिमडल का गठन हो जाना चाहिये। जनसघ के श्री बलराज मधोक ने कहा कि राज्यपाल के गलत कार्यो का उत्तरदायित्व केन्द्रीय सरकार पर है। कम्युनिस्ट सदस्य श्री हीरेन मुखर्जी ने राज्यपाल की इस कायवाही की तीव्र निन्दा की तथा अन्य सदस्यो ने कहा कि जिस मुख्यमत्री के साथ बहुमत नही है उसे राज्यपाल को किसी भी प्रकार की सलाह देने का अधिकार नही हे और राज्यपाल भी इस सलाह को मानने के लिये बाध्य नही है। ससद मे जब कि विरोधी पक्ष के सदस्यो ने इस कदम को राजनैतिक, सवैधानिक तथा नैतिक दृष्टि से गलत तथा लोकतत्र की हत्या बतलाया तब शासकीय पक्ष ने उत्तर मे केवल इसके सवैधानिक औचित्य की बात कही। विधिमत्री श्री गोविंद मेनन ने आश्वासन देते हुये केवल यह कहा कि सदन का अधिवेशन शीघ्र ही बुलाया जावेगा।

विरोधी पक्ष की चीख-पुकार से उत्तेजित होकर गृहमत्री ने भी अन्त में विवश होकर यह कह डाला कि यदि यह सत्य भी हो कि मुख्यमत्री ने सदन का स्थगन केवल इस लिये कराया कि वे अपने बिछुडे हुये साथियो को पुन काग्रेस मे लाने का प्रयत्न करना चाहते है तो इसमे हानि क्या है? उन्हे अधिकार है कि वे दल-बदल के कारणो को समझें और सभव हो तो उनका निराकरण भी करें। उन्होने इस बात पर बल दिया कि राज्यपाल के सामने मुख्यमत्री की सलाह मानने के अतिरिक्त और कोई विकल्प न था तथा केन्द्र ने इस सम्बन्ध मे कोई हस्तक्षेप नही किया है।

काग्रेस पक्ष की ओर से श्री ए० के० सेन एव श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने भी आज की बहस मे भाग लिया।

आज की लोकसभा की चर्चा से यह तथ्य स्पष्ट हो उठा कि बजट के दौरान सदन का स्थगन एव इस सम्बन्ध मे बहुमत-विहीन मुख्यमत्री की सलाह को राज्यपाल द्वारा मान्यता सविधान के पूर्णतया अनुकूल नही है तथा इस स्थगन मे केन्द्र की भी साठगाठ थी ।

स्वतत्र भारत के २० वष के काल में आज प्रथम अवसर था जबकि सावभौम सत्ता युक्त काग्रेस के युगो के शासन को एक मुख्यमत्री की हठ के कारण विश्व के लोकतत्र पद्धति के देशो के सम्मुख उपहास का पात्र बनना पडा था । फिर भी देश का प्रधानमत्री अपने दल विशेष के सहयोगी मुख्यमत्री का साथ निभाने के लिये इन क्षणो मे भी कटिबद्ध था ।

२२ जुलाई, १९६७

दिल्ली मे

मध्य प्रदेश की राजनैतिक उथल-पुथल का केन्द्र-बिन्दु आज देहली था । वे १५५ विरोधी दल के विधायक जो कि अपने बहुमत का विश्वास राष्ट्रपति, प्रधानमत्री, गृहमत्री, काग्रेस अध्यक्ष और शासन के कणधारो को दिलाने के लिए देहली आये थे थकान मे चूर थे । दो रात्रि के जागरण के पश्चात तथा भोपाल, ग्वालियर और फिर देहली की भाग दौड से त्रस्त राजमाता भी थकी हुई थी । फिर भी उनकी कमठता सजग थी । तन की यह थकान मन की अजेय अपरिमित शक्ति के कार्य मे बाधा न डाल सकी । गत दो रात्रि मे एक क्षण भी विश्राम न कर, कतव्यारूढ यह मनीषी प्रात काल आठ बजे ही अपने साथियो के साथ प्रधान मत्री के सफदरजग आवास पर जा पहुची तथा उनसे भेट की ।

राजमाता के साथ इस भेंट मे थे काग्रेस दल को त्याग कर आये हुये २५ सदस्य जिनमे सवश्री गोविन्द नारायण सिह, ब्रजलाल वर्मा,

गोपाल शरण सिंह, डा० रामाचरण राय, श्री नर्मदा प्रसाद श्रीवास्तव आदि तथा सविद के १० अन्य विधायक जिनमे सवश्री चन्द्र प्रताप तिवारी, शिव प्रताप चिनपुरिया, वीरेन्द्र कुमार सकलेचा आदि मुख्य थे। प्रधानमत्री के यह कहने पर कि उन्होने सुना है कि पूरा विरोधी दल देहली आ गया है इस अवस्था मे राजमाता सबको लेकर यहा क्यो नही आई ? राजमाता ने उत्तर दिया कि यह सत्य है कि विरोधी दल के १५५ सदस्य इस समय देहली मे हैं और प्रधान मत्री यदि उनसे मिलना अथवा उनकी सख्या गिन कर बहुमत का तथ्य जानना चाहती है तो वे सब उनके आवास पर आ सकते है। वे आज ही प्रात काल यहा आये है इस कारण उन सबको यहा लाना सगत न समझा गया। दोपहर को राष्ट्रपति से भेंट करने के लिए समस्त सदस्य वहा जावेंगे। दल-बदलूओ के नेताओ से प्रधान मत्री ने बातचीत कर यह जाना कि उन्हे काग्रेस की नीति और सिद्धातो मे आस्था है किन्तु श्री मिश्र के नेतृत्व मे नही। स्वभावतया यह प्रश्न भी सामने आया कि यदि नेतृत्व बदल जावे तो वे क्या पुन काग्रेस मे आने को तैयार है ? इसके उत्तर मे कहा गया कि शायद यह अब सभव न हो क्योकि दल त्याग के पूर्व नेतृत्व बदलने की प्राथना अन्तिम घडी तक उन सबने काग्रेस हाईकमान से एव मध्यप्रदेश के साथियो से की एव अन्त मे निराश होकर उन्होने विद्रोह का यह पथ जनहित के हेतु अपनाया। चर्चा के समय प्रधानमत्री ने अपना यह विचार स्पष्टतया व्यक्त कर दिया कि मुख्य-मत्री को बहुमत उसके पक्ष मे न रहने पर भी सदन भग की सलाह राज्यपाल को देने का एव मध्यावधि चुनाव कराने का सवैधानिक अधिकार प्राप्त है और इससे मिश्रजी को वचित नही किया जा सकता। इस भेट के उपरान्त प्रधानमत्री का रुख स्पष्ट हो गया तथा देश की जनता इस बात को जान गई कि अन्त तक मिश्रजी को श्रीमति इदिरा गाधी का सहयोग मिलना निश्चित है एव मध्यावधि चुनाव को काग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज के अतिरिक्त शायद ही कोई रोक पाये।

राजपुर माग, देहली पर स्थित ग्वालियर हाउस मे राजमाता अपने सहयोगियो के साथ प्रधानमत्री के बगले से वापिस आ गयी तथा राष्ट्र-पति के सन्मुख ज्ञापन देने की तैयारी प्रारम्भ कर दी। काग्रेस त्याग कर आये हुए विधायको की सूची राष्ट्रपति के हाथो मे देने के हेतु सकलित की गई जो इस प्रकार थी

१—श्री गोविन्द नारायण सिह, २—श्री ब्रजलाल वर्मा, ३—श्री नमदा प्रसाद श्रीवास्तव, ४—डा० रामचरण राय, ६—श्री धमपाल गुप्त, ६—श्री गोपाल शरण सिह, ७—श्री शशि भूषण सिह, ८—श्री वासुदेव चन्द्रकार, ९—श्री विसालदास महत, १० -श्री विपिनलाल पटले, ११—श्री गहटेसिह गायल, १२—श्री ध नालाल चौधरी, १३- श्री प्रताप पाल, १४—श्री देवीलाल शर्मा, १५—श्री अनप सिह, १६—श्री अजमेरासिह, १७—श्री चन्द्रप्रताप सिह, १८—श्री प्रभूदयाल, १९—श्री झकार सिह, २०—श्री भवर सिह, २१—श्री रत्नाकर झा, २२—फतेहमा, २३—श्री बालवत सानले, २४—श्री विजयसिह, २५—श्री कन्हैयालाल शर्मा, २६—श्री विश्वेशर प्रसाद, २७—श्री महिपाल सिंह, २८—श्री लक्षमनदास, २९—श्री वीरेन्द्र बहादुर सिह, ३०—श्री हेत-राम दुबे, ३१—श्री पट्टीलर, ३२—श्री श्रीनाथसिंह, ३३—श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा, ३४—श्री गणेश राम अनन्त, ३५—श्री वैजूराम, ३६—श्री हगपाल शाह, ३७—श्री महेन्द्र सिंह किलेदार, ३८—राम सेवक पटेल ३९—श्री सकर गाव।

राष्ट्रपति को सम्बोधित ज्ञापन मे लिखा गया कि मध्य प्रदेश विधान सभा का बजट सत्र ३ जुलाई १९६७ से चल रहा था। दिनाक १९ जुलाई को जब कि शिक्षा की मागो पर चचा चल रही थी और जिसके लिये २ घन्टा ३८ मिनिट का निर्धारित समय व मतदान शेष था काग्रेस के एक सदस्य श्री ब्रजलाल वर्मा

ने घोषित किया कि वे तथा उनके ३५ अन्य साथी जिनकी सूची प्रस्तुत है कांग्रेस दल से त्यागपत्र देकर विरोधी दल के साथ बैठना चाहते है । उन्होने अध्यक्ष से माग की कि उनके बैठने का प्रबन्ध वे विरोधी दल के साथ करा दे। तत्पश्चात उन्होने अपने त्याग पत्र प्रस्तुत कर दिये । इन त्याग पत्रो के आते ही सदन मे कांग्रेस का बहुमत समाप्त हो गया । कांग्रेस पक्ष द्वारा मतदान की चुनौती का सामना करने के बजाय हल्ला गुल्ला करके एव व्यवस्थात्मक आपत्ति तथा विशेषाधिकार प्रस्ताव के बहाने मतदान का समय टाला जाता रहा एव विरोधी पक्ष द्वारा मतदान हेतु समय बढाने की माग को ठुकराकर ५ बजे सदन की बैठक अगले दिन के लिये स्थगित कर दी गई। विरोधी पक्ष के नेता एव सदस्यो ने राज्यपाल के पास जाकर बताया कि कांग्रेस पक्ष का बहुमत समाप्त हो गया है। राज्यपाल ने आश्वासन दिया कि कल शक्ति परीक्षण द्वारा बहुमत का निर्णय सदन मे होगा। विरोधी पक्ष ने एक ज्ञापन भी राज्यपाल को दिया जिसमे बताया गया था कि मुख्यमत्री का सदन के सत्रावसान की सलाह राज्यपाल को देना असवैधानिक है। राज्यपाल ने उस समय सत्रावसान के सबध मे कोई चर्चा न करते हुए कहा कि मेरे सन्मुख इस प्रकार का कोई प्रश्न नहीं है। विधान सभा का अधिवेशन हो रहा है इस कारण सदन मे ही बहुमत का निर्णय हो सकता है।

अगले दिन २० जुलाई को ११ बजे अध्यक्ष ने राज्यपाल द्वारा प्रेषित सत्रावसान का आदेश पढ कर सुनाया। उक्त घोषणा पढते समय व्यवस्था का प्रश्न भी उठाया गया किन्तु उसे ठुकरा कर सत्रावसान कर दिया गया। सत्रावसान के पश्चात मुख्यमत्री ने कहा कि यह सत्य है कि उनका बहुमत सदन मे समाप्त हो गया है किन्तु वे राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह देकर सदन को भग करा देंगे तथा प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव करायेंगे। राष्ट्रपति से अनुनय है कि

वे इस प्रकार सविधान की हत्या न होने दें तथा सदन की बैठक पुन बुलवा कर शक्ति परीक्षण का अवसर देकर सविधान की रक्षा करे, विरोधी पक्ष का सदन मे अब बहुमत है क्योकि २६६ के सदन मे उनकी सख्या अब १५५ है तथा वे मत्रिमडल बनाकर शासन काय चलाने मे समर्थ है । उन्हे मन्त्रिमडल बनाने का अवसर दिया जाना चाहिये। इस ज्ञापन मे राज्यपाल को उनके असवैधानिक कृत्यो के लिये पदच्युत करने की भी माग की गई थी। उस दिन दोपहर को राजमाता अपने १५२ सहयोगियो को लेकर राष्ट्रपति भवन गई। राष्ट्रपति से प्रथम दल-बदलुओ के नेता ठा० गोविन्द नारायण सिह ने भेट की तथा कहा कि वे काग्रेस विधायक दल के नेता श्री मिश्र की निरकुशता से त्रस्त होकर स्वेच्छा से अपने ३५ साथियो के साथ विरोधी पक्ष मे मिले है उनमे से किसी का अपहरण नही किया गया है न किसी प्रकार दबाव ही डाला गया है। उनके कांग्रेस दल त्याग करने के कारण काग्रेस पक्ष का बहुमत अब विधान सभा मे नही रह गया है। राज्यपाल ने शक्ति परीक्षण का अवसर विधान सभा की बैठक मे देने का आश्वासन देकर भी सदन का सत्रावसान बजट पर मतदान के समय किया है। उनका यह कृत्य असवैधानिक एव लोकतत्र की मर्यादा के विपरीत है। आज गैर-काग्रेसी दल के १५५ विधायक राष्ट्र पति भवन मे उपस्थित हैं। प्रत्येक के पास विधान सभा का परिचय पत्र है। राष्ट्रपति उनसे मिलकर उनकी सख्या का सही निर्धारण एव विरोधी दल के औचित्य का निर्णय कर सकते है। मध्यावधि चुनाव उसी अवस्था मे होने चाहिये जब कि विपक्षी दल मन्त्रिमडल का गठन करने में असमर्थ हो तथा सदन का बहुमत उसके साथ न हो।

ठा० गोविन्द नारायण सिह से भेंट करने के पश्चात राष्ट्रपति ने राजमाता, श्री सकलेचा, श्री चन्द्र प्रताप तिवारी, श्री चिनपुरिया आदि विभिन्न दलो के नेताओ से भेंट की।

राजमाता ने १५५ सदस्यो की सूची जो कि अब सविद के सदस्य है राष्ट्रपति के सन्मुख प्रस्तुत की तथा कहा कि सविद का अब २९६ सदस्यो के सदन मे बहुमत है अत सविद को मन्त्रिमडल बनाने का वैधानिक अधिकार है। उन्होने इस बात पर बल दिया कि इन परिस्थितियो मे श्री मिश्र ने जो कुछ किया है तथा जो कर रहे है वह जनतत्र के सिद्धान्तो के प्रतिकूल है। यदि मुख्यमत्री गलत सलाह दे तो राज्यपाल उसे न मानने के लिए स्वतन्त्र है। हम सबका आपसे निवेदन है कि आप जनतत्र के सिद्धान्तो पर आधारित यह निर्णय दे कि बहुमत समाप्त हो जाने पर मुख्यमत्री की सलाह का कोई मूल्य नही तथा उनकी मध्यावधि की सलाह राज्यपाल को अमान्य कर देना चाहिये। क्योकि काग्रेस मन्त्रिमडल के पतन के पश्चात विरोधी पक्ष बहुमत के बल पर वैकल्पिक मन्त्रिमडल बनाने मे समर्थ है। राजमाता ने कहा कि "मै उनके विवेक के समक्ष प्रार्थी हू। फिर भी यदि आपका यही निर्णय होगा कि प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव होने चाहिये तो हम इस चुनौती को भी स्वीकार करेगे।" राजमाता ने अपनी स्वभावगत शालीनता के साथ राष्ट्रपति से कहा कि "मध्यावधि चुनाव होने पर मैं भिक्षापात्र लेकर घर-घर जाऊगी और काग्रेस के विरुद्ध मत एकत्रित कर काग्रेस की सत्ता को समाप्त कर दूगी।"

राष्ट्रपति ने राजमाता एव उनके सहयोगियो की बात को ध्यानपूर्वक सुना और सविधान के अनुकूल परिस्थिति को सुलझाने का आश्वासन दिया। उनकी बातचीत से ऐसा पता चला कि उनके मतानुसार मुख्यमत्री को सत्रावसान तथा मध्यावधि चुनाव की सलाह राज्यपाल को देने का सवैधानिक अधिकार प्राप्त है तथा राज्यपाल इस सलाह को मानने के लिये बाध्य है।

राजमाता एव विधायको की भेट के उपरान्त राष्ट्रपति विरोधी दल के ससद सदस्यो के शिष्टमडल से मिले जिनमे मुख्य थे मध्य प्रदेश

की गुना सीट से निर्वाचित आचार्य कृपलानी, इहया भाई पटेल, बाबूराव पटेल, प्रकाश वीर शास्त्री, एस० एम० जोशी आदि । इस शिष्ट मडल ने राष्ट्रपति से आग्रह किया कि विरोधी पक्ष का मध्य प्रदेश विधान सभा मे अब बहुमत है तथा उन्हे मत्रिमडल बनाने का अवसर मिलना चाहिये । मध्यावधि चुनाव का प्रश्न इन परिस्थितियो मे असगत है तथा यह श्री मिश्र की हठधर्मी है कि वे इसकी सलाह राज्यपाल को देने के लिए उतारू है । यदि सदन भग कर दिया गया तो कई अन्य प्रदेशो मे भी इस विकल्प का सहारा लिया जावेगा तथा देश मे सविधान की प्रतिष्ठा ही न रह जावेगी । स्वस्थ परम्पराओ का ही विकास होना चाहिये । राष्ट्रपति का उत्तर था कि वे सविधान के अनुकूल ही आचरण करेंगे ।

ससद मे

उधर लोक सभा का अधिवेशन प्रारम्भ होते ही ससद सदस्य श्री मधु लिमये तथा कवरलाल गुप्ता ने विशेषाधिकार प्रस्ताव का प्रश्न उठाया क्योकि राज्यपाल के तथा ससद मे दिये हुये गृहमत्री के वक्तव्यो मे अन्तर था । उनके अनुसार गृहमत्री ने सदन मे यह स्थिति सही रूप मे नही रखी थी जिसके कारण राज्यपाल को सत्रावसान का आदेश देना पडा था । इस पर कई ध्यानाकषक प्रस्ताव सदस्यो द्वारा उपस्थित किये जाने लगे । अध्यक्ष ने कहा कि जब किसी प्रश्न को लेकर सदन मे बहस ही नही हो रही है तो ध्यानाकषक प्रस्ताव कैसे ? श्री मधु लिमये ने तत्काल उत्तर दिया कि वे विशेषाधिकार प्रस्ताव रख चुके है । अध्यक्ष का अब उत्तर था कि उनके पास कई ध्यानाकषरण, कामरोको एव स्थगन प्रस्ताव आये है और वे उन सबको समयाभाव के कारण देख नही पाये है । कुछ को अवश्य वे देखकर शासन की ओर स्पष्टीकरण के लिये भेज चुके है । जनसघ सदस्य श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि

यह स्पष्ट है कि गृहमत्री तथा राज्यपाल के वक्तव्यो मे अ तर है तथा इसका स्पष्टीकरण आवश्यक हे। गृहमत्री ने इस पर उठकर कहा कि सदन मे कल उन्होने जो वक्तव्य दिया है वह सही है किन्तु राज्यपाल ने क्या कहा है, यह उन्हे देखना होगा। इस आश्वासन के बाद चर्चा स्थगित हो गई।

केन्द्रीय शासन मे

उधर केन्द्रीय शासन की केबिनेट की आतरिक मामलो की समिति की बैठक भी आज हुई। जिसमे मध्य प्रदेश की विषम राजनैतिक स्थिति पर मत्री गणो ने विचार विमश किया।

राज्यपाल एव मुख्यमत्री भी अलग-अलग प्रधानमत्री एव गृहमत्री से मिले तथा राज्यपाल ने राष्ट्रपति से भेट कर स्थिति का अपना मूल्याकन उनके स मुख प्रस्तुत किया। मुख्यमत्री ने गृहमत्री से भेट की और कहा कि जिस समय उन्हे यह विश्वास हो जावेगा कि अपहृरित व्यक्ति बिना दबाव के विरोधी पक्ष म हैं तब वे अपने मत्रिमडल का त्यागपत्र दे देंगे किन्तु इसके पूव वे अवश्य ही राज्यपाल को यह सलाह देगे कि वे सदन भग कर मध्यावधि चुनाव करायें। गृहमत्री ने कहा कि मध्यावधि चुनाव का प्रश्न आज की परिस्थिति मे केवल मध्य प्रदेश से सबधित नही है। देश मे इसकी व्यापक प्रतिक्रिया होने की सभावना है। बिहार, बगाल, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तो इमसे तुरत ही प्रभावित होगे। मुख्यमत्री को इस सभावना पर भी विचार करना चाहिये कि शक्ति परीक्षण मे यदि काग्र स की हार हो जावे तो सविद का मत्रिमडल शासन सभाल ले तब काग्रेस को विरोधी पक्ष के रूप मे काय करना चाहिये। मुख्यमत्री को इस समय यह सलाह मा य न थी और सुना गया कि प्रधानमत्री का मत भी उन जैसा ही था।

काग्रेस दल मे

काग्रेस पक्ष के प्रमुख सदस्यो मे राजमाता के वक्तव्यो तथा मुख्य-मत्री के कारनामो की आज विशेष चर्चा थी। काग्रेस पार्लियामेटरी बोर्ड की बैठक आज हुई तथा उसमे श्री मिश्र को बुलाया गया। श्री मिश्र ने यहा भी अपनी वही पुरानी बात दुहराई कि काग्रेस विधायको का अपहरण किया गया है तथा उन पर अनावश्यक दबाव डाला गया है और वे स्वेच्छा से मतदान करने मे असमथ है। श्री मिश्र ने कहा कि वे राज्य के विधि विभाग से तथा महान्यायवादी से सलाह ले चुके हैं तथा वे पूरा विश्वस्त है कि उन्हे सदन भग करने तथा मध्यावधि चुनाव की सलाह राज्यपाल को देने का अधिकार है तथा वे ऐसा ही करना चाहते है। उनका दावा था कि यदि मध्यावधि चुनाव हुये तो उनमे काग्रेस का प्रचड बहुमत आवेगा तथा स्थिति और भी सुदृढ हो जावेगी। श्री मिश्र की बात सुनने के पश्चात बोर्ड के सदस्यो ने इस सभावना पर भी विचार किया कि विरोधी पक्ष यदि शक्ति परीक्षण मे विजयी हो जावे तो उसे मत्रिमडल बनाने का अवसर दिया जावे अथवा राष्ट्रपति शासन लागू कर काग्रेस अस्थायी मत्रिमडल बनाकर मध्यावधि चुनाव कराये। विचार विमर्श के पश्चात भी इस बैठक मे कुछ निर्णय न हो सका तथा पुन बैठक का आयोजन होने की बात निश्चित हुई। उधर पार्लियामेटरी बोर्ड की अन्तरग सभा की बैठक भी हुई जिसमे श्री मिश्र आमत्रित किये गये। इस बैठक मे श्री मिश्र का जोरदार समर्थन श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा एव श्री पारथासारथी ने किया। उनके मतानुसार लोकतत्र की रक्षा का एकमात्र मार्ग था मध्यावधि चुनाव। दल बदल के कारण सविद का मत मानने के लिए वे तैयार न थे। इस बैठक मे काग्रेस के दो वरिष्ठ ससद सदस्यो श्री महावीर प्रसाद भार्गव तथा श्री सिद्धेश्वर प्रसाद ने मिश्रजी से स्पष्ट पूछा कि क्या वे अपने मुख्यमत्री पद से हटने को तैयार हैं क्योकि ऐसा

प्रतीत होता है उनसे ही असतुष्ट होकर ३६ सदस्यो ने दल बदला है। इस अवस्था मे क्या यह उचित न होगा कि किसी ऐसे व्यक्ति को नेता पद पर चुना जावे जो कि उन ३६ सदस्यो को भी मान्य हो और वे पुन काग्रेस मे लौट आवें। श्री मिश्र ने उत्तर मे कहा कि यह तो बोड के तय करने की बात हे वे बोड की आज्ञा मानने को तैयार है। श्री एस० एन० मिश्र ने पूछा कि मिश्रजी इस बात की क्या गारटी दे सकते हैं कि मध्यावधि चुनाव मे काग्रेस जीत ही जावेगी। आज की परिस्थिति तो यह सकेत करती है कि उसकी पराजय की सभावना अधिक हे। इस पर श्री मिश्र ने कहा कि उन्हे विश्वास है कि काग्रेस बहुमत मे आ जावेगी क्योकि दल-बदलुओ की सीटो पर अन्य काग्रेसियो के चुन जाने की पूरी सभावना है। आपकी इस बैठक मे भी कोई स्पष्ट निणय न लिया जा सका।

सध्या को काग्रेस के कई वरिष्ठ नेताओ ने जिनमे बिहार, बगाल और उत्तरप्रदेश के ससद-सदस्य मुख्य थे काग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज से भेंट की और कहा कि काग्रेस के हित को दृष्टि मे रखते हुये वे मध्यावधि चुनाव के पक्ष मे नही है। श्री अजयकुमार मुकर्जी एव उनके वामपथी कम्युनिस्टो का यह दावा था कि यदि मध्यप्रदेश मे मध्यावधि चुनाव हुये तो वे भी उसकी माग करेगे तथा सभवतया उत्तर प्रदेश मे श्री चरण सिह भी मिश्रजी का ही अनुकरण करे। इन वरिष्ठ सदस्यो का मत था कि यदि मिश्रजी का मत्रिमडल शक्ति परीक्षण मे असफल हो जावे तो काग्रेस मत्रिमडल को चाहिये कि वे मिश्रजी को बाध्य करें कि वे राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह न दे तथा इस प्रकार लोकतत्र की स्वस्थ परम्परा को कायम रखा जावे।

२२ जुलाई का दिन देहली के राजनैतिक जीवन के लिये चिरस्मरणीय हो उठा क्योकि प्रात काल से रात्रि तक राजधानी ने केवल मध्यप्रदेश की तथा राजमाता के निभय अशकित नेतृत्व की चर्चा की।

सडक-सडक पर जन-जन यह कह रहे थे कि राजमाता सिंधिया ने तो मिश्रजी सरीखे धुरधर राजनीतिज्ञ के भी छक्के छुडा दिये और यह अनैनिकता के ऊपर नैतिकता और सत्य की विजय थी ।

प्रेस कान्फ्रेंन्स

उसी सध्या को प्रेस सम्वाददाताओ ने एक ओर तो राजमाता एव उनके सहयोगियो को जा घेरा और दूसरी ओर मुख्यमत्री श्री मिश्र को। सम्वाददाताओ ने प्रश्नो की जब झडी सी लगा दी और ३६ काग्रेस विधायको के दल बदल के औचित्य पर शका उठाई तो ठा० गोविन्द नारायण सिह ने प्रश्नो का उत्तर देने हुये कहा कि

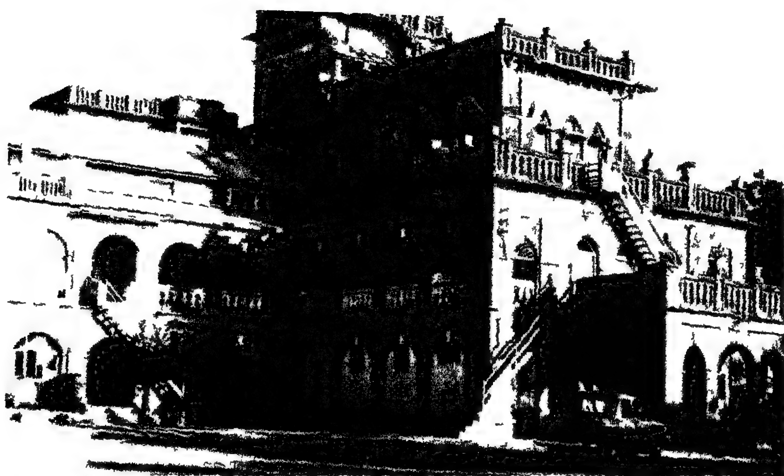
"सच बात तो यह है कि हम सब मिश्रजी की निरकुशता और जातिवादी नीतियो से परेशान थे । हमारी दल बदल काग्रेस विधायक दल के नेतृत्व के प्रति विद्रोह है। हम करते भी क्या ? प्रदेश मे पुलिस का राज है । मिश्रजी के हर विरोधी के विरुद्ध उनके सकेत पर पुलिस फाइले तैयार कर देती है । मेरे स्वय के विरुद्ध उनके सकेत पर न जाने क्या-क्या मनगढन कहानिया तैयार कर मेरे चरित्र की हत्या का प्रपच रचा गया । अखबार वालो को बढावा देकर झूठी अनगल बातो का प्रचार किया जा रहा है । यह लोकतत्र नही उसकी निमम हत्या है । जनता त्रस्त है, भ्रष्टाचार का बोलबाला हे ।"

अन्य प्रश्नो का उत्तर देते हुये बोले श्री मिश्र का यह आरोप कि हम लोगो का अपहरण किया गया है, अथवा हमे रिश्वते दी गई है या हमारे ऊपर दबाव डाला गया है एकदम असत्य है और अनगल प्रलाप मात्र है । हम स्वेच्छा से काग्रेस त्याग कर आये है क्योकि मिश्र जी की तानाशाही ने प्रदेश मे जनतत्र का गला दबा रहा है । यहा तक कि मुझे स्वय भय था कि मिश्रजी की पुलिस मुझे गिरफ्तार कर लेगी ।

हम मे से कोई विधायक तो इस कारण उनसे मिलने से भी कतराते रहे ।

श्री सकलेचा ने कहा कि अब विरोधी दल के १५२ सदस्य राष्टपति के सन्मुख उपस्थित हो चुके है । तीन विधायक अस्वयस्ता के कारण यात्रा न कर सके । २९६ के सदन मे हमारा निर्विवाद बहुमत है । हम पुन राष्ट्रपति से प्रार्थना करेंगे कि वे शीघ्र ही सदन की बैठक बुला कर शक्ति परीक्षण कराये तथा हमे मत्रिमण्डल बनाने दे । अपहरण की बात असत्य प्रमाणित हो चुकी है और यह प्रचार मिश्रजी की एक चाल है । काग्रेस त्याग कर आये हुये ३६ विधायको के साथ बैठी हुई राजमाता ने कहा कि मिश्रजी ने पुलिस के द्वारा जो अत्याचार छात्रो पर किये हैं उन्हे देखकर उनका मन काग्रेस के नेताओ की ओर से फिर गया था और उन्होने अपनी अन्तरात्मा की आवाज को मानकर काग्रेस छोड दी थी । यह सत्य है कि एक दिन उन्होने ही अपना पूण सहयोग जनहित की दृष्टि मे रखकर तथा उनकी विद्वता एव राजनैतिक पटुता से प्रभावित हो कर मिश्र जी को दिया था । जिसके कारण वे १९६३ मे मुख्यमत्री चुने जा सके थे किंतु उनके कार्यो को तथा उनकी निरकुशता को देखकर राजमाता के मन को धक्का पहुचा तथा उन्होने विरोधी पक्ष का गठन कर विभिन्न दलो को एक गुत्थी मे पिरोकर उसका नेतृत्व स्वीकार किया । मिश्रजी के निरकुशता, जातिवादिता एव हठी स्वभाव के कारण जब उनके ही साथियो ने कार्गेस दल त्याग कर उनके नेतृत्व के प्रति विद्रोह किया और राजमाता के दल के साथ काय करने की इच्छा प्रकट की तो वह उनसे सहमत हो गई । राजमाता ने कहा कि मै तो मिश्र जी का नेतृत्व समाप्त करने के लिए कृत सकल्प थी क्योकि मेरा विश्वास था कि लोकतत्र की उनके हाथो हत्या हो रही थी और जनता काग्रेस के इस जुये को तथा मिश्रजी के नेतृत्व को उखाड फेकने के लिये आतुर थी । भगवान ने हमारी सहायता की तथा

अब बहुमत मिश्रजी के साथ नही है। इस चर्चा को जारी रखते हुए वे बोली कि आज प्रधानमत्री तथा राष्ट्रपति के समक्ष हमने अपना बहुमत प्रमाणित कर दिया है। सारा देश आज इस बात को जान गया है। सदन मे भी शक्ति-परीक्षण के लिए हम तैयार है फिर भी सभवतया मिश्रजी की बात मानकर देश के दोनो नेता मध्यावधि चुनाव के ही पक्ष मे प्रतीत होते है। मैंने राष्ट्रपति को बता दिया है कि मध्यप्रदेश की वित्तीय स्थिति काग्रेस मत्रिमडल के हाथो बहुत ही खराब है। चुनाव का व्यय इस अवस्था मे सह सकने मे वह असमथ है। फिर भी यदि मध्यावधि चुनाव हमारे सिर थोपे गये तो हम काग्रेस की इस चुनौती को स्वीकार करेंगे और प्रदेश से फिर काग्रेस के नेतृत्व का सफाया करके ही दम लेगे। राज-माता ने कहा कि मिश्रजी कहते है कि मैं उनके दल-बदलुओ से मिलने मे बाधक हू तो मेरी ओर से उन्हे पूरी स्वतत्रता है कि वे उनसे मेडन होटल तथा अन्य निवास स्थानो पर मिल सकते है। विधायक कोई बच्चे नही है। वे अपने अपने क्षेत्रो के नेता है। उधर मिश्रजी ने सवाददाताओ से कहा कि उन्हे विरोधी पक्ष के कुचक्रो का पता था किन्तु काग्रेस विधायको द्वारा की गई विश्वासघातकता पर उन्हे विश्वास न था। वे यह तो जानते थे कि दो चार विधायक प्रलोभन मे फस सकते है पर ३०-३५ नही। विरोधी पक्ष ने मुख्यमत्री का पद पहिले श्री श्यामाचरण शुक्ल को और उनके इकार करने पर श्री अजुनसिह को देने का प्रस्ताव किया था किन्तु इन दोनो को वे न फसा पाये। और अजुन सिंह के अपहरण की योजना भी निष्फल हो गयी। उनके फासे मे आ पाये अधिकाश हरिजन तथा आदिवासी विधायक अथवा केबिनेट मत्री बनने का स्वप्न देखने वाले कुछ लोभी विधायक। श्री मिश्र ने कहा कि विधि विभाग की सलाह के अनुसार ही उन्होने सत्रावसान कराया है जो सविधान के अनुकूल है तथा इसी प्रकार वे मध्यावधि चुनाव की सलाह लेकर प्रदेश को सकट से बचायेंगे। हरियाना मे काग्रेस मुख्यमत्री को सदस्यो की दल-बदल के पश्चात मध्यावधि चुनाव की सलाह



का कौशल कुज । कुमारी लेखा दिव्यश्वरी की ज मस्थली जहा अत्र सागर विश्वविद्यालय है ।



परिजनो के साथ सागर मे
राजमाता विजयाराजे सिधीया (ननिहाल मे) ।



श्वेतवसना राजमाता विजयाराजे सिंधीया।

राज्यपाल को देनी चाहिये थी । न देकर उन्होने गलती की । मै इस गलती को दुहराने के पक्ष मे नही हू । उनसे जब सवाददाताओ ने पूछा कि आपने अपने विधायको का अपहरण रोका क्यो नही तो मिश्र जी का उत्तर था कि यदि वे पुलिस शक्ति का उपयोग इसके लिये करते तो विरोधी पक्ष उन्हे अत्याचारी कह कर पुकारता तथा प्रदेश मे 'भय का राज्य' का प्रचार करता फिर भी वे निर्बंध अपहृरत सदस्यो को पुन वापिस लेने को तैयार है तथा कई कैबिनेटे स्तर के मत्रियो ने अपना पद उनके लिये रिक्त करने का सुझाव स्वेच्छा से उनके सामने रखा है ।

मध्य प्रदेश मे

विरोधी पक्ष के आव्हान पर आज प्रदेश के समस्त प्रमुख नगरो मे जनता ने शातिपूरण हडताल की तथा जबलपुर, इन्दौर आदि मे जुलूस निकाले गये । भोपाल मे दल-बदलू विधायक श्री शारदा चरण तिवारी ने कहा कि राज्यपाल ने अपना १६ ता० का आश्वासन पूरा नहीं किया । यह बात उनके पद के लिये अशोभनीय है ।

श्री मूलचन्द देशलहरा ने कहा कि श्री मिश्र की विधायको के अपहरण वाली बात मनगढ त है । २०० पुलिस के सिपाहियो का अपनी रक्षा के लिये उनका देहली ले जाना तथा जनता के धन का इस प्रकार अपव्यय करना एक गर्हितत अपराध है जिसके मिश्र जी दोषी हैं ।

प्रदेश मे देहली से प्राप्त आज के समाचारो ने एक तहलका सा मचा दिया । राज्यपाल के सत्रावधान के आदेश को लेकर घर-घर चर्चा हो रही थी तथा जनता उनके विरुद्ध गली-गली मे नारे लगाकर अपना क्षोभ प्रदर्शित कर रही थी ।

२३ जुलाई १९६७

२३ जुलाई का यह हलचलपूरण प्रभात मध्य प्रदेश के राजनैतिक बवडर को और भी तीव्र करने का सदेश लेकर देहली मे आया । राज-

पुर रोड पर स्थित ग्वालियर हाउस मे आज प्रात काल से ही देश के चोटी के नेताओ का आवागमन प्रारम्भ हो गया। आने वालो मे गैर-काग्रेसी दलो के शीषस्थ नेता थे। राजमाता एक-एक कर सबसे भेंट कर रही थी तथा उनके सहयोग के लिये वे उनका आभार मान रही थी। चारो ओर से उन्हे आश्वासन प्राप्त हो रहे थे कि एक निरकुश शासक एक प्रदेश के मुख्यमत्री को अपने जीवन का सबसे महगा पाठ पढाने मे वे सब उनके सहायक हैं और इस सघष मे यदि काग्रेस के चोटी के नेता भी सामने आवे गे तो उन्हे भी जनता की मजबूत आवाज के सामने नीचा देखना होगा। ग्वालियर हाउस मे शनै शनै एकत्रित होने लगे मध्य प्रदेश के विरोधी पक्ष के विधायक जो राजमाता के सहयोगी थे। निर्भीकता के प्रतीक तथा विद्रोही काग्रेसियो के नेता श्री ब्रजलाल वर्मा ने पत्र के सम्वाददाताओ से ग्वालियर हाउस मे कहा कि मुख्यमत्री श्री मिश्र का यह प्रचार कि दल-बदलू विधायक पुन काग्रेश मे वापिस आ रहे है पूर्णतया भ्रामक है। वास्तविक स्थिति तो यह है कि अब उनकी सख्या ३५ के बजाय ४० हो गई हैं तथा वे अब किसी भी शत पर सविद त्याग कर काग्रेस मे जाने को तैयार नही। यदि काँग्रेस के नेता श्री मिश्र को पद च्युत कर दूसरा नेता बनाने की बात भी कहे तो भी वे अब सविद नही त्याग सकते। एक बार काग्रेस त्याग कर वे इस दिशा मे अब सोचने को भी तत्पर नही।

ग्वालियर हाउस से राजमाता उपप्रधानमन्त्री श्री मुरारजी देसाई से भेट करने गई। उन्होने राजमाता को स्पष्ट आश्वासन दिया कि इस सम्बन्ध मे किसी की भी मनमानी न चल पायेगी। काग्रेस नेताओ का एक वग सविधान की आत्मा की रक्षा करने पर उतारू हो उठा तथा वह अन्य नेताओ को बाध्य कर देगा कि मध्यप्रदेश की गुत्थी को सविधान के अनुरूप काय करके ही सुलझाया जाये। सदन मे शक्ति परीक्षण आवश्यम्भावी है तथा बहुमत है अथवा नही इसका निर्णय राज्य-

पाल नही करेंगे। राजमाता अब गृहमत्री से मिली तथा उनसे भी यही अनुरोध किया कि पूरा निष्पक्षता के साथ सविधान के अनुसार प्रदेश की राजनैतिक समस्या को सुलझाया जावे।

उधर मुख्यमन्त्री भी उनके सहयोगियो को अपना दृष्टिकोण समझाने तथा कॉग्रेस सिंडिकेट को अपने पक्ष मे करने के लिए पूण प्रयत्न करने मे लगे हुये थे। उन्होने भी प्रधानमन्त्री, गृह मन्त्री, एव काग्रेस अध्यक्ष से पुन भेंट की। मध्यप्रदेश के राज्यपाल ने भी गृहमत्री एव लोकसभा के अध्यक्ष श्री सजीवा रेड्डी से भेंट कर अपने सत्रावसान के आदेश के औचित्य का स्पष्टीकरण किया। इस प्रदेश की गुत्थी एव राजमाता के निर्भीक नेतृत्व एव काय-पटुता ने देहली के राजनैतिक जगत को झिझौड डाला था तथा आगे का कदम क्या हो इस पर तीव्र मतभेद प्रारभ हो गया था। एक ओर तो मिश्र अपनी मध्यावधि चुनाव की माग पर दृढ थे और सभवतया उन्हे प्रधानमन्त्री तथा उनके साथियो का समथन भी प्राप्त था किन्तु दूसरी ओर एक प्रभावशील वग ऐसा भी था जोकि काग्रेस पक्ष की विधानसभा मे पराजय के पश्चात सविद को मत्रिमडल बनाने का अवसर देने के पक्षमें था। इन दो दृष्टि-कोणो की चर्चा राजधानी मे आज जोरशोर से हो रही थी। जनता ने एक ओर सुना कि काग्रेस अध्यक्ष से आज ४० मिनट तक प्रधान मत्री ने इसी समस्या पर विचारविमश किया जबकि उनके साथ गृहमत्री भी थे तो दूसरी ओर यह भी सुना गया कि उत्तर प्रदेश के काग्रेसी नेता श्री चन्द्रभान गुप्त ने काग्रेस अध्यक्ष से मिलकर स्पष्ट रूप से यह कहा कि यदि मध्य प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव की बात मान ली गई तो उत्तर प्रदेश, पश्चिम बगाल मे भी यही होगा तथा काग्रेस दल को इससे हानि उठानी पडेगी।

आध्र, बिहार एव मध्य प्रदेश के २० ससद सदस्यो ने आज प्रधानमत्री से यह अपील की कि वे मध्य प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव का

निराय न लेने दे। काग्रेस नेतृत्व के सामने आज यह प्रश्न भी स्पष्ट रूप से चर्चा का विषय बन गया कि मिश्रजी को नेता पद से हटा देने के उपरात क्या काग्रेस दल-बदलू सतुष्ट होकर पुन लौट आवेगें तथा प्रदेश मे काग्रेस मन्त्रिमण्डल बना रहेगा। क्योकि कुछ दल-बदलुओ ने कल यह कहा कि उन्हे काग्रेस से विरोध नही मिश्रजी के प्रति है। मिश्रजी ने इस प्रश्न के उत्तर मे कहा कि यदि काग्रेस शासन मध्य प्रदेश मे उनके त्याग पत्र देने से बच सकता है तो वे ऐसा करने के लिए तैयार है। किन्तु शक्ति परीक्षरा मे हार हो जाने पर वे सविद का मत्रिमडल न बनने देंगे तथा मध्यावधि चुनाव की सलाह वे अवश्य ही राज्यपाल को देंगे। पत्रो मे प्रकाशित समाचारो से आज यह भी विदित हुआ कि कि श्री मिश्र का त्याग पत्र मानने के लिए प्रधानमत्री एव काग्रेस अध्यक्ष सहमत नही है। उधर सभवतया मिश्र जी धारा सभा का अधिवेशन कराने के पक्ष मे नही है तथा वे मध्या-वधि चुनाव की सलाह इसी समय राज्यपाल को देकर राष्ट्रपति शासन लागू कराना चाहते हैं क्योकि सदन मे परास्त हो जाने के उपरात प्रदेश के जन मानस के समक्ष उनकी छाया विकृत हो जावेगी तथा उनके लम्बे राजनैतिक जीवन का ह्रास हो जावेगा। मिश्रजी का शायद यह कहना था कि सविधान की ३५६वी धारा के अन्तगत यह सब सभव है।

दोपहर को दलबदलू ३२ विघायको द्वारा यह भी पता चला कि प्रधानमत्री तथा मुख्यमत्री के सकेत पर कुछ काग्रेसी नेता जिनमे राजा दिनेशसिंह, उद्योग वारिगज्य मत्री, का भी नाम लिया जा रहा था मह भरसक प्रयत्न कर रहे है कि श्री गोबिन्द नारायरग सिंह, श्री व्रजलाल वर्मा आदि एव राजमाता को भी काग्रेस के बधन मे पुन बाधा जावे चाहे इसके लिए कितना ही त्याग करना पडे और इसके लिये उन लोगो ने व्यक्तिगत सम्पर्क भी साधा किन्तु शायद उन्हे अपने प्रयासो मे सफलता प्राप्त नही हुई। श्री मिश्र का मुख्यमत्री के

पद से पदच्युत करने का प्रस्ताव भी इस सम्बन्ध मे चर्चा का विषय बना।

२४ जुलाई १९६७

आज देश की राजधानी देहली मे विट्ठल भाई पटेल भवन मे एक विशाल जनसभा का आयोजन हुआ जिसके अध्यक्ष थे आचार्य कृपलानी एव वक्ताओ मे प्रमुख थे प्रजा समाजवादी नेता श्रीनाथ पाई, ससोपा के श्री मधु लिमये, स्वतत्र दल के डहया भाई पटेल, जनसघ के श्री अटल बिहारी वाजपेयी, निदलीय श्री एन० सी० चटर्जी आदि। इस सभा मे कम्युनिस्ट पार्टी को छोडकर समस्त विरोधीयो ने यह घोषणा की कि यदि मध्य प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव हुए तो सब दल राजमाता का सहयोग करेगे तथा काग्रेस के प्रत्येक नामाकित सदस्य का चुनाव मे जोरदार विरोध किया जावेगा। इस सभा मे देहली की जनता के समक्ष बोलते हुए राजमाता ने कहा कि भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जनता की भावनाओ को कुचल कर कोई भी शासक स्थिर नही रह सकता, उसका पतन अवश्यभावी है। मध्य प्रदेश की जनता ने भी मिश्रजी के खूनी निरकुश शासन को अब ठुकरा दिया है। मिश्रजी का राजनैतिक जीवन समाप्ति पर है। अन्याय का प्रतिकार करने मे जनता ने राजमाना का साथ दिया है। मिश्रजी के काग्रेस साथियो की मति बदली और उनके द्वारा ही मिश्रजी के काले शासन का अन्त अब हो रहा है। यह सब जनता की सबल आवाज तथा भगवान की दया का फल है। अब मध्य प्रदेश मे विधान सभा भग करके यदि मध्यावधि चुनाव कराये गये तो वहा से काग्रेस का नामोनिशान मिट जायेगा। मध्य प्रदेश हमारे भारत का हृदय है और वहा का छात्र समुदाय मिश्रजी अत्याचारो के कारण त्रसित हो उठा था। सारे देश मे उनका क्रदन गू ज उठा था। जनता त्रस्त थी और इस सबका परिणाम है यह विस्फोट। केन्द्र के नेताओ ने जनमत के प्रतिकूल यदि

कुछ किया तो प्रदेश मे ही नही अन्य प्रान्तो मे तीव्र प्रतिक्रिया होगी और काग्रेस का रहा-सहा प्रभाव भी जाता रहेगा। मध्यावधि चुनाव का भार उठाने के लिए यह गरीब प्रदेश अभी तैयार नही किन्तु यदि यह प्रदेश पर थोपे ही गए तो राजमाता विरोधियो के दाँत खट्टे कर देंगे। उनके साथ आज सारा देश है। अत्याचारियो का अन्त निश्चित है। मिश्र जी का नाम ही राजनैतिक जगत से गायब हो जायेगा।

इस सावजनिक सभा मे बोलते हुए श्री गोविन्द नारायण सिंह ने कहा कि मिश्रजी को मुख्यमंत्री बनाने में एक दिन उनका प्रमुख हाथ था किन्तु उनके साथ कार्य करने पर पता चला कि वे एक क्रूर, कुटिल व्यक्ति हैं तथा पूरे तानाशाह हैं। मध्याविधि चुनाव से उन्हे भय नही। राजमाता का आशीर्वाद प्राप्त कर जनता के समथन से काग्रेस को प्रदेश मे करारी हार मिलेगी। श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा ने कहा कि मिश्रजी सरकार एक खूनी सरकार है तथा जनमत के सामने उसके पैर अब उखड चुके है।

जनसघ के निर्भीक नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि केन्द्रीय शासन ने यदि मध्य प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव कराये तो उसे अपनी गलती का स्वय शिकार होना पडेगा तथा अन्य राज्यो पर उसका विपरीत प्रभाव पडेगा। ससोपा के श्री एस० एम० जोशी तथा श्री मधु लिमये ने कहा कि काग्रेसी शासन तथा मिश्र जी के षडयन्त्रो का भडाफोड अब हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सविधान की हत्या पर तुले हुए हैं और काग्रसी नेताओ की विचार शक्ति समाप्त हो गई है। मध्य प्रदेश मे जो कुछ अनियमित हुआ है उसका उत्तर-दायित्व केन्द्र पर है।

स्वतन्त्र पार्टी के नेता इह्या भाई पटेल ने कहा कि मध्य प्रदेश की काग्रेस सरकार अब पतन के कगार पर पहुच गई है। मुख्य मत्री ने जो चुनौती राजमाता को दी है और जिसे वे स्वीकार भी कर चुकी

हैं हम सबके सहयोग से वे उसे पूरा करके दिखा देगी। इस निर्भीकता और कुशल नेतृत्व के लिए वे बधाई की पात्र है।

प्रसोपा के श्री चन्द्र प्रताप तिवारी (म० प्र०) ने कहा कि राज्यपाल के आदेश से सदन की मान-हानि हुई है इस पर भी वे जब उससे मिलने गये तो राज्यपाल ने रूखेपन से उनसे व्यवहार किया। मध्य-प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव इन अवस्थाओ मे करने का स्पष्ट तात्पय लोकतन्त्र की हत्या कराना है।

निर्दली नेता श्री एन० सी० चटर्जी ने कहा कि जनतत्र की परम्पराओ के अनुसार विरोधी दल को जिसका सदन मे अब स्पष्ट बहुमत है शासन चलाने का अधिकार है। इस अधिकार का हनन कर मध्यावधि चुनाव कराना सविधान के प्रतिकूल होगा। काग्रेसी नेताओ को देश के समक्ष स्वस्थ परम्परायें रखना चाहिये।

अध्यक्ष के पद से बोलते हुए वयोवृद्ध नेता आचाय कृपलानी ने कहा कि वैसे तो कांग्रेसी सरकारो की भूले कई हैं किन्तु मध्य प्रदेश की मिश्र सरकार तो एकदम रद्दी तथा खूखार सिद्ध हुई है। यदि मध्यावधि चुनाव हुए तो काग्रेसी सदस्यो की सख्या धारा सभा मे और भी कम हो जायेगी। जिस देश मे सूखा पडा हो, अकाल हो तथा जनता निधनता से कराह रही हो वहा इतनी अल्पावधि मे चुनाव कराना कसाईपन है।

इस सभा का सचालन श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया तथा जनता ने बार-बार राजमाता की जय-जयकार कर सभा भवन को गूजा दिया। समस्त विरोधी दलो ने मिलकर निम्न प्रस्ताव पारित किये

१ राज्यपाल विधान सभा की बैठक तत्काल बुलाकर श्री मिश्र का सदन का विश्वास प्राप्त करने को कहे, तथा

२ विपक्षी दल का बहुमत प्रमाणित होने पर उसे सरकार बनाने का अवसर दिया जाये ।

राजमाता की जयघोष के साथ यह सभा रात्रि मे समाप्त हुई ।

राज्यसभा में

उधर राज्य सभा के अधिवेशन मे भी मध्य प्रदेश काड को लेकर चख-चख हुई । प्रसोपा के श्री बाके बिहारी दास ने ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर बहस करते हुए कहा कि राज्यपाल का सत्रावसान का आदेश अवैधानिक है । बहस का उत्तर देने जब उपगृहमन्त्री श्री विद्याचरण शुक्ल खडे हुए तो ससोपा के श्री मुराहरि और कम्युनिस्ट सदस्य श्री भूपेश गुप्त ने आपत्ति करते हुए कहा कि श्री शुक्ल स्वय इस अवैधानिक कृत्य मे भागीदार है अत वे नही बोल सकते । गृहमन्त्री को इसका उत्तर देना चाहिये । प्रधानमत्री ने इस पर कहा कि गृहमत्री इस समय व्यस्त है अन आपत्ति का उत्तर श्री शुक्ल ही देंगे । श्री शुक्ल ने राज्यपाल के आदेश को उचित ठहरा दिया । तीन घटे की बहस मे फिर श्री चव्हाण भी शामिल हो गये । जनसघ के श्री विमल कुमार ने राज्यपाल के इस कृत्य की तीव्र आलोचना की तथा राज्यपाल को उनके पद से हटाने की माग की । बहस के दौरान एक वरिष्ठ काग्रेसी सदस्य ने भी राज्यपाल के आदेश को अनुचित कहा । गृहमत्री का केवल एक ही उत्तर था कि सविधान के अनुसार राज्यपाल मुख्यमत्री की सत्रावसान की सलाह मानने को बाध्य थे ।

राजधानी मे आज काग्रेस पालियामेन्टरी बोर्ड की बैठक पुन हुई तथा लम्बी चर्चा के बाद लोगो ने सुना कि उसके निणय मूलत निम्न थे ।

१ सदन की बैठक २८ जुलाई को बुलाई जावे ।

२ इस बैठक मे मतदान द्वारा शक्ति-परीक्षण हो तथा मिश्र मन्त्रि-मडल के परास्त हो जाने पर कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमिश्र से सलाह कर यह निश्चित करें कि श्री मिश्र राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह दे अथवा नही ।

३ श्री मिश्र के नेता पद से त्याग करने का सुझाव बोड को अमान्य है । श्री मिश्र शक्तिपरीक्षण मे हारने पर अपने मन्त्रि-मडल का त्याग पत्र राज्यपाल के सन्मुख प्रस्तुत करे ।

बोड के निर्णय के अनुसार जनता मे एक रोष की लहर दौड पडी क्योकि बार-बार विचार करने के उपरान्त भी बोड मुख्य प्रश्न पर निर्णय लेने मे असमथ रहा था । वह यह निम्चय न कर पाया था कि मिश्र मन्त्रिमडल के परास्त होने के पश्चात राष्ट्रपति शासन लागू होने पर मध्यावधि चुनाव होगे अथवा विपक्षी दल को मन्त्रिमडल बनाने का अवसर दिया जायेगा । अनिश्चय की इस अवस्था मे सहसा सदस्यो ने आज जब उपप्रधान मत्री श्री मोरारजी देसाई से भेट की तो उन्हे विदित हुआ कि वे मध्यावधि चुनाव के पक्ष नही है और उन्होंने अपने स्पष्ट विचार बोड मे व्यक्त भी किए । उनके मत मे तो मिश्र जी को हार जाने के पश्चात् तुरन्त अपने मन्त्रिमडल का इस्तीफा राज्यपाल को दे देना चाहिये तथा विरोधी पक्ष को अपनी सरकार बनाने का अवसर मिलना चाहिये क्योकि उन्हे बतलाया गया कि मध्यावधि चुनाव मे लगभग ५ करोड रुपये व्यय होगे । गत चुनाव मे २९६ सीटो मे से १।३ सीटो पर ६५,००० रुपये से लेकर १ लाख रुपया प्रति सीट व्यय हुआ है तथा इस बार भीषण प्रतिद्वद्विता के कारण यह व्यय और भी अधिक होने की सभावना है । सूखे और अकाल से त्रस्त प्रदेश यह भार कैसे सहन कर पायेंगे ।

भोपाल मे

देहली की खबरें जब आकाशवाणी तथा टेलीफोन द्वारा भोपाल पहुँची तो काग्रेस नेतृत्व के प्रति जनता का मन रोष से भर उठा। काग्रेसी नेताओ की क्रियाशीलता भी अब सहसा सजग हो गई तथा शक्ति-परीक्षण मे विजयश्री उनके हाथ लगे इसकी अभिसघि प्रारम्भ हो गई। रुपयो की थैलियो के मु ह खोलने के लिये कैंची चाकू की तलाश शुरू हुई और उधर हरिजन आदिवासी विधायको के अपहरण की योजना भी बनने लगी। प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष श्री शकरलाल तिवारी एव मत्री श्री गौतम शर्मा ने कहा कि श्री मिश्र के अब नेता पद से हटने का तो कोई प्रश्न ही नही है।

जनसघ के प्रदेश सचिव श्री कुशाभाऊ ठाकरे ने जनता के सन्मुख गजन किया कि श्री मिश्र खुद चाहे अथवा नही मुख्यमत्री पद से तो उन्हे हटना ही है यदि वे शोभा से नही हटे तो उन्हे अपमानित कर निकाला जायेगा। काग्रेस के दिये हुए बडे से बडे प्रलोभन भी विद्रोही विधायको को पुन काग्रेस मे लाने मे असमथ रहे है तथा मध्यावधि चुनाव का विरोध तो ईमानदार काग्रेसी वरिष्ठ नेता भी कर रहे हैं। सभवतया काग्रेस अध्यक्ष भी इसके पक्ष मे नही। मिश्र जी की डूबती नाव को सभालने मे यदि प्रधानमत्री ने अब भी अगुआई की तो यह जल से भरी नाव उन्हे भी ले डूबेगी।

इस सबकी प्रतिक्रिया मध्य प्रदेश के मुख्य नगरो मे इतनी तीव्र हुई कि वहा अनाज और तेल के भाव सहसा गिरने लगे तथा त्रस्त जनता ने कुछ राहत का अनुभव किया। काला बाजार मदा हुआ तो ईमानदारी चमक उठी।

मध्य रात्रि के लगभग जब राजमाता दिन के व्यस्त कायक्रम के उपरात ग्वालियर हाउस लौटी तो एक-एक कर उनके सहयोगी पुन

उनके समीप एकत्रित हो गए। उधर भोपाल एव देहली के कांग्रेस कैम्प की विश्वस्त खबरो ने भी उन्हे चौकन्ना कर दिया। अभिसधि के समाचार थे श्री इसी प्रकार के। २८ जुलाई तक विरोधी पक्ष के विधायको की रक्षा का प्रश्न एक गम्भीर प्रश्न हो उठा था। अन्त मे यही निश्चय हुआ कि राजमाता एव महाराज माधवराव सपरिवार भोपाल जावे तथा मुख्य विधायकगण तथा श्री गोविन्द नारायणसिंह अनिश्चित स्थानो पर रहे तथा अधिकाश विधायकगण आज ही बस द्वारा ग्वालियर को प्रस्थान कर दे जहा वे राजमाता के अतिथि के रूप मे जय विलास प्रासाद में ३ दिन विश्राम करे। उनकी सुरक्षा का भार उठाया उन निर्भीक स्वयसेवको ने जो प्रसाशन के अधेरे मे चुपचाप महाराज माधवराव तथा सरदार कुमार आग्रे के नेतृत्व मे अपने जान की बाजी लगाकर योजना की सफलता के हेतु कार्यरत थे और जिन पर राज-परिवार को पूर्ण विश्वास था।

निश्चय के अनुसार राजमाता देहली से रगमच पर पटाक्षेप कर अपने बेटे के साथ भोपाल के लिये रवाना हो गई। इन क्षणो मे उन्हें स्मरण हो आया गाधी जी का वह उपदेश जो २१ मई, १९४७ को उन्होने अपनी प्रार्थना सभा मे जनता को दिया था। उन क्षणो मे उस भविष्य वक्ता ने कहा था

> स्वतन्त्रता का जो अमूल्य रत्न हमारे हाथ मे आ रहा है मुझे डर है कि हम उसे खो बैठेंगे। स्वराज्य लेने का पाठ तो हमे मिला परन्तु उसे टिकाये रखने का पाठ हमने नही सीखा है। अग्रेजो की तरह बन्दूको के जोर पर हमारी राज्य सत्ता नही चलेगी। अनेक प्रकार के त्याग और तपस्या के द्वारा कांग्रेस वाले जनता को धोखा देंगे और सेवा करने के बजाय उसके मालिक बन जायेंगे या मालिको की तरह व्यवहार करेंगे तो मै शायद जीऊ परन्तु इतने वर्षो के अनुभव के आधार पर यह चेतावनी देने की हिम्मत

करूगा कि देश में बलवा मच जायेगा । सफेद टोपी वालो को लोग चुन-चुन कर मारेंगे और कोई तीसरी सत्ता उसका लाभ उठायेगी।

आज मध्य प्रदेश की जनता मे जो काग्रेस के प्रति क्षोभ है उसका मुख्य कारण मिश्र जी का बन्दूको के जोर पर राज्य सत्ता चलाने का प्रयास और जनता का इस निरकुशता के प्रति बलवा। इसमे सन्देह नही कि यदि अब भी काग्रेस के सत्ताधारी जनता पर अत्याचार के लिये दृढ सकल्प हुए तो वह दिन भी दूर नही जब सफेद टोपी वालो का नगर की हर सडक और गली मे तिरस्कार तथा अपमान किया जाएगा।

मोटर मे बैठी वसन्धरा राजे की हरीतिमा का अवलोकन करती वह मनीषी अपने कतव्य के प्रति सहसा और भी जागरूक हो उठी। देहली से भोपाल की इस ऐतिहासिक यात्रा मे वसत आश्रम मे पढा हुआ 'अन्याय का प्रनिकार' करने का वह पाठ भला यह क्षण भी आज कहा भूल पाई थी। वह तो शायद आज उससे प्रेरणा ले अपनी मन शक्ति को सबल कर रही थी।



कुमारी लेखा–दिव्यश्वरो



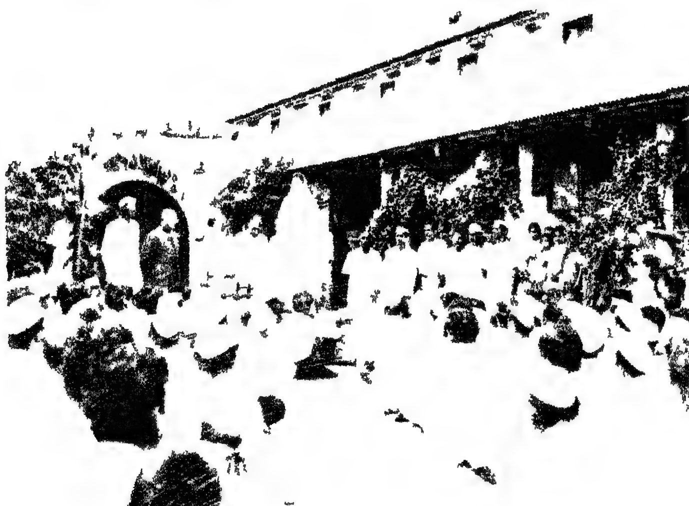
उत्तर प्रदेश के दौरे पर कानपुर के अस्पताल मे
रोगियो के बीच राजमाता ।



इन्दौर की बालमडली मे राजमाता ।



नारी जागरण के नेत्री राजमाता सिंधीया इन्दोर महिला मडल द्वारा आयोजीत महारानी अहिल्यावाई जयन्ती के अवसरपर।



सागर के जनसघ शिबीर मे कार्यकर्ताओ को सम्बोधीत करती हुई राजमाता।

सोपान २८

देहली से भोपाल

२५ जुलाई, १६६७

उगते हुये अशमाली की स्वर्णिम रश्मियो ने आज ग्वालियर-वासियो को पुन एक बार प्रदेश के भाग्य विधायको का स्वागत सत्कार करने का सन्देश दिया। जयविलास प्रसाद मे चहल पहल प्रारम्भ हो गई और १५० विधायको के आतिथ्य का प्रबन्ध करने मे महाराज माधवराव के युवक अनुगामी प्रासाद के वरिष्ठ अधिकारी तथा कर्मचारी सलग्न हो गये। देहली से बसो द्वारा यात्रा कर पूण विधायकों की यह मडली जयविलास प्रासाद मे आज आ पहुची तथा उसके साथ ही लोगो ने देखा कि शासन की पुलिस के जासूसो की टोली गुप्त रूप मे जयविलास प्रासाद मे चारो ओर मडराने लगी।

प्रदेश की राजनीति का रगमच अब देहली से हटकर भोपाल आ पहुँचा था। आज राजमाता अपने कतिपय साथियो के साथ भोपाल पहुच गई तथा काग्रेस कैप की अभिसधियो का सुरागं उन्हे मिला। विधायको से मिलकर उन्हे पुन काग्रेस मे लाने के लिये जोरदार तैयारी हो रही थी और अनुमान यह था कि २६ जुलाई को जैसे ही विधायको की टोली भोपाल पहुचे उनसे सम्पर्क साधने का प्रयत्न काग्रेसी नेतागण करें। यह सत्य है कि विधायक गण भोपाल कब पहुचेंगे और उनका कायक्रम क्या है यह किसी को मालूम न हो पाया था। इन परिस्थितियो

मे यह और भी आवश्यक हो उठा कि विधायको की टोली अब निश्चित रूप से अपने दो तीन दिन ग्वालियर मे ही बिता दें।

भोपाल के विमान निलय पर जब मुख्य मन्त्री देहली से लौट कर उतरे तो पत्र प्रतिनिधियो ने उन्हे घेर लिया। पत्रकारो के विभिन्न प्रश्नो के उत्तर मे मिश्र जी ने बताया कि राज्यपाल ने उनकी सलाह मानकर ही २८ जुलाई को सदन की बैठक बुलाई है। उन्होने कहा कि वे विधायक जिन्हे जबदस्ती विरोधीपक्ष ने रोक रखा हे सुना गया है कि काग्रेस मे पुन वापिस आने को आतुर है किन्तु काग्रेस दल उनसे किसी प्रकार की सौदेबाजी करने को तैयार नही है। मिश्र जी उनसे न तो देहली मे मिले है और न भोपाल मे मिलने के इच्छुक है। यदि ये दल-बदलू स्वय चाहे तो अपनी काग्रेस का द्वार उनके लिये खुला है। यदि उन्होने शक्ति परीक्षण के समय विश्वासघात कर विरोधी पक्ष के साथ मत दिया तो श्री मिश्र सदन भग कराके मध्यविधि चुनाव करेंगे तथा जनता इन दल-बदलुओ का भविष्य अन्धकारमय कर देगी। वैसे पार्लियामेटरी बोड ने मिश्र जी को अनुमति दे दी है कि वे २१ स्थान पर ३० मन्त्रियो को भी अपने मन्त्रिमडल मे ले सकते हैं क्योकि प्रदेश की राजनैतिक स्थिति का आज यह तकाजा है और मिश्रजी के मन मे आज भी उन दल-बदलुओ के प्रति किसी प्रकार की दुर्भावना नही है तथा वे उनकी समस्त वास्तविक कठिनाइयो का हल निकालने को तत्पर है। सम्वाददाताओ के यह पूछने पर कि सदन मे परास्त हो जाने के पश्चात भी क्या मिश्रजी काम चलाऊ सरकार बनाने को सहमत है तो उनका उत्तर था कि वे ऐसा नही करेंगे। उस अवस्था मे राष्ट्रपति शासन ही उचित है। जब किसी ने उनसे पूछा कि मुख्यमन्त्री पद से हटने के उपरान्त क्या वे काग्रेस अध्यक्ष के पद के लिये उम्मीदवार बनेंगे तो उन्होने इस सभावना से इकार कर दिया।

भोपाल मे गोविन्द नारायण सिंह ने आज कुछ और नामो की घोषणा की तथा कहा कि ये काग्रेस विधायक, दल बदल कर विरोधी

पक्ष मे आ गये है तथा अब उनकी सख्या ५० के लगभग है। हरसोद क्षेत्र के खडवा के काग्रेसी विधायक श्री कालीचरण हकर ने भी अपने काग्रेस दल से त्याग-पत्र की घोषणा की।

मध्य प्रदेश मे आज मुख्य चर्चा का विषय था काग्रेस पार्लियामेटरी बोड द्वारा लिया हुआ निणय। काग्रेसी नेताओ को यह विश्वास था कि इन तीन दिनो मे दिग्गज राजनीतिज्ञ श्री मिश्र दल बदलुओ को पुनः तोडने मे सफल हो जावेगे तथा शक्ति-परीक्षण के दिन विजयश्री उनको ही मिलेगी। श्री गोविन्द नारायण सिह ने सध्या के समय पत्र प्रतिनिधियो से कहा कि पुलिस के गुर्गे भी राजनीति के अखाडे मे किसी के सकेत पर कूद पडे है तथा दल बदलुओ से सम्पक साध कर उन पर दबाव डाल रहे है उन्हे मन्त्री पद तथा धन के बडे बडे प्रलोभन दिये जा रहे है। वरिष्ठ नेताओ ने पार्लियामेटरी बोड के कल के निर्णय को दुर्भाग्यपूण कहा। विधान सभा के अध्यक्ष श्री पाडे ने कहा कि इस निणय से मुख्य समस्या को सुलझाने मे कोई सहायता नही प्राप्त होगी। जनसघ नेता श्री ठाकरे ने कहा कि इस निणय से ऐसा पता चलता है कि आज की काग्रेस हाई कमाड भी अन्याय का प्रतिकार करने मे असमथ है। श्री मधुलिमये ने कहा कि उनकी जानकारी के अनुसार जब केन्द्रीय गृह सचिव ने मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव तथा गृह सचिव से पूछा कि मध्यावधि चुनाव कब तक हो सकेगे तो उन्हे उत्तर मिला कि जल्दी से जल्दी किन्तु नवम्बर मास के पश्चात् ही।

श्री सकलेचा ने भोपाल मे पत्रकारो को बताया कि उन्होने जब प्रधान मन्त्री से यह कहा कि दल-बदल किसी प्रलोभन अथवा भय या दबाव के कारण नही हुआ है वरन् यह मिश्रजी के निरकुशता के प्रति विद्रोह है तो प्रधान मन्त्री ने उत्तर दिया था कि वे कोई अबोध बालक नही जो इतना भी नही समझती। फिर भी उन्होने विश्वास दिलाया कि मध्यावधि चुनाव होने पर वे मिश्रजी को काम चलाऊ सरकार नही सौंपेगी।

देहली मे भी आज बोर्ड के निर्णय की धूम रही तथा केबिनेट की इन्टरनल एफेयर्स कमेटी की बैठक मे इन दिनो मुख्य प्रश्नो पर विचार हुआ कि देश की वर्तमान राजनैतिक स्थिति मे क्या राज्यपाल मध्यावधि चुनाव की सलाह माने तथा यदि माने तो क्या कांग्रेस मन्त्रि-मण्डल को काम चलाऊ सरकार सौंपी जा सकती है। प्रश्न इतने महत्वपूर्ण थे कि इनका विशेष अध्ययन संविधान के विशेषज्ञो तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओ द्वारा आवश्यक था अत बिना स्पष्ट निर्णय लिये यह बैठक समाप्त हो गई।

मध्य प्रदेश के राजनैतिक बवडर अब भी देश की वायुमडल को कम्पित किये हुये थे।

२६ जुलाई १९६७

भोपाल मे गगन मण्डल मे आज भी काले बादल मडरा रहे थे। रह रहकर बिजली की तडफन और वर्षा की बूंदे नगर के स्वाभाविक व्यवस्त जीवन को विश्रृंखल कर रही थी। राजमाता प्रात काल जब पूजा वदन से निवृत्त होकर अपने कार्य कक्ष मे आई तो पत्रकारो की मण्डली उनके स्वागत को तैयार थी। प्रश्नो की बौछार प्रारम्भ हो गई। राजमाता ने कहा कि भोपाल का आज का वातावरण विषाक्त है और उनके दल को भय है कि विधायको के अपहरण की अभिसंधि हो रही है। यही कारण है कि देहली से लौटते समय बहुसंख्यक विधायक ग्वालियर मे रुककर विश्राम ले रहे है तथा समय पर वे भोपाल मे पहुँचने पर तथा उनके द्वारा ग्वालियर स्थित विधायको पर अनुचित दबाव कांग्रेस दल द्वारा डाला जा रहा है। यह भी सुना गया कि विदिशा के हरिजन विधायक श्री हीरालाल पीपल को कल रात्रि जबरदस्ती मिश्रजी के बगले पर ले जाया गया तथा उनसे कहा गया कि उनके कांग्रेस मे आने पर उन्हे पार्लियामेन्टरी सचिव बना दिया जायेगा तथा यदि वे चार अन्य विधायक अपने साथ ला सके तो केबिनेट स्तर का मन्त्री बना दिया जायेगा। धन का प्रलोभन तो

शायद इम सबके अतिरिक्त है। लोगो ने कहा कि श्री पिपल इस प्रस्ताव को अमान्य कर मुख्य मन्त्री आवास से कठिनता से वापिस लौट सके है।

ससोपाके श्री चिपुरिया एव प्रसोपा के श्री चन्द्र प्रताप तिवारी भी इस पत्रकार चर्चा मे उपस्थित थे। विपक्ष के एक सदस्य ने कहा कि २८ जुलाई को विधान सभा अधिवेशन मे सयुक्त विधायक दल की ओर से मिश्र मन्त्रिमडल का यह दावा कि वे विधायको पर दल-बदल के लिये दबाव नही डाल रहे एकदम सफेद झूठ है। पत्रकारो के सन्मुख सत्य पर पर्दा वे कैसे डाल सकने है। श्री चिपुरिया ने कहा २८ जुलाई को विधान सभा अधिवेशन मे सयुक्त विधायक दल की ओर से मिश्र मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया जावेगा राजमाता ने बतलाया कि सविद के सदस्यो की सख्या अब १५६ है तथा शुक्रवार २८ जुलाई तक कुछ और काग्रेसी सदस्य इसमे सम्मिलित हो जायेंगे। इस समय तक मिश्रजी एक भी सदस्य को फुसलाने मे सफल नही हो सके हे और ऐसा अनुमान है कि वे अपने प्रयासो मे सफल भी न होगे। मध्यावधि चुनाव कराके वे अपने पैरो पर कुल्हाडी मारेंगे क्योकि पराजय के साथ साथ वे जनता की सद्-भावना भी खो बैठेंगे। राजमाता ने यह भी कहा कि यह सत्य है कि देहली मे उनकी भेंट राजा दिनेशसिंह से हुई थी किन्तु उनसे की हुई चर्चा का लक्ष्य यही था कि काग्रेस हाई कमाड मध्यावधि चुनाव की जिद को त्याग दे। प्रधान मन्त्री ने उनसे भेंट के समय कहा था कि वे श्री मिश्र को अपना माग स्वय चुनने की स्वतन्त्रता देना चाहती है सभवतया इन क्षणो मे वे अपने इस मत मे परिवतन करने की सोच रही हैं।

राजमाता ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि सविद मत्रिमण्डल बना तो सब दल मिलकर एक न्यूनतम कायक्रम बनाकर उस पर कार्य करेगा। उन्हे पता है कि सरकार चलाने का अर्थ काटो का ताज

पहिनना है ।

देहली मे

एक ओर जबकि केन्द्रीय शासन के विधि तथा गृह विभाग सविधान की आत्मा की खोज मे लवलीन थे, ६० ससद सदस्यो ने प्रधान मन्त्री तथा राष्ट्रपति को लिखित चुनौती देते हुये कहा कि एक बहुमत विहीन मुख्य मन्त्री को, राज्यपाल को कोई भी सलाह देने का नैतिक अधिकार नही है और यदि श्री मिश्र मध्यावधि चुनाव की सलाह देते है तो राज्यपाल को इसे अमान्य कर देना चाहिये। जनता के उन प्रतिनिधियो ने जो कानून के विशेषज्ञ हैं पत्रो मे अपनी अपनी सम्मति इस प्रश्न पर प्रकाशित कराई जिनमे से कतिपय इस प्रकार थी —

श्री धवन अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति इलाहाबाद उच्च न्यायालय

यह सही हे कि ऐसे प्रश्नो पर मुख्य मन्त्री तथा प्रधान मन्त्री दोनो को सलाह देने का अधिकार है किन्तु भारत मे इस परम्परा को अपनाना उचित न होगा। १९२४ मे इगलैंड मे मजदूर दल सरकार को अनुदार दल ने हरा दिया। अनुदार दल को मत्रिमण्डल बनाने की आशा थी किन्तु प्रधान मन्त्री ने इस समय ससद भग करने की माग की जिसे सम्राट ने स्वीकार कर लिया। केनेडा तथा आस्ट्रेलिया मे इस प्रकार की माग को कई बार अमान्य भी किया गया है।

श्री एच० बी० पातसकर भू० पू० राज्यपाल मध्य प्रदेश

राज्यपाल को यह अधिकार है कि वे मुख्य मन्त्री की इस प्रकार की सलाह को अमान्य कर दे।

श्री माल कोडा बार काउन्सिल अध्यक्ष आध्र प्रदेश

बहुमत विहीन मुख्य मत्री की सलाह राज्यपाल मानने के लिये बाध्य नही है।

श्री राजेन्द्र सच्चर अध्यक्ष पजाब बार काउन्सिल

मुख्य मत्री का यदि सदन मे बहुमत हो तो उसकी सलाह राज्यपाल को मान्य होगी अन्यथा नही। मध्यावधि चुनाव का नारा लगाकर

इस समय श्री मिश्र ब्लेक मेल करना चाहते है।

श्री अगिन भोज भू० पू० मन्त्री, म० प्र०

मध्याविधि चुनाव का तात्पय जनमत जानने से है किन्तु सविधान मे ऐसी कोई व्यवस्था नही है।

श्री निहलानी एडवोकेट

राज्यपाल को मुख्य मन्त्री की सलाह मानना आवश्यक है अथवा न मानना राज्यपाल पर निभर है।

श्री चुगानी एडवोकेट

मुख्य मत्री को सलाह देने का अधिकार हे किन्तु उसका मानना न मानना राज्यपाल पर निर्भर है।

मध्य प्रदेश की इस राजनैतिक गुत्थी को सुलझाने के लिये आज देहली से काग्रेसी सदस्यो की एक मण्डली भी भोपाल आ पहुँची जिसमे प्रमुख थे श्री प्रकाश चन्द्र सेठी एव श्री शभु नाथ शुलक।

२७ जुलाई १९६७

देहली मे

आज देहली मे प्रधान मन्त्री की कोठी पर पत्रकारो की भीड लगी थी। वे जानना चाहते थे कि मध्य प्रदेश की राजनैतिक गुत्थी सुलझाने की क्या सम्भावनायें हैं। उनके विभिन्न प्रश्नो के उत्तर मे प्रधान मन्त्री ने कहा कि वे अब भी मिश्रजी से इस प्रश्न पर सहमत हैं कि उन्ह सदन मे परास्त होने पर भी राज्यपाल को सदन भग की सलाह देने का अधिकार है तथा दल-बदल की समस्या का समाधान मध्यावधि चुनाव मे ही है। कतिपय विधायको ने अपने दल से विश्वासघात किया है अत मतदाताओ को यह अवसर मिलना चाहिये कि उन्हे पुन अपना मत देकर दडित करें। सम्भव है कुछ लोग अपने स्वय के प्रभाव से चुनाव मे जीते हो पर फिर भी काग्रेस टिकट स्वीकार कर उन्होने एक नैतिक उत्तरदायित्व और दल विशेष की सहायता ली थी और यदि वे उसे पूरा न करे तो इसका दण्ड जनता उन्हे देगी आज यह

कहना कि स्वय काग्रेस ने दल-बदल की पहल की तथा श्री पुतमथाने पिल्ले को काग्रेस मे स्वीकार कर इस प्रथा का श्री गणेश किया तथा अब वह दूसरे दलो को यह करते देख कर क्रुद्ध होती है गलत है क्योकि यह दल बदल प्रलोभन पर आधारित न थे तथा सामुहिक न थे। एक पत्रकार ने जब यह कहा कि प्रजा समाजवादी दल की मडली को काग्रेस ने क्यो ग्रहण किया तो प्रधान मत्री का उत्तर था कि ऐसा काफी छानबीन और पत्र व्यवहार के पश्चात् किया गया था यह न तो आकस्मिक था और न प्रलोभन के कारण। एक विशिष्ट पत्र के सम्वाददाता ने जब श्रीमती इन्दिरा गाधी से पूछा कि "राजमाता का यह कथन क्या सत्य हे कि आप मध्यावधि चुनाव के प्रश्न पर दुबारा विचार कर रही है।" तो उन्होने खीझकर कहा "नही"। पता नही राजमाता किस आधार पर ऐसे वक्तव्य देती हे। उन्हे मेरे कथनो का तात्पर्य जनता को समझाने की आवश्यकता नही। उन्हे स्वय के लिये जो कुछ भी कहना हो कहे।

श्रीमती इन्दिरा गाधी के काग्रेस दल-बदल के दोष से मुक्त करने की यह बात अभी प्रकाशित भी न हुई थी कि राजस्थान के एक स्वतन्त्र टिकट विजयी ससद सदस्य श्री जमनालाल बरुआ को काग्रेस दल मे स्वीकार कर लिया गया। ससद मे दल-बदल का यह प्रथम काड था और हाई कमाड के इस निर्णय को लेकर काग्रेस पार्लियामेटरी बोर्ड की अ तरग की बैठक मे खूब चखचख हुई। यहा तक कि वरिष्ठ सदस्य श्री हनुमतैया ने तो यह भी कह डाला कि काग्रेस के हाथी के दात दिखाने के अलग तथा खाने के अलग है किसी प्रकार की आचरण सहिता बनाने के पूव काग्रेस को अपना आचरण ठीक करना चाहिये। श्री मोहन धारिया तथा श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ने इस प्रकार के दल-बदल का घोर विरोध करते हुये कहा कि इसे रोकने के लिये तो तुरन्त कानून बनाना आवश्यक है। श्री पच हजारी ने तो स्पष्ट कहा कि एक ओर तो काग्रेस अपने दल-बदलुओ को दण्ड देने के लिये मध्य-

प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव कराना चाहती है तो दूसरी ओर स्वतन्त्र दल के बरुआ को अपने दल मे स्वीकार कर उसी कृत्य को प्रोत्साहन करना चाहती है। यह दोहरा माप दण्ड कैसा। पार्लियामेटरी बोड को अपना निर्णय वापिस ले जाना चाहिये क्योकि यह अशोभनीय है तथा तकसगत नही।

मुख्य मत्री राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह दे सकते हैं अथवा नही इस प्रश्न पर आज भी देहली मे निणय न हो सका। प्रधान मत्री तथा विधि मत्री इस प्रश्न पर सहमत न हो सके। विधि मत्रालय का मत था कि बहुमत विहीन मुख्य मत्री की इस प्रकार की सलाह मानने को राज्यपाल बाध्य नही। राज्यपाल स्वय राष्ट्रपति के प्रतिनिधि की हैसियत से विधान सभा भग करने के आदेश सविधान की धारा ३५६ के अन्तगत उस समय दे सकते है जबकि शासन चलाने के लिये अन्य विकल्प उनके सामने न हो किन्तु अनुच्छेद १७४(२) जिसमे राज्यपाल द्वारा अथवा सदन भग किये जाने की व्यवस्था है इस स्थिति मे तो लागू नही होता। आज अन्त मे यह प्रश्न कानूनी सलाह के लिये देश के महा न्यायवादी को सौप दिया गया।

सविधान पर हस्ताक्षर करने वाले एव उसके निर्माताओ मे से एक कानून के विशेषज्ञ श्री के० एम० मुन्शी ने भी जो स्वय उत्तर प्रदेश के राज्यपाल भी रह चुके हैं आज कहा कि राज्यपाल सविधान के अनुसार मुख्य मन्त्री की सलाह मानने को बाध्य नही है। उनके मतानुसार सदन के बहुमत का निणय सदन मे ही होना आवश्यक है। उन्होने कहा कि बहुमत विहीन मुख्य मत्री को सदन की इच्छा मानकर त्यागपत्र दे देना चाहिये जिससे विपक्षी दल शासन सभाल सके। यदि यह सलाह न मानी गई तो इस सवैधानिक समस्या का हल सदन मे न होकर सडको पर होगा। राज्यपाल का सदन के सत्रावसान का अधिकार एक विशिष्ट अधिकार है जिसका प्रयोग एक पराजित मुख्य मत्री की राजनैतिक चालो के हेतु नही किया जाना चाहिये।

काग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज इस समस्या के राजनैतिक पहलुओं तथा काग्रेस सस्था के हित की दृष्टि से इसका विश्लेषण करने मे सलग्न थे। उनका आज का मौन कुछ विशेष रहस्यमय था। ससोपा ससद सदस्य श्री मधुलिमये आज यह सूचना पाकर कि भोपाल मे कल कुछ विशेष गडबडी की सभावना है अपने कुछ सहयोगियो के साथ देहली से भोपाल को ट्रेन द्वारा रवाना हो गये।

भोपाल मे

भोपाल के राजनैतिक वायुमडल मे आज विशेष गर्मी थी। श्री गोविन्द नारायण सिंह ने आज दोपहर एक वक्तव्य मे कहा कि उन्हे विश्वस्त सूत्र से सूचना प्राप्त हुई है कि काग्रेसी विधायक कल सदन मे अशातिमय वातावरण उत्पन्न करने के लिये कटिबद्ध है तथा गाली गलोज के अतिरिक्त हाथापाई भी करने को उतारू होगे किन्तु विरोधी दल ने यह निश्चय कर लिया है कि उनके समस्त सदस्य पूर्ण शान्त रहेगे अपशब्द तथा आवश्यकता पडी तो मारपीट भी सहन करेंगे किन्तु प्रतिकार न करेंगे। विपक्षी दल की सख्या अब १६० तक पहुच चुकी है। विपक्षी दल ने प्रधान मन्त्री तथा राष्ट्रपति को तार भेजकर हिंसा रोकने के लिये प्रेक्षको की माग की है क्योकि स्थिति असमान्य है।

आज के पत्रो मे मध्य प्रदेश की समस्या को लेकर महत्वपूर्ण सम्पादकीय लेख लिखे गये। टाइम्स आफ इण्डिया ने लिखा कि काग्रेस द्वारा दल-बदलुओ को भाति-भाति के प्रलोभन दिये जा रहे है तथा इसके लिये पुलिस के गुर्गे भी मैदान मे शायद कूद पडे है किन्तु अभी तक कोई सदस्य फुसलाया न जा सका है। मन्त्री पद एव धन का प्रलोभन असफल रहा है। एक अन्य लोकप्रिय पत्र ने लिखा है।

"काग्रेस पार्लियामेटरी बोर्ड ने जिस अनिश्चित अवस्था मे मध्य प्रदेश के प्रश्न को मुख्य मन्त्री तथा काग्रेस अध्यक्ष के हाथो मे छोडा है उससे यह स्पष्ट होता है कि वह इतनी कमजोर हो गई है कि सिद्धान्तो की मर्यादा व्यक्तियो पर नही लागू कर सकती। इसमे मुख्य कमजोरी

प्रधान मन्त्री की है जो अब भी मिश्रजी को समय देकर दल बदलुओं को किसी भी शर्त पर कांग्रेस मे वापिस बुलाना चाहती है चाहे फिर मन्त्रिमण्डल की सख्या २० से ३० ही करनी पडे। इसका तात्पर्य यह है कि जिस कांग्रेस ने दल-बदल की अगुवाई बिहार मे स्वतन्त्र पार्टी के कई सदस्यो को अपने दल मे मिलाकर की थी वही अब फिर सौदागरी करके मिश्र मन्त्रिमण्डल को बचाना चाहती है। मध्यावधि चुनाव से भी उसे भय है क्योकि यह परम्परा एक दिन उसे ही खा जावेगी। बिहार मे जब स्वतन्त्र सदस्य कांग्रेस मे मिले तब कांग्रेस भूल गई कि वह किन वायदो के साथ धारा सभा मे चुने गये थे और उनके कांग्रेस मे मिलने का कोई औचित्य न था। वास्तव मे कांग्रेस की अब एक ही नीति है कि सत्ता मत छोडो। देहली के "हिन्दुस्तान" म आज अपने सम्पादकीय लेख मे लिखा कि —

"मध्य प्रदेश की राजनैतिक शतरज अब दिल्ली से उठकर भोपाल मे बिछ गई है। २८ तारीख को राज्यपाल ने विधान सभा की बैठक बुलाई है तब तक दोनो पक्ष साम, दाम, दण्ड और भेद के माध्यम मे विधान सभाईयो को अपनी अपनी तरफ फोडने के लिए जमीन आसमान एक कर देंगे। परिणाम विधान सभाईयो के भाव काफी ऊचे चढेंगे। कहते है कि घूरे के भी दिन फिरते है। कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड ने मध्य प्रदेश के बारे मे जो निर्णय लिया है वह वस्तुत बोर्ड के दो विरोधी पक्षो के बीच समझौता ही प्रयत्न है निर्णय मे मार्ग रेखा का स्पष्टीकरण लुप्त है। साफ है कि बोर्ड ने मध्य प्रदेश के मुख्य मन्त्री को चारो ओर से लक्ष्मण रेखाओ मे जकड कर ही भोपाल के क्रीडा-केन्द्र मे भेजा है। मध्यावधि चुनाव की बात बोर्ड की तरफ से नही सुनाई पडती। मिश्रजी के मु ह से ही सुनाई पडती है। इसलिए सम्भवत उसका लक्ष्य शतरज के मोहरे ही हैं शतरज नही। वास्तव मे मध्यावधि चुनाव के इस नारे मे कोई दम नही है न नीतिज्ञ न सवैधानिक और न राजनैतिक उल्टे यह जनता मेम्बरो और स्वय

सरकार के लिये दण्ड की कार्यवाही उनके मतदाताओ को दण्डित करना कहा तक उचित होगा।

आज २७ जुलाई की रात्रि थी। जनतत्र के पर्दे के पीछे के सघष की काली रात। राजमाता, महाराज माधवराव, महारानी माधवीराजे भोपाल के इम्पीरियल होटल सावरे मे थे। राजपरिवार की यह चिंता-पूरा रात्रि थी कारण कि दल बदलू विधायको की रक्षा का भार उन पर था। काग्रेस दल की तैयारियो मे शासन की असीम शक्तियो का सहयोग था और इधर राजमाता के पास गिने चुने किन्तु निर्भीक स्वयसेवको की पवित्र सेवा की भावना थी। ग्वालियर से जब विधायको की टोली बस द्वारा रवाना हुई तो गुप्त पुलिस की रिपोट कुछ मिनटो मे ही भोपाल जा पहुँची और बसो के शिवपुरी मे पदापरा करने के समय की सूचना भी पुलिस की डायरी मे स्थान पा गई। सभावना यह थी कि पूव ग्वालियर राज की सीमा पार करने के पश्चात बसो को किसी निर्जन स्थान पर रोक कर जहा ग्रामवासियो की सहायता भी उपलब्ध हो जावे, २५-३० विधायको का अपहरण कर लिया जावे तथा दो तीन दिनो उन्हे भोपाल से बाहर रखा जावे ताकि वे सदन मे मतदान मे शामिल न हो सके अथवा यदि हो भी तो चादी के जूतो के जोर से उनसे काग्रेस के पक्ष मे मतदान कराया जावे। इस अभिसधि की कुछ कुछ आहट राजमाता के स्वय सेवको एव महाराज के नवयुवक साथियो को मिल गई थी। तथा वे ग्रामवासियो तथा अन्य युवको की सहायता से इस षड्यत्र को निष्फल करने के लिए कटिबद्ध थे। शिवपुरी मे आकर बसें सीधे गुना की ओर रवाना न हुई किन्तु आगरा-बाम्बे रोड पर आकर भी वे सहसा छतरी उदान की ओर मुड गई तथा दो तीन घन्टे विधायको ने भोजन कर यहा विश्राम किया। शिवपुरी से बस रवाना होने की सूचना पाकर गुना की पुलिस बसो की वहा प्रतीक्षा कर रही थी किन्तु बसो को समय पर न आते देखकर थाने मे खलबली मच गई और जीपें इधर उधर दौडने लगी। स्वय सेवक मडली जो

सहायतार्थ गुना मे थी सही सूचना प्राप्त कर निश्चित थी। विधायको की टोली अर्द्धरात्रि के लगभग गुना, वीनागज पार करकेव्यावरा की ओर अग्रसर हो रही थी कि दो तीन साईकिलो पर सवार युवका ने आकर सूचना दी कि व्यावरा मे कुछ लोग ५-६-जीपो को लेकर जिन पर ग्वालियर राज्य की जाली पट्टिया लगी हुई है बसो को जबदस्ती रोकने के प्रयास मे खडे हैं। वे २५-३० आदिवासी हरिजन विधायको को इन जीपो मे बिठाकर भोपाल पहुचाने के बहाने उतार लेंगे तथा फिर उनका अपहरण कर लेगे। विधायको से कहा जावेगा कि राजमाता ने ये जीपें जिन पर महल की लाल पट्टी तथा नम्बर हैं उन्हे लेने के लिये भोपाल से भेजी है जिससे शीघ्रता से सुरक्षित अवस्था मे भोपाल पहुच सकें। बस की यात्रा मे खतरा है। इन व्यक्तियो के पास बन्दूकें भी है तथा ड्राइवरो की पोशाक ग्वालियर महल के ड्राइवरो के समान है। इस अभिसधि को जान वे नौजवान साथी जो विधायको की रक्षा हेतु सशस्त्र बस ड्राईवर के पास बैठे यात्रा कर रहे थे और भी चौकना हो गये तथा वे दो जीपे जो बस के साथ साथ उनकी रक्षा के हेतु आ रही थी अब बसो के आगे हो ली। वर्षाग्रस्त काली मिट्टी की गीली चिकनी तग सडकें तथा गुप अन्धेरा और भी कठिनाई उपस्थित कर रहा था। जैसे तैसे व्यावरा आया तथा बसो के द्वार अन्दर से कसकर बद कर लिये गये। जीपो की पक्ति सडक अवरुद्ध किये हुये थी, बसो को विवश होकर रुकना पडा। ग्वालियर की वास्तविक जीपो के स्वयसेवक सवार प्रतिद्वन्दियो से उलझ पडे। कहा सुनी बढती गई और तभी राजमाता के कतिपय अनुगामियो ने बीच सडक पर खडी खाली जीपो को स्टार्ट कर किनारो के खडो मे डाल दिया और बसो के लिये माग साफ कर दिया। बसो के द्वार बन्द थे। विधायको के काग्रेसी मित्र उनका नाम ले लेकर उन्हे बस से बाहर आकर अपनी रक्षा करने का उदबोधन कर रहे थे और उधर सशस्त्र स्वयसेवक धक्को पर धक्के खाते बसो के द्वार को अन्दर से पकडे हुये थे कि कही वे बाहर के जोर के कारण खुल न पडे।

बस की खिडकी के काचो पर बाहर से प्रहार हुये किन्तु स्वयसेवको नें विधायको को बचाया तथा बस के ड्राइवरो ने सडक पर अपना कौशल दिखा ही दिया तथा सडको के खाली कोने मे से गाडी निकालकर बसो का द्रुत गति से व्यावरा से नरसिहपुर की ओर दौडा दिया। ग्वालियर महल की असली जीपो के सवार नकली जीपो की सवारियो से इस प्रकार उलझ पडे कि प्रतिपक्षी अब बसो का पीछा करने मे भी असमथ रहे। अपहरण की अभिसधि असफल हो गई। विधायक गण सकुशल नरसिहगढ पार कर भोपाल की ओर उस मध्यरात्रि की वेला मे अग्रसर हो चले।

भोपाल मे राजमाता को आशा थी कि रात्रि के १०-११ बजे तक विधायक मडली आ जावेगी अत वे उनके समाचार जानने को उत्सुक हो भवन मे टेलीफोन के पास ही बैठी रही। जब रात्रि के ११ बज गये तथा विधायको की बस का कोई भी समाचार राजमाता को प्राप्त नही हुआ तो उनका मन भाति भाति की आशकाओ से काप उठा तथा उन्होने समीप ही बैठे अपने सहयोगियो से कहा 'पता नही क्या बात है मेरा मन कहता है कि कही माग मे कोई काग्रेसी मडली इस बस को रोक न ले। क्या न हम लोग उन्हे खोजने व्यावरा की ओर चलें।

विन्ध्य क्षेत्र के साहसी नेता श्री गोपाल शरण सिह ने कहा "महाराज आप चिंता न करे। इस समय स्वय आपका उस ओर जाना ठीक नही है। जीप और कुछ साथी लेकर मे उस ओर जाता हू दो घटे मे आपको अवश्य ही पूरा समाचार प्राप्त हो जावेगा"।

"आप जा तो रहे हैं गोपाल शरण जी किन्तु । राजमाता बोली, "किन्तु क्या महाराज। मेरी ओर से आप चिन्तित न हो। मैं रक्षा करने मे पूर्ण समर्थ हू। सही समाचार लाकर आपको दू गा।"

ठीक है किन्तु आप लडाई झगडा किसी को न करने दीजियेगा। रात्रि के १२ बजे के उपरात उन्होने जबरदस्ती पुत्रवधू एव पुत्र को शयनविश्राम के लिये भेज दिया किन्तु स्वय चिन्ता के कारण झपकी

भी न ले पाई । उस रात्रि ड्यूटी पर उनके पास थे केवल दवगढ के ठा लोकेन्द्रसिंह । राजपरिवार के समस्त अनुचर, सहयोगी, हितेच्छु जिनकी सख्या काफी थी इस वेला मे व्यवस्त थे विधायको की सुरक्षा के हेतु भाग दौड करने तथा उनके विश्राम की विभिन्न कोठियो मे व्यवस्था करने मे। चिन्ता और थकान से दूर यह मनीषी अपने उत्तरदायित्व के प्रति उस रात्रि इतनी सजग थी कि उसे किसी प्रकार भी चैन न था । हर ५-१० मिनिट के बाद फोन द्वारा समाचार जानने का प्रयत्न करती । उसकी उद्विग्नता का अन्त था । रात्रि के दो बजे जब विधायक भोपाल आगमन की कोई सूचना न हुई तो उनका मन आशका से भर उठा तथा वे सही स्थिति जानने को आतुर हो उठी । उन्होने मोटर द्वारा भोपाल से नरसिहगढ की ओर जाने की तैयारी चुपचाप ही प्रारम्भ कर दी । कुछ क्षणो मे जब वे तैयार होकर बाहर आई तो उनके सचिव लोकेन्द्रसिह जी ने उनके साथ चलने का आग्रह किया तथा कहा कि रात्रि के समय अकेले राजमाता को इन अभिसधि पूण अवस्था मे जाना उचित नही यदि आवश्यक हो तो वे महाराज के साथ स्वय जाने को तत्पर है । इस पर राजमाता का उत्तर था । नही नही भैया वह थकान से चूर होकर विश्राम करने गये है । मैं नगर से दूर इस निर्जन कोठी मे उन्हे अरक्षित अवस्था मे छोडना निरापद नही समझती। वे दोनो अल्हड है आप यही उनके पास रहे । मै अकेले ही उन कोठियो की ओर जहा विधायको का ठहरने का प्रबन्ध है जाती हू । आप चिन्ता न करें । श्री लोकेन्द्रसिह उन क्षणो मे असमजस मे पड गये । सामने थी ममतामयी मा जो पुत्रवधू की रक्षा हेतु शकित होते हुए भी स्वय को गहन उत्तरदायित्व को अग्नि मे झोकने को प्रस्तुत थी । स्वय की रक्षा के सबध मे पूणतया निभय वे अकेली ही बाहर जाने को सन्नद्ध थी यह खूनी सरकार जो कर गुजरे वह कम है । अत मे श्री लोकेन्द्रसिह के रोकने पर भी वह क्षत्राणी न रुकी तथा अकेली ही इस रात्रि के गहन अधकार को चीरती हुई मोटर मे जा बैठी । भाग्यवश दूसरी कोठी पर

पहुचते ही उन्होने विधायको का बस से उतरने का कोलाहल सुना तथा फिर उनके कानो मे आई उस प्रात मुहूत मे हुई वह अभिप्रिय घटना जिससे जूझकर विधायको की यह टोली भोपाल आ सकी थी। एक मीठी हसी के साथ सबका स्वागत करते हुये राजमाता ने उनकी कुशलमगल पूछी तथा दयामय भगवान की अनत कृपा के लिये हृदय से आभार माना। उस मनीषी को इससे अपने मध्य मे पाकर साथी विधायको की भावना मे उसके प्रति अपने समपरण की माला मे सुरभित पुष्प पिराने लगी। सब एक स्वर से कह रहे थे "कैसी है यह हमारी नेत्री। लोक सेवा का यह कैसा समुज्जल रूप है।"

उसी रात्रि को किन्ही स्वयसेवको ने ग्वालियर से आकर वहाँ के शासकीय प्रेस मे छपे हुये मध्यप्रदेश के नवीन बजट की कुछ प्रतिया लाकर राजमाता के सन्मुख प्रस्तुत की जिन्हे देखकर वे अचम्भे मे भर गई। सनद के उप नेता श्री सकलेचा, ससद सदस्य श्री मधुलिमये, महाराज माधवराव तथा अन्य विधायको ने भी बजट को देखा तथा वे भी आश्चय मे भर गये क्योकि उन प्रतियो पर यह छपा हुआ था कि यह बजट लोकसभा मे पारित होने के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह था कि मुख्यमन्त्री श्री मिश्र तथा केन्द्र के अधिकारियो ने मिलकर यह निश्चय कर लिया था कि भोपाल मे विधानसभा भग कर दी जावे तथा राष्ट्रपति शासन प्रसारित कर इस वष का बजट लोकसभा मे प्रस्तुत कर लिया जावे। तो क्या विधानसभा का कल का अधिवेशन एव शक्तिपरीक्षण लोकतन्त्र का मखोल था। राष्ट्रपति के निरगय और उनकी घोषरगा के पूव यह मान लेना कि प्रदेश मे राष्ट्रपति शासन लागू होगा, प्रजातन्त्र पद्धति का खुला अपमान करना था। श्री लिमये ने इस प्रकाशन से सदन की मर्यादा भग मानी तथा इस मामले को कल ही लोकसभा मे उठाने का निश्चय कर उन्होने श्री अटलबिहारी वाजपेई को इसके लिये तैयार करना आवश्यक समझा। देहली को ट्रक काल लगाया गया और जब अर्जेन्ट काल भी नही मिला



सन १९६७ के चुनाव अभियानमे महाराज माधवराव सिंधीया को तिलक करते हुये एक ग्राम वधू ।

सन १९६७ के आम चुनाव में जनता के साथ महाराज माधवराव सिंधीया ।



सन १९६७ के आम चुनाव अभियानमे राजमाता,
अपने पुत्र महाराज माधवराव सिंधीया के साथ ।

तो महाराज माधवराव ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इमीडियेट काल लगाया तथा श्री वाजपेई से लिमये का परामश तब सभव हुआ। अन्त मे श्री वाजपयी ने यह वचन दिया कि वे प्रात काल ही सदन की मर्यादा भग के विशेषाधिकार प्रस्ताव का नोटिस लोकसभा अध्यक्ष को दे देगें। किन्तु श्री लिमये को बजट की प्रकाशित प्रतिया लेकर अवश्य ही तुरन्त देहली पहुच जाना चाहिये। निश्चय के अनुसार श्री लिमये बजट की छपी प्रतिया लेकर तुरन्त ही देहली को रवाना हो गये।

— o —

सोपान २९

सघर्ष की चरमसीमा

२८ जुलाई, १९६७

भोपाल मे

लम्बी प्रतीक्षा के उपरात अन्त मे २८ जुलाई भी आ गई जबकि भोपाल मे सदन का अधिवेशन राज्यपाल के आदेश द्वारा बुलाया गया था। देश के हर कोने मे सत्रावसान के औचित्य को लेकर प्रश्न उठे थे तथा मुख्यमन्त्री के न चाहने पर भी जनमत के समक्ष केन्द्रीय सरकार को झुककर जुलाई मास की समाप्ति के पूव ही राज्यपाल द्वारा सदन की यह बैठक बुलानी पडी थी।

प्रात काल १० बजे सदन के अध्यक्ष द्वारा जबकि दर्शक गैलरी तथा विशिष्ट अतिथिकक्ष खचाखच भरे थे तथा सदन के सदस्य अपने पूरे दल के साथ सदन मे उपस्थित थे, सदन की बैठक प्रारम्भ होने की घोषणा की गई। चारो ओर एक नाटकीय वातावरण तथा अमित उत्सुकता छा रही थी। रीवा के कांग्रेसी सदस्य ने एक विशेषाधिकार प्रस्तुत करते हुये कहा कि राजमाता के साथी आग्रे ने सदन की मर्यादा भग की है। उन्होने इस सदन के सदस्य श्री प्रभू दयाल का १९–२० जुलाई को अपहरण किया तथा उन्हे वे जबरदस्ती देहली ले गये और इस प्रकार श्री गहलौत को सदन मे उपस्थित होने से रोका। प्रस्ताव के पक्ष मे

बोलते हुये श्री गुलाबचन्द्र टामोट बन मन्त्री तथा श्री पी एन टडन ने कहा कि कई सदस्यो को डराया धमकाया गया है और आज भी उन पर अनुचित दबाव डाला जा रहा है। मुख्यमन्त्री श्री मिश्र ने आरोप लगाया कि एक बडे पैमाने पर विधायको का अपहरण किया गया है उन्हे उनके निवासस्थान से हटाकर किन्ही अन्य स्थानो पर विधायको का अपहरण कर बद करके रखा गया है अत वे अध्यक्ष से प्रार्थना करते हैं कि इन आसमान्य परिस्थितियो मे वे सदन की बैठक आज स्थगित कर दें ताकि वे स्वय मामले की जाच कर सकें। विरोध पक्ष की ओर से अन्य सदस्यो के अतिरिक्त सब श्री सकलेचा, चन्द्र प्रताप तिवारी आदि ने आरोपो को मिथ्या बतलाते हुये कहा कि यह सब शक्ति परीक्षण को टालने की पहल है। श्री मिश्र अपनी कुर्सी की रक्षा के लिये मतदान की घडी खिसकाना चाहते है। आरोप प्रत्यारोपो के मध्य कुछ समय के लिये सदन की कार्यवाही मे गतिरोध उत्पन्न हो गया। श्री मिश्र ने पुन कहा कि लोकतन्त्र की परम्परा के हित मे अपहरणकर्त्ताओ से निपटने मे वे अब तक असामान्य रूप से ठीक बताते रहे है किन्तु अब जबकि अपहृत विधायको को अपने सम्बन्धियो तथा मित्रो से मिलने की सुविधा भी नही दी जा रही है तो उन्हे भी कठोरता का व्यवहार करना पडेगा। उनका प्रस्ताव है कि विधायको को तुरन्त रिहा किया जावे तथा वे विश्राम गृह मे अपने अपने कमरो मे जाकर रात्रि विश्राम करें। वे स्वय यह आश्वासन देने को तैयार हैं कि उनसे मत्रिमण्डल का कोई भी सदस्य नही मिलेगा अत उन पर अब दबाव डालने का प्रश्न नही उठता। सदन की बैठक तुरन्त स्थगित करना आवश्यक है।

आज जबकि विशेषाधिकार की चर्चा सदन मे हो रही थी विपक्ष दल के उपनेता श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा ने नाटकीय ढग से कुछ कागजो को हिलाते हुये कहा कि ये दो प्रतियाँ राज्य के नवीन बजट की हैं जो शासकीय छापेखाने मे छापी जा रही हैं। इन प्रतिया पर छपी

टिप्पणी यह स्पष्ट करती है कि मुख्य मन्त्री तथा केन्द्रीय शासन योजनाबद्ध कायवाही इस सदन को भग कर राष्ट्रपति शासन को प्रदेश पर थोपने के लिये कर रहे हैं तथा इस बजट को लोक सभा मे प्रस्तुत करने के लिये छापा जा रहा है। सदन की इच्छाओ की पूरण अवहेलना करने के लिये श्री मिश्र स्वय उत्तरदायी है। मिश्रजी इस आकस्मिक प्रहार से बौखला उठे तथा चिल्लाकर बोले, "मेरे हाथ मे अभी भी कानून तोडने वालो के खिलाफ कायवाही करने का अधिकार है।"

श्री मिश्र को बीच मे टोक कर जब श्री चन्द्र प्रताप तिवारी ने कहा कि अध्यक्ष से प्राथना है कि अब बहस बन्द करवा कर आज का प्रस्ताव विशेषाधिकार समिति को सौपने की कृपा करे। विरोधी पक्ष को अपनी ताकत का पता है। इस पर सुना गया कि श्री मिश्र ने कहा कि विरोधी दल की क्या ताकत है इसी की आजमाइश के लिये वे मध्यावधि चुनाव की तैयारी करवा रहे है वैसे भी पिछले आम चुनावो मे वे श्री तिवारी की ताकत का पूरा पता लगा चुके है। इन दल-बदलुओ को वे मतदाताओ के सामने खडा न कर दें तो उनका नाम मिश्र नही।

इस गरमागरम बहस के बीच मे ही एक विधायक श्री रमेश दुबे ने अध्यक्ष को सम्बोधित करते हुये कहा कि वे कॉंग्रेस दल से त्यागपत्र देकर पुन जनसघ मे जा रहे हैं। इस घोषणा पर दशक तथा सदन के सदस्यो द्वारा गहरा हष प्रगट किया गया। दोपहर के १॥ बज रहे थे अत सदन की बैठक अपरान्ह के लिये स्थगित कर दी गई। सदन के बाहर पुलिस का चारो ओर जमघट था तथा भीड पर काबू पाने मे वह कई स्थानो पर असमथ हो रही थी।

सदन का अपरान्ह का अधिवेशन प्रारम्भ होते ही दल-बदलू सदस्य श्री गोविन्द नारायण सिह ने कहा कि ईश्वर के यहा न्याय देने मे देर है अधेर नही श्री मिश्र इसे न भूलें आज प्राय वे समस्त सदस्य जिनके अपहरण की बात कही जा रही है इस सदन मे उपस्थित है तथा अध्यक्ष

की आज्ञा होने पर वे एक-एक खडे होकर अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करने को तैयार है। जिससे कि मुख्य मन्त्री को सन्तोष हो जाये। कि उन पर किसी प्रकार का अनुचित दबाव नही है वे मुख्यमन्त्री की पुलिस के हथकडो से भयभीत नही न उन्हे मध्यावधि चुनाव का डर है। इसके उत्तर मे वनमन्त्री श्री तामोट ने माग की कि आगामी ४८ घण्टो मे वे विधायक सदन कक्ष मे ही रहे तथा श्री श्यामाचरण शुक्ल ने कहा कि वास्तविकता तो यह है कि इन सदस्यो का मस्तिष्क विपक्षी दल द्वारा धोया गया है तथा ये होश हवास मे नही है। इस पर श्री ब्रजलाल वर्मा ने कहा कि इस प्रकार का कथन माननीय सदस्यो का खुला अपमान करना है। माननीय शुक्लजी को ऐसा करने का कोई अधिकार नही है।

इस बहस का निणय अध्यक्ष ने यह कहकर दिया कि आज दल-बदलू विधायक गण या तो विधायक विश्रामगृह अपने अपने कमरो मे रात्रि मे विश्राम करेंगे अथवा यदि उन्हे भय है कि उन्हे काग्रेसी मन्त्रियो आदि द्वारा परेशान किया जायेगा तो वे सदन अध्यक्ष की कोठी पर आकर रात्रि ज्ञापन कर सकते है। इस निर्णय को मानकर रात्रि को विधायको को अपने बिस्तर सदन अध्यक्ष के बगले मे लगा देने का निश्चय किया।

सदन अध्यक्ष ने श्री रुकमणी प्रतापसिह का विशेषाधिकार प्रस्ताव ध्वनिमत लेकर विशेषाधिकार समिति को विचारार्थ सौप दिया तथा सदन की बैठक कल के लिए स्थगित कर दी गई।

देहली मे

देहली मे ससद सदस्यो को आज जब तार तथा फोन द्वारा यह सूचना प्राप्त हुई कि मिश्रजी ने ग्वालियर शासकीय प्रेस मे बजट लोकसभा मे प्रस्तुत करने के हेतु छपवाया गया है तो उनमे रोष की एक लहर व्याप्त हो गई। उधर श्री मधुलिमये भी देहली जा पहुँचे तथा

बजट की प्रतिया लोकसभा मे प्रस्तुत करने के लिए श्री वाजपेयी को दे दी। इस बजट को छपवाने का तात्पय यह था कि राष्ट्रपति के निर्णय और घोषणा के बिना मिश्रजी ने यह मान लिया था कि प्रदेश की विधान सभा भग कर दी जायेगी तथा राष्ट्रपति शासन लागू होकर लोक सभा के समक्ष पारित होने के लिए बजट प्रस्तुत करना होगा। विधान सभा के अधिकारो की अवहेलना कर, राष्ट्रपति तथा केन्द्रीय शासन को खिलौना मान लेना मिश्र सरकार का यह एक ऐसा काय था जिससे लोकसभा की मर्यादा भग होती थी। तदानुसार लोक सभा मे यह प्रश्न आज श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उठाया गया। ग्वालियर के छपे हुए बजट की दो प्रतियाँ प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि केन्द्रीय शासन का यह कतव्य है कि वह किसी भी मुख्यमन्त्री द्वारा भारतीय सविधान का मखौल न उडने दे। गृहमन्त्री ने कहा कि उन्हे मध्य प्रदेश के बजट के ग्वालियर प्रेस मे छपने के विषय मे कोई सूचना नही है तथा न इस प्रकार के कोई आदेश केन्द्र की ओर से मध्य प्रदेश शासन को दिये गये है। वे जानकारी प्राप्त करके ही सदन के समक्ष वस्तुस्थिति रख सकते हे। डा० राममनोहर लोहिया, प्रो० रगा आदि ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि श्री मिश्र के अनुयायी कल विधान सभा मे दगा हिंसा करने पर उतारू है। यदि ऐसा कुछ हुआ तो यह सदन केन्द्रीय शासन को इसका उत्तरदायी मानेगा। श्री मिश्र को इस सम्बन्ध मे चेतावनी दे दी जाये। श्री मधुलिमये ने अपने भोपाल प्रवास के दिनो मे जो जानकारी बजट काड के सम्बन्ध मे प्राप्त की थी वह इस प्रकार थी कि २२ जुलाई की एक वित्त विभाग के केन्द्रीय अतिरिक्त सचिव ने देहली से प्रदेश के वित्त सचिव को फोन किया था तथा श्री मिश्र की मध्यावधि चुनाव की घोषित सभावना पर सकेत दिया कि आवश्यकतानुसार कायवाही की जाये जिसके अनुसार प्रदेश के शासन ने नवीन बजट लोकसभा मे प्रस्तुत करने के लिए ग्वालियर प्रेस मे छपवा लिया था। श्री लिमये के अनुसार इस काय का कोई

औचित्य नही था क्योकि राष्ट्रपति शासन प्रचारित होने से सम्बन्ध मे राष्ट्रपति का निणय अभी हुआ ही न था तथा घोषणा से ही उसके लिए कार्य करना गलत था। उन्होने श्री वाजपेयी से फोन द्वारा कल रात्रि प्राथना की थी कि वे इस प्रश्न को लेकर लोकसभा मे मर्यादा भग का प्रस्ताव श्री मिश्र के विरुद्ध उपस्थित करें।

२१ जुलाई १९६८

भोपाल मे

ब्राह्म मुहूर्त की बेला मे शान्ति दायिनी पवन का पावन प्रसाद ग्रहण करते हुए राजमाता ने भगवद् स्मरण कर शैया त्याग किया तथा भगवान कृष्ण की अचना मे मन ही मन लवलीन हो वे आज के सघष के लिए अपने मन को तैयार करने लगी। लोकसेवा मे रत उनकी शक्ति अब भी अमित थी। प्रभात की इस मनोहारिणी छवि में उन्होने प्रासाद की खिडकी मे से झाककर देखा कि नगर के ऊपर मानो एक दूध सी धुली हुई श्वेत चादनी बिछी हुई है तथा सद्यस्नाता वृक्षो की हरित पत्तियो पर से शबनम की बूदे टपककर वसुन्धरा का अभिषेक कर रही है। निसग का यह वैभव, प्राची दिशा से झाकती उषारानी की यह उपमय की थाली उन्हे इन क्षणो मे बहुत भली लगी तथा वे भवन भास्कर का नमन कर अपनी दिनचर्या मे लग गई।

९ बजे के लगभग जब पूजा समाप्त कर वे नीचे आई तथा आगत व्यक्तियो से मिली तब उन्होने पुत्र से कहा, 'भैया! कुछ पता चला, कल रात्रि हमारे सब विधायक कहा रहे?"

मा, सुना है कि सबके बिस्तर कल रात्रि सदन अध्यक्ष की कोठी मे ही लगे। अब विधान सभा का समय हो रहा है सब ही आपसे सदन मे मिलेगे। और फिर जल-पान से निवृत्त हो राजमाता पुत्र, पुत्रवधू, एव कुमार सभाजीराव आग्रे के साथ विधान सभा भवन को रवाना हो गई।

घडी मे दस के घण्टे बजे कि भोपाल विधान सभा मे सदन अध्यक्ष ने सदन मे प्रवेश कर सदन की कायवाही प्रारम्भ करने की घोषणा की। सदन की दीर्घाये खचाखच भरी थी तथा कही तिल धरने को भी स्थान न था। सदन के बाहर सडको पर अथाह भीड थी जिसे पुलिस का दल रोके हुए था। चारो ओर उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी मिश्रजी के राज्य की घोषणा की।

एक काग्रेस विधायक ने सदन मे उठकर कहा कि उन्हे कल के अपने अधूरे भाषण को पूरा करने की अध्यक्ष अनुमति दे। अध्यक्ष ने शान्त भाव से एक बार पूरे सदन को देखा तथा आदेश दिया कि अब अधिक चर्चा की आवश्यकता नही है। शिक्षा मन्त्री अपने विपय से सम्बन्धित आपत्तियो का उत्तर दे जिसके पश्चात शिक्षा के अनुदानो पर मतदान होगा। शिक्षा मन्त्री श्री परमानन्द भाई पटेल के भाषण को सदस्यो ने बिना किसी आपत्ति के सुना। अध्यक्ष ने ध्वनि मतदान लेने के पश्चात काग्रेसी मन्त्री श्यामाचरण शुक्ल ने मत विभाजन की माग की तथा अध्यक्ष के सहमत होने पर दोनो ओर के विधायक उठ खडे हुए। दर्शको ने देखा कि मन्त्रिगण विरोधी पक्ष की ओर आये तथा श्रममन्त्री श्री देवीसिंह ने एक दल-बदलू विधायक को अपनी ओर बुलाकर उन्हे अपने साथ ले जाने का उपक्रम किया तथा प्रसोपा के श्री चन्द्र प्रताप तिवारी को धक्का दिया। उसी क्षण वनमन्त्री श्री गुलाबचन्द्र तामोट ने चिल्लाकर कहा कि विरोधी पक्ष काग्रेस के दो सदस्यो को अपनी ओर खीचकर ले गया है। अध्यक्ष ने मार्शल को बुलाकर दोनो सदस्यो को लाने की आज्ञा दी। मार्शल के तब साथ आये श्री अजमेरासिंह एव श्री प्रभुदयाल तथा श्री सकलेचा ने अध्यक्ष को सम्बोधित कर कहा कि श्री तामोट यह नाटक जान-बूझकर कर रहे है। मतो का विभाजन शान्तिपूर्ण ढग से किया जाना चाहिए। विधायको के मतदान के पश्चात अध्यक्ष ने कोलाहल के मध्य सदन मे घोषणा की कि काग्रेस के पक्ष मे केवल १३६ मत है तथा विपक्ष मे १५३। अत इस प्रकार सदन मे

हुए मतदान मे काग्रेस सरकार की हार १६ मतो से हो गई है। आज शनिवार है, अत सदन अब सोमवार तक के लिए स्थगित किया जाता है। अध्यक्ष की इस घोषणा के साथ सदन राजमाता की जय-जयकार से गूज उठा तथा जब यह घोष-ध्वनि सदन के बाहर पहुची तो जनता की भीड हष विव्हल हो नाचने लगी। राजमाता के दशनो के लिए प्रतिक्षण यह अपार भीड विधानसभा की ओर बढ रही थी तथा पुलिस के जवान इसके वेग को रोकने मे अपने को असमथ पा रहे थे। शीघ्र ही पुलिस की ओर से टुकडियो ने आकर यह कार्यभार सभाला तथा स्थिति को काबू मे किया।

राजमाता अपने स्थान से उठकर अब विशिष्ट अतिथियो की दीर्घा के समीप आई जहा विधायको ने उन्हे चारो ओर से घेर लिया तथा महाराज माधवराव एव महारानी माधवी राजे ने उनके पद स्पश कर उनका अभिनन्दन किया। ससद सदस्य श्री मधुलिमये ने जो आज प्रात काल ही देहली से लौटे थे राजमाता को उसकी विजय पर बधाई अर्पित की तथा सदन अध्यक्ष को उनकी निर्भीकता और क्तव्यपरायणता के हेतु सराहा। हष की इस बेला मे कुछ विधायको की उगली उठ पडी श्री मिश्र की ओर जो इस करारी हार के कारण हतप्रभ से सदन से बाहर जा रहे थे। अपनी वर्षों की राजनीतिक गरिमा अह तथा निरकुशता को खोकर। उनका यह पराभव जनशक्ति का द्योतक था। आज वे अपने जीवन की सबसे करारी मात शेखचिल्ली राजमाता के हाथ खा चुके थे।

राजमाता जब सदन के बाहर आई तो भोपाल नगरवासियो की विशाल भीड ने उनका अभिनन्दन किया। हर्षातिरेक कारण बाल, वद्ध, युवा पागल से हो रहे थे। राजमाता ने उनके सम्मुख हाथ जोड-कर जब अपना आभार प्रदर्शित किया तो समीप खडे कई विधायको के नेत्रो से आसू टपकने लगे। राजमाता ने कहा कि आज की विजय जनता

की आवाज की जीत है तथा इसमे हम भगवान की दया मानते हे।
एक क्रूर शासन का अन्त जनता की बलवती आवाज ने कर दिया।

हृष विह्वल भीड से चारो ओर से घिरी वष की फुहारो को तन पर साभार ग्रहण करती हुई अपने साथियो के साथ राजमाता पुन एक बार अपनी विजय यात्रा का नेतृत्व करती हुई राज्यपाल भवन की ओर अग्रसर हुई। उनके साथ थे श्री गोविन्दनारायण सिंह श्री सकलेचा, श्री ब्रजलाल यर्मा, श्री धमपाल गुप्त। श्री चिनपुरिया, चन्द्र प्रताप तिवारी आदि नेता गण। जनता राजमाता की जय-जयकार करती हुई पुलिस के जवानो के रोकते-रोकते राज्यपाल भवन के चारो ओर एकत्रित हो गई। राजमाता और उनके साथियो ने राज्यपाल को एक ज्ञापन देकर महामहिम से निवेदन किया कि काग्रेस मत्रिमडल परास्त हो चुका है। सविद के साथ सदन का बहुमत है तथा वहा वे मत्रिमडल बनाने मे समथ हैं अत राज्यपाल अब सविद नेत्री राजमाता को मत्रि-मडल निर्माण के हेतु आमत्रित करे।

राज्यपाल भवन से लौटकर जब यह मडली विधान सभा भवन आई तो पत्रकारो के समक्ष राजमाता ने केवल कहा कि —

"इस विजय के लिये ईश्वर को धन्यवाद है यह जनता की जीत हैं यदि अवसर मिला तो हम जनता को स्वच्छ शासन देने का प्रयत्न करेंगे। श्री गोविन्द नारायण सिंह ने कहा कि आज लूटपाट, आतक और रक्तशोषण का खात्मा हो गया। श्री मिश्र इस प्रदेश पर शासन करने वाले सबसे बडे तानाशाह थे। प्रदेश का आज मुक्त दिवस है।

श्री मिश्र विधान सभा की बैठक के पूर्व भी प्रधान मत्री तथा काग्रेस अध्यक्ष से परामर्श करने मे व्यस्त रहे थे तथा इसी कारण वे सदन मे भी कुछ विलम्ब से आये थे। आज प्रात उन्होने सदन अध्यक्ष से भी पत्र लिखकर यह प्रार्थना की कि मतदान का काय सोमवार ३१ जुलाई तक रोक दिया जाये क्योकि विधायको की स्थिति असामान्य है तथा यदि यह सुझाव न माना गया तो काग्रेस विधायक मतदान मे

भाग न लेंगे। जब अध्यक्ष ने उनसे सहमति प्रगट न की तो उन्होंने आरोप लगाया कि मतदान मे धाधलेबाजी हुई है। अपनी पराजय के पश्चात् उन्होने प्रधान मत्री एव काग्रेस अध्यक्ष से फोन द्वारा तथा उन्होने पत्रकारो के समक्ष कहा कि वे आज रात्रि देहली जा रहे है तथा वहा प्रधान मत्री, काग्रेस अध्यक्ष आदि से चर्चा करेंगे तथा काग्रेस अध्यक्ष ने यदि उनसे सहमति प्रगट न की तो वे और उनके समस्त साथी काग्रेसी विधायक सदन से अपने त्याग-पत्र प्रस्तुत कर देंगे तथा उस अवस्था मे विवश होकर उन्हे मध्यावधि चुनाव कराने देंगे। वे किसी भी अवस्था मे विरोधी पक्ष का मत्रिमडल नही बनने देंगे। पत्रकारो के यह पूछने पर कि यदि देहली से लौटने के पूर्व ही राज्यपाल उनसे त्यागपत्र की माग करते हैं तब तो उनका उत्तर था कि इस अवस्था मे वे राज्यपाल को मध्यावधि चुनाव की सलाह देकर अपने मत्रिमडल का त्यागपत्र दे देंगे। श्री मिश्र ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि काग्रेस अध्यक्ष तथा उपप्रधानमत्री के अतिरिक्त कुछ अन्य सदस्य भी मध्यावधि चुनाव की सलाह मे रोडा अटका रहे है तथा इस स्थिति मे वे देहली जाकर ही स्थिति स्पष्ट कर सकेंगे।

देहली मे

मध्य प्रदेश विधान सभा मे मिश्र मत्रिमडल की हार का समाचार पहुचते ही ससद विरोधी दल मे हर्ष की एक लहर फैल गई। कम्युनिस्ट सदस्य श्री भूपेश गुप्त के साथ विरोधी तथा अनेक काग्रेसी सदस्यो ने प्रधानमत्री को पत्र लिखकर माग की कि काग्रेस के लाभ के लिये सविधान के साथ हल न किया जाये तथा सविद को मंत्रिमडल बनाने का अवसर दिया जाये।

काग्रेस के अध्यक्ष श्री मोहनधारी ने कहा कि श्री मिश्र को सम्मानपूवक अपनी हार मानकर मध्यावधि चुनाव की सलाह राज्यपाल को

नही देना चाहिये क्योकि देश की सघीय एव एकात्मक ढाचे मे राज्य सरकार की स्थिति केन्द्रीय सरकार जैसी नही है ।

डा० राममनोहर लोहिया तथा श्री जोशी ने कहा कि काग्रेसी कुशासन का एक बडा स्तम्भ ढह गया है । कह नही सकते कि उसका दिल्ली के स्तम्भो और उनकी बुनियाद पर कहा तक असर होगा । मध्यावधि चुनाव के सुझाव को अस्वीकार करना आवश्यक है अन्यथा काग्रेस भी केन्द्र मे अपना बहुमत खो देगी ।

जनसघ के श्री वाजपेयी ने कहा कि प्रदेश का आज मुक्ति दिवस है । विधान सभा भग करने का प्रश्न नही उठता । सविद को मन्त्रि-मडल बनाने के लिये राज्यपाल को निमन्त्रित करना आवश्यक है ।

स्वतन्त्र दल के श्री दाया भाई पटेल ने कहा कि विरोधी पक्ष के विवेक नेतृत्व के लिये राजमाता बधाई की पात्र है । मिश्रजी की हार से लोकतन्त्र मे आस्था बढेगी । मध्य प्रदेश की काग्रेस सरकार की हार के कारण प्रधान मन्त्री का वह नैतिकदायित्व है कि वे तुरन्त त्यागपत्र दे दें ।

प्रसोपा के श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी ने कहा कि श्री मिश्र को चाहिये कि वे सम्मानपूवक अपना त्यागपत्र दे दें । यदि मध्यावधि चुनाव करायें तो कई राज्यो मे उन्हे कराना अनिवाय होगा ।

निदलीय सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि काग्रेस को जनता ने अस्वीकृत कर दिया है । सविद को मन्त्रिमडल के हेतु अवसर देना आवश्वक है ।

कम्युनिस्ट सदस्य श्री राममूर्ति ने कहा कि निणय हो गया है कि बहुमत श्री मिश्र के साथ नही है केन्द्रीय सहयोग के बाद भी वे हार गये है । राज्यपाल को अब किसी प्रकार की सलाह देने का उन्हे अधिकार नही है ।

प्रसोपा के श्री मुलक गोविन्द रेडी ने कहा कि मुख्य मत्री और प्रधान-मत्री की धमकियो के बावजूद प्रदेश की जनता ने काग्रेस को अस्वीकृत किया है। श्री मिश्र को त्यागपत्र देकर विरोधी दलो को सुशोभित करना चाहिये।

श्री आर० एन० सिंह देव उडीसा ने कहा कि मध्य प्रदेश मे मध्यावधि चुनाव का कोई औचित्य नही। आश्चय है कि राज्यपाल कांग्रेस का एक एजेन्ट बना हुआ है न कि राष्ट्रपति का निष्पक्ष परामर्शदाता।

श्री एन० सी० चटर्जी ने कहा कि राजमाता की आज की विजय जनसाधारण की जीत है।

श्री जगतनारायण जालधर ने कहा कि मध्य प्रदेश मे जनता अब काग्रेस के साथ नही है। काग्रेस का उसके प्रति रवैया देश के अन्य राज्यो मे प्रभाव डालेगा।

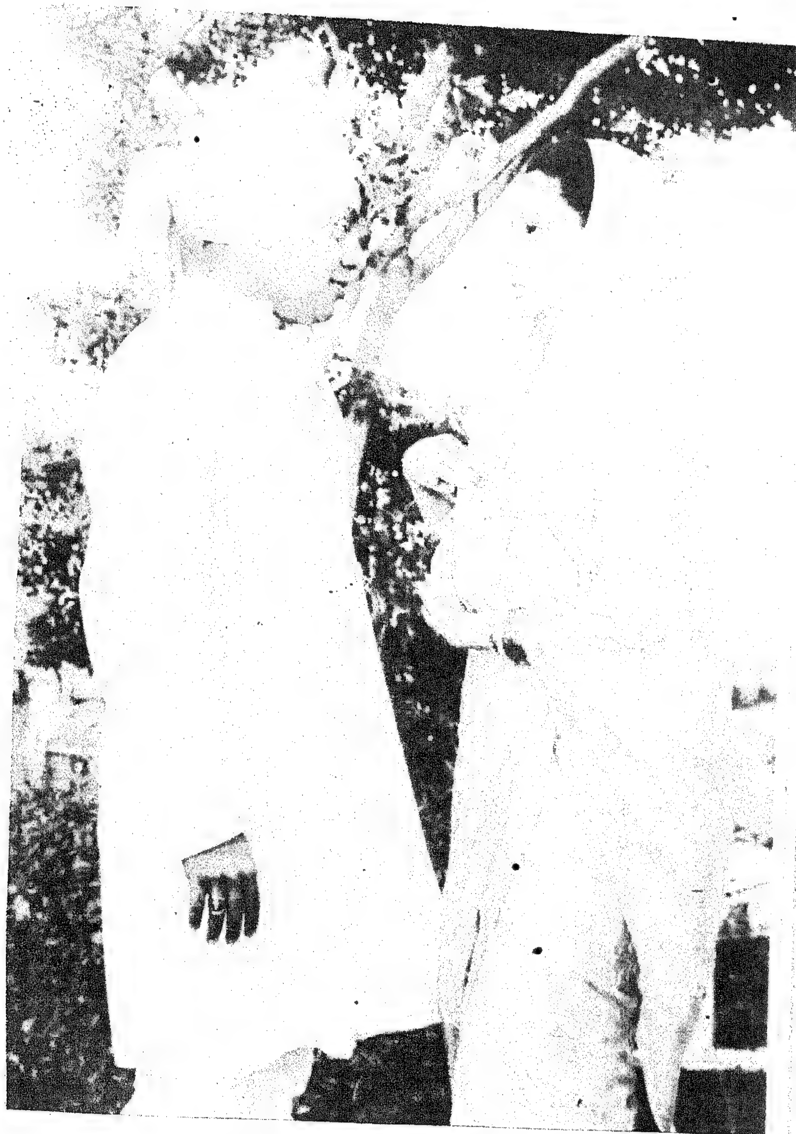
देहली मे दोपहर से लेकर सन्ध्या तक काग्रेस हाईकमाड मे मध्य प्रदेश को लेकर चर्चा चलती रही। श्री मिश्र ने गृहमत्री, प्रधानमत्री तथा काग्रेस अध्यक्ष से पुन बातचीत की। 'गृहमत्री श्री चह्वाण राष्ट्रपति तथा प्रधानमत्री से मिले। अन्त मे पूण विचार विमश के पश्चात काग्रेस अध्यक्ष ने श्री मिश्र से फोन पर कहा कि वे आज रात्रि तक अपने मत्रिमडल का त्यागपत्र अवश्य ही राज्यपाल को दे दें तथा उनका आदेश है कि वे मध्यावधि चुनाव की सलाह राज्यपाल को न दे। श्री कामराज ने श्री मिश्र की यह जिद्द अस्वीकार कर दी कि वे देहली आकर विचार-विमश के पश्चात सोमवार को इस्तीफा देंगे। श्री कामराज ने स्पष्ट आदेश श्री मिश्र को दिये कि पहिले वे अपने मत्रिमडल का त्यागपत्र राज्यपाल को दे दें ताकि सविद का मत्रिमडल तुरन्त बुलाया जा सके। अथवा बजट पारित होकर सवैधानिक सकट टल सके। श्री मिश्र की भाति-भाति की धमकियो का तथा काग्रेस विधायको मे

त्यागपत्र दे देने की सभावना का भी श्री मिश्र का राज पर कोई प्रभाव न पडा तथा हारकर श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने उस रात्रि को ११ बजे अपने मत्रिमडल का त्यागपत्र राज्यपाल को सौप दिया। और उसी क्षण उनकी उस ऐतिहासिक निरकुशता का अ त हो गया। जिसने बस्तर-काड और ग्वालियर गोलीकाड का उद्भव किया था।

अर्द्ध रात्रि के उपरान्त जब यह सुखद समाचार राजमाता को प्राप्त हुआ तो उन्होने भगवान का शत-शत आभार माना तथा वसन्त आश्रम के वे दिन जिन्हे उन्होने अन्याय का प्रतिकार की क्षमता प्रदान की थी इस बेला मे उनकी कल्पना मे सजग हो उठे। क्षत्राणी लेखा की यह विजय तथा एक निरकुश शासक का पूर्ण पराभव मध्य प्रदेश की जनता के मानस पटल पर छा गया तथा श्री मिश्र के नगर जबलपुर मे 'मिश्रा हटाओ" समिति ने एक वृहद जलूस निकालकर तथा रात्रि को नगर मे दीपावली मनाकर अपने हर्ष की अभिव्यक्ति की। यह वही जबलपुर था जोकि मिश्र मन्त्रिमण्डल के तीन बडे नेताओ का श्री परमानन्द पटेल, श्री कु जीलाल दुबे तथा स्वय श्री मिश्र जी का गृह नगर था और जहा जनता श्री मिश्र के अत्याचारपूर्ण शासन से त्राण पाने लिए आकुल हो उठी थी।

सोपान ३०

राजदम्पति



श्रीमंत महाराज जीवाजीराव सिंधीया एवं महारानी विजयाराजे सिंधीया परामर्श मे लीन वृक्ष के तले ।



महारानी और श्री गोविंदवल्लभ पंत.
गृहमंत्री, भारत शासन

राष्ट्रपती राधाकृष्णंन को नमन करते हुये
महारानी विजयाराजे सिंधीया ।

सोपान-३०

संघर्ष का अन्त

३० जुलाई सन् १९६७ को जब कि राजमाता के प्रबल विरोधी श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र की सरकार का पतन हो गया तथा कांग्रेसी दल को अपने नेता की हठधर्मी और जातिवादिता एव निरकुशता के कारण मुह की खानी पडी तब विधान सभा मे सदन की कार्यवाही स्थगित हो जाने के बाद राजमाता सदन के बाहर जाने लगी तो कुछ ही कदम दूर अध्यक्षीय दीर्घा मे बैठे हुये अपने एकलौते प्रिय पुत्र महाराज माधवराव सिंधिया और पुत्र वधू महारानी माधवी राजे को देखकर वे हर्षित हो उठी। ममतामयी मा के विमल स्नेह की गगरी छलक गई और तुरन्त ही पुत्र और पुत्रवधू ने राजमाता के निकट आकर उनके चरण स्पर्श किये। इस राजनैतिक विजय और गहन वात्सल्य की शुभ्र छटा देखने के लिये दर्शको की दृष्टि इस ओर स्थिर हो गई और राजमाता ने अपने नयनो मे हर्ष के अश्रु भरकर तथा एक हाथ भगवान की ओर उठाकर अपने पुत्र और पुत्रवधू को अक मे भर लिया और फिर सीपी-सी आखो से मोतियो की वर्षा करते हुए उन्होने दोनो के मस्तक पर अपने वरद कर बार-बार फेरे। सदन के अन्दर यह अनोखा दृश्य जहा विधायक गण देख रहे थे। वही दर्शक दीर्घा से सैकडो आखे बरबस ठिठक कर रह गई। राजपरिवार के गहन स्नेहपूर्ण आत्म-विभोरता की यह झलक देखकर दर्शकों की आखें भी खुशी से सजल दिखाई दी। राजमाता अपने पुत्र और पुत्रवधू के साथ सदन के बाहर आई तो उनकी जय जयकार से विधान सभा का अहाता गूज उठा। हर्ष विह्वल प्रदेश

की जनता का राजमाता के प्रति यह गरिमामय अभिनन्दन था।

जनता जनार्दन से मानसिक बल प्राप्त कर राजमाता ने जिस दृढता, साहस, विनय और राजनैतिक कुशलता से मिश्रजी की सरकार की निरकुशता को चुनौती दी थी और सघष का जिस सफलता से सचालन किया था उसकी प्रशसा देश के कोने कोने मे गू ज उठी। प्रदेश की जनता हष मे भर कर नाच उठी और राजमाता की जयजयकार से भोपाल, ग्वालियर, उज्जैन, इन्दौर इत्यादि नगरो की गली-गली गू ज उठी। भोपाल मे एक ओर जहा मिश्रजी की सरकार का पतन हुआ वहा देहली मे ससद मे देश के गृहमत्री श्री चव्हाण ने बजट काण्ड पर खेद प्रकाशित करते हुये स्वय को क्षमा याचना के हेतु तैयार बताया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के मर्यादा प्रस्ताव के उत्तर मे गृहमत्री ने सदन मे कहा कि मध्य प्रदेश के बजट के सबध मे जो सूचना उन्हे सचिव द्वारा प्राप्त हुई थी वह उन्होने सदन को दी थी। यदि शुक्रवार के बयान से सदन का किसी प्रकार का अपमान हुआ हो तो वे स्वय क्षमा मागने को तैयार है।

उधर आज ३१ जुलाई को जब सदन की बैठक मध्य प्रदेश भोपाल मे प्रारम्भ हुई तो प्रथम बार गैर-काग्रेसी मत्रीमडल के तीन मत्रियो ने शासकीय दीर्घा मे स्थान ग्रहण किये। मिश्र सरकार के पतन के साथ ही प्रदेश के राजनैतिक मच पर जो तीव्र हलचल प्रारम्भ हो गई उसके फलस्वरूप सविद सरकार के नेतृत्व करने का भार राजमाता पर जा पडा। जनता का तथा उसके प्रतिनिधियो का आग्रह था कि राजमाता स्वय मुख्यमत्री का पद ग्रहण कर सयुक्त विधायक दल की सरकार का गठन करें किन्तु राजमाता ने पद और सत्ता की लिप्सा से अलग रहने का निश्चय कर लिया था। उन्होने तथा उनके सुयोग्य पुत्र श्रीमत माधवराव सिंधिया ने दल के समस्त सदस्यो के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया कि राजनैतिक नेताओ को पद की लिप्सा से दूर रहकर सत्ता के मद से निर्लिप्त रहकर जन सेवा की भावनाओ को अपनाना चाहिये

और इस आदश को लक्ष्य मे रखकर राजमाता स्वय मुख्य मत्री पद को ग्रहण करने मे असमर्थ है। उनका कतव्य तो अब यह है कि सयुक्त विधायक दल के विभिन्न घटको मे समन्वय स्थापित करने के हेतु वे अपनी पूण शक्तिया लगा दें तथा शासन के लिए एक ऐसा कार्यक्रम बनाये जिससे सभी दल सहमत हो। मुख्य मत्री पद के लिये श्री गोविन्द नारायण सिंह के नाम का सुझाव राजमाता ने स्वय ही दिया क्योकि उनकी अभिलाषा यह थी कि काग्रेस से विद्रोह कर, प्रजातत्र को बचाने के उद्देश्य को लक्ष्यकर जिन विधायको ने अपने अमित साहस का परिचय दिया है वे ही शासनमे आकर इस गहन उत्तरदायित्वको सभाले तथा अन्य घटक उनके साथ सहयोग करें। श्रीमत माधवराव सिंधिया ने जिस उथल पुथल मे जिस भूमिका को निबाहा था उसमे उनका एक मुख्य उतरदायित्व अब यह भी हो गया कि वे सयुक्त विधायक दल के समस्त घटको को श्री सिंह को मुख्य मत्री बनाने के हेतु सहमत करें। ३० जुलाई को वे विभिन्न घटको से मिले और यथेष्ट मतभेद के होते हुए भी उन्होने अपनी कुशलता और राजनैतिक सूझ-बूझ से प्राय सभी दलो को श्री सिंह को मुख्य मत्री बनने के प्रस्ताव पर राजी कर लिया तथा ससोपा के केन्द्रीय नेताओ की भी अनुमति उन्हे इस विषय पर प्राप्त हो गई कि उनके दल के प्रतिनिधि सविद मत्रीमडल मे भाग लेंगे। राजमाता का स्वय मुख्यमत्री के पद को स्वीकार न करना सबको ही खटका किन्तु महाराजा ग्वालियर के इस तर्क पर सहमत थे कि एक निष्पक्ष व्यक्ति का मत्रीमडल से तटस्थ रहकर विभिन्न घटको का समन्वय करना आवश्यक है। सविद के नेतृत्व का भार इसी कारण राजमाता को स्वय स्वीकार करना पडा तथा दल के नेता का पद तथा मुख्य मत्री का पद इस प्रदेश मे अलग अलग हो गया।

विभिन्न दलो की सहमति से काग्रेस से आये हुये विधायको के नेता

श्री गोविन्द नारायण सिंह ने ३० जुलाई को मुख्यमंत्री का तथा जनसघ के श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा ने उपमुख्यमत्री पद का कायभार सभाला। इस प्रकार नई सविद सरकार ने प्रदेश के शासन सूत्र को सभाल लिया तथा श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र को कांग्रेस दल के सम्मुख पुन एक बार विद्रोह का सामना करना पडा। कई कांग्रेसी सदस्यो ने श्री मिश्र के अह और निरकुशता को कांग्रेसी की प्रतिष्ठा गिराने के लिये दोषी बताया। मिश्र जी की मान प्रतिष्ठा को उनकी सरकार के पराजय से गहरा धक्का पहुँचा। जनता के हृदय मे कांग्रेस के प्रति घृणा भर उठी तथा प्रदेश के लोगो को आज गाधी जी का २१ मई १९४७ की प्रार्थना सभा का यह कथन पुन एक बार स्मरण हो आया कि —

"स्वतन्त्रता का जो अमूल्य रत्न हमारे हाथ मे आ रहा है मुझे भय है कि हम उसे खो बैठेंगे। स्वराज्य लेने का पाठ तो हमे मिला किन्तु उसे टिकाये रखने का पाठ हमने नही सीखा। अंग्रेजो की तरह बन्दूको के जोर पर हमारा राज्य-सत्ता नही चलेगी। अनेक प्रकार के त्याग और तपश्चर्या के द्वारा कांग्रेस ने जनता का विश्वास सम्पादन किया है परन्तु यदि आज कांग्रेस वाले जनता को धोखा देगे और सेवा करने के बजाय उसके मालिक बन जावेगे या मालिको की तरह व्यवहार करेंगे तो मैं शायद जीऊ या न जीऊ परन्तु इतने वर्षों के अनुभव के आधार पर यह चेतावनी देने की हिम्मत करूगा कि देश मे बलवा मच जायेगा और सफेद टोपी वालो को लोग चुनचुनकर मारेंगे और कोई तीसरा सत्ता उसका लाभ उठायेगी।"

पश्चिमी बगाल मे जनता ने सफेद टोपी वालो का जिस प्रकार अनादर और अपमान किया उसके दृष्य मध्य प्रदेश की जनता के सामने भी अब यदाकदा आने प्रारम्भ हो गये। राजमाता ने प्रदेश की जनता से अपील की कि वह सयम से और शिष्टाचार से काम ले।

देश के राजनैतिक मच पर राजमाता जिस भूमिका का निर्वाह

कर रही थी और कतिपय नवीन परम्पराओ का विकास करने की उनकी चेष्टा थी उनमे मुरय तत्व एक यह भी था कि नेताओ को सब प्रकार से ईमानदार, निष्ठापूण, सत्ता के मद से निर्लिप्त, विनयी एव निष्पक्ष होना चाहिये तभी तो वे देश की जनता की सच्ची सेवा कर सकते है। अब मुरयमत्री के पद को ग्राह्य न करके सत्ता की लिप्सा से दूर रहकर प्रदेश की जनता की निष्ठापूण सेवा करने के उनके निश्चय की जनजन ने सराहना की तथा देश के नेताओ ने एक स्वर से इस आदश की भूरी-भूरी प्रशसा की।

३१ जुलाई को जब भोपाल मे मध्य प्रदेश विधान सभा की बैठक प्रारम्भ हुई तो प्रथम गैर-काग्रेसी मत्रीमडल के सदस्यो ने हर्ष ध्वनि की। सदन मे आज विरोधी दल काग्रेस के नेता श्री मिश्र भूतपूर्व मुरयमत्री उपस्थित नही थे। ऐसा सुना गया कि वे सदन मे एक वक्तव्य देना चाहते थे जिसकी अग्रिम प्रति सदन के अध्यक्ष श्री काशीनाथ पाडे द्वारा मागी गयी थी क्योकि उन्हे इस वक्तव्य के औचित्य पर शका थी। सदन मे अनगल प्रलाप, अशोभनीय छीटा कम एव सदन की मर्यादा के प्रतिकूल घटनाओ को रोकने का उत्तरदायित्व अध्यक्ष का था। श्री मिश्र ने अपने वक्तव्य की अग्रिम प्रतिलिपि अध्यक्ष को देने से जब इकार कर दिया तो अध्यक्ष ने विवश होकर उन्हे वक्तव्य देने की अनुमति नही दी और श्री मिश्र आज सदन मे नही आये। काग्रेस दल के उपनेता श्री कु जीलाल दुबे ने अध्यक्ष के इस निर्णय पर आपति प्रगट की और इसे सदन की परम्परा के प्रतिकूल बताया और विरोध स्वरूप काग्रेसी विधायक सदन से उठकर बाहर चले गये।

अगले ४ मास का १ अरब ६० करोड का लेखा अनुदान उपमुख्य मत्री श्री सकलेचा ने सदन मे प्रस्तुत किया जो पारित किया गया। उन्होने सदन को सूचित किया कि सविद सरकार का प्रत्येक मत्री अपनी सम्पति का ब्यौरा प्रस्तुत कर देगा। आज राजमाता विजयाराजे

सिंधिया ने सविद नेत्री के रूप मे सदन मे अपना प्रथम भाषण दिया जिसमे उन्होने केन्द्रीय सरकार को उसके वैधानिक निर्णय पर बधाई दी। उन्होने कहा कि अन्त मे सविधान की रक्षा के हेतु भारत सरकार ने कदम उठा ही लिया तथा सयुक्त विधायक दल की सरकार ने इस निर्णय के अनुसार मध्य प्रदेश मे शासन सूत्र सभाल लिया।

इस प्रकार ३० जुलाई १९६७ को उस सघष का जिसका सूत्र-पात्र राजमाता ने गत वर्ष किया था समाप्त हो गया। निरकुश सत्ता का, जातिवादिता का अन्त हुआ और मिश्र जी के भाग्य के सितारे ने 'शेखचिल्ली राजमाता' के हाथो मात खाई। देश की प्रधानमत्री भी अपनी पूरी शक्ति लगाकर विधि के विधान को भग न कर सकी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने सच ही कहा है

उमा दारु जोषित की नाई।
सबहि नचावत राम गुसाई ॥

सोपान-३१

सविद मन्त्रिमण्डल

विजया की विजय पताका प्रदेश मे फहरा रही थी तथा पहली अगस्त, १९६७ का दिन था। भोपाल मे मुख्यमत्री आवास के एक वृहद कक्ष मे सयुक्त विधायक दल के विभिन्न घटको के प्रतिनिधियो की महत्वपूर्ण बैठक हो रही थी । राजमाता विजयाराजे सिधिया अध्यक्ष के पद पर आसीन थी। मुख्य चर्चा का विषय था नवीन शासन के लिए एक कायक्रम का निर्माण जिस पर विभिन्न दलो का अधिक से अधिक मतैक्य हो सके । कल रात्रि सविद के मुख्य दल जनसघ की कायकारिणी की बैठक हुई थी जिसमे दल के अध्यक्ष श्री दीनदयाल उपाध्याय एव अन्य नेताओ यथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री बल-राज मधोक, श्री यज्ञदत्त शर्मा तथा प्रदेश अध्यक्ष श्री शेजवलकर आदि ने भाग लेकर जनसघ की कायनीति की विशद व्याख्या की थी तथा नवीन मत्रिमन्डल मे किस अनुपात मे विभिन्न दलो के मत्रियो की सख्या का निर्णय हो इस विषयमे योजना तैयार की थी। उधर ससोपा के केन्द्रीय नेताओ ने भी प्रदेश के शासन के कायक्रम निर्माण एव दल के मत्रियो की सख्या निर्धारित कर अपनी नीति स्पष्ट कर ली थी। हा प्रसोपा दल अब भी मत्रिमण्डल मे अपने प्रतिनिधि भेजने के पक्ष में नही था किन्तु सविद को अपना सहयोग देने को तत्पर था। उधर काग्रेस से आये हुए विद्रोही दल की अपनी अलग बैठके हो चुकी थी तथा क्रातिकारी दल अपने निर्णय राजमाता के हाथो मे सौंप चुका था। विभिन्न दलो ने जो

कार्यक्रम प्रस्तुत किये थे उन पर दलो की विचारधारा की पूरी छाप थी और जब विचारधारा ही मूल रूप से विभिन्न हो तो मतैक्य कितना कठिन हो जाता है ये अब स्पष्ट दिखाई पड रहा था।

शात चित्त तथा पूरण निष्ठा से राजमाता श्रीमत विजयाराजे सिंधिया सविद की नेत्री के रूप मे सभा मे बैठी हुई इस परिस्थिति का अध्ययन कर रही थी और शनै शनै यह स्पष्ट होता जा रहा था कि विचार धाराओ के इस सघष मे यदि कोई व्यक्तित्व ऐसा है जो मतैक्य करा सकता है तो वह राजमाता का विनय पूरण निष्पक्ष, दलगत भावना से अछूता व्यक्तित्व ही है। मुख्यमत्री श्री सिंह उपमुख्यमत्री श्री सकलेचा तथा क्रातिकारी दल के प्रतिनिधि मत्री श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त ने अपने अपने विचार बैठक मे रखे और लम्बी बहस के उपरान्त राजमाता ने वे तथ्य छाटकर जिन पर मतैक्य सभव था स्पष्ट रूप से बैठक के सन्मुख रख दिये। अपनी नेत्री की धीरता, गम्भीरता, राजनैतिक कुशलता एव निष्ठा की सबने ही सराहना की और शीघ्र ही विभिन्न घटको के मत्रियो की सख्या का भी निर्धारण सतोषजनक रूप मे हो गया तथा उन समस्त सूत्रो का भी समन्वय हो गया जिन्हे नीति बनाकर नवीन शासन को चलाना था। एक छोटी सी उपसमिति का चयन किया गया तो इन सूत्रो का सकलन आज ही कर दे तथा जिसको घोषणा जनता के समक्ष कर दी जावे।

राजमाता ने अपने विचार विभिन्न दलो के नेताओ के सन्मुख रखते हुये प्रस्ताव किया कि तुरन्त ही एक समन्वय समिति की स्थापना की जावे जिसमे प्रत्येक घटक के शीर्षस्थ नेता हो तथा जो विभिन्न दलो के विरोध को बिना कटुता के निबटा सके तथा शासन के लिए नीति निर्धारित कर उसकी उपलब्धियो का अकन कर सके। इस प्रकार राज-माता के व्यक्तित्व ने नवीन सयुक्त विधायक दल के लिये दो स्तम्भो का निमाण सभव बना दिया जिनमे एक था मतैक्य के सूत्रो का सकलन

तथा दूसरा समन्वय समिति का निर्माण। सध्या की वैठक मे ही २५ सूत्रीय कायक्रम का निर्धारण हो गया तथा राजमाता एव मुख्यमत्री नें रात्रि को इसकी घोषणा पत्रकारो के समक्ष कर दी। इस कायक्रम मे जिन मुख्य तथ्यो का समावेश किया गया था वे इस प्रकार थे

कृषको के लाभाथ लगान की समाप्ति, शिक्षा प्रशासन और न्याया-लयो मे हिन्दी का अनिवाय प्रयोग, शिक्षा मे अग्रेजी को ऐच्छिक स्थान, कृषि नीतियो मे आमूल परिवतन, महगाई दूर करने के लिए प्रभावी कदम, अन्न वितरण की समुचित व्यवस्था, अकाल पीडित क्षेत्रो मे अकाल की घोषणा तथा विधान परिषद की समाप्ति, मध्यप्रदेश मे मजदूरो के हितो की रक्षा के लिए कानून मे परिवतन और उनके प्रति-निधित्व के विवाद का निबटारा गुप्त मतदान द्वारा कराने की व्यवस्था को भी इस कायक्रम मे सम्मिलित किया गया। राजनैतिक और जन आन्दोलन से सम्बन्धित मुकदमो की वापसी, भ्रष्टाचार द्वारा अर्जित सम्पति की जाच तथा लोकपाल एव लोकयुक्तो की नियुक्ति, पुलिस दमन काडो की जाच, वाणिज्य फसलो पर लगाये करो पर पुन विचार, आदिवासियो के हिताथ वननीति का निर्धारण, नागरिक अधिकारो के हनन करने वाले दमन कानूनो की वापसी तथा शासन मे वैभवशाली खर्चो की समाप्ति एव ६ माह के अदर स्वायत्त सस्थाओ के चुनाव कराना आदि कायक्रमो का समावेश इस २५ सूत्री प्रोग्राम मे किया गया।

नवीन शासन के लिए यह एक क्रातिकारी योजना थी जिसकी सफ-लता विभिन्न घटको की जन सेवा की निष्ठा पर तथा उसके प्रतिनिधियो की ईमानदारी तथा लगन पर अविलबित थी। इस घोषणा से जन जन मे हृष की धारा प्रवाहित हो गई तथा जनता उत्सुक्ता से अपने नेताओ की ओर देखने लगी। चार अगस्त सन् १९६७ को नवीन मत्रियो द्वारा गोपनीयता की शपथ ग्रहण की गई जिनमे ११ केबिनेट स्तर के मत्री थे,

७ राज्य मन्त्री और ७ उपमन्त्री थे। मन्त्रिमडल मे मध्यभारत क्षेत्र के ७ मंत्री थे और २ अनुसूचित जाति के मंत्री थे। इन मन्त्रियो ने अपने वेतन मे स्वय ही कटौती करने का निश्चय किया तथा काग्रेसी मन्त्रियो की अपेक्षा केबिनेट स्तर के मन्त्रियो ने १००) प्रति मास, राज्यमन्त्रियो ने ७५ रुपये प्रतिमास एव उपमन्त्रियो ने ५० रु० प्रतिमास कम लेने का निश्चय किया। उस दिन प्रदेश के एक मुख्य पत्र ने स्थिति की समीक्षा करते हुए लिखा कि

सत्ता परिवतन के साथ ही मध्यप्रदेश मे युग परिवतन हो गया है। निस्सदेह ही यह परिवतन प्रदेश की जनता की अभूतपूव विजय है जो उसे राजमाता विजयाराजे सिंधिया के लोकहितैषी नेतृत्व मे प्राप्त हुई है। यद्यपि राजमाता ने अपनी विशाल हृदयता के कारण उसे भगवान की कृपा ही निरूपित किया है। इसे मात्र सयोग कहा जाये या सचमुच ही भगवान की कृपा माना जावे कि २९ जुलाई की रात्रि को मिश्र सरकार का तख्ता उलटते ही सारे प्रदेश मे वरुणदेव ने जीवन बरसाया और भोपाल मे वर्षा की तेज फुहारो से सराबोर जनता ने राजमाताका लोकमाता के रूप मे अभिनन्दन करते हुए कहा कि अकाल के देवता (मिश्र)का पराभव हो गया है। और इन्द्रदेव अब जल की वृष्टि कर नवीन शासन का अभिनन्दन कर रहे है। भूखमरी, अकाल और सूखे की तीन वष की स्थिति समाप्त हो गई है। इसी पत्र ने आगे लिखा कि

'जनता और अपने दल दोनो ही से तिरस्कृत प० मिश्र राजमाता के प्रयासो को सामन्तवाद की सज्ञा देकर उनको असफल बनाने का भरसक प्रयास किया करते थे पर अब जब उनका तख्ता पलट गया तब फिर असलियत-छिपाना सम्भव न हुआ। राजमाता ने मुख्यमंत्री पद अस्वीकार कर यह सिद्ध कर दिता कि वे प० मिश्र की तरह पद की भूखी नही है। उनके सामने पद का नही बल्कि जनता की सेवा ही का प्रश्न अहम है। देशी राज्यो के विलय

मे पहल कर सिंधिया घराना लोकपरायणता का परिचय पहिले ही दे चुका था और अब अवसर आने पर भी राजगद्दी पर न बैठकर उसने न केवल अपनी लोकपरायणता का दूसरा ज्वलन्त प्रमाण दिया है वरन जन सेवक होने का दावा करने वाले सभी व्यक्तियो विशेषकर काग्रेसियो के सामने यह आदश भी प्रस्तुत कर दिया है कि जनोपकार के साध्य का दल और पद के साधनो की आहुति देकर भी प्राप्त करना चाहिये ।'

नये मत्रिमण्डल ने एक पक्ष की अवधि मे ही जनता को राहत देने के कई कार्य किये । प्रदेश मे काग्रेस द्वारा बढाये हुये जलकर वृद्धि की समाप्ति की घोषणा कर दी गई तथा सरकारी दुकानो पर से पाच सौ रुपये तक मासिक वेतन पाने वालो को नियत्रित मूल्य पर अन्न की उपलब्धि की व्यवस्था की गई ।

८ अगस्त को भोपाल मे सयुक्त विधायक दल की समन्वय समिति की बैठक राजमाता की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे तीन सदस्यो की एक उपसमिति का चयन समन्वय समिति के विधान का गठन करने के हेतु किया गया । इस उपसमिति के सदस्य थे ससोपा के श्री शिव प्रसाद चिनपुरिया, प्रसोपा के श्री चन्द्र प्रताप तिवारी एव जनसघ के श्री कुशाभाऊ ठाकरे । राजमाता ने पत्रकारो से कहा कि समन्वय समिति घटको के विरोधो को दूर कर दल की एकता के लिए काय करेगी तथा किसी मत्री का काय सतोषजनक न होने पर यह समिति उसे हटा भी सकेगी । उन्होने बताया कि किसी सरकार को उलटने के लिये विधायको को खरीदने के वे पक्ष मे नही है । सत्य है कि काग्रेस ने इस बार सभी हथकडे अपनाये, सविद विधायको के बस का अर्द्धरात्रि मे घिराव किया, ग्वालियर राजमहल के जाली नम्बर लगाकर विधायको का अपहरण करना चाहा तथा प्रजातत्र के सिद्धान्तो को कलुषित किया और यही कारण था कि सविद को भी सावधानी बरतनी पडी । सविद विधायक आज भी किसी दल मे सम्मिलित होने के लिये स्वतन्त्र हैं ।

आज भोपाल एव दिल्ली के पत्रो मे प्रकाशित हुआ कि प० मिश्र के नेतृत्व को काग्रेस विधायको के एक दल द्वारा चुनौती दी जा रही है तथा उनके पतन के प्रश्न को लेकर आरोप-प्रत्यारोप किये जा रहे है। उनके साथी श्री अर्जुन सिंह ने कहा कि उनके पतन का कारण काग्रेस दल के मत्रीगण श्री तामोट एव शुक्ला आदि है, श्री शुक्ला ने कहा कि श्री अर्जुनसिंह ने मिश्र जी को सदैव गलत जानकारी देकर अन्धेरे मे रखा। यह भी सुना गया कि प्रधानमत्री के साथी मिश्र जी को अब देहली बुलाकर केन्द्रीय शासन मे उन्हे लेने के इच्छुक है जिसके लिये एक युवक ससद सदस्य अपनी सीट खाली करने को भी तैयार है। भूतपूर्व ससद सदस्य एव साम्यवादी नेता श्री होमी दाजी ने एक पत्रकार वार्ता मे दावे से कहा कि काग्रेस छोडने वाले एक भी विधायक को राजमाता द्वारा अथवा किसी और ने एक भी पैसा नही दिया तथा आने वाले मत्रियो तक से यह स्पष्ट कह दिया गया कि उन्हे किसी प्रकार का पद देने का आश्वासन नही दिया जा सकता। नवीन मत्री-मडल न तो सामतवादी है और न प्रतिक्रियावादी। वस्तुस्थिति तो यह है कि आज भी काग्रेसी व्यापारियो पर १० करोड रुपये की धन-राशि विक्री कर के रूपमे बकाया है। मध्य प्रदश मे काग्रेसी मत्रिमडल के हार के बाद देश मे स्थिति यह थी कि राज्यो मे से अब केवल ७ राज्य काग्रेस के आधीन रह गये थे तथा ९ राज्य लगभग ३ करोड जन-सख्या के साथ जो कि देश की समस्त जनसख्या का ६२ प्रतिशत था गैर काग्रेसी मत्रीमडलो के आधीन थे। भारत का पूर्वी और मध्य भाग जिसमे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उडीसा और पश्चिमी बगाल के ५ बडे राज्य थे काग्रेस के जुये को उतार फैंक चुके थे तथा वे भी दक्षिण के मद्रास और केरल के पथ पर अग्रसर हो चुके थे तथा लगभग ५६१,५१८ वर्ग मील का क्षेत्र गैर काग्रेसी राज्यो के आधीन था।

इस प्रकार प्रदेश मे राजमाता की निष्ठा लगन और साहस से सयुक्त विधायक दल ने काग्रेस सरकार का तख्ता पलट कर लोक हितैषी

गैर-काग्रेसी मत्रीमडल की स्थापना कर दी तथा सविद की नेत्री के रूप मे इस प्रदेश को राजमाता की सेवाये प्राप्त हो गई। समन्वय समिति के गठन द्वारा एक ऐसे मच का निर्माण किया गया जहा विरोधी तथ्या का निराकरण हो सके तथा इस मिश्रित मत्रीमडल को पथ प्रदशन दिया जा सके।

इन दिनो जन जन मे राजमाता की लोकप्रियता बढती जा रही थी तथा प्रदेश के नगर नगर मे उनका अभिनन्दन करने के लिये लोग आतुर थे। भोपाल के काय की सुचारु व्यवस्था कर राजमाता ६ अगस्त को अपनी ग्वालियर की प्रिय जनता से भेट करने के हेतु ग्वालियर की ओर प्रस्थान कर गइ।

सोपान-३२

अभिनन्दन

ग्वालियर नगर के हृदय मे स्थित जियाजी चौक। १० अगस्त, १९६७ की सध्या। अथाह भीड इस स्थल की ओर अपनी प्रिय नेत्री का स्वागत करने के लिये, उसका अभिनन्दन करने के लिये उमडी चली आ रही थी। सविद सरकार की स्थापना के पश्चात् मिश्र सरकार को पराजित कर आज ग्वालियर की विजया अपनी विजय दुन्दुभी बजाती तथा विजय पताका फहराती हुई प्रथम बार ग्वालियर आ रही थी। भोपाल से प्रात काल मोटर द्वारा रवाना होकर सध्या को उन्हे जहा पहुचना था किन्तु माग मे व्यावरा, गुना, शिवपुरी आदि नगरो मे जनता की भीड ने राजमाता का माग अवरोध कर उनकी जय जयकार से आकाश को कपा दिया तथा अभिनन्दन समारोह मे इतना समय लगा दिया कि निश्चित समय पर वे ग्वालियर नही पधार सकी और जनता की विशाल भीड राजमाता की प्रत्तीक्षा मे आतुर खडी रही। लगभन ३ घटे की प्रतीक्षा की अवधि मे ग्वालियर के नेतागण सर्व श्री नारायण शैजलकर, शीतला सहाय, नरसिह जोशी, प्रताप कुमार नूतन, नरेश जौहरी आदि जनता को सम्बोधित करते रहे। अन्त मे रात्रि के द्वितीय चरण मे राजमाता पधारी तो जनता हष विह्वल हो उनके दशनो के लिए मच के निकट उमड पडी तथा उनकी जय जयकार से नभ कपायमान हो उठा। उस रात्रि अभूतपूव दृश्य था। ग्वालियर नगर दीपमालिकाओ से सजा हुआ था और खुशी मे पागल जनता राजमाता पर पुष्पो की वर्षा कर रही थी। उसके नेता पुष्पहार समर्पित कर

राजमाता का अभिनन्दन कर रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि राजमाता के रूप मे जनता को एक अभूतपूव प्रेरक शक्ति के दशन प्राप्त हुए थे जिसे पाकर वह गदगद हो उठी थी। जनता और नेत्री का यह मिलन प्रजातन्त्र के युग मे अत्यन्त ही भावनापूण और अपूव था। उस रात्रि राजमाता ने ग्वालियरवासियो की सहृदयता और भावना को लक्षित कर कहा कि जनता जनार्द्धन ही मेरी प्रेरणा के वास्तविक श्रोत हैं। नई सविद सरकार आपकी है और जब तक आपकी सच्ची सेवा करती रहेगी तभी तक यह स्थिर रह सकेगी जिस दिन इनके मन्त्रियो द्वारा मैंने जनमत की अवहेलना तथा स्वाथपरता देखी उसी दिन मैं इसे भग करने मे किंचित भी न हिचकूगी। मैं चाहती हूँ कि जनता जागरूक रहकर अपने अधिकारो की रक्षा करे तथा कत्तव्य का निर्वाहन करे। उन्होने कहा कि मैने कुछ दिन पूव आपसे मिश्र सरकार को पराजित करने को कहा था और आज मैं आपसे क्षत विक्षत घर को सभालने का आह्वान करती हूँ। पर्दे के पीछे काय करने वाले अपने सहयोगियो को लक्षित कर राजमाता ने सरदार कुमार आंग्रे, ठा० लोकेन्द्रसिह आदि को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि "इन लोगो ने पूण निर्भयता और लगन के साथ काय कर मिश्र जी की सरकार को अपदस्थ करने मे मेरी सहायता की है। इसलिये मै आप सबकी ओर से उनका आभार प्रदशन करती हू।" उत्तर मे कुमार आंग्रे ने कहा कि "हम सबने राजमाता के आदेशो का केवल पालन किया है तथा प्रदेश के प्रति अपने कत्तव्यो को निबाहा है। विजय का श्रेय किन्ही अशो मे हमे देना राजमाता की महानता का द्योतक है। यह विजय जनता की विजय है।"

ग्वालियर की जनता के प्रति आभार व्यक्त करते समय राजमाता का कठ गदगद हो उठा तथा उनके नेत्रो से हष के मुक्ताओ की दृष्टि होने लगी। जनता का इतना प्यार और विश्वास पाने के हेतु उन्होने भगवान को शत-शत धन्यवाद दिये।

अर्द्ध रात्रि के करीब जब यह सभा समाप्त हुई तो ग्वालियर निवासी भाव विभोर हो अपनी नेत्री की सफलता की ही चर्चा करते हुए घर वापिस जा रहे थे।

भोपाल और ग्वालियर के अभिनन्दन समारोह से तो पूरे प्रदेश में राजमाता एव नवीन मन्त्रियो के अभिनन्दन का एक न टूटने वाला क्रम चल पडा। २५ अगस्त को ग्वालियर की एक ऐसी ही विशाल सभा मे भाषण देते हुए उप मुख्यमन्त्री श्री सकलेचा ने कहा कि मुझे स्मरण है कि द्वारिका प्रसाद मिश्र ने राजमाता और हम सबको ही चुनौती देते हुए कहा था कि यदि किसी कारण मै कुर्सी पर नही बैठा रहा तो मैं आपको भी कुर्सी पर न बैठने दू गा यदि ऐसा न हुआ तो मेरा नाम द्वारिका प्रसाद मिश्र नही। भाग्य की विडम्बना से मिश्रजी पूर्णतया पराजित होकर हटगये और उनके विरोधी भी उनकी कुर्सी पर बैठ गये है किन्तु मिश्र जी का दूसरा नाम तो सुना नही। जनता उनसे पूछ सकती है कि उन्हे अब किस नाम से पुकारा जाये। इस प्रकार बढ चढ कर बोलना कहा तक ठीक है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब ग्वालियर जनता पर गोलिया चली और खून बहा तब तब अत्याचारियो का तरता पलट गया। श्री पवार, श्री विजयवर्गी और अब श्री मिश्र भी इसके प्रमाण है। बलिदान कभी व्यथ नही जाता।

अगस्त के द्वितीय सप्ताह मे सुना गया कि श्री मिश्र ने यह कहा कि उन्ह कई धमकी भरे पत्र मिले और उन्हे अपनी सुरक्षा का भय है इस कारण वे भोपाल मे रहने के इच्छुक नही। इस पर मुख्यमन्त्री श्री सिंह ने मिश्र जी को सुरक्षा का आश्वासन देते हुए कहा कि जहा भी मिश्र जी अपना निवास स्थान बनाये शासन उनके हेतु सुरक्षा अधिकारी नियुक्त करने को तैयार है। यही नही अपितु मिश्र जी यदि राज्य के बाहर रहना चाहे तो अवश्य प्रदेश सरकारो से भी इस सम्बन्ध मे सुविधा दिलाने को तैयार है। क्योकि उन्हे भय है कि यदि मिश्र

सिधीया राज परिवार



श्रीमत महाराज माधवराव सिधीया ।



श्रीमत महारानी माधवीराजे सि॰



कैलासवासी श्रीमत महारानी पद्मराजे, त्रिपुरा



श्रीमत रानी उषा राज
पशुमती शमशेर, काठमा

पाच फुल



राजकुमार माधवराव सिंधीया अपनी चारो बहिनो के साथ ।



सिंधीया घरानेसे संबधीत कतिपय महत्वपुर्ण सामग्री का
सरदार वल्लभभाई पटेल को जयविलास राजप्रासाद मे
अवलोकन कराती हुई पति के साथ
महारानी विजयाराजे सिंधीया ।

जी को कुछ हो गया तो वे दोषी ठहराये जायेंगे।

ग्वालियर, शिवपुरी, विदिशा, उज्जैन आदि नगरो मे इस मास निरन्तर ही राजमाता के अभिनन्दन कार्यक्रम चलते रहे तथा विद्यार्थी वर्ग का उत्साह इन समारोहो मे सर्वाधिक था। पत्रकारो, सम्पादको ने राजमाता की सफलता पर पत्रो मे खूब लिखा। एक पत्र ने लिखा कि

राजमाता ने महलो के जीवन के आराम छोडे। उनके पुत्र महाराज माधव ाराव ने इस सघष मे अपनी मातृ श्री की मदद करने के लिए इगलैड मे अपनी पढाई भी रोक दी। आज ग्वालियर की राज-माता की लोकप्रियता स्वयसिद्ध जैसा हो गई है दूसरी ओर आज श्री मिश्र एक दुखी व्यक्ति नजर आ रहे हैं। वे यह महसुस कर रहे है कि उन्हे नीचा दिखाया है उन्ही के उन काग्रेसियो ने जिन्होने दल बदल दिया है तथा उच्च काग्रेस कमान ने जिसने उनके मध्यावधि चुनाव प्रस्ताव स्वीकार नही किया।

ग्वालियर मे २६ अगस्त के नगर की महिलायो की ओर से तथा उसी सध्या को शिक्षरा सस्थाओ एव विद्यार्थियो की ओर से राजमाता का अभिनन्दन किया गया। राजमाता ने यहा कहा कि "मैंने मात्र कर्तव्य निर्वाह किया है सच तो यह है कि मेरी विजय का श्रेय विद्यार्थी वग को है जिसके आन्दोलन की आग मे मिश्रजी का निरकुश शासन भस्म हो गया है। पुत्रो के दुखो को दूर करने के लिए मा की आदम्य शक्ति आ जाती है। जनरल करिअप्पा ने भी इस समारोह मे भाग लिया।

इधर जबकि राजमाता के अभिनन्दन समारोह चल रहे थे देश की जनता मध्य प्रदेश मे हुई राजनैतिक उथल पुथल का मूल्याकन कर रही थी। 'हिन्दुस्तान' के विशेष सवाददाता श्री चदूलाल ने इन ही दिनो लिखा कि

"कृष्णायन के लेखक श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र ने अपने सभी दाव-पेच मे असफल होने के बाद अत्यन्त क्रोध, दुख और निराशा के साथ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री पद का परित्याग कर दिया। जिस किसी निष्पदा व्यक्ति ने भोपाल मे गत शुक्रवार, शनिवार को मिश्रजी को विधान सभा मे तथा बाहर बोलते सुना तथा उसके चेहरे को नजदीक से देखा उसे यह देखकर आश्चय हुआ कि मिश्रजी जैसे अनुभवी राजनीतिज्ञ को भी गद्दी छोडने मे इतना कष्ट हो रहा था। वे काफी हद तक अपना सतुलन खो बैठे थे।"

श्रीमती विजया राजे सिंधिया का मुरयमत्री का तथा स्वय दल का सबसे बडा काम दल मे एकता बनाये रखना है। श्रीमती सिंधिया भले ही राजमाता है लेकिन वह साधारण परिवार मे पैदा हुई और सामान्य जनो की तरह उन्होने शिक्षा-दीक्षा पाई। इसलिए उनमे जनता की कठिनाईयो व भावनाओ को समझने और उसके साथ मिलकर चलने की प्रवृति है। पहले से ही राजमाता कहती रही है कि उन्हे मुरयमत्री बनने का शौक नही है लेकिन यदि बन भी जाती तो उनका व्यवहार साधारण जनता के साथ वैसा ही रहता जैसा अब है। उन्होने मुख्यमत्री पद का भार न लेकर एकता बनाये रखने का नेतृत्व सभाला हे यह बहुत अच्छा हुआ। यह काय सरल नही है। आगामी सप्ताह इस सबध मे श्री रतनलाल जोशी ने 'हिन्दुस्तान' मे लिखा

"मध्य प्रदेश के राजनैतिक मच पर भूतपूव मुरयमत्री श्री मिश्र ने जो रोल अदा किया उससे न उनकी प्रतिष्ठा बढी है न काग्रेस सगठन की तथा न भारतीय लोकतत्र की। मिश्र जी ने कल तक हठ के जिस मु हजोर घोडे पर सवारी कस रखी थी वह हठ यदि किसी सिद्धान्त विशेष या राष्ट्रहित के लिए होते तो निश्चय ही मिश्र जी क्रुसेडर की तेजस्विनी मे जय-जयकार के अधिकारी होते किन्तु उनका

हठ शुरू से लेकर आखीर तक सिर्फ अपनी प्रभुता को कायम रखने के लिए ही था न कांग्रेस के जीने मरने का उन्हें ख्याल था और न लोक तन्त्र के उत्थान पतन का । प्रसन्नता का विषय है कि कांग्रेस ने आखीर कर इस प्रपचलीला को पहिचाना और मिश्र पर अपना अंकुश लगाया ।— माना कि राज्यपाल से विधान सभा के सत्र को स्थगित करवाने का पूरा पूरा अधिकार मुख्यमंत्री को है किन्तु मध्यप्रदेश मे मिश्रजी ने जिस ढग से राज्यपाल द्वारा सत्र स्थगित करवाया उसके वैधानिक औचित्य के समर्थन को वे साफ साफ टाल गये । क्या यह काफी रोचक तथ्य नही है कि मध्य प्रदेश की विधान सभा के अध्यक्ष ने जब विधान सभा को अस्थायी रूप से स्थगित करने से इकार कर दिया तो राज्यपाल ने अध्यक्ष की प्रतिष्ठा को मद्दे नजर रखे बगैर मिश्रजी की इच्छानुसार विधान सभा को स्थगित करने का हुक्म जारी कर दिया ।"

विभिन्न पत्रो मे राजमाता के नेतृत्व मे हुई प्रदेश की राजनैतिक उथल-पुथल की समीक्षा से यह तथ्य प्रमाणित हो गये कि श्री मिश्र की भूमिका एक हठधर्मी व आतंकवाद का बेजोड प्रकरण था। जिसके विपरीत राजमाता का नेतृत्व शालीनता और गरिमामय था यही कारण था कि चारो ओर से उन पर बधाइया और अभिनन्दनो की वर्षा हो रही थी और देश के हर वर्ग ने उनके सबल व्यक्तित्व एव कुशल नेतृत्व को सराहा था । इन दिनो ब्रिटिश पत्रों मे भी राजमाता की बहुत चर्चा रही तथा लदन से नार्फेन एजन्सी ने वहा के पत्रो को भारत के सदर्भ मे समाचार भेजे। 'टाइम्स' ने इस सबध में लिखा कि

"ग्वालियर की राजमाता ने मध्य प्रदेश कांग्रेस को उसकी हरिश्च नीति अपना कर करारी मात दे दी है। और आज वे १८५७ के गदर काल की झासी की महारानी के समान लोगो मे वीरागना के समान पूजी जा रही है। यदि भारत में अन्य राजे महाराजे भी कांग्रेस को

छोड दें और काग्रेस विरोधी दलो मे जा मिले तो कॉग्रेस को उनकी इस चाल से टक्कर लेना मुश्किल हो जायेगा।

कुछ मास पश्चात राजमाता को सागर के नागरिको का निमन्त्रण प्राप्त हुआ था तथा वहा जाकर उन्होने सर हरिसिंह गौड की प्रतिमा का अनावरण किया तथा विश्वविद्यालय मे विद्यार्थियो को उदवोधित किया। अपने जन्म स्थान मे राजमाता पर जिस भावनापूर्ण अभिनन्दनो की वर्षा हुई थी और जनता का प्रेम एव श्रद्धा उ हे प्राप्त हुई थी उसे देखकर हजारो दर्शको की आखे गीली हो गई थी। सारा नगर वन्दनवरो से सजा हुआ था। वहा २६ जनवरी को कहा —

"लोग मुझ से पूछते है कि किस लिए गाव-गाव और गली-गली मे घूमती हू। कुछ इसे पागलपन भी कहते है किन्तु वास्तविकता यह है कि मुझे भोली जनता का स्नेह बाहर खीच लाता हे। मै जनता के इस विशाल रत्नाकर से उनके स्नेह रत्न प्राप्त करती हू। जनता ही मेरे लिए देवता है। इनके दशन कर इस अमूल्य ने यह निधि को पाकर मुझे और कुछ पाने की आकाक्षा शेष नही रह जाती। काग्रेस २० वर्ष से जनता की आकाक्षाऐं अतृप्त रख रही है, क्यो ? क्योकि विरोधी दल मे एकता नही थी। मै अब उसी एकता के लिए प्रयत्नशील हू। वर्गों के मै स्वय विरुद्ध हू। मैं मजदूरो, किसानो, उद्योगपतियो, कमचारियो को राष्ट्रहित मे मिलकर काम करते हुए देखना चाहती हू।

राजमाता जनसपक के मध्य वरकान पहुची तो वहा उन्हे अपनी पूज्य मामी के स्वगवास का समाचार मिला। मातृविहीना लेखा को अपनी नानी मामी का ही विरल प्यार शैशव मे मिला था और मातृ तुल्य मामी रंजन शमशेर ने ही लेखा बेटी का पाणिग्रहण सस्कार कराया था। उनके वात्सल्य की पावन सुधि मे राजमाता आज खो सी गई। स्नेह की इस निधि को विछेह भावना प्रधान इस नारी के अन्तर को झझोड गया किन्तु अथाह जनता उसके दशन करने और कुछ शब्द

सुनने को यहा एकत्रित थी। यह मनीषी उन्हे निराश कैसे करती। कतव्य की पुकार पर वह सभा मे आई और जनता के सन्मुख अपना हृदय खोल कर रखती हुई बोली

"इस पुण्य भूमि मे आकर जहा मैंने अपना बाल्यकाल बिताया है मुझे हृष मिश्रित दुख हो रहा है। मेरी मानसिक पीडा और दुख का कारण आपको विदित ही है कि कल मेरी मामी ने अपनी नश्वर देह का त्याग कर मा नमदा की गोद मे चिर विश्राम ग्रहण किया है। मेरी पूज्य नानी का नश्वर शरीर भी नमदा की ही गोद मे समर्पित हुआ था। ससार मे जीवन मरण और आवगमन का क्रम सनातन है किन्तु जीवन का मुख्य लक्ष्य तो सेवा है। परमान, सागर, ग्वालियर मुझे प्रिय रहे हैं किंतु अब मेरी सेवा का क्षेत्र सम्पूण भारतवर्ष है अपनी और आप सबकी मा - भारत मा - की सेवा करने की मैं आकाक्षी हू और मैं जगह जगह कहती फिरती हू कि सकीणता के विचारो को छोडकर भुला कर हम सब को एक होकर राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए। अपने गरीब भाइयो के स्तर को ऊचा उठाना चाहिये उनको शिक्षा की, रहन सहन की सुविधा देना चाहिये उनकी सेवा करनी चाहिये। सविद शासन यही करने के लिए कृत सकल्प है।"

राजमाता नरसिंहपुर गई तो वहा भी जनता ने उनके स्वागत के हेतु पलक बिछाये तथा उनकी सेवा की सराहना की।

इस प्रकार अभिनन्दनो की लडी और बधाइयो की मालायें स्वीकार करते हुये तथा सविद शासन के प्रति जनता का विश्वास प्राप्त करते हुये राजमाता ने अपना विजय अभियान समाप्त किया तथा वे सविद के विरोधी घटको मे समन्वय स्थापन के प्रयत्न मे लग गई। उनकी ख्याति ग्वालियर की परिधि से निकल कर अब सम्पूण देश एव विदेशो मे फैल चुकी थी।

सोपान-३३

सवैधानिक समस्याओ की सूत्रधार - राजमाता

जुलाई-अगस्त १९६७ की राजमाता की अभूतपूर्व राजनैतिक कुशलता और सफलता ने मध्य प्रदेश मे जिस प्रकार सविद शासन का सूत्रपात किया उससे देश के सन्मुख कई महत्वपूर्ण प्रश्नो को ला रखा और सविधान के विशेषज्ञो तथा विभिन्न राजनैतिक दलो के नेताओ को अपना मस्तिष्क इन समस्याओ के सुलझाने मे लगाना पडा। मुख्य प्रश्न ये थे

१—क्या उस मुख्य मन्त्री को जिसका विधान सभा मे बहुमत न रहा है राज्यपाल को सत्रावसान का परामर्श देने का अधिकार है अथवा क्या वह विधान सभा को राज्यपाल द्वारा भग करा सकता है ?

२—क्या राज्यपाल के लिये सविधान की आत्मा मे पूर्ण आस्था रखते हुये इस प्रकार की सलाह मानना अनिवार्य है ?

३—राज्य की विधान सभा मे किसी भी दल के बहुमत का निर्णय राज्यपाल द्वारा किया जा सकता है अथवा इस निर्णय के लिए सदन मे ही शक्ति-परीक्षण आवश्यक है ?

४—विधायको के दल बदल का क्या औचित्य है। एक दल के टिकट पर चुनाव जीतकर उस दल को त्यागना सविधान की दृष्टि मे कहा तक नैतिक है। दल बदल यदि अवाछनीय है तो इस पर कानूनी रोक लगायी जानी चाहिए।

५—दल-बदल से भारत की प्रजातन्त्र पद्धति पर क्या कोई दूषित प्रभाव पड सकते है तथा इस प्रश्न को सुलझाने के लिये क्या किसी आचार सहिता की आवश्यकता है ?

६—विधान सभा मे मुख्यमन्त्री का बहुमत रहते हुए भी क्या विधान सभा का राज्यपाल द्वारा सत्रावासान किया जा सकता है। अथवा क्या राज्यपाल इस अवस्था मे उसे भग कर सकता है ? मुख्य-मत्री द्वारा प्रदत्त मध्यावधि चुनाव की सलाह का मानना राज्यपाल के लिये किन अवस्थाओ मे अनिवाय है ?

७—विधान सभा मे अध्यक्ष के निर्णय को राज्यपाल द्वारा किन परिस्थितियो मे भग किया जा सकता है।

८—प्रजातन्त्र मे आस्था रखने वालो के लिये राष्ट्र बडा है या दल।

देश के प्राय समस्त प्रमुख पत्रो मे इन प्रश्नो को लेकर विवाद चल पडा तथा मध्य प्रदेश के पश्चात हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पजाब की आशका प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगी। केन्द्र मे गृह विभाग और कानूनी विभाग के विशेषज्ञो मे भी इन प्रश्नो पर मतभेद प्रतीत होना था तथा देश के मूधन्य कानूनी विशेषज्ञ भी उक्त प्रश्नो पर एकमत नही हो पा रहे थे। जहा तक मध्य प्रदेश का सम्बन्ध था काग्रेस हाइकमाड ने मुख्यमन्त्री को मध्यावधि चुनाव की सलाह राज्यपाल को न देने के लिए बाध्य कर अपना पीछा छुडा लिया किन्तु अन्य राज्या मे जहा गैर-काग्रेसी सरकार थी राज्यपाल को स्वय आगे बढकर स्थिनि से जूझना पडा। नवम्बर मास मे पश्चिमी बगाल और पजाब के वैधानिक सकटो पर जब राज्यपालो को स्थिति का मुकाबला करना पडा तथा सविधान के सजग प्रहरी और रक्षक के नाते राष्ट्रपति के सन्मुख भी नवीन कठिनाईयाँ उपस्थित हुई और सविधान को कसौटी पर रखा

गया तब केन्द्रीय शासन एव राज्यपालो द्वारा जो निणय लिये गये उनमे दलगत भावना और पक्षपात की गध आती थी।

उधर ३६ काग्रेसी विधायको की मध्यप्रदेश मे की हुई बगावत ने दल-बदल की समस्या के विभिन्न दृष्टिकोणो को सामने रख कर काग्रेसी ससद मडल के निणयो मे पारस्परिक विरोध पाया। उस समय जबकि १९५३ मे केरल के अतिरिक्त सभी राज्यो मे काग्रेसी मन्त्रिमण्डल थे देश की प्रमुख राजनैतिक सस्था काग्रेस ने ही दल-बदल की प्रथा का प्रारम्भ किया था तथा श्री थानू पिल्ले को दल-बदल के लिये आमत्रित कर इस नवीन भयकर प्रणाली की अगवाई की थी। सन् १९६२ मे आम चुनाव के पश्चात जब काग्रेस का बहुमत मध्य प्रदेश की विधान सभा मे नाम मात्र को था श्री मिश्र ने कई विधायको को दल-बदल के लिये बाध्यकर इस प्रथा का पोषण किया और फिर एक दिन जब काग्रेस दल के स्तम्भ चौधरी चरणसिह, श्री महामाया प्रसाद सिन्हा आदि काग्रेस त्याग कर अन्य दलो के सगठन मे लग गये तो काग्रेस ने उनकी नैतिकता को धिक्कारा। श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा ससद सदस्या ने बिना शर्त दल परिवतन को लोकतत्र के लिये एक बडा खतरा आह्वान किया कि सब दलो को मिलकर इस समस्या को सुलझाने के हेतु एक आचार सहिता बनाना चाहिए। इस प्रसग मे श्रीमती सिन्हा ने 'हिन्दुस्तान' मे लिखा कि "जब काग्रेस पार्टी हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश मे जो कुछ हुआ उसकी आलोचना करती है तो यह बात जनता के गले मे नही उतरती है क्योकि यह परम्परा काग्रेस ने ही पहले तो ही हमे यह विचार करना है कि दल परिवतन की प्रतिक्रिया क्म हमारी लोकतन्त्रीय व्यवस्था पर क्या प्रभाव पडेगा। मध्य प्रदेश या अन्य प्रदेशो मे हुई कतिपय घटनाओ ने कुछ बुनियादी प्रश्न पैदा कर दिये ह। हालाकि सबसे अधिक आश्चय तब हुआ जब कि काग्रेस ससदीय बोर्ड ने निश्चय किया कि दल परिवर्तन कर के काग्रेस मे आने की लोगो को छूट दी जायेगी। परिस्थिति को देखते हुये

इसमे चाहे कोई अस्वाभाविक बात न हो उसके इस निर्णय पर आश्चर्य अवश्य होता है। जिस दिन ससदीय बोर्ड ने यह निर्णय किया उसी दिन सुबह श्रीमती गांधी ने गैर-कांग्रेसी मुख्यमन्त्री को आश्वासन देते हुये कहा कि हमे गैर-कांग्रेसी सरकार को गिराने मे कोई दिलचस्पी नही। इस निर्णय ने प्रधान मन्त्री के लिये ही धर्म सकट पैदा नहीं किया देश के लिये भी बडा अहम सवाल पैदा कर दिया है। भारतीय राजनीतिक घटना क्रम इस तरह उलझती चली जायेगी तो क्या हम भविष्य मे प्रजातन्त्र को कायम रख सकेंगे ? रह रह कर यह प्रश्न देश के सामने आता रहा और अ त मे दल बदल की समस्या पर विचार करने के लिए २१ मार्च १९६८ को भारत के गृह मन्त्री श्री चव्हाण ने २० व्यक्तियो की एक समिति की नियुक्ति की घोषणा की जिसमे सव श्री एम० सी० सीतलवाड, सी० के० दफ्तरी, गोविन्द मैनन, हृदया नारायण कु जरु, जय प्रकाश नारायण, मोहन कुमार मगलम्, एच० एम० तिरिवाई, मधु लिमये, नाथपाई, एन० जी० रगा, वैंकट सैंवया तथा वी० राममूर्ति थे। इस समिति की कई बैठक हो चुकी है किन्तु अन्तिम निर्णय अभी देश के सन्मुख नही आया है और इस दो वर्ष की अवधि मे कांग्रेस दल ने एक नही कई अनुशासन और ईमानदारी के नवीन कीर्तिमान स्थापित कर दिये है। भगवान जाने यह दूषित परम्परा जिसके प्रारम्भ करने का श्रेय कांग्रेस को है भविष्य मे और क्या रग लाएगी तथा कितनी स्थायी सरकारो को अस्थायी शासन मे परिवर्तित करेगी। दल-बदल के सम्बन्ध मे तो सन १९६७ मे भी राजमाता का यह मत था और आज भी है कि सौदा बाजी करके दल बदल करने के वे विरुद्ध हैं तथा अवसरवादिता अथवा प्रलोभन पर स्थिर दल-बदल को वे उचित नही मानती। हा निरकुशता भ्रमपूर्ण पथ पर चलने वाले नेता के प्रति विद्रोह करने का अधिकार विधायको को है।

इसी प्रश्न का एक और पहलू भी है जिसका समुचित उत्तर

व्यवहारिक नीति निणय करके ही दिया जा सकता है और वह है राष्ट्र बडा है या दल। परिवतनशील समाज मे मान्यताओ मे परिवर्तन मान्यताओ से बन्धा है। व्यक्तिगत एव सामाजिक दोनो ही प्रकार के कार्यो मे ईश्वर विश्वास और धर्मपरायणता की प्रेरणा रहती थी। मगलाचरण से ही काय प्रारम्भ होता था। ईश्वर प्राथना के स्थान पर अब राष्ट्र गान से मगलाचरण होता है। शपथ सविधान के प्रति ली जाती है। जिस प्रकार ईश्वर या धम की शपथ लेने वालो को ईश्वर अथवा धम को समझना जरूरी है। भारत देश का भक्त होने के लिये क्या यह आवश्यक नही कि हम भारतीय सस्कृति, इतिहास, साहित्य एव भाषा के भक्त हो। जिसे इसकी सस्कृति से लगाव नही इसके इतिहास और साहित्य पर गौरव नही, उसकी भाषा की महत्ता स्वीकार नही उसके लिये देश की भक्ति और उसके सविधान के प्रति शपथ ढोग या पाखण्ड नही तो और क्या है? इस पाखण्ड का एक ही परिणाम हो सकता है कि जिस प्रकार धम के ढोगियो की अप्रतिष्ठा हुई उसी प्रकार देश-भक्ति के पाखण्ड की पोल खुलेगी और जनता मे उनके प्रति घृणा की भावना फैलेगी।

स्वतत्रता के गत २० वर्षो मे शासन की सत्ता काग्रेस के हाथ रही और काग्रेस ने जनता के सामने यह स्पष्ट कर दिया कि उसे देश की अपेक्षा अपने दल की महत्ता मे और दल के सिद्धान्तो की अपेक्षा अवसरवादिता म अधिक विश्वास है। उसकी आज की देश-भक्ति ढोग और पाखण्ड से अधिक कुछ नही क्योकि उसकी अवसरवादिता ने तथा दूषित निणयो ने जनतत्रीय आदर्शों और परम्पराओ को एक गहरी ठेस पहुचाई है। राजमाता ने काग्रेस का त्याग करते समय इन्ही प्रश्नो पर पूण विवेचन कर अपना निणय लिया था कि जिस पथ का अनुसरण गत अतीत मे चक्रवर्ती राजगोपालाचाय, आचाय कृपलानी, जय प्रकाश बाबू आदि को करना पडा था तथा बाद मे चौधरी चरण

सिंह आदि को करना पडा वही पथ ग्रहण करने को राजमाता को भी बाध्य होना पडा। राजमाता का यह पूर्ण विश्वास है कि विभिन्न दलो को केवल अपने ही काय की रट न लगाकर देश के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व की दिशा मे सोचना और अग्रसर होना चाहिए। सब दलो के नेताओ के हृदय मे राष्ट्र सेवा और देश भक्ति की भावना का इतना प्राबल्य होना चाहिए कि वे दल की अपेक्षा राष्ट्र के हित को अग्रणी रख सके तभी जन कल्याण के हेतु उनकी सेवा साथक हो सकती है।

सोपान ३४

तूफानी दौरे और समन्वय की टूटती कड़ियां

(१९६८–६९)

सन् १९६८ में कांग्रेस के कुचक्र से देश की राजनैतिक परिस्थिति ने पुनः एक करवट ली और हरियाणा, उत्तरप्रदेश एवं बिहार के गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल भंग हो गये तथा इन राज्यों में मध्यावधि चुनाव की घोषणा करके राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। एक ओर तो केन्द्रीय शासन एवं कांग्रेसी हाइ कमांड उच्चस्वर में यह घोषणा करती थी कि वह गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडलों के पतन में रुचि नहीं रखती और उधर हरियाणा, बिहार में विधायकों के दल-बदल की क्रिया सतत चल रही थी। पंजाब की स्थिति ने संवैधानिक संकट पैदा कर एक नया ही मोड़ ले लिया और पश्चिमी बंगाल की विधान सभा को बरबस भंग कर वहां भी राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। इस प्रकार पांच राज्यों में गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल समाप्त हो गये। इस झंझावत में मध्य प्रदेश का संविद शासन भी अछूता न रह पाया तथा यहां भी मुख्यमंत्री और उनके अधिकांश दल-बदलू साथियों का पारा गरम होना प्रारम्भ हो गया। जनसंघ और संसोपा दो ऐसे घटक थे जो दल-बदलू मंत्रियों की और विशेषकर मुख्यमंत्री की मनचाही गतिविधियों के विरोधी थे। मुख्यमंत्री की कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं से सतत प्रेमवार्ता तथा अन्य घटकों को पुनः दल-बदल कर संविद शासन का अंत कर देने की धमकी का प्रभाव शासन की क्रियाशीलता पर तथा जनता के मन पर

बहुत बुरा प्रभाव पड रहा था। इस स्थिति मे राजमाता के व्यक्तित्व और उनकी स्पष्टवादिता ही एक ऐसा आधार थी जिस पर सविद शासन टिका हुआ था। वे कभी ससोपा और जनसघ को या कभी लोकसेवक दल के विधायको को समझाती थी और कभी मुख्यमत्री को उचित पथ पर आने का आग्रह करती थी। किन्तु स्थिति प्रति दिन बिगडती जा रही थी। उधर काग्रेस विधायको का, मिश्र जी का और मिश्र जी के नेतृत्व को खुली चुनौती देने वाले श्री श्यामाचरण शुक्ल का यह सतत प्रयास था कि किसी न किसी प्रकार सविद के हाथो से सत्ता छीन ली जावे तथा दल-बदल की परम्परा द्वारा पुन काग्रेस का मत्रि-मडल स्थापित हो। इस योजना का प्रथम चरण यह था कि प्रदेश के हरिजन एव आदिवासी विधायको को मत्री पद के प्रलोभन दिये जावे तथा उनमे से ही एक को प्रदेश का मुख्यमत्री बना दिया जावे। इसके पूव कि काग्रेस द्वारा इसकी अगुआई की जावे प्रदेश के मुख्यमत्री श्री गोविन्द नारायण सिंह ने एक गुप्त पत्र सारगगढ के महाराजा और आदिवासी विधायको के नेता राजा नरेशचन्द्र सिंह को लिख कर यह प्रस्ताव भेजा कि यदि वे काग्रेस त्याग कर सविद मे सम्मिलित हो जावे तो वे मुख्यमत्री का पद स्वय त्याग कर उन्हे दे देगे। वार्तालाप मे जब यही बात पुन श्री सिंह ने राजा साहब से दुहराई तथा प्रदेश मे आदि-वासी नेता को शासन का अग्रणी बनाकर मत्रिमडल मे हरिजन एव आदिवासियो को उनका उचित भाग दिलाकर इस पिछडे वग को शासन की विशेष सहायता द्वारा विकास के मार्ग पर अग्रसर करने का आव्हान किया तो उन पर विश्वास कर राजा नरेशचन्द्र सिंह ने विधान सभा की उस सीट से त्यागपत्र दे दिया जिसे वे काग्रेस टिकट लेकर प्राप्त कर सके थे। उन्होने यह घोषणा कर दी कि वे पुन स्वतत्र निर्दली प्रत्याशी के रूप मे चुनाव लडकर सविद शासन को बलवती करेंगे। यह स्थिति जब राजमाता को पता चली तो उन्होने श्री सिंह से राजा साहब को दिये हुये आश्वासन को पूरा करने के लिये कहा किन्तु अब

स्थिति बदल चुकी थी। बहुत से दल बदलू विधायक श्री सिंह के इस आश्वासन को क्रियान्वित करने के विरूद्ध थे। उधर जनसघ जो कतिपय दल बदलू मत्रियो की स्वाथपरता से रुष्ट था और उन्हे मत्रिमडल से निकालने की पहल कर रहा था, अब मुख्यमत्री पर जोर डालने लगा कि वे अपने दिये हुये आश्वासन को पूरा करे तथा मुख्यमत्री पद को त्याग कर राजा नरेशचन्द्र सिंह को उस पद पर आसीन करें। अगस्त १९६७ के पश्चात दल-बदलू विधायको ने राजमाता के घटक को मिलाकर लोकसेवक दल की स्थापना की थी जिसकी अध्यक्षा थी राजमाता एव मत्री थे श्री वृजलाल वर्मा। इन्ही प्रश्नो को लेकर लोकसेवक दल मे विवाद हो गया तथा राजमाता ने दल की अध्यक्षता से त्याग पत्र दे दिया और इस प्रकार दल का अस्तित्व ही अब सकट मे पड गया।

मध्यप्रदेश मे इस प्रकार गुप्त रूप से राजनैतिक समस्यायें उलझती ही गई और भरसक प्रयत्न करने पर भी राजमाता अपने सहयोगियो की विश्वासघातकता एव स्वाथपरता के कारण उन्हे सुलझाने मे असमथ रही।

मध्यप्रदेश के बाहर जनता मे राजमाता की यथेष्ट ख्याति पहुच चुकी थी तथा यदा कदा समय निकालकर वे अन्य प्रदेशो मे भी जनता का सपक प्राप्त कर चुकी थी। ऐसे ही एक प्रवास की बात है। राजमाता मोटर द्वारा बम्बई से कोल्हापुर जा रही थी। साथ मे कुमार सम्भाजीराव आग्रे, कुवरानी साहिबा तथा अनुयायियो का दल था। माग मे मोटर मे कुछ खराबी हुई तो पार्टी रुक गई। राजमाता ने देखा समीप मे एक खेत है जिनमे चने के पौधे लहरा रहे है। चारो ओर बसन्त ऋतु का राज्य है। माच का महीना था। वे समीप के एक वृक्ष के नीचे जाकर खडी हो गई और खेत पर खडी हुई १०–११ वर्षीय ग्राम्य कन्या की ओर ध्यान से देखने लगी। धूल मे सनी हुई वह कन्या भी आगत दल से आकर्षित होकर राजमाता की ओर सकोचमयी दृष्टि से देखने लगी। धूल मे सने अधफटे वस्त्रो को धारण करे श्यामवर्णा

वह बालिका राजमाता की दृष्टि मे बिंध सी गयी। अपना दया से भरा मन लेकर वे उसकी ओर चल पडी। समीप पहुच कर दोनो मे बातचीत होने लगी। राजमाता ने पूछा —"पढती हो या नही ?"

"हमारे गाव मे स्कूल नही है। रात्रि पाठशाला है उसी मे बहुत से बच्चे और बडे लोग पढते है। मैं भी उसी स्कूल मे पढती हू।"

"तुम कितने भाई बहिन हो ?" राजमाता ने पूछा।

"पाच बहिन और एक भाई" और यह कहकर आगत अतिथि का सत्कार करने के हेतु वह बाला खेत मे से हरे चने के पौधे तोडने लगी। उन्हे राजमाता के हाथ मे पकडाती हुई बोली, "यह हरे हरे है–आपको यह स्वादिष्ट लगेगे। खाइये खेत पर कुछ और तो है नही कुछ क्षण पश्चात दल के अन्य व्यक्ति भी राजमाता के समीप आ गये तो उस बालिका ने बडे शौक से बहुत से चने के पौधे उखाड कर सबको देना प्रारम्भ कर दिये। राजमाता ने मुस्कराकर कहा "बेटी इस तरह तो तेरा खेत ही उजड जायेगा जिसकी तू रखवाली कर रही थी मा भी रुष्ट होगी। लो यह पैसे रखलो—" "नही मा! हमारे यहा मेहमान को खिलाकर पैसे नही लिया करते। यह तो पाप होता है। आप सब तो खूब खाओ खूब इस खेत मे बहुत चने लग रहे है। मेरी अम्मा, काका तो सुनकर और खुश होगे—मेहमान कब-कब आते है।" यह कहकर उस बालिका ने नोट को अस्वीकार कर दिया। राजमाता उसकी सरल भोली आकृति और हृदय की विशालता पर मुग्ध हो गई। साथियो से कहा "आपने शहरी जीवन की छीन झपट और कटुता से इस सरलता की क्या तुलना है ?" और उस ग्राम्य बाला से बोली "बेटी मा की दी हुई वस्तु का यो लौटाते नही। यह कोई चने की कीमत थोडे ही है।"

"ना मा ना। यह धन मै न लूगी। हमारी अम्मा कहती है कि मेहमान को खिलाकर घर मे खूब बढत होती है मगर।" और तभी

खेत के दूसरे छोर से निकल कर उस बालिका की मा आ गई । बात समझ कर बोली—

"मा ! मेहमान का तिरस्कार करने से और आगत सत्कार करने का पैसा लेने से गाव मे अकाल पड जाता है—हमने तो यही अपने बाप दादो से सीखा है । भगवान ने बहुत दिया है आपने हमारे फल फूल ग्रहण कर लिये यही हमारा भाग्य है । आप तो इस लडकी को आशीर्वाद दो कि इसकी नीयत सदा ऐसी बनी रहे ।"

राजमाता उन क्षणो मे इस ग्राम्य कन्या के समक्ष स्वय को बहुत छोटा अनुभव करने लगी । नोट वापिस पस मे रख लिया । उनकी आखे भर आयी । वे अपने साथियो से बोली—"यह है भारत की सच्ची लक्ष्मी और देश की सस्कृति सपदा की असली प्रहरी" । बडी कठिनता से मोटर मे रखे हुए फलो मे से कुछ फल स्वीकार करने के लिये वे उस मा बेटी को तैयार कर पाई । ग्राम कन्या ने सेव, केले, चीकू ले तो लिये किंतु फिर भी सकोच उसके मुख पर स्पष्ट था वह बार-बार यही कहे जा रही थी कि "आप इन्हे रखिये । यात्रा मे भूख लगेगी तो काम आवेगे ।

उस सध्या का राजमाता जब कोल्हापुर पहुची और प्रासाद मे रात्रि भोजन को बैठी तो उन्हे उस ग्राम्य बाला का ध्यान बार-बार आता रहा और इन पक्तिया के लेखक को उन्होने यह घटना प्राय एक वष के उपरान्त भोपाल मे खाने की मेज पर बैठे हुए सुनाई । सवेदनशील मन को भला ऐसी घटनाये कहा भूलती है ।

कोल्हापुर मे जनता ने उनका जो स्नेह और श्रद्धापूर्ण अभिनन्दन किया और जिस विशाल सख्या मे आकर जयजयकार से नभ को कपा दिया उसके साक्षी तो कोल्हापुर के निवासी हैं । पत्रो मे प्रकाशित समाचार के अनुसार कोल्हापुर की जनता ने राजमाता का अभिनव स्वागत

मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री के सी रेड्डी द्वारा
विधानसभा के सत्रावसान के पश्चात अुनके
आश्वासनो को सुनती हुई राजमाता एव विधायकगण ।



सन १९६७ के आम चनाव अभियानमे राजमाता



स्वतत्र भारत के वास्तविक निर्माता
सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ ग्वालियर की
महारानी श्रीमत विजयाराजे सिधीया कैलाशवासी
सरदार महारानी के अनुपम त्याग की सदैव प्रशसा
करते थे ।



हारानी विजयाराजे सिंधीया तथा प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू चित्रपर हस्ताक्षर करते हुये ।

महारानी विजयाराजे सिंधीया प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के साथ जयविलास प्रासाद से समारोप लेते हुये ।

किया , इस मनीषी की लोकप्रियता के कई उदाहरण वहा देखने को मिले ।

मध्यप्रदेश के सविद शासन की नेत्री, लोक सेवक दल और समन्वय समिति की अध्यक्षा होने के कारण एव भारत के विभिन्न राज्यो से प्राप्त निमत्रणो को पूरा करने के प्रयास मे उनके पास पारिवारिक कार्यों के लिये भी समय शेष न रह जाता था । जनवरी १९६८ मे एक दिन वे इसी प्रकार प्रात काल वायुयान से बम्बई पहुची और दोपहर एव सध्या को कतिपय जन सभाओ मे भाषण देने के पश्चात रात्रि को वायुयान द्वारा देहली के लिये चलने का उपक्रम करने लगी । इन दिनो उनकी प्रिय पुत्री उषा राजे, जो अब रानी पशुपति शमशेर थी, बम्बई मे अस्वस्थ थी । राजमाता ने कुवरानी साहिबा आग्रे को उनकी देख-भाल के लिये बम्बई रहने का अनुरोध किया था तथा वे ही रानी पशुपति शमशेर की परिचया की व्यवस्था कर रही थी । मा को इस प्रकार व्यस्त देखकर उनकी प्रिय आत्मजा ने मिलने पर मुस्कराते हुये केवल कहा "अम्मा ! अब तो हम लोगो को अथात आपके बच्चा का भी आपसे मिलने के हेतु इन्टरव्यू की याचना करनी पडा करेगी ।" और तत्काल ही अम्मा ने हस कर उत्तर दिया 'अब मेरे चार नही हजारो लाखो बच्चे हैं । मेरा स्नेह और प्यार बटते हुए देखकर तुम्हे ईर्षा होती है क्या बेटी ?' "नही अम्मा हमे तो बहुत प्रसन्नता होती है किन्तु—।" और फिर बेटी ने तत्काल ही अपने नयना की गीली कोरो को पूछ लिया और हस पडी । इस सदर्भ मे रानी उषा राजे पशुपति शमशेर ने अपने एक लेख मे लिखा है

"Indeed the larger family of mankind monopolised her to such a degree that sometimes we, her children, teased her and said that soon we will be compelled to apply for an interview as well And as I watch the crowds that listen to my mother, I often feel that there is indeed a similarity of common bond of affection and regard for her which ties us together"

अर्थात "जन मानस का राजमाता के समय पर ऐसा एकाधिकार हो गया था कि कभी कभी हम, उनकी सतति उन्हें तग करने को कहा करते थे कि अब मा से मिलने के लिए हमे विवश होकर भेंट का समय लेना पडा करेगा। और सचसुच विशाल जनता को प्रेम और उत्सुकता के साथ राजमाता का भाषण सुनते हुए देखकर मुझे जनता और अपनी भावनाओ मे एक विचित्र साम्य का आभास होता है क्योकि स्नेह का वह बधन जो हमको राजमाता से बाधे हुए है, हमे एक सा ही प्रतीत होता है।" राजमाता की ज्येष्ठ प्रिय पुत्री का उक्त कथन कहा तक सत्य है यह तो जनवरी-फरवरी १९६९ मे उनके भाषणो तथा असख्य जनता द्वारा भाव-विभोर हो अपना स्नेह अर्घ्य उन्हे चढाने की आतुरता को देखकर होता है।

१६ जनवरी को मध्यावधि चुनाव के प्रचार के हेतु लोक सपक करते हुए उत्तर प्रदेश के जालौन जिले के रामपुरा क्षेत्र मे जनता को सबोधित करते हुये राजमाता ने कहा "हम सब भारतवासी एक ही भारत मा की सतान हैं। एक योग्य सतान होने के नाते अपने हृदय मे व्याप्त राष्ट्रमाता की वदना करते हुए हमे अपने अपको अपनी मा के चरणो मे स्वय को निछावर कर देना चाहिए। बुराई और अन्याय के साथ सघर्ष करना चाहिये। मैं यही अलाप जगाने को एक निमित्त मात्र बनकर आपके सामने आई हू।"

१९ जनवरी को महाराष्ट्र क्षत्रिय हितचिंतक सभा द्वारा आयोजित स्वागत-समारोह मे राजमाता ने कहा कि "इस समाज को राष्ट्र के प्रति त्याग और बलिदान की पूव परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहिये। मेरे पुत्र महाराज माधवराव यहा बैठे हैं और आप सबने मुझे इनकी सुसस्कृत शिक्षा दीक्षा के लिये बधाई दी है किन्तु इसका सच्चा श्रेय मेरे पति स्वर्गवासी महाराज को है। वे कुल की मर्यादा, अनुशासन, गुरूजनो का सम्मान, चरित्र निर्माण एव राष्ट्र के प्रति अपने

कत्त व्यो के पालन के हेतु दृढ थे और मैने मा के नाते अपना कतव्य-पालन कर उनकी धरोहर को यही सब कुछ सिखाने की चेष्टा की है। मे स्वय यथाशक्ति आपकी सेवा करने की आकाक्षी हू।"

२१ व २२ जनवरी को फीरोजाबाद और आगरा की जनसभा को सम्बोधित करते हुए राजमाता ने कहा कि "जनसघ राष्ट्र के पूव गौरव और सस्कृति की रक्षा करना चाहता है। वह मुसलमानो का हितेच्छु है। काग्रेस ने अपनी स्वाथ सिद्धी के लिए हिदू मुसलमाना को लडवाया है और ब्रिटिश परम्परा की पुनरावृति की है। मुस्लिम भाइयो को जनसघ मे शामिल होकर अपने कतव्य को पूरा करना चाहिए।" उक्त आव्हान के पश्चात प्राय २५ मुस्लिम भाइयो ने जनसघ मे शामिल होकर अपने कतव्य-पालन हेतु राजमाता के समक्ष सदस्यता उसी समय स्वीकार की। २७ जनवरी १६६६ को उत्तर प्रदेश की व्यवसायी राजधानी कानपुर के परेड मैदान मे लगभग २ लाख नरसमूह को सबोधित करते हुये राजमाता ने कहा कि "देश को अब गैर-काग्रेसी शासन की आवश्यकता है। समस्त विरोधी पक्षो को जो राष्ट्र का हित चाहते हैं तथा अपने दल के आगे राष्ट्र का हित रखते हैं मिलकर जनता को स्वच्छ शासन देने तथा उसकी समृद्धि कर राष्ट्र की असली उन्नति करनी चाहिये। आपसी फूट और द्वेषभाव ने राष्ट्र को सदैव हानि पहुचाई है। अब काग्रेस का विकल्प जनसघ एक विरोधी मतो की एकता है।"

२६ जनवरी १६६६ को राजमाता न इलाहाबाद के पुरुषोतमदास टडन पाक मे आयोजित विशाल जनसमूह को सम्बोधित कर कहा—"अन्याय का प्रतिकार करना तथा राष्ट्र को समुन्नत बनाने का प्रयास करना ही अब मेरे जीवन का लक्ष्य है। मेरी अभिलाषा है कि जनता के पीडित त्रसित वग का शोषण समाप्त हो। देश का पूव प्राचीन गौरव पुन स्थापित हो तथा हमारी सस्कृति की रक्षा हो। लगभग डेढ लाख से भी अधिक जनता ने राजमाता के इस आव्हान को सुनकर

उनका जय जयकार किया ।"

१ फरवरी को बादा मे तथा ३ फरवरी को वाराणसी मे राजमाता ने जनसभा मे भाषण दिया । उनके वचनो को सुनने के लिए वाराणसी मे २ लाख मानव की भीड थी । श्री अटल बिहारी वाजपेयी, जनसघ अध्यक्ष, ने इस सभा मे कहा कि "राजमाता त्याग, तपस्या और बलिदान की साक्षात मूर्ति है तथा काग्रेस रूपी दानव का सहार करने वाली देवी है । आप महलो की शोभा और सुख त्यागकर नगर नगर और गाव गाव की धूल फाककर, राष्ट्रीयता का अलाव जगाने के हेतु जनजन के पास घूमती फिर रही है । इनकी आवाज मे तेज है, व्यक्तित्व मे तथा स्वभाव मे दया है और मा भारती की सच्ची सेवा का आव्हान है । एक दिन इस त्याग, तपस्या तथा बलिदान का फल जनता इन्हे सिर आखो पर बिठाकर अवश्य देगी ।"

राजमाता ने कहा कि "मिश्रजी के काग्रेसी शासन न ग्वालियर के विद्यार्थी समूह पर नृशस अत्याचार करके तथा बस्तर महाराज की पुलिस द्वारा नृशस हत्या कराकर अपनी जडो को खोखला कर लिया और उसे धाराशायी होना पडा । जनता को गोली से भून कर प्रजातत्र मे कोई शासन स्थिर नही रह सकता ।" राजमाता की गगन भेदी जय जयकार से काशी की, विश्वनाथ की यह पावन नगरी जहा के बसत आश्रम मे एक साधारण छात्रा के रूप मे राजमाता ने ज्ञान उपार्जन किया था आज उनकी यशोगाथा से गू ज उठी ।

महोवा, मन्दसौर, चित्तौडगढ आदि स्थानो पर राजमाता ने जनता के समक्ष कहा कि जनता जर्नादन की सेवा और उसके कष्टो की समाप्ति का प्रयास ही उनका लक्ष्य है । देश मे कॉग्रेस के अत्याचारो के प्रति वे बगावत कर रही है क्योकि अन्याय का प्रतिकार करने की अभ्यस्त है । इसके लिए उन्हे और उनके परिवार को कितने ही त्याग करने पडे । चित्तौडगढ मे क्षत्रिय महासभा के ६०वें अधिवेशन को सम्बोधित

करते हुए महरावल डूगरपुर श्री लक्ष्मणसिंह ने २६ फरवरी १६६६ को कहा कि राजमाता ने देश की राजनीति मे कुछ नवीन स्वस्थ परम्पराओ का समावेश किया है। देश मे विघटनकारी प्रवृतिया सबल हो रही हैं। सरकार नैतिकता और जनहित की दृष्टि से गिर रही है। ऐसी अवस्था मे नागरिको को जागृत होकर अपने कर्तव्य की पूर्ति करना चाहिये। राजमाता का पथ प्रदर्शन सर्वथा हितकारी है।

उत्तर प्रदेश का दौरा समाप्त कर राजमाता ने बिहार मे मध्यावधि चुनाव के हेतु लोकसम्पर्क किया तथा विशाल जन सभाओ मे भाषण दिये। इस प्रकार महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और मध्य प्रदेश की इस जननेत्री ने अपने प्रखर व्यक्तित्व और लोकहित की विचारधारा से जनता के हृदय को जीत लिया। इन दिनो यद्यपि उनका प्रयास था कि विरोधी दलो मे एकता का सूत्रपात हो जावे किन्तु मध्यप्रदेश की मार्च १६६६ की राजनैतिक गतिविधि ने इसमे रोडे डाल दिया। मुख्यमंत्री श्री गोविन्द नारायण सिंह के सदल-बल से कांग्रेस मे पुन जाने के प्रयासो का पर्दाफाश हो गया। बहुसंख्यक कांग्रेसी नेताओ का यह प्रयास कि राजमाता पुन कांग्रेस मे आजावें सफल न हो सका और कांग्रेसी दल-बदलू दल के कांग्रेस मे वापिस जाने तथा एक नवीन पार्टी 'प्रगतिशील विधायक दल' का गठन हो जाने के पश्चात २० मास के संविद शासन का अन्त अवश्यम्भावी हो गया। पारस्परिक फूट एवं मंत्रियो की स्वार्थपरता तथा कुशासन से राजमाता परेशान हो गई थी तथा उनका यह स्पष्ट मत हो गया था कि दल-बदलू मंत्री अब जन हित मे कार्य नही कर रहे है। इस कारण उन्होने स्वयं को इस शासन से तटस्थ करना उचित समझा। सौदेबाजी के लिए वे एवं उनके पुत्र महाराज माधवराव तैयार नही थे तथा श्री सिंह और उनके साथियो की यह धमकी कि यदि उनकी प्रत्येक कृतियो का समर्थन नही किया जावेगा तो वे पुन कांग्रेस से गठबंधन कर लेंगे

राजमाता का असहनीय हो उठी। फलस्वरूप मार्च १९६९ मे २० मास पश्चात् विधान सभा के अधिवेशन के समय सविद शासन की समाप्ति हो गई और राजमाता ने मुक्ति की एक सास ली। कांग्रेस हाईकमाड ने मिश्रजी द्वारा वचनबद्ध प्रगतिशील विधायक दल के अपवित्र गठबन्धन को अस्वीकार कर दिया तथा इस दल के विधायको को मन्त्रिमडल मे लेने की स्वीकृति नही दी। उधर मिश्रजी का रूठा भाग्य अभी भी न माना और मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालय ने मिश्र जी के कसडौल चुनाव को अवैध घोषित कर दिया तथा चुनाव मे भ्रष्ट तरीके अपनाने का अपराधी मान कर उन्हे विधान सभा की सदस्यता से निलम्बित कर दिया। श्री मिश्रजी के कटु विरोधी श्री श्यामाचरण शुक्ल अब कांग्रेस दल के नेता निर्वाचित हुए तथा उन्होने अधिक से अधिक विधायको का समर्थन प्राप्त करने के लिए ४० मन्त्रियो के एक विशाल मन्त्रिमडल का गठन किया। राजमाता के विरोधी श्री मिश्रजी एक बार पुन अपनी प्रिय गद्दी को पा सकने मे असमर्थ रहे तथा जनता के समक्ष उनकी दृष्टि ऊची न उठ पाई। भाग्य की यह एक विडम्बना मात्र थी।

सोपान ३५

राजमाता की विचारधारा और भविष्य की झलक

सन् १९६९ ई० भारतवष मे गाधी शताब्दी का वष है और इस वष मे गाधीजी द्वारा पौषित काग्रेस के वरिष्ठ नेताग्रा ने कुछ नवीन सिद्धान्त अपनी कार्यप्रणाली द्वारा देश के सन्मुख रखे है जो इस सम्मानीय सस्था की यशोगाथा के प्रतिकूल थे। देश की प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने राष्ट्रपति के चुनाव मे अपना विचित्र योगदान देकर जनता को आश्चय मे डाल दिया। इस सर्व-सम्मानीय देश के सर्वोच्च पद के लिये काग्रेस के प्रत्याशी श्री नीलम सजीव रेड्डी का नाम उन्होने प्रस्तावित फाम मे भरा तथा कुछ दिनो पश्चात उनके विरुद्ध श्री वी० वी० गिरी को अपना एव अपने समर्थको का मत दिलवा कर अनुशासन का एक नवीन आदर्श उपस्थित किया। प्रधानमत्री ने यह मतदान चाहे अपने विवेक और अतर की आवाज के प्रत्युतर मे किया हो किन्तु उनके लिये यह स्वीकार करना कठिन हो गया कि उन्होने अनुशासनहीनता का एक ज्वलत उदाहरण देशवासियो के सन्मुख रखकर आने वाली पीढी के लिये कोई अनुकरणीय काय नही किया। उनके द्वारा उप-प्रधानमत्री श्री मुरारजीभाई देसाई की बरख्वास्तगी उनसे परामश किये बिना भी एक ऐसा काय था जिसकी पुनरावृति यदि भविष्य मे होती रही तो वह राष्ट्र-हित मे न होगी। काग्रेस के उच्च नेनाओ की गुट-बदी, काग्रेस अध्यक्ष एव प्रधानमत्री का विवाद, श्री सुब्रह्मण्यम् द्वारा श्री कामराज पर छीटाकसी ने जनता के समक्ष इस

सस्था के अनुशासन को हास्यास्पद बना दिया है। गाधीजी ने अपनी जीवन की सध्या मे डा० राजेन्द्र प्रसाद जी से वार्तालाप करते हुए सन १९४७ मे एक दिन कहा था कि "काग्रेस की शानदार इमारत में से अब एक एक ईट फिसल रही है। काग्रेस प्रतिदिन ज्योतिहीन होती जा रही है। सच तो यह है कि या तो हमे उन वचनो को जो हमने स्वाधीनता के पूव देशवासियो को दिये थे, निष्ठापूवक पालन करना चाहिये अथवा यह स्पष्ट स्वीकार कर लेना चाहिये कि वे वचन हमने केवल डीग मारने के हेतु दिये थे जिनका दिन प्रतिदिन के शासन मे कोई अर्थ नहीं"।

गाधीजी के सचिव श्री प्यारेलाल ने अपनी पुस्तक "लास्ट फेज" के पृष्ठ ६८२ पर उक्त कथन अकित करते हुए लिखा है कि गाधीजी मृत्यु के पूव काग्रेसी शासको की मनोवृति और ढोगपूण कार्यों से बहुत ही दुखित हो चुके थे। एक बार जब शासन ने शरणार्थियो को उनके निवास से निकाला और बाद मे गाधीजी के अनुरोध पर उन्हें वहा रहने दिया तो गाधीजी ने द्रवित होकर कहा—

"How long can they carry on like this just to please me" (P 683) और मृत्यु के एक सप्ताह पूर्व उन्होने कहा –

"What gives me the shiuers is the poverty and destitution of our masses When will it end? '

गाधीजी को उद्धृत करते हुए आगे इसी पुस्तक मे लिखा है कि जनवरी १९४८ के तृतीय सप्ताह मे गाधीजी ने कहा कि (पृष्ठ सख्या ७६०)

"Some people seem to think that India's leaders and ambassadors must live and spend money in a style befitting their independent status and vie with Independent America and England in stylishness They think that such expenditure is necessary to uphold India's prestige in foreign countries I do not think so Independence is not

synoymous with stylishman or pomp We have got to cut our coat according to our cloth

यह सत्य है कि मृत्यु से पूव गाधीजी ने काग्रेस की गिरती हुई दशा को देखकर इस सस्था को भग करके लोक सेवक समाज बनाने की इच्छा प्रगट की थी किन्तु जनता की भावनाओ को उभारकर स्वार्थ सिद्धि के हेतु उनका यह प्रस्ताव उन्ही के साथियो को रूचिकर नही हुआ। और फलस्वरूप सत्ता का मद, स्वाथरता की वृत्ति इसके नेताओ मे प्रबल हो गई और फिर हुए सत्ता प्राप्ति के हेतु पारस्परिक विवाद जिनका देश के हित से कोई सम्बन्ध न था।

उक्त तथ्यो के गहन अध्ययन ने तथा काग्रेस के मूधन्य नताओ के निकट सपर्क ने राजमाता की कालान्तर मे आखें खोल दी तथा उनका यह पूण विश्वास हो गया कि काग्रेस के हाथो मे यदि देश के शासन की बागडोर अधिक काल तक रही तो देश के लाखो अशिक्षित भोले-भाले ग्रामीणा एव पद दलित शोषित जनता का भला न हो सकेगा। गाधी जी का नाम और उनके काम गावो मे अब भी प्रिय है और उनके नाम के बल पर ही काग्रेस अशिक्षित सीधी साधी जनता से मत प्राप्त कर रही है। देश की सस्कृति, देश की भाषा, देश का धम और देश की पुरातन कला निधि इस सस्था के हाथा मे सुरक्षित नही है। धम-निरपेक्षता के नाम पर काग्रेसी शासन ने हिन्दू धर्मावलम्बियो पर ही अत्याचार किये हैं। तथा उनके लिए बधनरूप मे भाति-भाति के कानून बनाये है किन्तु अन्य मतावलम्बियो को मनमानी करने की पूण स्वाधीनता प्राप्त है जिसके फलस्वरूप उनकी सख्या मे उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

इस पृष्ठ भूमि मे, इस मनीषी जनकल्याणी की भावनाओ को और उसके परिपक्व विचारो को समय समय पर दिये गये भाषण द्वारा समझने का तथा पाठको के सन्मुख रखने का प्रयास आगामी पृष्ठो मे किया गया है जिससे कि राजमाता की वास्तविक विचार धारा का जनता अ कन कर सके।

राजमाता के विचार

इलाहाबाद म गेटरी क्लब मे भाषण देते हुए राजमाता ने भारतीय शिक्षा पद्धति के विषय मे जनवरी सन् १९६८ मे कहा

'The drawbacks of our educational system can be traced to the thirtees of the last century, when it was inaugurated by Bendick and Macaulay Both of them entertained supreme contempt for every thing Indian Macaulay's minute on education was written in such a manner as to outrage the feelings of the people of India He, who was not acquainted with any of the languages of this vast peninsula, nor cared to know anything of the literature of ancient India, had yet the audacity to pronounce his contemptuous judgement on them, in making the English language the medium of instruction, his main motive was to benefit his own country, and at the same time denationalise the people of India What better proof of his nefarious motive can there be than his letter to his father, in which he wrote that

'It is my firm belief that if our plans of education are followed up, there will not be a single idolator among respectable classes in Bengal "

Behind his splendid phrases there lay quite a sinister motive to make fun of the people of this country "Indians in blood and colour, but English in taste, in morals and intellect" Thus the system of education, introduced by the British was service oriented with undue emphasis on literary subjects and almost a total neglect of technical and scientific Education Inspite of the appointment of a number of Education commissions

from time to time untill the dawn of independence, this motive of getting Government job remained the corner-stone of our educational system During preindependence days our National leaders had criticised it vehemently and had said that when the country become free they will completely overhaul the educational system, so as to make it conform to the needs and genius of our people But unfortunately though more than two decades have passed since we became independent, there has been no worth while attempt to introduce salutery changes in it In fact confusion has become worse confounded in the sphere of education '

शिक्षका के महत्व के विषय म राजमाता न इसी भाषण मे कहा

The teachers are the architects of nation's progress In our country too, the survival of democracy, with its basic principles of respect for the individual, as an end in itself depends almost entirely on the present generation of our university and school teachers '

२३ फरवरी १९६८ को दश की तत्कालीन राजनैतिक अवस्था का चित्रगा करते हुए राजमाता न अपन बम्बई रोटरी क्लब के भाषण मे कहा

"The average intelligent man in India today feels that his Nation has been badly let down by the party whom the nation had implicitly trusted and in whose charge the task of ruling the country and taking the nation forward had been placed hopefully by them

The absolute power, the unlimited reverence and devotion bordering on adoration and unstinted co-operation of the people with which the country vested the Congress

leaders in 1947 were never excelled in history anywhere else in the world under similar circumstances That faith had been sadly belied by the Congress It can safely be asserted today that the threats of population, explosion, food scarcity and famine or possible aggression by the Chinese or the Pakistani hotheads and war mongers are not a patch on the threat to disintegration of the Nation itself due to the crisis of character in the national leadership It is time that right thinking people should rise and come together in a bid to impress the political, social and economic life of the Nation and to spare a thought for the coming generation which on today s showing shall inherit a date of unprecedented magnitude from which their childern and grand childern shall not be able to free themselves for many decades, i e centuries to come It is an endeavour in this direction that has attracted me to cast off my docility to the Congress party and step into the arena of politics to render such service to the Nation as I can within my limitations "

सिंधिया स्कूल ग्वालियर के सस्थापक दिवस समारोह के अवसर पर १३ अक्टूबर सन् १९६८ को विद्यार्थियो को सम्बोधित करते हुए राजमाता ने कहा कि

"The students should try to cultivate the understanding and intellectual integrity to sift truth from falsehood, facts from propaganda and reject the dangerous appeals of fanaticism and prejudice You should learn to live graciously, harmoniously and efficiently with your fellow beings You must try to develop a straight forward character, a scorn for lying and meanness and cultivate habit of obedience, command and fearless courage You

should foster a sense of true patriotism, supplemented by consciousness of your obligations to the humanity at large' Above all you must kindle minds and be conscious of your duty towards those who are in some way or the other inferior or less fortunate In a word you should equip your selves with all those requisite qualities which will enable you, in your later life to repay your debts to the society by your selfless dedicated and conscientious service to her cause'

देश मे जनतत्र के भविष्य मे जनता को सावधान करते हुये राजमाता ने २३ नवम्बर १९६८ को खडवा की जनसभा मे कहा कि

"हमारे देश मे यदि जनता जागृत रही तो शासन भी जागता रहेगा और उसके प्रतिनिधि जनता रूपी दर्पण मे अपना चेहरा देखकर आतकवादी शासन को समाप्त करने के हेतु हमेशा प्रयत्नशील रहेगे। जनता के लिए हम सब देशवासियो के लिए क्या यह आवश्यक नही कि हम ऐसे प्रतिनिधि चुने जो जनता पर अपना सवस्व नौछावर करने को सदा तैयार रह वे जनतत्र के जागरूक प्रहरी हो और उसे बचाने के लिये तथा जनता के हितो की रक्षा करने के लिए स्वार्थ, लोभ और सत्ता के मद, अथवा वैयक्तिक या दलगत झगडा से पृथक रहकर निस्वार्थ सेवा के हेतु सदा तत्पर रह।

"इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब देश पर सकट आया है तब तब हमारे देश की नारियो ने बलिदान किया। अब समय आ गया है कि हमारे देश की नारिया अपने नन्हे मुन्नो को ऐसी शिक्षा दें कि वे हमारी सस्कृति की रक्षा कर सके और देश एव समाज के प्रति उत्तरदायी बनें।" मध्य प्रदेश शासन के अधिकारियो की राजस्व गोष्ठी मे ७ जनवरी १९६९ को प्रदेश के किसानो की दशा के सदभ मे राजमाता ने कहा कि

"आज भी हमारे किसान बहुत सी समस्याओ से घिरे हुये

हैं और यह बहुत आवश्यक है कि उन्हे इन समस्याओ से मुक्ति दिलाई जावे जब तक देश मे किसानो को सुविधा नही मिलेगी और उनकी कठिनाइया दूर न होगी तब तक उनकी सुख समृद्धि की कल्पना नही की जा सकती है।"

फरवरी १९६६ मे करोदी ग्राम की सभा मे भाषण करते हुए देश मे प्रचलित शिक्षा क्रम के विषय मे राजमाता ने कहा कि

"शिक्षा क्रम मे परम्परा और आधुनिकता के बीच विद्यमान सभी बाधाओ को दूर करने के लिए ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठ भूमि मे शका समाधान और विचार विमश की पद्धति को प्रधानता दी जानी चाहिए। मनुष्य अन्य प्राणियो से केवल इसलिये भिन्न है कि वह सस्कारिता के प्रति सबसे अधिक सवेदनशील है। उसका व्यक्तित्व अलग होते हुए भी एक समन्वय का परिणाम है, जिसमे परिवार, शिक्षा सस्था, समाज सब का हाथ होता है, इनमे से किसी का प्रभाव कितना गहरा और कितना रचनात्मक अथवा विध्वसक होता है कहना कठिन है। व्यक्ति द्वारा समाज मे प्राप्त स्थिति के महत्व के अनुसार सस्कारिता अपना रूप दिखाती है और हम और आप मनुष्य के विविध रूपो के दशन करते है। जन्म, शिक्षा, सस्कारिता, परिस्थितियों के परिणामस्वरूप मनुष्य एक ओर देवताओ के लिये ईर्ष्या का विषय बन जाता है और दूसरी ओर उसकी क्रूरता और नृशसता देखकर राक्षस भी लज्जित हो उठते हैं। इस स्थिति को बदलने की चेष्टा नई नही है। आज तक की प्रचलित समस्त शिक्षा-पद्धतिया, साहित्य और कला का उद्देश्य मनुष्य को देवत्व की ओर ले जाना अथवा उसे दानवता के मार्ग पर जाने से रोकना रहा है और आज मानव के पास जो कुछ शिव या मगलमय है वह उसी शिक्षा अथवा सस्कारिता की देन है।

"किसी देश या समाज का उन्नत, समय सम्पन्न और पराक्रमी होना कुछ कारणो पर निभर होता है। जिसे हम व्यापक अध-चरित्र

कह सकते हैं। हमारा राष्ट्र जब तक जिस मात्रा मे चरित्र से सम्पन्न रहा उसी अनुपात मे उसकी उन्नति भी हुई किन्तु आज केवल परम्परागत रूप मे निर्धारित मान्यताओ को लेकर चलने से अथवा पश्चिम की मान्यताओ को ज्यो की त्यो अपनाने मे इस देश की समस्याये हल नही होगी। इसके लिए तो क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से समस्याओ को देखने और रचनात्मक पद्धति अपनाकर नये सिरे से सस्कारिता की प्रतिष्ठा करने के सिवा हमारे सामने अन्य कोई माग नही है। शताब्दियो की राजनैतिक दासता के परिणामस्वरूप उत्पन्न बुराईया इस देश के श्रेष्ठ मानव को विकृति की ओर ले जा रही हैं। स्वाधीनता के बाद हमारे मे जो व्यापकता और गहराई आनी चाहिए थी वह नही आ पा रही है। इसके अभाव मे हम स्थिति की वास्तविक मूल्याकन नही कर पा रहे हैं। जीवन की तुच्छ सफलताओ के बीच हमारा आत्मविश्वास उलझा रहता है। व्यक्तिगत जीवन की निष्क्रीयता, शका, भय और निराशा हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन मे भी प्रविष्ट हो गई है और यह आवश्यक है कि उसे शीघ्र रोका जावे।"

१५ फरवरी १९६९ को डेली कालेज, इन्दौर के छात्रो को सम्बोधित करते हुए राजमाता ने भारतीय सस्कृति की परम्पराओ की ओर सकेत करते हुये कहा कि

"Ours is an ancient and involved society, while it is permeated with the virtues of a Godlike patience and much piety, there also exist within it may wrongs in equities and supersitions• dating through centuries of its troubled history We have to utilise it as a modern progressive community without the loss of its traditional values We have to literate people from all forms of terms social exploitation and provide them with ample opportunities to live a life of dignity and self-fulfilment The success and

failure of our efforts in this direction depend to a large extent on our education

Man s knowledge and a mastery over nature around him and his mastery of nature within him are out of balance Man now faces the choice of rolling down a nuclear abyss to ruin and annihilation or raising himself to new heights of glory and fulfilment yet unimagined In this respect, India has an unique advantage with her age-long traditions of duty without self involvement, tolerance innate love of peace and reference for all living beings She has made many glorious contributions to world culture If she can join service and her ethical values together in a creative synthesis of belief and action, she will help the mankind to attain a new level of purposefulness, prosperity and spiritual greatness To achieve this synthesis we must also see that we are not dominated

सागर विश्वविद्यालय के कुलपति के उच्च पद से २२ फरवरी १९६९ को दीक्षान्त भाषण देते हुए राजमाता ने नवीन स्नातको, विद्यार्थियो एव आचार्यों को सम्बोधित करते हुए अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारा को प्रगट किया तथा एक मननशील भाषण मे कहा कि

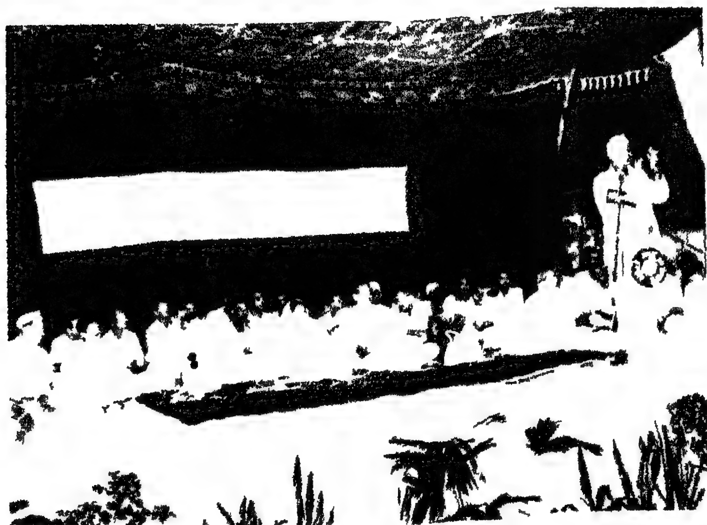
"मनुष्य और अन्य प्राणियो मे सबसे बडा अन्तर विवेक का ही तो है। उचित और अनुचित का निर्णय हम विवेक के द्वारा ही करते हैं। जब हमारा विवेक कु ठित हो जाता है। तब हम उचित अनुचित का निर्णय करने मे असमर्थ हो जाते है और उसके फलस्वरूप हम सही दिशा मे बढने मे असमर्थ हो जाते है। मेरी सम्मति मे विश्वविद्यालय के जीवन का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियो के विवेक को जागृत करना होना चाहिए और निष्ठावान चरित्रवान अध्यापकगणो पर ही पूर्वकालीन



पत्रकागे के समक्ष स्थितीका विशद विवेचन करती सविद नेत्री राजमाता



देवास के ग्रामवासीयो को सबोधीत करती हुई राजमाता



मध्यप्रदेश के शासकीय कर्मचारीयो के मध्य राजमाता
मुख्यमत्री का भाषण श्रवण करती हुई ।

गुरुकुलो के कर्तव्यों का निर्वाह करने का दायित्व है। ये ही इस कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं।

"आज की प्रचलित शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण है। जिस शिक्षा पद्धति को किसी और उद्देश्य की पूर्ति के लिये आरम्भ किया गया हो, उससे दूसरी आशा कैसी की जा सकती है। लगभग १५० वर्ष पूर्व बैंटिक और मैकॉले ने विदेशी शासन को सुदृढ बनाने के लिए उपयोगी कार्यकर्ता तैयार करने के उद्देश्य से इसे प्रारम्भ किया था। उसका लक्ष्य भारत के लिये ऐसे प्रशिक्षित नागरिक तैयार करना नही था जो भारत की प्राचीन परम्परा को जीवित रखते हुये अपने राष्ट्र को उन्नत व गौरवपूर्ण करने मे अपने जीवन का सदुपयोग करें। हमारे विदेशी शासक इस देश मे ऐसे नागरिक तैयार करना चाहते थे जो शरीर से भारतीय हो किन्तु आचार विचार से अंग्रेज हो।

Indians in blood and colour but English in taste, in morals and intellect

"इस नीति के फलस्वरूप शिक्षित भारतीयो ने अंग्रेजी सभ्यता के केवल दुर्गुण ही ग्रहण किये हैं गुण नही। देश का चिंतनशील वर्ग इस स्थिति की गभीरता को न समझता हो ऐसी बात बिल्कुल नहीं थी। उसी का यह परिणाम है कि स्वामी दयानन्द, पडित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर आदि नेताओ ने देश मे साधारण रूप से शिक्षा के प्रसार के प्रयत्न किये और राष्ट्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण शिक्षा सस्थाओ की स्थापना हुई। इन सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त करने वाले युवको की सख्या कम ही रही हो पर उन्होने अपने जीवन मे उन आदर्शो का दृढता से पालन करने की चेष्टा की जिस पर कि हमारी सभ्यता और सस्कृति अवलबित है।

"हमारे सामने शिक्षा के सबध मे स्पष्ट दृष्टिकोण होना चाहिये। एक ओर जहा प्रजातान्त्रिक सामाजिक समस्याओ मे यह आवश्यक है कि

प्रत्येक व्यक्ति को लिखने पढने तथा हिसाब-किताब रखने के साथ ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के सबध मे ऐसी जानकारी हो कि वह अपने अधिकारो तथा कर्त्तव्यो का सही मूल्याकन कर सके, वही दूसरी ओर हमे यह भी देखना है कि तकनीकी और उच्च शिक्षा पर होने वाले समय का लाभ ऐसे छात्रो को मिले जिनमे उनके लिये पूण अभिलाषा हो और जिनका बौद्धिक विकास उसके लिये उपयुक्त हो। अन्य देशो मे उन्नति प्राप्त करने वाले छात्रो के परीक्षाफल यह सिद्ध करते हैं कि हमारे देश मे इस प्रश्न पर अधिक गभीरता से विचार किया जाना चाहिये जिससे उसी समय मे अधिक छात्रो की शिक्षा की व्यवस्था हो सके।

"इस प्रसग मे वैज्ञानिक शिक्षा के सबध मे भी मैं अपने विचार स्पष्ट करना चाहूगी। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के तरुण काल की गलती को पीछे करके आगे बढते जा रहे है। इस जीवन के क्षेत्र में उनका प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। हम अतीत जागरूक रह कर ही उन्नत राष्ट्रो की पक्ति मे अपना स्थान सुरक्षित रख सकते हैं। सामाजिक-राजनैतिक क्षेत्र मे जिस प्रकार हमारे देश ने स्थिति बनाई है उसी प्रकार हमे विज्ञान के क्षेत्र मे अपनी स्थिति बनानी है।

"डाक्टर नारलीकर और डाक्टर खुराना ने इस परम्परा को बडे ही गौरवपूर्ण ढग से आगे बढाया है। हमे इस परम्परा को यदि कायम रखना है तो हमे प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर विज्ञान को रोचक व सुलभ बनाने के लिए विशेष व्यवस्था करनी होगी।

"आज छात्रो की अनुशासनहीनता से राष्ट्र की हानि हो रही है। अपने अध्ययन मे मनोयोगपूर्वक लगे रहने वाले छात्र जहा इस के कारण पीडित हैं वहा ऐसे वातावरण मे अध्ययन करके बाहर निकलने वाले स्नातक अपने साथ ऐसे सस्कार लेकर निकल रहे हैं जिनके कारण उन्हें समाज के विभिन्न क्षेत्रो मे अपना स्थान ग्रहण कर लेने

के बाद अनुशासन मे रहकर काम करना कठिन हो गया है। कोई भी सगठन तब तक समुचित रूप से अपना काय सपन्न नही कर सकता जब तक कि उसके कायकर्ता उस यत्र को चलाने मे पूरा सहयोग न दें। छात्र जीवन मे अर्जित अनुशासन की भावना केवल इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण नही है कि छात्र अपने शील और सौरभ के द्वारा समाज मे लोकप्रिय होकर नेतृत्व के अधिकारी बन सके, अपितु उनसे भी महत्वपूर्ण कार्य यह है कि उसके द्वारा समाज सगठित और सुदृढ बने।

"स्वातत्र्य सग्राम मे विद्यार्थियो द्वारा विदेशी शासन के विरुद्ध सगठित आन्दोलनो मे किया गया योगदान हमारे लिये गौरव की बात है। किन्तु उस समय के विद्यार्थियो ने देश की स्वाधीनता को वापस लौटाने के लिये वह माग अपनाया था। आज हमारे सामने इतने बडे विशाल देश के पूर्ण निर्माण की समस्या उपस्थित है कि हम अपनी शक्ति को अप व्यय करने की किसी प्रकार भी स्थिति मे नही है। तोड फोड, गुरूजनो की आज्ञा की अवहेलना, बात बात पर दल बनाकर आपस मे उलझना युग शक्ति के लिए शोभा नही अविवेक का परिणाम है। छात्रो को अपने अध्ययन काल मे साधना के द्वारा अर्जित इस तेजस्विता को निरन्तर अभ्यास, मनन और चितन के द्वारा प्रखरता प्रदान करनी चाहिए।" राजमाता का व्यक्तित्व एक धार्मिक व्यक्तित्व है। सव शक्तिमान परमपिता परमात्मा की मानव मात्र पर असीम दया मे उन्हे दृढ एव अगाध विश्वास है एव हिन्दू धम की महानता के विषय मे उनके विचार दृढ है। इस सदभ मे श्री राजमाता ने धार्मिक विचार धारा मे कहा कि

"हमारा हिन्दू धम केवल ग्रथो मे बद रहने वाला अथवा पुस्तको के प्रकोष्ठ मे आबद्ध घुटने वाला धम नही है। यह तो जीवन की वह मुक्त शुद्ध निमल तेजस्वी धारा है जो विघ्नो की चट्टानो को काटती हुई सतत बहती रही है। यह तो एक जीवन पद्धति है। मानव जीवन के निमल विकास की एक सजीवनी कला है। जिस प्रकार शरीर की शुद्धता

के लिए कम आवश्यक है उसी प्रकार मन और विचारो की पवित्रता का नाम धम है । समस्त विश्व मे केवल हिन्दू धम ही एक ऐसा धम है जो कि मानव समाज के विचार स्वातन्त्र्य म विश्वास रखता है और भिन्न-भिन्न विचारो वालो को भी स्वतत्रता प्रदान करता है । यह वह गगा है जिसका निमल जल अन्य धाराओ का मैल भी धो देता है । और उनके अस्तित्व को अदृश्य कर उन्हे अपने मे मिला लेता है ।"

हिन्दुत्व के प्रबल पोषक और आजादी के प्रतीक महाराणा प्रताप और शिवाजी राजमाता के आदर्श चरित्र है । विगत मई १९६९ मे श्री राजमाता जी ने शिवाजी जयन्ती के अवसर पर देहली मे जनता से कहा कि

"शिवाजी महाराज का महत्व कालातीत है । समय की सीमा उनके विचार व्यक्तित्व को बाधने मे असफल है । उनके ज्योतिर्मान जीवन से निकलने वाली प्रेरणादायक रश्मिया देश-काल के बधनो को बेध कर अखड रूप से स्फुटित होती रहती हे । वतमान मे हम अपने देश मे एक धम निरपेक्ष शासन का परीक्षण कर रहे है । और उसमे सभी धर्मो को समान स्वीकार करते हुए राज्याश्रम मे किसी धम को स्वीकार नही करते । धम निरपेक्षता के नाम पर हमने अपने देश को इतने टुकडो मे बाट दिया है कि सम्भवतया इससे अधिक विघटन अब तो हो ही नही सकता । धम के नाम पर प्रात जातिया एक दूसरे पर हावी होने की चेष्टा करती हे । तथा इसी के आधार पर कई स्थानो पर शासन सूत्र का सचालन हो रहा है । धम निरपेक्षता के नाम पर हमने एक धम निरपक्ष राज्य की सृष्टि कर डाली है । जिसने देश को नैतिक मूल्यो मे निरन्तर ह्रास के सिवाय कुछ नही दिया है । साथ ही साप्रदायिक खाइयो को पाटने के स्थान पर उसे तोड ही दिया है । हिन्दू धम अनुदार नही इसके अंदर आत्मवादी और अद्वैत से ब्रह्मवादी दोनो दशन बिना सघर्ष के चले हे । आज भी यह उतना ही उदार है । असमानता केवल इतनी है कि हम हिन्दुत्व को सही अर्थों मे समझे ।"

मध्य प्रदेश की विधान सभा के लिये उज्जैन क्षेत्र से जनसघ के प्रत्याशी श्री महोदया गोबिंद जोशी के चुनाव अभियान के समय अवन्तिका के नारी समाज को सम्बोधित करते हुये १६ मई १६६६ को उज्जैन मे श्री राजमाता जी ने कहा कि

"मै जानती हू कि महिलाओ मे काय करने की असीम शक्ति है तब. आवश्यकता तो इस बात की है कि वे किसी काय का सकल्प धारण कर काय मे जुटे । उन्हे ईमानदारी और चरित्र का साथ देना चाहिये । अपने कत्तव्य को पहिचान कर समाज मे प्राप्त समानता के प्रचार का उपयोग कर उ हे देश सेवा मे लग जाना चाहिए। ऐसे कठिन काल मे जब कि समाज मे नैतिकता, चरित्र और धम का लोप होने का समय है, महिलाओ को आगे बढ कर अपनी सस्कृति, धम और देश की परम्पराओ की रक्षा करना चाहिये ?

"मुझको काग्रेस त्यागने मे प० मिश्र की नीति निमित्त मात्र हो सकती है । परन्तु पिछले कुछ वर्षों से काग्रेस मे स्वार्थी और अवसरवादी दल पनप रहे है और वे अपना प्रभुत्व स्थापित किये हुए है । उन्होने काँग्रेस के सैद्धातिक स्तर को इतना नीचे गिरा दिया है कि कोई भी व्यक्ति जो सच्ची जनसेवा की इच्छा रखता है काग्रेस मे अब नही रह सकता । अत यदि कोई कहता है कि मैने केवल व्यक्तिगत आधारो पर काग्रेस छोडी तो यह अनुचित होगा । वस्तुत काग्रेस की सिद्धात-विलयता ने मुझे भी काग्रेस छोडने को बाध्य किया ।"

चुनाव अभियान के सदर्भ मे हरिजनो की बस्ती में भाषण करते हुए श्री राजमाता ने २१ मई १६६६ को उज्जैन मे कहा कि

"सचमुच वह जाति और वग महान है जो अनादर और तिरस्कार सहते हुए भी जन सेवा मे तल्लीन है तथा धम की आवाज को ऊपर उठाये हुये है । हमे तो उनका स्तर ऊपर उठाना है। उन्हे बराबरी का स्थान दिलाना है ।

"हिन्दू समाज मे ऊंच और नीच का भेदभाव अनुचित है तथा कृत्रिम है। हमे भेदभाव की इन दीवारो को तोडना होगा। कोई भी धर्म मानव मात्र मे भेदभाव करने की शिक्षा नही देता। हम सबकी एक ही जाति है 'मानव समाज' और हम सब का धर्म 'मानवता' है।

"मैंने देखा कांग्रेसजन स्वयं जनता के स्थान पर राजा बन बैठे है। उनकी निरकुशता जनता जनार्दन की ही अवहेलना करने लगी है और उनके द्वारा सत्ता का दुरुपयोग असहनीय हो उठा है। स्वार्थ सिद्धि और जातिवादिता का दुर्गुण उनमे घर कर बैठा है तथा वे यह भूल गये है कि कौन राजा है और कोन प्रजा है। अत हमने इन्हे उखाड फेंकना अपना कर्तव्य समझा और जनता ने हमारा अभिनंदन किया। मैं यह दावे से कहती हूँ कि जब जब ऐसी स्थिति का निर्माण होगा तब तब जनता के सच्चे प्रतिनिधि उठ खडे होगे और निरंकुशता को चुनौती देगे।"

सार्वजनिक युवक सभा मे राजमाता ने १६ मई १९६९ को बोलते हुए इन्दौर मे कहा कि

"इस समय देश मे अराजकता की स्थिति है क्योकि राष्ट्रीयता और चरित्रता का ह्रास तीव्र गति से हो रहा है। इस सबका मूल कारण है हमारी शिक्षा पद्धति मे पश्चिम संस्कृति का अवांछित समावेश जिसने हमारे नवयुवको और नवयुवतियो को पथ विहीन कर दिया है और वे अनैतिकता की ओर अग्रसर हो रहे है। अत हमे अपने देश के नैतिक स्तर को उठाने के लिये सर्वप्रथम हिन्दू शिक्षा पद्धति को अपनाना चाहिये जिससे हिन्दू दर्शन का समावेश होकर देश के प्रत्येक व्यक्ति पर वह चाहे किसी धर्म का हो यह स्मरण रहे कि उसके पूर्वज भारतीय थे। धर्म परिवर्तन करने से केवल उपासना का ढंग बदलता है। आत्मा, संस्कृति, सभ्यता व देश प्रेम की भावना नही। विदेशी संस्कृति का अंध अनुकरण हमारे देश के लिए घातक सिद्ध हो रहा है।"

विश्व हिन्दू परिषद मे श्रीमत राजमाता ने २१ सितम्बर १९६९ को बम्बई मे कहा कि

"धर्म निरपेक्षता के ढोग मे धमविहीनता का जो चोगा हमने धारण किया है उससे सर्वाधिक क्षति यदि किसी की हुई है तो वह हिन्दुओ की और हि दू धम की। आकडे इस बात के साक्षी है कि भारत मे स्वतन्त्रता के पश्चात्, जहा अन्य सब मतावलम्बियो की सख्या बढी है, वहा केवल हिन्दू धम के अनुयायियो की सख्या मे ह्रास हुआ है। हमसे बहुत बडी सख्या मे हमारे जनवासी कुछ विलग हो गये है और साथ ही समाज का बहुत बडा उत्तेजित तिरस्कृत वग जो सभी अडचनो के बावजूद भी अपने आपको हि दू धम से सम्बद्ध किये था, अब पृथक् होने की सोचने लगा है। यह हमारे लिए अति लज्जा का विषय है।

"आज इस ससार मे हिन्दुओ का शरण स्थल यदि कोई देश है तो वह केवल भारतवष है। हमने देखा है कि विश्व के कई भागो मे अन्य धर्मानुयायिओ को जब अपना देश छोडना पडा तो वे पाकिस्तान, आस्ट्रेलिया आदि चले गये कि तु हिन्दुओ के लिए ऐसा देश कोई नही है। यदि उनके धम पर कुठाराघात होने पर परिस्थितियो से मजबूर होकर वे यह देश छोडे तो उनके सम्मुख समुद्र मे कूद कर आत्महत्या करने के अलावा कोई अ य मार्ग नही होगा।

"सामान्यत शिकायत की जाती है कि लोगो की धार्मिक श्रद्धा मे कमी आ रही है। उनकी दानशीलता घट रही है। कि तु यह कथन भ्रामक है। यह कहना कि इस देश मे ईसाई मिशिनरियो द्वारा जो धनादि द्वारा धम परिवर्तन कराया जा रहा है, उसका सामना तब तक नही हो सकता जब तक कि हिन्दू जनता भी भारी मात्रा मे अपना धनादि खच कर उनके विरुद्ध काय करने वालो की लम्बी पक्ति खडी न कर दे। किन्तु मेरा तो यह कहना है कि हिन्दू जनता आज भी अपने धर्म के लिए जितना धन खच करती है वह इन ईसाई मिशिनरियो द्वारा

खर्च किये जाने से कई गुना अधिक है। मैने कुम्भ के मेले मे करोडो रुपयो का व्यय देखा है और यह धन दान द्वारा प्राप्त धन ही था।

"मेरी राय मे आवश्यकता आज इस बात की है कि इस प्रकार के स्थान-स्थान पर विद्यापीठ स्थापित किये जावे जो हमारे धर्म प्रचारको को धम-प्रचार की शिक्षा दे। उनमे उत्सर्ग की भावना भरे और उनके मस्तिष्क के द्वार खोले। स्वामी विवेकानन्द ने भी इस सबध मे कहा था कि हमे मदिरो के साथ ऐसी सस्था का निर्माण करना होगा जिसमें ऐसे शिक्षक तैयार किये जावे जो धम-प्रचार करने के साथ-साथ जनता को लौकिक शिक्षा भी प्रदान कर सके। इसके लिए धन कोई समस्या नही। उन्होने कहा था कि 'धन या कोई भी वस्तु जिसकी मुझे इच्छा हो मेरे पास आनी ही चाहिए क्योकि मेरे ये गुलाम है, न कि मै उनका गुलाम हूँ।' मै समझती हूँ कि उनका यह कथन अक्षरश सत्य है। हमे चाहिए कि हम देश भर मे ऐसी शिक्षण सस्थाओ का जाल बिछा दें जिनके माध्यम से धम-प्रचार की एक मालिका निकल पडे जो देशवासियो मे धम मात्र तथा उसके प्रति श्रद्धा का जागरण कर सके।"

राजमाता के उक्त भाषणो से जो समय समय पर विभिन्न अवसरो पर दिये गए है उनकी विचारधारा और व्यक्तित्व का स्पष्ट सकेत प्राप्त होता है। इस साम्य एव प्रखर व्यक्तित्व मे जनता को जहाँ एक ओर आस्थावान, चरित्रवान, विनयशीला नेत्री के दशन होते हैं वहा साधारणजन उनमे एक भावुक आदश पारिवारिक भारतीय नारी की छवि देखते है। उनके पुत्र एव पुत्रियो के कथनानुसार उनकी पुत्र-वधू एव अन्य परिजनो की अनुभूति के अनुसार इस नारी के दो महान गुण है जिनका प्रभाव उनकी सतति पर सर्वाधिक पडा है और वे है

भगवान के अस्तित्व और उनकी महानता, दया और कृपा पर अगाध विश्वास एव देश सेवा करने की दृढ भावना। इन दोनो लक्ष्यो की पूर्ति के साधन है उनका चरित्र, ईमानदारी, विनयशीलता, निस्वाथ वृत्ति एव त्याग की भावना।

लोकतत्र के प्रति राजमाता का दृढ विश्वास है और उनका सतत प्रयत्न है कि जनता जागरूक रहकर अपने प्रतिनिधियो को प्रेरणा और आत्मिक बल देती रहे ताकि वे अपने कतव्यो का निष्ठा के साथ निर्वाह करे। देश के विभिन्न वर्गों के भेद को मिटाने की उनकी चेष्टा है तथा वह वग जो युगो से पिछडा वग रहा है और जिसे समाज रोदता चला आ रहा है अब मजग होकर उन्नति के पथ पर अग्रसर हो तथा उनका जीवन स्तर ऊचा हो। यह उनकी अभिलाषा है। हमारे देश की लोकतत्रीय वतमान स्थिति और उसके भविष्य के विषय मे जन-साधारण मे आशकाये और भय व्याप्त है उसके प्रति राजमाता सशकित रही है। उन्हे पूर्ण विश्वास है कि शीघ्र ही जनता इतनी जागरूक हो जावेगी कि कोई भी राजनैतिक दल उनके भाग्य के साथ, देश की स्वतत्रता के और सुरक्षा के साथ खिलवाड नही कर पायेगा।

राजमाता के विचारो के अनुसार देश के हित मे यह आवश्यक है कि इस समय अखिल भारतीय स्तर पर केवल तीन या चार राज-नैतिक दल हो और जिस दल के हाथ मे सत्ता हो उसके विपक्ष मे एक अथवा दो मजबूत विरोधी दल हो जो कि शासन की स्वस्थ आलोचना कर सके। उसे जनहित कार्यों मे लवलीन रख सकें। यदि विरोधी पक्ष बटा रहा और सगठित न हो पाया तो उनकी कमजोरी का लाभ शासन करने वाला दल सदा उठाकर अपनी स्वाथसिद्धि करता रहेगा। वतमान शासन धम-निरपेक्ष है, यह बात राजमाता मानने को तैयार

रही। उनके विचार मे इस शासन ने हिन्दू धर्म को और हिन्दू जनता की मान्यताओ को रौदा है तथा अन्य धर्मो की सहायता की है। राजमाता चाहती है कि देश का शासन इस प्रकार का हो जहा सब धर्मों को समान स्वतन्त्रता हो किन्तु भारतीय सस्कृति की रक्षा, प्राचीन आदश परम्पराओ का निर्वाह और अतीत के इतिहास से सच्ची प्रेरणा प्राप्त करना उसका लक्ष्य होना चाहिये और लोकतन्त्रीय शासन की सफलता की यही कसौटी होगी।